जापान

जापान

राहुल सांकृत्यायन

प्रकाशक
साहित्य-सेवक-संघ
छपरा

प्रथम संस्करण
१०००

मूल्य ३)

प्रकाशक
ठाकुर अच्युतानंद सिंह "अतरसनी"
साहित्य-सेवक-संघ, छपरा (बिहार)

मुद्रक
महेन्द्रनाथ पाण्डेय
अलाहाबाद लॉ जर्नल प्रेस, प्रयाग

निवेदन

अिस यात्राके कितने ही अध्याय मेरे भारत लौटनेसे पहिले ही "सरस्वती", "चाँद", "माधुरी", "सुधा", "विशालभारत", "विश्वमित्र" (मासिक) में निकल चुके थे। परिशिष्टका कुछ अंश "योगी" में अनुवादित होकर प्रकाशित हुआ था। मैं कुछ और अध्यायोंको लिखना चाहता था, विशेषकर रूस और अीरानके बारेमें; किन्तु, अधिक समय बीमारीने ले लिया, और अब मैं तिब्बतके लिअे प्रस्थान कर रहा हूँ; अिसलिअे प्रस्तुत सामग्रीको ही दे रहा हूँ।

पटना
६–२–१९३६

राहुल सांकृत्यायन

विषय-सूची

चित्र-सूची

है; किन्तु हम मंगलवारवाले जहाज़में चले थे, जिसे चार दिन लगते हैं। आठ बजे सवेरे जहाज़ चला, और हमने मित्रोंसे विदा ली। डेक्पर हमें अेक कोनेमें, कानवेस्की छतके नीचे स्थान मिला। आसपास नज़र दौळाई, कुछ मारवाळी, कुछ गुजराती और कुछ पंजाबी सिख बैठे हुए थे। गर्मीका क्या पूछना? जहाज़ चलनेपर हवासे कुछ शान्ति मिली। हमने जहाज़में कुछ काम करते चलनेका निश्चय किया था, अिसलिये चाहते थे कि यात्रियोंसे बहुत कम परिचय हो।

भागीरथीकी श्यामल तटी और अुसके हरे-हरे नारियलोंको देखते हुये हम बढ़ रहे थे। दो बजे सहसा हमारा जहाज़ खळा हो गया। अिंजनने बहुतेरा ज़ोर लगाया; किन्तु जहाज़ टससे मस न हुआ। मालूम हुआ पानी पूरा नहीं है। पानी पूरा नहीं? क्या दो-चार दिन यहीं धूनी रमानी पळेगी? लोगोंने कहा—'नहीं, कुछ समयमें ज्वार आते ही पानी बढ़ जायेगा, फिर चल निकलेंगे।' जहाज़के रुकते ही हवा भी रुक गई। गर्मी और पसीनेसे चित्तमें व्याकुलता बढ़ने लगी। ख़ैर, तीन घंटे ठहरनेके बाद जहाज़ चला। थोळी ही देरमें अँधेरा भी हो गया, और हमारा जहाज़ भी खुले समुद्रमें जा पहुँचा।

जहाज़में चार दिन रहना था, अिसलिअे शौच, स्नान, भोजन की व्यवस्था देख रखना ज़रूरी था। देखा, पाखाना निचले तल पर है। कोठरियाँ काफ़ी हैं, और थोळी-थोळी देरपर पानी खुलकर पाख़ानेको धोता रहता है। ख़ैर, पाख़ानेको हिन्दुस्तानी ढंगसे बुरा नहीं कहा जा सकता। नहानेके लिअे देखा, हिन्दू दूकानकी बग़लमें मीठे पानीका अेक नल है, जिसपर भीळ लगी है। कोअी आधी धोती भिगोये खळा है। कोअी दातुअन कर रहा है। कोअी कानपर जनेअू चढ़ाये लोटा मल रहा है। कोअी बाल्टी लिये खळा है, और किसीने नल पर क़ब्ज़ा जमा रखा है। अितने अधिक यात्रियोंके लिये सिर्फ़ अेक ही नल क्यों? अलग गुस्लख़ाना

क्यों नहीं ? काश्यपने नहानेका ज़िक्र चलाया। मैंने कहा—'चाहे गर्मीसे मर जाऊँ, किन्तु वहाँ तो मैं स्नान करनेका नहीं।' दूसरे दिन शामको पता लगा कि पाखानेके पासमें गुस्लखाना भी है; लेकिन अुसमें सिर्फ़ समुद्रका ही पानी है, और अिसीलिये लोग अुसे बिल्कुल अिस्तेमाल नहीं कर रहे हैं। जहाज़-कम्पनी डेक्वालोंको दरअसल लावारिस माल समझती है, अन्यथा अेक मीठे पानीका भी छोटा-सा नल लगा देती, जिसमें खारे पानी में नहाकर लोग अुससे अपनी चिपचिपाहट तो दूर कर लेते। यदि मीठे पानीके ज़्यादा खर्चका डर हो, तो नलके नीचे चीनीका बर्तन रख दिया जाय।

हिन्दू दूकानमें कुछ पूरी-मिठाई बिक रही थी। आटे चावलका भी प्रबन्ध था; किन्तु हम लोग तो पका भात-दाल, या रोटी-साग चाहते थे। वहाँ अुसका कोअी अिन्तज़ाम न था। आख़िर पुराने पुण्यका प्रताप काम आया। पासमें दाढ़ीवाले भाअियोंका बावरचीख़ाना था। मालूम हुआ, वे अिलाहाबाद ज़िलेके हैं। साहब-सलामत हुअी, पूछने पर बारह आना सामिष और छै आना निरामिष भोजनका दाम मालूम हुआ। मांस मुर्ग़ीका था। दूसरे दिन दोपहरका खाना खाने गये। मिर्चोंकी कुछ न पूछिये, कंठसे पेट तक मानों तेजाब छिळक दिया हो। काश्यपका भोजन निरामिष था; किन्तु अुनकी तरकारीकी भी वही दशा थी।

जहाज़पर काम-काज भी कुछ न हो सका। सिर्फ आनन्दजीका जातक-अनुवाद ही पढ़ पाया। हाँ, यात्रियोंमें अेकाधसे परिचय हो गया। अधिकांश समय समुद्री दृश्य देखने तथा बातचीत करनेमें ही गुज़रा।

४ अप्रेलको बाअीं ओर बर्माके पहाळ दिखाअी पळे। शामको अेक तैरती नावपर बना हुआ दीप-स्तम्भ दिखलाअी दिया। आधी रातको जहाज़ रंगूनकी खाळीमें जा पहुँचा, और सवेरे तक वहीं लंगर डाले पळा रहा। छै बजे सवेरे लंगर उठा। सामने रंगूनका विशाल नगर फैला था। समझा था, रूखा-सूखा होगा; किन्तु यहाँ तो चारों ओर

वृक्षोंकी हरियाली थी; बीच-बीचमें स्तूपोंके नुकीले शृंग अुठे हुअे थे। जहाज़ किनारेकी ओर बढ़ने लगा। सामने सुवर्णमंडित सूले-पगोडा चमक रहा था। किनारे पहुँचते ही बन्दरगाहके अफ़सरोंकी नावें आ गअीं। हमारे साथी प्रथम-द्वितीय श्रेणीके यात्रियोंके साथ ही अपने अुतरनेकी आज्ञा पानेकी कोशिश करने लगे। हमने कहा—जो गति औरोंकी वही हमारी भी होगी किन्तु मालूम होता है, श्रीधर्मचन्द खेमकाने कह रक्खा था, अिसलिये अेक अफ़सरने ले जाकर हमारे टिकटोंके लिअे ठीक-ठाक करा दिया। थोळी देरमें खेमकाजी भी जहाज़पर आ गये, और हम दोनों बिना दिक्क़तके किनारे पहुँच गये। वहाँ कितने ही भारतीय रंगून-साहित्य-गोष्ठीके प्रथम वार्षिक अधिवेशनके मनोनीत सभापतिके स्वागतके लिअे आये थे। थोळे शिष्टाचारके बाद हम लोग मसीदी गलीमें लक्ष्मीनारायण-धर्मशालामें पहुँचाये गये।

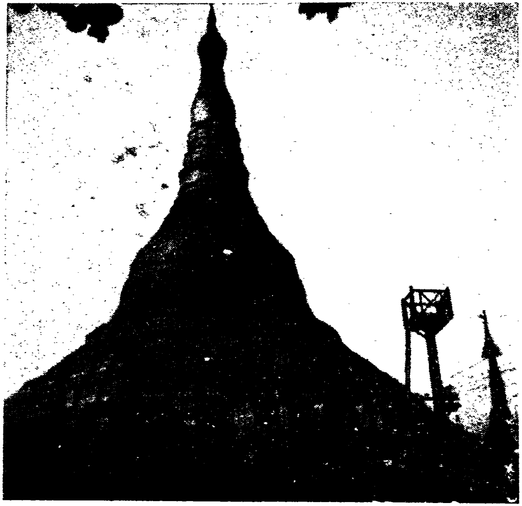
तीसरे तल्लेपर कोठरी तो अच्छी मिली; किन्तु वहाँ पंखेका कोअी अिन्तज़ाम न था। इधर कुछ वर्षोंसे गर्मियोंमें तिब्बत और हिमालयमें रहनेसे अैसी आदत पळ गअी है कि थोळी भी गर्मी बर्दाश्त करना मुश्किल है। पटने और कलकत्तेमें पंखे मयस्सर थे, अब रंगूनकी गर्मी काटनी थी। खेमकाजीने कहा—"हमने गोष्ठीका अधिवेशन १४ तारीख़ को रखा है।" टाअिमटेबुल देखनेसे मालूम हुआ, कि २१ अप्रेलको सिंगापुरमें मिलनेवाले अन्योमारू जहाजको पकळनेके लिये सिर्फ अेक ही जहाज है, जो ११ अप्रेलको रंगूनसे रवाना होता है। पहले तो बहुत तरद्दुद हुआ, किन्तु कोअी अन्य अुपाय न देखकर अन्तमें १० अप्रेलकी रातमें ही अधिवेशन करनेका निश्चय हुआ। अिस प्रकार हमारे पास ५ से ११ अप्रेल तकका समय बर्मा देखनेके लिये था।

५ अप्रेलकी शामको रंगून शहर देखने निकले। शहरकी चार लाखकी आबादीमें अेक लाख हिन्दुस्तानी और पचास हज़ार चीनी हैं।

बाक़ी बर्मी। व्यापार प्रायः सूरती मुसलमानों, मारवाळियों और कुछ चीनियोंके हाथमें है। बर्मी लोग अिस लोकके जीव नहीं। अुन्हें नाच-तमाशे, खेल-कूदसे फ़ुर्सत कहाँ? सूले-पगोडा देखकर हम अेक मैदानसे गुज़र रहे थे। देखा, बहुतसे पीले कपळेवाले भिक्षु खळे हैं। सोचा, शायद ये भिक्षु धर्म-चर्चा कर रहे होंगे; लेकिन आगे बढ़नेपर मालूम हुआ कि फुटबाल-मैच देखा जा रहा है! नाच-तमाशा, घुळदौळ, थियेटर-सिनेमा सभी जगह भिक्षु लोग सबसे पहले पहुँचते हैं। बादमें यहाँके भिक्षुओंके बारेमें अधिक जान-सुनकर बहुत हताश होना पळा। ये बळे असंस्कृत होते हैं। पढ़ने-लिखनेसे अिन्हें वास्ता नहीं। भिक्षु बनानेमें ढिलाअी होनेसे चोर, पाकेटमार सभीके लिअे यह दरवाज़ा खुला है। छुरा-चाकू बाँधना और काम पळनेपर चला बैठना अिनके लिये मामूली बात है। अिन भिक्षुओंकी संख्या लाखों पहुँच गअी है। किसी भी धर्मका अस्तित्त्व मिटानेके लिये अिन-जैसे साधुओंकी संख्या बढ़ा देना ही काफ़ी है। बर्मामें अीसाअी और मुसल्मान दोनों बळी तेज़ीसे बढ़ रहे हैं। कारण क्या है? मुसल्मान तो अपने सार्वत्रिक अस्त्र शादी और रखेलियों द्वारा बढ़ रहे हैं; किन्तु अीसाअी क्यों? क्या अपने धर्मकी अुच्च शिक्षासे? नहीं, अिसका कारण है अीसाअियोंमें धर्म-प्रचारकी लगन तथा शिक्षितोंके मनमें अिन भिक्षुओंके प्रति घृणा। केर्न जैसी कुछ जातियाँ तो प्रायः सारी-की-सारी अीसाअी हो चुकी हैं। तो क्या यहाँके भिक्षुओंमें सुधार होगा? अभी तो लक्षण नहीं दिखाअी देता।

अिसी अुधेळबुनमें हम लोग नगरके बाहर क्रीळा-सरोवरपर पहुँचे। सरोवर अेक ही जगह नहीं है, सर्पकी भाँति टेढ़ा-मेढ़ा चला गया है; किन्तु है सुन्दर। पासके वृक्षकुंज बहुत स्वच्छ रखे जाते हैं।

थोळी देरमें हम जगत्प्रसिद्ध स्वे-द-गं-पगोडा पहुँचे। कुछ वर्ष पूर्व अिसके पासमें ही अंगरेज़ी पल्टन रहा करती थी, अब सरकारने अुसे हटा



१——रंगून——स्वे-द-गं-पगोडा (पृष्ठ ५)



लिया है। स्वे-द-गं-स्तूप अेक नाटी-सी पहाळी-जैसी भूमिपर है। प्रधान रास्तेपर फूल तथा धूपबत्तीकी बहुत-सी दूकानें हैं, जिनपर बैठे स्त्री-पुरुष लम्बे-लम्बे चुरुटोंसे धुआँ निकाला करते हैं। सफ़ाअीका बहुत ख़याल नहीं है। हम भी कुछ फूल-धूप लेकर आगे बढ़े। स्तूपके पासके मंडपमें सैकळों बुद्ध-मूर्तियाँ हैं। आर्यसमाजी भजनीक कवि जैसे कविताके कोमल कलेवरपर छुरी चलानेमें निपुणता दिखलाते हैं, वैसे ही मूर्तिकला-पर कठोर प्रहार करनेमें यहाँ भी बळी निपुणता दिखाअी गअी है। स्तूप-पर सोनेका पत्र चढ़ा है। छत्र सोनेका तथा रत्न-जटित है। आसपासके मन्दिर तथा धर्मशालायें अधिकांश लकळीकी हैं। घूमकर स्तूपके चारों ओर देखा।

वहाँसे अम्बवनारामके चाँव (भिक्षु-मठ) में गये। गोष्ठीवालोंने यहाँ भिक्षुओंको पढ़ानेके लिये अेक हिन्दी-पाठशाला खोल रखी है। बरसातमें भिक्षु लोग चौमासेके लिये अेकत्रित होते हैं, अुस समय हिन्दी विद्यार्थियोंकी संख्या ५० हो जाती है, किन्तु आजकल कम है। और मठोंसे अिस मठके भिक्षु अच्छे बतलाये जाते हैं, तो भी स्थानकी गन्दगी और आलस्यमें यहाँवाले भी कम तो नहीं मालूम होते।

शामको हम अपने स्थानपर लौट आये। कुछ भारतीय नवयुवकोंसे बातचीत होती रही। बर्मामें हिन्दी-भाषा-भाषियोंकी संख्या बहुत है। रंगून और माँडले जैसे कुछ शहरोंमें मारवाळी व्यापारियोंकी संख्या काफ़ी है; किन्तु अुनमें विद्याकी ओर रुचि नहीं है। श्री धर्मचन्द्र खेमका तथा श्री अुदयशंकरजी जैसे दो-अेक तरुण अैसे हैं, जिन्हें लिखने-पढ़ने तथा दूसरे सांस्कृतिक कामोंका शौक़ है; किन्तु अुनके कामोंमें हाथ बँटानेवाले नहीं हैं। वृद्ध और दूसरे लोग हाथ क्या बँटायेंगे, अुल्टा अुन्हें टीका-टिप्पणियोंसे अनुत्साहित करते रहते हैं। अुनकी समझमें जैसे हो, वैसे रुपया कमानेके अतिरिक्त मनुष्यके लिये कोअी दूसरा बळा काम

ही नहीं। वह यह समझ ही नहीं सकते कि सांस्कृतिक कामों द्वारा अेक व्यापारी अपने व्यापारिक क्षेत्रके लिअे भी बहुत सहानुभूतिका वातावरण पैदा कर सकता है। बर्माके पृथक्करणसे होनेवाली अळचनोंके बारेमें अुनको चिन्ता नहीं मालूम होती। अदूरदर्शिताका जो परिणाम होना चाहिये, वह यहाँके मारवाळियोंमें दिखाअी पळता है। अिनकी दो धर्मशालायें हैं, जिनमें यह धर्मशाला, जिसमें हम लोग ठहरे हुये थे, सिर्फ शादीके लिये रिज़र्व है। दूसरी भगवानदास बागलाकी धर्मशालामें यात्रीको रहनेका स्थान मिल सकता है, यदि वह धनी हो या अुसका अधिक परिचय हो। रंगूनमें मकानोंका किराया ज़्यादा है। अेक प्रकारसे ये दोनों धर्मशालायें बारातोंके टिकनेके स्थान हैं; अेकमें यदि कन्या-पक्षवाले ठहरते हैं तो दूसरीमें वर-पक्षवाले। बारातके बर्तन-भाँळे, गद्दे-तकिये, सभीका पूरा प्रबन्ध है। मैं यह नहीं कहता कि बारातको टिकने न दिया जाय। आखिर अुसका भी कोअी प्रबन्ध होना ज़रूरी है, किन्तु क्या यह कभी अुचित हो सकता है कि सहालगके दो मासको छोळकर बाक़ी सालभर दूसरे यात्री अिनसे लाभ ही न अुठा पावें? कलकत्तेके जागृत मारवाळी-समाजको देखकर हमें आशा हुअी थी कि यहाँ अुसका कुछ प्रभाव ज़रूर होगा; किन्तु यहाँकी अवस्था देखकर तो बहुत दुःख हुआ।

मारवाळी-समाजके बाद दूसरे हिन्दी-भाषा-भाषी पूर्वी युक्तप्रान्त—विशेषकर गोरखपुर, आज़मगढ़ आदि ज़िलोंके रहनेवाले हैं। ये लोग अधिकतर दरवानीका काम करते हैं, अिसलिए सारी जमातको ही दरवानके नामसे पुकारा जाता है। अुस दिन रातको मेरे पास अेक सज्जन बैठे थे, जो हिन्दीके लेखक हैं, और अेक पत्रके सम्पादक रह चुके हैं। वे आजकल अपना प्रेसका काम करते हैं। धर्मशालाके नौकरने किसी काम के लिये कहा—"अे दरवान! जाओ, बाज़ारसे शर्बत ला दो।" पहले तो हमने समझा ही नहीं, पीछे मालूम हुआ कि सम्पादक महाशय

ही दरवान हैं! हाँ, तो यह दरवान-समुदाय रंगून और असुसे बाहर भी काफ़ी बळी संख्यामें रहता है। डुमराँवके बाबू हरिजीकी ज़मींदारी जैसे स्थानोंमें तो आरा-छपरा ज़िलेके लोगोंके कितने ही गाँव बस गये हैं। कितने ही हिन्दी-भाषी पुलिसमें नौकरी करते हैं। गोरखपुरके हज़ारों आदमी दिसम्बर-जनवरीमें आते हैं, और चावलका कारबार करनेवाली कम्पनियोंमें तीन महीने काम करके लौट जाते हैं। अिन लोगोंमें ब्राह्मणोंकी संख्या बहुत अधिक है। अिन्होंने अपने अत्साहका दुरुपयोग करके अेक ब्राह्मण-सभा और ब्राह्मण-भवन भी स्थापित किया है। दुरुपयोग कहना ही पळेगा, क्योंकि अैसी जातीय संस्थाओंका संगठन देशमें भी हानिकारक सिद्ध हुआ है, बाहर तो वह संघ-शक्तिको और भी विशृङ्खलित करता है।

रातको ही हमने निश्चय कर डाला कि दूसरे दिन माँडले चला जाय और जितना जल्दी हो, लौट आया जाय। रेलका टाअिम सवा दो बजे था; पर बर्मा रेलका अेक ख़ास धर्म यह है कि जिसने जिस बेंचपर जाकर अपना बिस्तरा लगा दिया, बस, वह असुकी है। न असुे दूसरा मुसाफिर अुठनेके लिये कह सकता है, न रेल-कर्मचारी ही, अिसीलिये हम कुछ पहले ही पहुँचे। पुलिसके सिपाही आज़मगढ़के थे। हमें पहुँ-चानेके लिये आये हुये श्री पटेश्वरीप्रसाद भी आज़मगढ़ ज़िलेके थे, इस-लिये तीसरे दर्जेका टिकट लेनेपर भी भीतर चले आनेकी गुंजाअिश हो गअी। गर्मी ख़ूब थी, अिसलिये चार आनेमें अेक गिलास और सुराही मोल लेकर रख ली गअी। •

गाळी चली। थोळी देरमें हम शहरसे बाहर निकल गये। बर्माकी ग्राम्य भूमि दिखलाअी पळने लगी। दूर तक धान ही धानके खेत चले गये हैं। जहाँ खेत नहीं, वहाँ नारियल, आम, या दूसरे वृक्ष हैं। लकळी-की दीवारोंके अिकतल्ले मकान बाँस या लट्ठेके खम्भोंके अूपर टँगे हुये

हैं। हर अेक गाँवमें अेक-आध स्तूप या पगोडा ज़रूर है। कहीं-कहीं बुद्धकी अूँची-अूँची प्रतिमायें भी बनी हुअी हैं। गाँवों और ठेठ देहातों तकमें भारतीय दिखाअी पळते हैं। जब तक दिन रहा, हम बर्माकी भूमि का सौन्दर्य देखते रहे। अिस गर्मीके मौसिममें जब अितनी हरियाली है, तो वर्षामें कैसी होती होगी ?

अँधेरा हुआ। लोग सो गये, हम भी पळ रहे। नींद खुली, तो सवेरा हो चुका था। माँडले अेक ही दो स्टेशन आगे था। सळकके किनारे देखा, नाटक हो रहा है। सैकळों भिक्षु और हज़ारों गृहस्थ स्त्री-पुरुष तमाशा देख रहे थे। अुन्होंने ज़रूर ही सारी रात नाटक देखनेमें बिताअी होगी। हमारे अेक साथी बोल उठे—'बर्मी लोगोंको तमाशा देखनेको मिल जाय, तो चटाअी लेकर सारा घर पहुँच जायगा; चाहे घर लुट जाय, या अुसमें आग ही क्यों न लग जाय !'

छै बजे सवेरे माँडले स्टेशन जा पहुँचे। यद्यपि रंगूनवालोंने माँडले आर्यसमाजको तार देनेकी बात कही थी; पर स्टेशन पर कोअी न था। खैर, अेक घोळागाळीपर सामान रखवाकर हम आर्यसमाज पहुँचे। रवि-वारका दिन था। चपरासी और कुछ महाशय हवनकी वेदी सजानेमें लगे थे। चपरासी या दरवानसे पूछा, तो पहले तो कहा कि कोअी कोठरी खाली नहीं है। बहुत मिन्नत-समाजत करनेपर अेक बिना कुंडे-तालीकी कोठरी मिली। बक्स और बिस्तरा अुसमें फेंका, मुँह-हाथ धोया और चल दिये शहर देखने।

सवेरेका वक्त था, बाज़ारकी सळकपर निकलते ही झुंड-के-झुंड भिक्षु हाथमें पात्र लिये जाते दिखलाअी पळे। घर-घरसे स्त्रियाँ कलछीसे भात या खानेकी दूसरी चीज़ें डालती जा रही थीं। किसी-किसी घरके भीतर भी भिक्षु कुर्सीपर बैठे थे। शायद वह अुनके निजी बन्धुओंका घर था, और वे नाश्तेके लिये डटे थे। बहुत दूर निकल जानेपर भिक्षुओंका अेक

मठ देखा । अिच्छा हुअी, देखें भिक्षुओंका सौजन्य ! भीतर गये । दो-तीन जगह् पालीमें बोलकर पूछना चाहा; पर न कोअी पाली ही समझनेवाला था, और न किसीका ध्यान ही हमारी ओर जाता था । अन्तमें पूछ-ताछकर मठके सबसे बूढ़े भिक्षुके स्थानपर गये । वे मूर्तिको सजा रहे थे । अुन्होंने हमारी ओर देखा, फिर आँखोंपर हाथ रखकर ग़ौरसे देखा और हाथके इशारेसे 'जाओ जाओ' करने लगे । हम लोग अपना-सा मुँह लेकर बाहर आये ।

सोचा, अब गाळी लेकर सगाअीं देख आना चाहिये । तीन रुपयेमें गाळी हुअी । जलपानके लिये पहले तो गाळीवाला अेक बर्मी भोजनालयमें ले गया; किन्तु वहाँ कुछ तैयार न था । अन्तमें अेक मदरासी ब्राह्मण-होटलमें गये । अिटली, दोसे और ख़ूब चरपरी मिर्चवाली चटनी मिली । किसी तरह कुछ निगलना ही था । खा-पीकर गाळी पर चढ़े । शहरके बाहर अभी निकले भी न थे कि मूर्तिकारोंके घर आने लगे । छोटी-बळी तरह-तरहकी बुद्ध-मूर्तियाँ तथा संगमरमरके खूँटे (अुपोसथागारकी सीमा बनानेके लिये) बन रहे थे । आश्चर्य और खेद दोनों हो रहा था । जब पासमें अमरपुर और आवाके अितने पुराने मन्दिर गिर पळ रहे हैं, तब उनकी मरम्मत न करके अिन नई मूर्तियों और नये मन्दिरोंके लिअे अितना प्रयत्न क्यों ? शायद अिसलिये कि वैसा करनेसे दाताकी अमर कीर्ति बनी रहे ?

सळककी दोनों ओर अिमलीके वृक्ष लगे हैं । अिन पुरानी राज-धानियोंको अिमलीसे कोअी ख़ास शौक़ मालूम होता है । माँडलेसे निकलकर बहुत दूर नहीं गये थे कि सहस्रों छोटे-बळे स्तूपोंवाली उजळी हुअी राजधानी अमरपुर आ गअी । अठारहवीं और अुन्नीसवीं सदीमें आवा (अेंवा), अमरपुर और अन्तमें माँडले, अेकके बाद अेक, बर्मा देशकी राजधानियाँ रही हैं । अमरपुरके खँडहरोंके साथ-साथ

हमें काफी दूर तक चलना पळा। फिर अिरावतीकी कुछ निचली भूमि पळी, और अन्तमें हम अिरावतीके पुलपर जा पहुँचे। पुल रेल और गाळी दोनोंके लिये है, और यह कुछ ही वर्ष पहले बना है। सामने अिरावतीके दाहने तटपर आवाके खँडहर हैं, अिसलिये पुल का नाम भी आवा-पुल है। पुलपर गाळी और आदमी दोनोंके लिये कुछ टैक्स लगता है। पार होकर दस बजेके क़रीब हम सगाअीं बाज़ार पहुँचे। हमको लोगोंने मदरासी समझा, और 'चेट्टी-फुँजी' 'चेट्टी-फुँजी' कहते हुये अेक मदरासी दूकानदारके पास ले गये। मालूम हुआ कि अुस घरके अेक चेट्टी सज्जन भिक्षु हो गये हैं, किन्तु उस वक्त वे घरपर नहीं थे। घरवालोंने खातिर की। दोपहरके भोजनका आग्रह किया। हम लोग दूसरी घोळागाळी लेकर सगाअीं पहाळीकी ओर चल पळे। गर्मी खोपळीको पिघला रही थी। अिस बारका गाळीवाला मनीपुरी ब्राह्मण था। उसने जनेअू और कंठी दिखलाकर सिद्ध कर दिया कि वह बर्मी नहीं, ब्राह्मण है। उसके पूर्वज बर्माके राजाओंके कालमें ही इधर चले आये थे। यद्यपि चेहरे-मुहरेमें कोअी फर्क नहीं मालूम होता; किन्तु यह लोग शादी-ब्याह आपस ही में करते हैं। सगाअीं बर्माका ऋषिकेश है। यहाँ बस सन्तोंके ही अखाळे हैं। टेढ़ी-मेढी पहाळियाँ हैं, जिनके अूपर-नीचे सभी जगह स्तूप और भिक्षुओंके आश्रम बने हैं। मैं जब पहुँचा तो गर्मीके दिन और दोपहरका समय था; पर वर्षा और जाळेमें यह स्थान जरूर रमणीय मालूम होता होगा। गोसाअीं—यही अुस ब्राह्मण तरुणका नाम था—हमें अेक हिन्दी और पाली-भाषा-भाषी भिक्षुके पास ले जाना चाहता था। अेक-आध जगह हमने भिक्षुओंसे पालीमें कुछ पूछा भी; लेकिन वे कुछ समझ ही न सकते थे। बस, गोसाअींका लेक्चर शुरू हो जाता था—'भारतके भिक्षु हैं कि कोअी अैसे-वैसे ? ये लोग क्या भारतीय भिक्षुके साथ पाली बोल सकते हैं।' अन्तमें हम अुस मठमें

गये, जहाँ अेक हिन्दी समझनेवाला भिक्षु रहता था; किन्तु भिक्षुका दरवाजा बन्द था। हाँ, जब गोसाओं आगे आश्रमकी ओर जा रहा था, तो देखा कि पासके मकानसे निकलकर अेक कुत्ता अुसके पीछे चुपकेसे जा रहा है। ज़रा नज़र दूसरी ओर चली गअी, अितनेमें देखा कि कुत्ता पीछेको भाग रहा है, और गोसाओं ऍळी पकळकर बैठ गया है। बिना भूँके काट खानेवाला कुत्ता था! अुसके दो दाँत ख़ूब धँस गये थे। बहुत खून बह रहा था। आश्रममें जाकर घावपर दवा लगवाअी गअी। वहाँ भी विद्या और भाव नदारद थे। गर्मी भी बहुत हो गअी थी, और ग्यारह बज रहा था, अिसलिये जल्दी ही लौटकर पेट पूजा करनी थी। अन्तमें वहाँसे लौटे। चेट्टीके यहाँ मदरासी भोजन हुआ। जाते वक्त हिदायत कर गये थे, अिसलिये मिर्च कम पळी थी। भोजनके बाद अपनी पहली गाळी ली और अुसी रास्ते माँडले लौट आये।

आर्य-समाजमें पहुँचनेपर दो बज चुके थे। रंगूनकी डाक सवा चार बजे जानेवाली थी। अितनेमें हम राजमहल देख आ सकते थे। यद्यपि माँडलेके पासका छोटा पर्वत भी दर्शनीय स्थान है; किन्तु अुसपर चढ़नेकी तबीयत न हुअी। सलाह हुअी, कुछ दर्शन आगेके लिये भी छोळना चाहिये। अिस वक्त किलेके भीतरके राजमहलको देखकर ही सन्तोष कर लेना चाहिये। आर्यसमाजमें हमारी कोअी खोज-ख़बर लेनेवाला न था। हमारा सामान उसी तरह खुली कोठरीमें पळा था। हमने गाळीपर सामान रखा और क़िलेकी ओर चल पळे। क़िलेकी दीवारें अब भी खळी हैं। बाहरी खाअींमें पानी भी है। भीतर वृक्ष और लम्बे-चौळे मैदान हैं, जो पोलो या टेनिस खेलनेके काममें आते हैं। क़िला काफी लम्बा-चौळा है। गाळी घूमते-घामते राजप्रासादके द्वारपर पहुँची। दो-तीन भारतीय खोंचेवाले कुछ बेंच रहे थे। गाअिडका काम गाळीवालेने ही किया। सभी महल लकळीके बने हुये हैं, जिनकी दीवारोंपर सोनेकी पत्रियाँ तथा कहीं-कहीं

चित्रकारी भी है। दरबार-घर, रानीका घर, राजाका घर आदि कितने ही घर हैं। किसी समय बर्माके राजा अिन घरोंमें कितनी शान-शौकतसे रहा करते होंगे! कितनों हीके भाग्योंका वारा-न्यारा यहीं होता रहा होगा, और आज यही स्थान तमाशागाह बने हुये हैं!

महलोंके बाद क्रीडा-पर्वतों और स्नानपुष्करिणियोंको देखते हुये अुस स्थानपर पहुँचे, जहाँ राजमहलके भीतरके हरअेक घर का नमूना बनाकर रखा है। फिर म्यूजियममें जाकर राजा, रानियों, राजकुमारों, सैनिकों और सेनापतियोंकी चित्र-विचित्र पोशाकें देखीं, और फिर क़िलेसे बाहरकी ओर चले।

सळकपर अेक दरवान भाअी अूखका रस पेलकर बेंच रहे थे। हमें भी प्यास लग रही थी। बर्फ डालकर दो-दो गिलास रस पिया, और स्टेशनको चल दिये। पहुँचनेपर अभी साढ़े तीन ही बजे थे। टिकट लेकर प्लैटफार्मपर गये। अेक छोटा डिब्बा बिलकुल ख़ाली देखा। भीतर-बाहर देख लिया, तीसरे दर्जेका था। निश्चिन्त हो, आसन बिछा-कर लेट रहे। कुछ सुल्तानपुर ज़िलेके भाअी भी थे, अुन्हें भी बुलाकर जगह दे दी गअी। बस, अब झाल-ढोलकी कसर थी। सोच रहे थे, आज तो बळी सुन्दर जगह मिली। अभी गाळीमें कितने ही मिनट बाक़ी थे कि गार्डने आकर कहा—'अिस गाळीसे अुतर जाओ, यह सर्वेन्ट क्लास है।' सर्वेन्ट क्लास बिलकुल अेक कोनेमें लिखा हुआ था, जिसकी ओर हमारा ध्यान ही नहीं गया था। ख़ैर, फिर दौळ-धूप शुरू हुअी। बळी मुश्किलसे अेक-अेक आदमीकी सीटवाली दो जगहें मिलीं। रातको सोने की आशा छोळ जाकर बैठ रहे। गाळी भी थोळी देरमें चली। रात-भर बैठे ही बैठे अूँघते हुये सवेरे आठ बजे हम रंगून पहुँच गये।

आजकी डाकसे बहुत-सा प्रूफ भारतसे आ गया था, अिसलिये ८, ९ और १० तारीख़का प्रायः सारा समय अुसे देखकर लौटानेमें लगा।

९ तारीख़की शामको स्थानीय आर्यसमाजके कुछ सज्जन तथा दूसरे भी लोग आये। मैंने उन लोगोंसे कहा कि वे गाँवोंमें बाल-बच्चों-सहित बसे हुये भारतीयोंकी शिक्षाकी ओर विशेष ध्यान दें। बर्मा-गवर्नमेन्ट प्राअिमरी शिक्षाके लिअे भारतीयोंपर भी काफ़ी रुपया ख़र्च करती है; किन्तु अुस फंडसे सिर्फ मुसलमान फायदा अुठाते हैं। अुनकी मस्जिदोंमें सब जगह स्कूल हैं, अुनका अलग अिन्स्पेक्टर भी है; किन्तु हिन्दू अुससे फ़ायदा नहीं अुठा सकते। गाँवोंके रहनेवाले भारतीयोंने कभी-कभी अपने पाससे ख़र्च करके अध्यापक भी रखे, किन्तु अुसका कोअी अच्छा फल नहीं हुआ। आर्यसमाजने हिन्दी-भाषा-भाषियोंकी-शिक्षाका काम विशेष तौरसे किया है। माँडलेमें अुनका अेक डी० अे० वी० हाअी-स्कूल है। रंगूनमें भी अेक डी० अे० वी० मिडल स्कूल है, जो कुछ समय बाद हाअी-स्कूल ज़रूर हो जायगा। आर्यसमाजके पास कार्यकर्ता भी हैं, यदि यह लोग गाँवके भारतीयोंकी शिक्षाकी ओर भी ध्यान दें, तो हिन्दी प्राअिमरी स्कूलोंको सरकारी सहायता आसानीसे प्राप्त हो जायगी। पत्र-व्यवहार तथा समय-समयपर अपने आदमियोंको गाँवोंमें भेजनेके लिए सौ सवा सौ रुपये सालानाका प्रबन्ध हो जानेसे काम चल सकता है।

१० अप्रेलकी रातको साहित्य-गोष्ठीका वार्षिक अधिवेशन हुआ। केवल अेक सालके भीतर दो-चार नवयुवकोंके अुत्साहने काफ़ी काम किया है। यदि गोष्ठी रंगूनके सभी साहित्य-प्रेमियोंको अेकत्रित कर सके, तो बळा काम हो।

२–जापानके रास्तेमें

मलायामें—पेनाङ् और सिंगापुर

११ अप्रेलको रंगूनसे खंडाला जहाज पेनाङ्के लिये रवाना होनेवाला था। चौबीस रुपयेपर डेक्का टिकट मिला। सवेरे ६ बजे ही हम दोनों—मैं और श्रीजगदीश काश्यप—घाटपर पहुँच गये। अेक घंटा डाक्टरी परीक्षा, टीका तथा कपळोंको भाप देनेमें लग गया। हम लोग कुछ साफ-सुथरे थे तथा टीका भी हमारा पहलेका मौजूद था, असलिये दिक्कतसे बच गये। छोटे अगिनबोटमें बैठकर खंडालापर पहुँचे। वह किनारेसे कुछ हटकर लंगर डाले खळा था। अिस जहाज़में हमें पानीके नलके पास जगह मिली। तलाशा, किन्तु यदि सूखी जगह मिलती भी थी, तो वहाँ हवा बिल्कुल न थी। अन्तमें अुसी जगह गुजर करनेका निश्चय किया। ११ अप्रेलसे १४ अप्रेलके सवेरे तक खंडालाके अिसी डेक्पर रहे। यद्यपि समुद्रने जरा भी गुस्ताख़ी न की, फिर भी हमारी गत बन गअी। बग़लका नल सारे डेक-का गुस्लखाना था, जिससे बराबर छींटे अुळा करते थे। यदि कहा न जाता, तो सारा बिछौना भींग जाता। ११ तारीखकी दिन-रात तो किसी तरह कटी। १२ तारीखको सवेरेके नाश्तेके समय कुछ तबीयत भारी मालूम होने लगी। शामको ज़ोरका बुखार चढ़ आया। हमने "ज्वरे लंघनमौषधं" निश्चय किया। दूसरे दिन काश्यप भी हमारे साथी बन गये। फिर तो खाने-पीनेकी चिन्ता ही जाती रही; किन्तु साथ ही

यात्राके आनन्दसे भी हम वंचित हो गये। १३ अप्रेलकी रातको तो सामने वर्षाकी फुहार अितनी ज़ोरसे आअी कि हमारे कपळे भींग गये। काश्यप चाहते थे, कि खुली जगह बन्द कर दी जाय; किन्तु दूर रहनेवाले सज्जनका आग्रह था कि हवा रुक जानेसे उन्हें गर्मी लगने लगेगी। काश्यपको अुस वक्त खूब ज्वर था। खैर कुछ देर बाद वर्षा बन्द हो गअी।

१४ अप्रेलको सवेरे ही जहाज़ पेनाङ्ग जा पहुँचा। डाक्टरने पेनाङ्गके सभी यात्रियोंको कोराटीन (सिर्फ टीनके मकान होनेसे पंजाबी भाअियोंने 'क्वैरन्टाअिन'को यही नाम दे रखा है) भेज दिया। हम लोग अेक नावपर लद-लदाकर कोराटीनवाले टापूकी ओर चले, जो बन्दरगाहसे पाँच मीलपर है। पहले हमारे कपळोंको भापमें दे दिया गया। फिर क़तारमें खळा करके सबके चेचकका टीका लगाया गया, और बादमें दवा मिले हुअे गर्म पानीसे नहलाकर सबको निकाला गया। अैसा करनेमें तकलीफ तो होती है; पर हमारे साथके बहुतेरे यात्रियोंके समान गन्दे कपळोंको लेकर चलनेवालोंके लिये और किया ही क्या जा सकता है? सारे समाजके स्वास्थ्यके लिये कुछ आदमियोंकी असुविधापर कैसे ध्यान दिया जा सकता है? अिन बातोंसे छुट्टी पाकर हम लोगोंको कोराटीनवाले घरमें जगह मिली। तब तक ११ बज चुके थे। साथी लोग कह रहे थे कि अभी तीन दिन तक कोराटीन ही में रहना होगा। पता लगानेपर मालूम हुआ, यहाँ टेलीफोन है। ज्ञानोदय अेसोसियेशनकी सळकपर अेक पंजाबी सरदार साहबकी दूकानका पता डायरेक्टरीसे मालूम हुआ। ज्ञानोदयवालोंको अपनी मुसीबतकी खबर देनेके लिअे फोन किया।

तीन दिन तक यात्रियोंको अिस कोराटीनमें रखा जाता है, और तीनों दिन मेहमानोंकी खातिर सरकारकी ओरसे होती है। आटा-दाल सभी चीज़ें मुफ्त मिलती हैं। फोन करके हम लोग आकर मन मारके बैठ रहे। काश्यपको यद्यपि हमसे अधिक ज्वर था, तो भी देखा कि

बुखार अुतरते ही अुन्हें भूख ज़ोर करने लगती थी। वस्तुतः हमारे काश्यप अुन आदमियोंमें हैं, जिन्हें पता ही नहीं होता कि भूखका स्थान पेटमें है, या जीभकी जळमें। अपने रामने तो ज्वरके नामपर ५० घंटे-का अुपवास करना निश्चय किया था, जो अब समाप्त हो चुका था।

बारह बजे हम लोट-पोट कर रहे थे कि सिपाहीने आकर कहा—"आपके दोस्त लोग आ गये; चलिये, आप लोगोंको जाना होगा।" बात-की-बात ही में हमारा सामान बँध गया, और हम घाटपर खळे अेक स्वच्छ सुन्दर अगिनबोटपर जा पहुँचे। भिक्षु गुणरत्न और कुछ चीनी बौद्ध सज्जनोंने स्वागत किया। वे लोग समझ रहे थे कि हम लोग द्वितीय श्रेणीके यात्री होंगे। जब उन्होंने हमें जहाज़से अुतरते न देखा, तो तलाश शुरू हुई, और मालूम हुआ कि हम कोराटीन भेज दिये गये। फिर आज रविवार था, डाक्टरके घरपर दौळ-धूप हुअी, और अुन लोगोंको सवेरेसे अब तक इसी तरद्दुदमें पळा रहना पळा। यदि हमने रंगूनसे भेजी चिट्ठीमें डेक्से आनेका जिक्र कर दिया होता, तो न हमें कोराटीनमें ही जाना पळता, न मित्रोंको ही तरद्दुद अुठाना पळता।

हमारे ठहरनेका प्रबन्ध पेनाङ्‌-बुद्धिस्ट-अेसोसियेशनमें किया गया था। यह यहाँकी अेक बळी धनाढ्य संस्था है। अिसका मन्दिर बहुत ही सुन्दर, अत्यन्त स्वच्छ तथा कलापूर्ण है। भीतर घुसते ही चित्त प्रसन्न हो जाता है। भिक्षुओंके रहनेके लिअे भी बळे सुन्दर कमरे हैं। अितने कष्टके बाद अितने स्वागतसे सारी तकलीफें भूल गअीं। ५६ घंटे बाद थोअुसे दूधसे अुपवास तोळा।

पेनाङ्‌ प्रायः डेढ़ सौ वर्गमीलका अेक द्वीप है। द्वीपमें पहाळ भी है और मैदान भी; किन्तु है बळा ही हरा-भरा और अिसीलिये बहुत सुन्दर है। पेनाङ्‌, मलक्का और सिंगापुर—अिन्हीं तीनोंको मिलाकर स्ट्रेट सेटलमेन्ट्स कहा जाता है। भाषाकी दृष्टिसे वे मेले (मलाया) देशके अंग

हैं। मेले देशका बाक़ी भाग राजाओं या सुल्तानोंका है जिनमें कुछ रियासतें संघबद्ध हैं, अिन्हें फेडरेटेड् मेले-स्टेट्स कहते हैं। जोहोर जैसी कुछ रियासतें संघबद्ध नहीं हैं, अिन्हें अन्-फेडरेटेड् स्टेट्स कहते हैं। स्ट्रेट सेटल्मेन्ट्स्का गवर्नर ही फेडरेटेड स्टेट्सका हाअी-कमिश्नर है, और वही बाक़ी रियासतोंका भी अन्तिम अधिकारी है।

पेनाङ्ग यद्यपि मेले या मलायु देशमें है, पर यहाँकी बस्तीमें अधिक संख्या चीनियोंकी है। दूसरा नम्बर शायद भारतीयोंका होगा। मेले लोग बहुत कम दिखाअी पळते हैं। बर्मी लोगोंकी भाँति मेले भी कम मेहनती तथा आरामपसन्द हैं। आजके कमाये हुये पैसेको कलके लिये रख छोळना हराम समझते हैं। इसीलिये अपने ही देशमें वे अितने अपरिचित हो गये हैं। मेले देशमें रुपयेके लेन-देनमें मदरासी चेट्टी पहले नम्बर पर आते हैं, लेकिन प्रायः सारा व्यापार चीनी लोगोंके हाथमें है। यह चीनी दक्षिणी चीनके अमोअि-प्रान्तसे आये हुये हैं। अिनकी भाषा होकियन् कही जाती है। चीनके सभी लोगोंमें अमोअि-निवासी बौद्धधर्ममें अधिक अनुराग रखते हैं। अिनमें धार्मिक जाग्रति हो गअी है, और परिणाम-स्वरूप जगह-जगह बुद्धिस्ट अेसोसियेशन तथा मन्दिर स्थापित होते जा रहे हैं। धार्मिक कामोंमें धन देनेके लिये भी ये तैयार हैं, किन्तु-सुशिक्षित अुपदेशकों का अुनमें बळा अभाव है। ये लोग बहुत ख़र्च करके चीनसे अुपदेशक मँगाते हैं, पर वे अेक तो वैसे शिक्षित नहीं होते, और दूसरे अेकआध वर्ष ही में लौट जाते हैं। अिन चीनी बौद्धोंमें रहते हुये मुझे बारबार ख़याल आता था, क्या भारत अिन्हें अुपदेशक नहीं दे सकता! जिस भारतने इस बृहत्तर भारतको बनाया, अुसका कुछ कर्त्तव्य तो ज़रूर है।

मेलेका यह सारा प्रदेश पहले स्याम राज्यमें था, जिससे अिसे अंगरेज़ोंने लिया, अिसीलिये यहाँ स्यामी बौद्ध-मन्दिर मिलते हैं। आजकल

तो स्यामकी क्रान्तिके कारण बहुतसे राजवंशीय तथा दूसरे प्रभावशाली स्यामी अिधर ही चले आये हैं। कुछ स्यामी मन्दिरों और अुनके भिक्षुओंको देखा। वही बर्माके भिक्षुओं-जैसी हालत है। मन्दिर क्या हैं, पैसा कमानेकी दुकानें हैं, और वह तो सभी धर्मोंमें है। अेक मन्दिरके भिक्षुओंने आपसमें झगळा कर लिया है, जिसके कारण सरकारको मन्दिरकी सम्पत्तिको सँभालना पळा है।

अिस यात्रामें भिक्षु जगदीश काश्यप भी मेरे साथ जापान जाना चाहते थे, किन्तु अुन्हें पासपोर्ट न मिल सका। फलत: काश्यपको यहीं छोळकर आगे चलनेका निश्चय करना पळा। काश्यप जापान जाकर चीनी साहित्यका अध्ययन करना चाहते थे, यहाँके लोगोंने भी वैसा प्रबन्ध कर देनेके लिये कहा है। १७ तारीखको महायान-हीनयानपर मैंने अेक व्याख्यान दिया, और पेनाङ्से विदाअी मिल गअी।

पेनाङ्की खाळी पारकर प्राअी नामक स्टेशन है। १८ अप्रेलको सवेरे कुछ मित्र रेल तक छोळनेके लिए आये। रेल ९ बजे मिली। पेनाङ्से सिंगापुरका सेकेण्ड क्लासका किराया १५ डालरसे कुछ अूपर (प्राय: २२ रु०) है। १७ घंटेके रास्तेके लिये यह भाळा अधिक नहीं है। यहाँ तीसरे और दूसरे दर्जेके किरायेमें दूने ही का फर्क है, अिसीलिए दूसरे दर्जेमें भी यात्री बहुत होते हैं। भारतीय रेलें भी ड्योढ़े दर्जेको हटाकर अैसा ही कर सकती हैं; किन्तु भारतमें तो मालूम होता है कि आदमियोंको आने न देना दर्जोंके क़ायम करनेका खास मतलब है। यहाँ रेलके डब्बे यूरोपीय रेलोंकी सफाअी आदिके आदर्शपर बनाये गये हैं। ट्रेनमें ही भोजनकी गाळी है, जिसका आदमी फल और पीनेकी चीज़ें लेकर घूमता रहता है।

दिनका समय था। मलयुकी श्यामल भूमिको देखकर बहुत आनन्द आया। कहीं सूखी भूमि देखनेको नहीं मिलती थी। मीलों रबर या



३--सिंगापुर--मेले लोगोंके घर (२२)

नारियलके बग़ीचे चले गये थे । कहीं-कहीं टीनकी खानोंकी खुदाअी दीख पळती थी । टीनको निकालनेमें भी सोनेकी ही प्रक्रियाका अनुकरण करना पळता है, अर्थात् पानीसे धोकर टीनको अलग करना । टीनकी खानें ७५ फी-सदी अंगरेज़ोंके हाथमें हैं, और २० फी-सदी चीनियोंके हाथमें ।

क्वालालम्पोर फेडरेटेड्-मेले-स्टेट्सकी राजधानी है । हमारी गाळी वहाँ ६ वजे शामको पहुँचनेवाली थी । वहाँसे आगेके लिये दूसरी गाळी १० बजे रातको मिलती थी । मित्रोंने वहाँके बुद्धिस्ट अेसोसियेशन तथा बौद्ध स्टेशन-मास्टर—दोनोंको सूचना दे रखी थी । प्लैटफार्मपर लोग मौजूद थे । मेरे कपळोंके कारण पहचाननेमें दिक्कत न हुअी । मोटरसे बौद्ध-मन्दिरमें गये । चीनी और सिंहाली—दोनोंका सम्मिलित मन्दिर है । लंकाके तीन भिक्षु अुसमें रहते हैं, जिनमें ज्येष्ठ भिक्षु अधिक संस्कृत हैं तथा काममें लगन भी रखते हैं । अुस दिन पूर्णिमाका दिन था, मन्दिरके भीतर-बाहर श्रद्धालुओंने बहुतसे दीपक जला रखे थे । मुझसे भी कुछ अुपदेश करनेके लिये कहा गया । जो आया, सो कह दिया ।

श्री चेतसिंह जायसवाल (श्रद्धेय काशीप्रसाद जायसवालके ज्येष्ठ पुत्र) मेले हीमें बैरिस्टरी करते हैं । अुनका केन्द्र मलक्कामें है । अुनसे मिलनेकी बळी अिच्छा थी; किन्तु अुसके लिये प्रधान लाअिन छोळकर दूर जाना पळता । अिधर ज्वर और निर्बलतासे हिम्मत भी ढीली पळ गअी थी । पेनाङ्गसे दो-तीन चिट्ठियाँ छोळ दी थीं, और ट्रेनका पता देकर मिलनेको लिख दिया था । मैं समझ रहा था, मुकदमेमें कहीं फँसे होंगे । आनेकी फ़ुर्सत कहाँ मिलेगी । चित्त बळा ही आनन्दित हुआ, जब आठ बजे देखा कि वे पहुँच गये । रास्तेमें अनकी मोटर ख़राब हो गअी थी । अेक बार तो उन्हें आशा भी छोळ देनी पळी थी । श्री

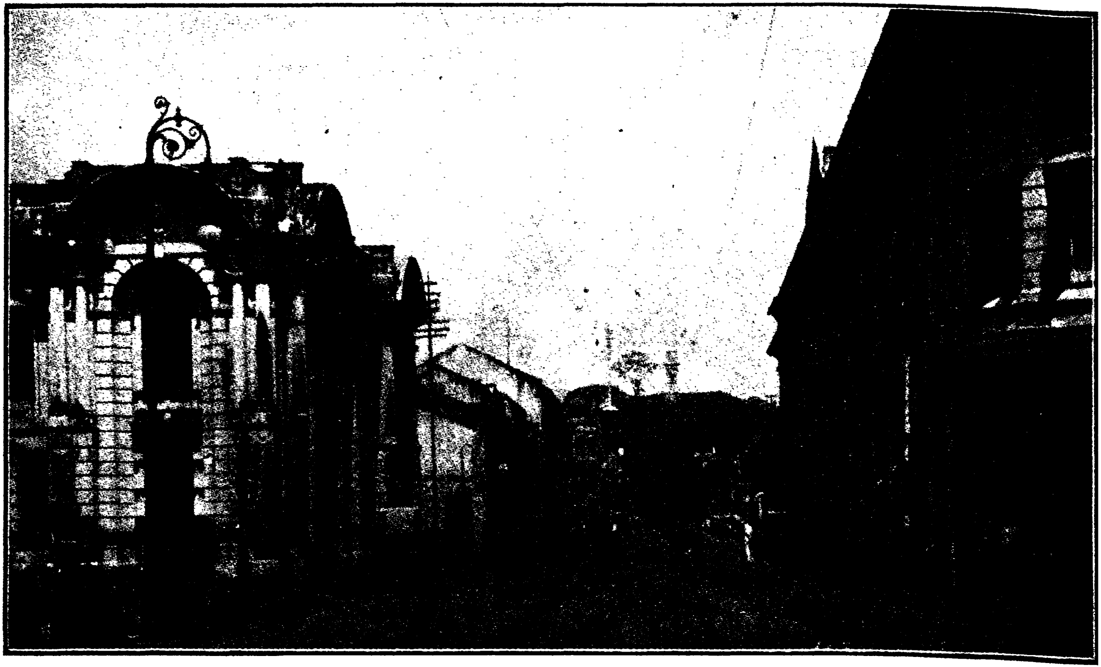
चेतसिंहसे मलायाके बारेमें बहुत बातचीत होती रही। अपने पिताकी भाँति ही चेतसिंहजी भी बळे विद्याव्यसनी हैं। सांस्कृतिक कार्योंकी ओर अुनमें काफी लगन है। अैसे आदमियोंके भारतसे बाहर रहनेपर भारतको लाभ ही होगा।

क्वालालम्पोरसे हमें रात-भर चलना था, अिसलिये सोनेकी गाळीका प्रबन्ध किया गया था। सारी ट्रेन ही गद्दा-तकिया लगाकर सोनेवालोंके लिए तैयार कर दी गअी थी। कुछ दूर तक चेतसिंहजीका साथ रहा, फिर अुसके बाद सो गये। सवेरे अुजाला होते वक्त देखा, हमारी ट्रेन जोहोर पार कर रही है। सिंगापुरकी खाळीपर पुल बँध गया है, अिसलिये रेल सिंगापुर तक पहुँच जाती है। ६ बजे सवेरे सिंगापुर पहुँचे। यहाँ भी स्टेशनपर सिंगापुर बुद्धिस्ट अेसोसियेशन और अिन्ट-र्नेश्नल् बुद्धिस्ट अेसोसियेशनके सभापति और मंत्री आ गये थे।

सिंगापुर बहुत बळा शहर है। इसके बळे-बळे आलीशान मकान और चौळी स्वच्छ सळकें यूरोपके नगरोंकी याद दिलाती हैं। यहाँ भी चीनी जनता बहुत अधिक दीख पळती है। भारतीय भी बहुत काफ़ी हैं; किन्तु वे अधिकतर दरवान, पुलिसमैन या दूध बेचनेका काम करते हैं।

दिन तो हमने अैसे ही बिताया। शामको शहर देखने निकले। अेक स्यामी बौद्ध-मन्दिर देखा। भद्दी मूर्तियाँ बनानेमें ये लोग भी उस्ताद हैं। फिर अेक सुनसान रास्तेसे चीनी बौद्ध-मन्दिर देखने गये। मन्दिर विशाल और कलापूर्ण है। यद्यपि अुसमें अुतनी सफाअी नहीं है, और आजकल अुदास-सा है, तो भी किसी समय बहुत धन खर्च करके अुसे बनाया गया था।

२१ अप्रेलको हमारा जहाज़ अन्यो-मारू आनेवाला था, इसलिए २० अप्रेलको ही हमें यात्राका सारा प्रबन्ध करना था। हमको डरा



४—सिंगापुर—शहरकी अेक सळक (पृ० २३)

दिया गया था कि पासपोर्टकी देखा-देखीमें यहाँ काफ़ी देर होती है। अुस दिन शनिवारको ओीस्टरकी छुट्टी थी, तो भी अेक छोटा आफ़िस खुला मिला। पूछनेपर मालूम हुआ, ब्रिटिश पासपोर्टके लिये लिखने-पढ़नेकी कोअी आवश्यकता नहीं। जहाज़की कम्पनी निप्पोन् यूसेन् कैशा (NYK) के दफ़्तरमें गये, पाँच-सात मिनटमें ही टिकट मिल गया। सिंगापुरसे कोबे (जापान)का द्वितीय श्रेणीका किराया ११ पौंड है। धर्मोपदेशक होनेके कारण मुझे १० फ़ीसैकळेकी रियायत मिली, अिस लिये कुल १३२) रुपये देने पड़े। कम्पनीवालोंने कहा—'अन्यो-मारू कल सवेरे आयेगा; किन्तु सिंगापुरसे रवाना होनेकी सूचना हम कल ही दे सकेंगे।'

सिंगापुरमें कितने ही बौद्ध-मन्दिर हैं। अिन्टर्नेश्नल् बुद्धिस्ट यूनियन 'पीस' (Peace) नामक अेक अंगरेजी मासिक पत्र भी निकालती है। बौद्धधर्मपर कितनी ही छोटी-छोटी पुस्तिकायें भी अुसने छापी हैं, तो भी बौद्धोंका प्रचारकार्य नहींके बराबर है। किया क्या जाय, योग्य शिक्षा-प्राप्त कार्यकर्ताओंकी हर जगह कमी है।

२१ अप्रेलकी दोपहरको मालूम हुआ कि अन्यो-मारू आज ५ बजे सिंगापुर छोळेगा। २॥ बजे मैं भी बोरिया-बँधना बाँधकर जहाज़पर जा पहुँचा। मेरे लिये जापानी जहाज़के सफरका यह पहला ही अनुभव था। फिर भी कर्मचारियोंका बर्ताव बहुत अच्छा दीख पळा। जिस केबिनमें जगह मिली, अुसमें अेक मदरासी सज्जनका पहलेहीसे डेरा पळा हुआ था। शाम तक सभी सेकेण्ड क्लासके यात्रियोंसे भेंट हो गअी। तेरह यात्रियोंमें दो जापानी, अेक आस्ट्रियन और दस भारतीय थे। भारतीयोंमें पाँच मदरासी ब्राह्मण, दो बंगाली, दो बम्बअी-निवासी, पारसी और अेक मैं हिन्दी-भाषा-भाषी।

यद्यपि अन्यो-मारू ५ बजे चलनेवाला था; किन्तु वह ६॥ बजेसे पूर्व रवाना न हो सका। दूसरा काम तो दीख नहीं पळता था। हाँ, यह

देख रहे थे कि कूळेपर फेंके हुये लोहेके टुकळों और टीनकी कतरनोंको वह धळाधळ लाद रहा है। उस वक्त मुझे लंकाकी बात याद आ गई। वहाँ हमारे विद्यालंकार-विहारके पास ही रेलकी लाअिनकी पास-वाली खाअीमें कितने ही वर्षोंसे हर साल रेलके कारखानेके हज़ारों मन लोहेके टुकळे फेंके जाते थे। अुसका कोअी अुपयोग होगा, यह कोअी जानता भी न था। अन्तमें न-जाने कहाँसे अिस बातकी ख़बर किसी जापानी सौदागरको लगी, और सारा लोहा वहाँसे अुठ गया। जापान धातुओंके सम्बन्धमें दरिद्र है—विशेषकर लोहेके बारेमें, अिसीलिये वह जहाँ-तहाँसें अिसे जमा करता है। मंचूरियामें अुसे कुछ लोहेकी खानें मिली हैं; किन्तु वहाँके लोह-पत्थर अुतने अच्छे नहीं हैं। ख़ैर, शामको जहाज़ने लंगर अुठाया, और हमने भी मलयु देशको नमस्कार कहा।

३—जापानके रास्तेमें

हाङ्-काङ्

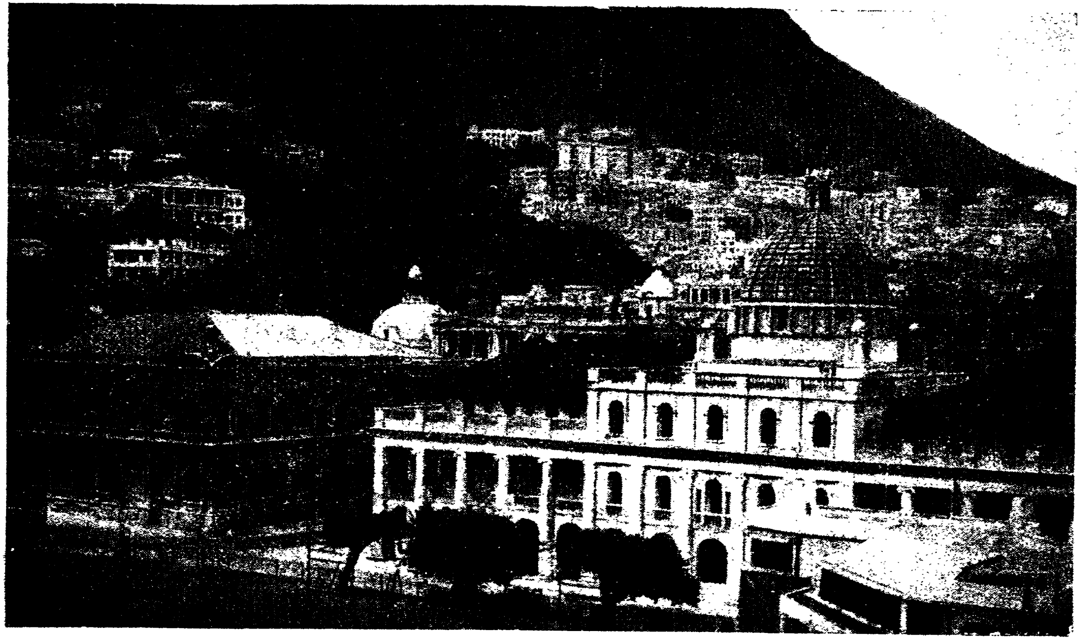
सिंगापुरसे २० अप्रेलकी शामको अन्यो-मारू जहाज़ रवाना हुआ। २१ अप्रेलको तो हमें कुछ करना न था। हमारी कोठरीमें, मालूम हुआ, श्री जी० वेंकटाचलम्के अतिरिक्त अेक मदरासी डाक्टर भी हैं। श्री वेंकटाचलम् अंगरेज़ीके लेखक हैं। बग़लकी कोठरीमें दूसरे मदरासी सज्जन श्रीरामस्वामी अय्यर अपनी स्त्री और कन्याके साथ थे। अय्यर महाशय मद्रासके सर्वेके असिस्टेन्ट डाअिरेक्टरके पदसे पेंशन पाये हुए हैं। उनसे हमारा बहुत काम निकला। तिब्बतमें प्राप्त 'वादन्याय' (आचार्य धर्म-कीर्तिके न्यायग्रन्थ) का दूसरा प्रूफ आया था। अिस बार हमें अुसे फोटो-कापीसे मिलाना था, क्योंकि हमने बोलकर लिखाया था, जिससे बहुत-सी भूलें हो गअी थीं। २२ तारीखसे हमने अुसमें हाथ लगाया। बृहत्प्रदर्शक सीसेसे फोटो देखना, फिर दूसरे हाथसे प्रूफ-संशोधन करना आसान काम न था। बहुत समय लगता था, और आँखों और दिमागको काफी परि-श्रम पळता था। अय्यर महाशयने छपी कापीको देखनेका काम ले लिया। अिस प्रकार अिस काममें बहुत आसानी हो गअी। अब दो ही दिनका काम रह गया है। अिधर जहाज़में हमारी दिनचर्या यों रही है:—६ बजे अुठना, दातवनके बाद स्नान करना, फिर चायरोटीका नाश्ता, अिसके बाद घंटे-भर कुछ मनबहलाव। आठ बजे बळे नाश्तेका बाजा बजता है, हाँ,

घंटी नहीं। अिसकी जगह जापानी जहाज़ोंमें लोहेकी कळियोंवाला बाजा ही बजता है। अिस नाश्तेको भोजन ही समझिये। तीन-चार तरहके मांस, मछली, साग-भात, फल आदि रहता है। कमज़ोरीके कारण २३ तारीख तक हमने मध्याह्न-भोजन-परित्यागके नियमको छोळ रखा था। २४ तारीखसे अिस बळे नाश्तेसे पूरा फायदा अुठाया जा रहा है। भोजनके बाद 'वादन्याय'के प्रूफ देखनेका काम होता है। छै ताळपत्रोंको समाप्त करनेमें तीन घंटे लगते हैं। अिसके बाद थोळी देर मनबहलाव होता है, और फिर बारह बजे मध्याह्न-भोजनका बाजा बजता है। अिसमें सवेरेसे कुछ-अधिक भोजन-प्रकार होते हैं। भोजनोपरान्त दो घंटा विश्रामके बाद तीन बजे चाय पीकर 'वादन्याय'में लग जाते हैं। ६ बजे शामके भोजनमें हमारे भाग्यमें आअिस्क्रीम ही रहता है। रातको फिर बारह बजे तक लिखना-पढ़ना होता है। कल तो रातके ढाओी बजे सोना नसीब हुआ।

जब चीनी यात्रियोंने भारत-यात्रा की थी, या जब हमारे पूर्वज जावा, चम्पा, चीनकी सामुद्रिक यात्रा करते थे, अुस समय अुसमें कितना खतरा था। पाल और बादबानके भरोसे काम चलता था। दिशाके लिये तारों और सूर्यका मुँह देखना पळता था। हवा न रहनेपर भी अुस समयकी काठकी समुद्रतरी खूब नीचे अूपर होती थी। हवा चलनेपर तो जानपर आफत। यदि कहीं दिशा भूल गओी, या हवा प्रतिकूल हो गओी, तो कितने भारी संकटका सामना था। मीठा पानी खतम हो जानेपर पानीमें प्यासों मरना पळता था। चट्टानसे टकराने और आँधीसे अुलटनेपर तो आरोहीमात्रका रामनाम सत्य होना अनिवार्य ही था। लेकिन आजकल ? बादबानकी आवश्यकता नहीं। हवा प्रचण्ड भी रहे, तो भी कोओी हर्ज़ नहीं। ज़्यादा-से-ज़्यादा जी मिचलायेगा, समुद्रके कच्चे मुसाफिरोंको कै होगी और अुन्हें उपवास करना होगा। दिशा

भूलनेकी गुंजाअिश् ही नहीं। नक्शा सामने है। स्थानीय काल तथा ग्रीनविच् जैसे किसी स्टेन्डर्ड कालको बतलाने वाली सच्ची घळियाँ मौजूद हैं, जिनसे निश्चित् स्थानको जाना आसान है। यदि कोअी गळबळी हुई तो बेतारके-तारसे पूछ लिया। पानी और दूसरे सामान बहुत ज़्यादा परिमाणमें रखे रहते हैं। डूबनेके वक्तके लिये नौकायें और जीवनरक्षिणी पेटिकाअें मौजूद हैं। अब खतरा तो हज़ारमें अेक हिस्सा भी नहीं रह गया। रात-दिन अिंजन चल रहा है, और ११–१२ मील फी-घंटेकी चालसे हम अग्रसर हो रहे हैं। यहीं रोज़की विशेष ताज़ी ख़बरें रेडियोसे मिल जाती हैं। सेकेण्ड क्लासमें तो नहीं, किन्तु फर्स्टक्लासमें शायद नाच आदिका भी सुभीता है। बिजली और पंखेसे अँधेरे और गर्मी दोनोंका त्रास जाता रहा है। अब आजकलकी यात्रासे पहलेकी यात्राओंका मुकाबला ही क्या हो सकता है ?

और हमारी अिस यात्रामें तो समुद्र प्रशान्त है। देखनेसे मालूम होता है, समुद्र नहीं, कोई तलैया है। घर छानेकी टीनकी तरहकी ज़रा-ज़रा-सी लहरें हैं। पानीके धक्केकी अपेक्षा तो अिंजनकी गनगनाहटसे ही जहाज़ अधिक कम्पित होता है। कल तक अेक ही सा काम था। आज छै बजे सवेरे हमारा जहाज़ हाङ्‌-काङ्‌के बन्दरमें पहुँचा। खाळीके भीतर पहुँच जानेपर तो मालूम ही नहीं होता, कि हम समुद्रमें हैं। जान पळता है, चारों ओर पहाळोंसे घिरा अेक विशाल सरोवर है। सर्दी नहीं है, नहीं तो हम अिसे तिब्बतका युम्-डोक्-छो समझते। सवेरे, दस-ग्यारह बजे, तक आकाशमें बादल रहा। पहाळोंपर जब-तब अुसकी पतली चादर फैल जाती थी, अिसलिअे फोटो लेनेकी गुंजाअिश न थी। अैसे भी हाङ्‌-काङ्‌ अंग्रेज़ोंका समुद्री दुर्ग है। चारों ओर क़िलेबन्दी है। फोटो लेनेकी कळी मनाही है। सभी जगहके लिअे तो नहीं, किन्तु कहाँ फोटो लिया जा सकता है, अिसका जानना आसान नहीं। अुसका अुतना अफसोस भी



५---हाङ-काङ---शहरका अेक दृश्य (पृ० ३१)

नहीं, क्योंकि शहरमें अच्छे-अच्छे फोटो आसानीसे मिल गअे। लोगोंकी सलाह हुअी, बळे नाश्तेके बाद चला जाय। भोजन हुआ, और ९ बजे मोटर-नौकापर हम किनारेकी ओर चले। हाङ्ग-काङ्गमें समुद्रके कम गहरे होनेसे जहाज़ किनारे तक नहीं जा सकता। हम पानीकी ओर देख रहे थे। जहाँ-तहाँ महासमुद्रगामी जहाज़ खळे हैं; कोअी सफ़ेद है, कोअी काला; किसीका पृष्ठ अूँटकी तरहका है, किसीका हाथीकी तरहका। कहीं-कहीं अेकाध अंग्रेज़ी सैनिक जहाज़ भी हैं, जिनका बाहरी भाग आलमोनियम् की तरहका सफ़ेद तथा तोपोंके रखनेके छिद्र बहुत-सी आँखोंकी तरह जान पळते हैं। बीच-बीचमें सैकळों छोटी-बळी मछुओंकी नावें हैं, जिनमें काला कोट, पायजामा पहने चीनी मल्लाहिनें मज़ेसे पतवार चलाती दीख पळती थीं। हमारी मोटर-नौकाकी भाँति और भी कितनी ही मोटर-नौकाअें यात्रियोंको लेकर या तो किनारेसे किसी जहाज़की ओर दौळ रही थीं, या जहाज़से किनारेकी ओर।

हमारे जहाज़से किनारा अेक मीलसे कम ही रहा होगा। तटपर दूर तक हाङ्ग-काङ्ग शहरकी विशाल अिमारतें हैं, जिन्हें देखनेसे जान पळता था, कि हम यूरोपके किसी मार्सेल्‌में पहुँच गअे हैं। व्यापारियोंकी बळी-बळी कोठियाँ तो आधुनिक अमेरिकन या जर्मन मकानोंके ढंगपर बनी हैं। आठ और दस मंज़िलके मकान बहुतसे हैं। शहरके पीछे हरे-भरे पहाळ तथा अुनपर सीढ़ी-दर-सीढ़ी चली गअी कोठियाँ अत्यन्त सुन्दर मालूम होती थीं; और, अुस सवेरेके कुहरेमें तो पर्वतमालिनी हाङ्ग-काङ्ग नगरी कोअी स्वप्नकी नगरी-सी प्रतीत होती थी। थोळी ही देरमें हम किनारेपर पहुँच गअे। जेटीपर हज़ारों स्त्री-पुरुष थे। कहाँ सौ दो सौ चीनी चेहरोंका देखना और कहाँ शहरका शहर! तुरन्त ख़्याल हुआ कि हम चीनमें आ गअे। जेटीसे अेक सळक पार करते ही हम लोग डाक-ख़ानेमें पहुँचे। हमारे साथियोंको चिट्ठियाँ छोळनी थीं। छोळ तो वे

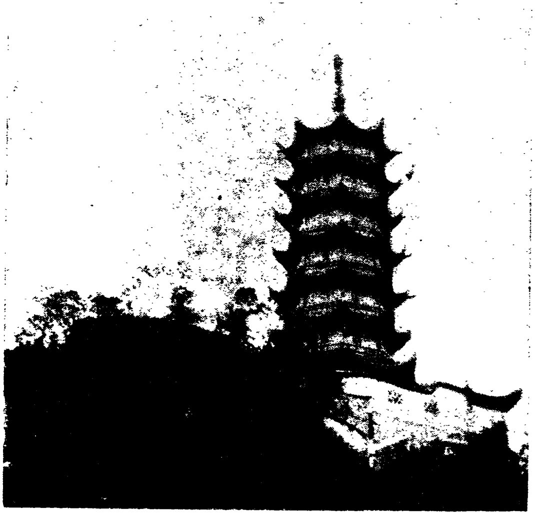
जहाज़ के डाकखानेमें भी सकते थे; किन्तु शहर-दर्शनके काममें वे अिसे भी शामिल करना चाहते थे। टिकट माँगनेपर आदमीने कहा कि हाङ्-काङ्का सिक्का लाअिअे। सराफकी दूकान बहुत दूर न थी। हमने भी दस येन्का नोट देकर चार डालर लिअे। हाङ्-काङ्का डालर लगभग १॥।~) के बराबर है। हमारे पारसी साथीके अेक सम्बन्धी घाटपर ही मिल गअे थे। हमें बारह बजे तक तीन काम करने थे—पर्वत-शिखरपर चढ़ना, नगरकी सैर करना और कुछ ख़रीद-फरोख़्त करना। पहले पर्वत-शिखरपर चलनेकी सलाह हुअी। दूसरी सळक पार करके हम पर्वत-पादपर पहुँच गअे। बग़ल़में हाङ्-काङ्-शंघाअी बैंककी नअी अिमारतका अूपरी हिस्सा बन रहा है। यह हाङ्-काङ्की सबसे बळी और अूँची अिमारत है। पहाळकी जळमें बहुतसे खटोले लेकर कहार बैठे थे। हमें अुनकी ज़रूरत न थी। थोळा अूपर चढ़ना पळा। आसपास सभी सरकारी अिमारतें थीं। अेक छोटे मैदानमें अंगरेज़ सैनिक क़वायद कर रहे थे। अेक-आध घरोंको पार करके हम शिखरगामिनी ट्रामके स्टेशनपर पहुँचे।

हाङ्-काङ्में नीचेकी ट्राम अलग है। और यह ट्राम लोगोंको शिखर-पर ले जाती है, जो अेक हज़ार फीटसे अधिक अूँचा है। पहाळ अेकदम खळा न होकर तिरछा है, अिसीलिअे मार्सेल्-सा अुठन-खटोला न बनाकर यह ट्राम बनाअी गअी है। हर दस मिनटपर ट्राम छूटती रहती है। ट्रामकी लाअिनके दोनों तरफ़ बँगले और मकान हैं, अिसलिअे बीचमें चार स्टेशन हैं। स्टेशनका बटन दबाते ही ट्राम खळी हो जाती है; और, लोग अुतर कर अपने घरोंमें चले जाते हैं। स्थानीय पारसी सज्जनसे मालूम हुआ कि, पहाळके अूपर यूरोपियनोंको छोळकर दूसरा कोअी घर नहीं बना सकता, चाहे वह कितना ही धनी क्यों न हो। सफ़ाअी और सामाजिक व्यवस्थाके लिअे शायद अैसा करना पळा हो! हाँ, यह कहना भूल ही

गअे कि, हाङ्-काङ् अंगरेज़-सरकारके हाथमें है, प्रायः सौ वर्ष (१८४१ अी.) से। तीस सेन्ट देकर हम ट्राममें बैठे। वह अूपर चलने लगी, और हम खिळकीसे बाहर देखने लगे। हम जितना ही अूपर जा रहे थे, उतना ही हमारे देखनेका क्षेत्र बढ़ता जाता था। नीचेके पर्वत-भाग, वृक्ष, वनस्पति, स्वच्छ सुन्दर मकान, फिर निचला तटवर्ती शहर और अुसके बाद खाळीका जल——बहुत सुन्दर दृश्य था। तिरछे चढ़ते वक्त अपनी गाळीके तिरछेपनपर तो हमारा ख़याल जाता न था, बल्कि हमें जान पळ रहा था कि, मानो सारे मकान ही झुककर सलामी दे रहे हैं। खाळीके जलका पिछला भाग अगलेसे बहुत अूपर अुठा हुआ मालूम होता था।

शिखरपर चढ़नेमें देर न लगी। यहाँ भी आसपास सरकारी और ग़ैरसरकारी अिमारतें हैं। बग़लमें ही पीक्-होटल है। हम लोग स्टेशन से निकलकर कितनी ही दूर तक पगडंडीपर चले। शहर, खाळी, पर्वत-माला और नौकाओं-जहाजोंके झुंडको देखा। साथियोंने दृश्यके सौन्दर्य की दाद दी——'Lovely, Most wonderful, Excellent' की आवाज बारी-बारीसे निकल रही थी। हमारे कन्धेसे केमरा लटक रहा था, किन्तु वहाँ सरकार और सूर्य-देवता दोनों प्रतिकूल थे। पहाळी रीढ़की दूसरी ओर जाकर देखा, मकान कम थे; किन्तु पहाळका सौन्दर्य वैसा ही था। दूर, नीचे अेक छोटी-सी झील थी।

देखना ख़त्म हुआ। हम फिर आकर ट्रामपर बैठे। टिकट नया लेना पळा। कुछ ही मिनटोंमें नीचे पहुँच गअे। फिर सलाह हुअी, दूसरा नम्बर शहर देखनेका होना चाहिअे। पारसी सज्जनने बतला दिया था कि, सत्ताअीस मीलका चक्कर है, चार-साढ़े-चार डालरमें छै आदमियों-के लायक़ मोटर मिल जायगी। मोटरोंका अड्डा दूर न था। मोटरवाले-



६—चीन—अेक बौद्ध स्तूप (पृ० ३३)



७—हाङ-काङ—चीनी मुहल्ला (पृ० ३५)

ने पहले दस डालर माँगे। हमने चार कहा। कुछ और कम किया। हम आगे चल दिये। फिर पाँचपर आया, और फिर कुछ चलनेपर साढ़े चार डालर तै हुआ। पाँचों मद्रासी सज्जन और मैं—सब छै आदमी थे। हाङ्ग-काङ्गमें बहुतसे सिक्ख तथा दूसरे पंजाबी पुलिस-कान्स्टेबिल और दरवानीका काम करते हैं। अेक कान्स्टेबिलने ड्राअिवरको चीनी भाषामें समझा दिया।

१० बजे मोटर रवाना हुअी। अँगरेज़ी ढंगकी दूकानोंको छोळ हम चीनी महल्लेमें घुसे। यहाँ भी मकान चौमहले-पंचमहले थे; किन्तु भिन्न-भिन्न प्रकारके साअिनबोर्डोंकी छटा अलग ही थी। साअिनबोर्ड लोहे-लकळीके तो थे ही; किन्तु अुनसे कहीं अधिक लम्बे लटकनेवाले साअिन-बोर्ड थे। वे दस-दस पन्द्रह-पन्द्रह हाथ लम्बे लटक रहे थे। अुनमें कोअी कपळेपर था, और कोअी ढालोंकी माला जैसा मालूम होता था। अैसा प्रतीत होता था कि सारा शहर किसी महान् अुत्सवके लिअे ध्वजा-पताकाओं-से अलंकृत किया गया है। सळकपर सैकळों आदमी चल रहे थे। छोटे पैरोंवाली स्त्रियोंको हमने बहुत खोजा; किन्तु वैसी कोअी दीख नहीं पळी। हाँ, अँगरेज़ स्त्रियोंके ढंगपर बाल कटाये लम्बे चोगे तथा हाफ्-पैन्ट पहने बहुत-सी चीनी स्त्रियाँ जा रही थीं। ये नअी रोशनीकी स्त्रियाँ थीं। पुरानी स्त्रियोंने बाल नहीं कटाअे हैं। श्रमजीविनी स्त्रियोंके सिर पर या तो बाँसकी टोकरी जैसा हैट था, या जालीदार गोल टोकरी जैसा कपळेका हैट। हाङ्ग-काङ्गकी सळकें बहुत सुन्दर हैं। शहरसे बाहर-की ओर आते ही हाङ्ग-काङ्ग विश्वविद्यालय और अुसके कालेज दिखाअी पळे। अेक कंकरीटकी सफेद विशाल अिमारत दिखाअी दी। भ्रम हुआ, किसी व्यापारीकी कोठी होगी; किन्तु नहीं, यह रोमन कैथोलिक अीसाअी पादरियोंका अिंडस्ट्रिअल स्कूल है। दर्जी-क्लास हमने सळकपरसे ही

देखा। रास्तेमें और भी कितने ही ओसाअियोंके स्कूल, कालेज, कान्वेन्ट अित्यादि मिले। सळककी अेक ओर अेक विस्तृत क़ब्रगाह मिली, और अूपरकी ओर दूसरी ओसाओ क़ब्रगाह दिखाओ पळी।

हाङ्-काङ्में ओसाओ मिशनोंका बहुत काम है। अुन्होंने चीनमें लाखों ओसाओ बनाअे हैं। यह देखकर ख़्याल हुआ—किसी समय हमारे सैकळों भारतीय विद्वान् यहीं धर्म-प्रचारके लिअे आये थे। अुन्होंने भारतके लिअे अेक विशाल धार्मिक साम्राज्य क़ायम किया था। पश्चिमी हिस्से तो कभीके अुसके हाथसे निकल गअे; किन्तु अब अिस पूर्वीय हिस्सेमें भी अैसी अवस्था! यूरोप—जळवादका अड्डा—तो धर्मके लिअे अितना करे तथा अपनी संस्कृति और प्रभावका अितना विस्तार करे और भारतकी अर्जित कीर्ति दिन-पर-दिन क्षीण होती जाय! भारतके अच्छे दिनोंकी यह निशानी क्या लुप्त हो जायगी? क्या भारतके नाम-का गुणगान पूर्वी अेसियासे भी वैसे ही लुप्त हो जायगा, जैसे अफ़ग़ा-निस्तान और तुर्किस्तानसे? मालूम हुआ, अिधर चीनके बौद्धोंमें भी जाग्रतिके लक्षण अुदय हो रहे हैं; लेकिन सिर्फ़ धन और श्रद्धा ही काफ़ी नहीं है। संगठन और योग्य कार्यकर्ता कहाँसे आवें? क्या भारत अैसे दो-चार दर्जन नौजवानोंको दे सकता है, जो अपने पूर्वज धर्म-प्रचारकोंकी भाँति आकर यहाँकी भाषा सीखें और यहीं बस जायँ? किसी भी दृष्टिसे देखनेसे भारतके लिअे यह कार्य कम लाभदायक न होगा।

•

जिस पहाळकी जळमें शहर है, अुसकी परिक्रमामें बहुत-सी बस्तियाँ हैं। कहीं बाज़ार है, कहीं मछुओंकी नावोंके गाँव हैं, कहीं फलोंके बगीचे हैं और कहीं तरकारियोंके खेत। सब्ज़ी और तर-कारी पैदा करनेके बारेमें चीनी जाति शायद अपना सानी नहीं

रखती। रास्तेमें हमें वह तालाब भी मिला, जिसका पानी सारा हाङ्-काङ् शहर* पीता है।

दूर और नज़दीककी फ़ौजी मोर्चाबन्दी, होटल, विनोदशाला और आपाद शिखर पर्वतकी हरीतिमा देखते साढ़े ग्यारह बजे हम फिर अुसी स्थानपर पहुँच गअे। साथियोंको जो चीजें ख़रीदनी थीं, वे अुन्होंने ख़रीद लीं, और हम लोग फिर घाटपर आ पहुँचे। मोटर-नौकाके लिअे थोळा अिन्तजार करना पळा; अन्तमें हम मध्याह्न-भोजनके समयपर अन्योमारू-पर आ गअे।

कल रातको ढाअी बजा दिया था, अिसलिअे भोजनके बाद सो गये। अुठे तो देखा, तीन बज रहा है, और हमारा जहाज खाळी छोळ समुद्रमें जा रहा है।

*** हाङ्-काङ् द्वीप दक्षिणी चीनके क्वान्-तुङ्-प्रान्तके दक्षिणमें (अक्षांश २२.२२° और देशान्तर ११३°) है। सन् १८४१ में यह अँगरेजोंके अधिकारमें आया। यह १० मील लम्बा और २॥ से ५ मील तक चौळा है। —लेखक**

४ – जापानके रास्तेमें

शाङ्-घाअी

अन्योमारू
२-५-३५

२८ अप्रेलको अुठकर केबिनके छिद्रसे देखा। आसमानमें कुहरा छाया हुआ था। कहाँ मअीका महीना और कहाँ कुहरा! प्रायः दिन भर कुहरा ही रहा। जहाज़ हर दस-दस मिनटपर अिसलिअे भोंपू बजाता था कि, अँधेरेसे आकर कोअी जहाज़ टकरा न जाय। आवाज़ अच्छी नहीं मालूम होती थी। मालूम होता था, जंगलमें कोअी भैंस अकेली पळ गअी है, और चिल्ला रही है।

२९ तारीखको दोपहरको हम २६° अक्षांशमें जा रहे थे, अर्थात् प्रायः बनारसके बराबरके। अुस वक्त बनारसमें कैसी गर्मी पळती होगी, दोपहरको घरसे बाहर निकलना कितना मुश्किल होता होगा, यह तो वहाँके रहनेवाले ही जानते होंगे। यहाँ दोपहरको भी टेम्परेचर सिर्फ ६३ डिग्री था। मालूम होता था, गर्मीका मौसिम है ही नहीं। मुझे तो रह-रहकर भ्रम हो जाता था कि, हम दक्षिणी गोलार्द्धके २६° अक्षांशमें तो नहीं जा रहे हैं।

३० तारीखको सर्दी और अधिक बढ़ गअी। डेकपर जानेपर मालूम होता था, हम बनारसके माघ-पूसमें हैं। आज १२ बजे

हमारा जहाज याङ्-सी महानद और सागरके संगमपर पहुँचा। याङ्-सीकी महाजल-राशिने समुद्रके जलको अपना रंग दे रक्खा है। आज हमें रास्तेमें बहुत-से द्वीप मिले। सभी थे पहाळी। दाहनी ओरके द्वीपकी खाळीमें सैकळों मछुआ नौकाअें थीं। बाओीं ओर दूर, पीछेकी ओर हटकर, समुद्रमें अेक पहाळ दिखाओी पळ रहा था। हमारे आस्ट्रियन साथी हर् हन्कल् बतला रहे थे कि, वह रमणीय द्वीप बौद्ध-मठोंसे भरा है और अुसका नाम 'पोतो' है। ल्हासामें भी मैंने सुना था कि चीनमें भी पोतला-नामका अेक द्वीप है, जिसपर बहुतसे मठ और मन्दिर हैं और जो बहुत हरा-भरा है। शायद वह यही पोतो-द्वीप होगा।

पानी सभी जगह अेक-सा न था। कहीं अुथला पानी न आ जाय और जहाज वहीं फँस जाय, अिसलिअे अन्योमारू देर तक मार्गदर्शक स्टीमरकी प्रतीक्षा करता रहा। कुछ दूर तक याङ्-सीमें चलनेके बाद वह बाओीं ओरसे आनेवाली बाङ्-पू नदीमें मुळा। यह नदी छोटी है। शाङ्-घाओी अिसी नदीके तटपर बसा हुआ है। यद्यपि जहाज अँधेरा होते ही शाङ्-घाओी पहुँच गया था, तो भी अुस वक्त हम क्या देखते? और फिर यह चीन है। शाङ्-घाओीके विदेशी अधिकृत भागसे भी तो डाकू आदमियोंको पकळ ले जाते हैं। हमारा प्रूफ देखना समाप्त हो गया था। हमने अुसके और यात्राके प्रथम खंडका पार्सल बना लिया। चिट्ठियाँ भी तैयार कर रक्खीं।

१ ली मअीको बळा-नौश्ता साढ़े सात बजे मिल गया। अेन्० वाओी० के० जापानकी सबसे बळी जहाज़ी कम्पनी है। अिसके जहाज सातों समुद्रोंमें बराबर घूमा करते हैं। यहाँ शाङ्-घाओीमें नदी-के दोनों तरफ अिसके कितने ही बळे-बळे गोदाम हैं। अुस वक्त हमारा जहाज नदीके दाहिने तटपर खळा था। अिस तरफ भी कुछ

बस्ती है, किन्तु असली शहर नदीके बायें तटपर है । यहाँ कपळा बुननेके कअी जापानी कारखाने हैं । अन्योमारू बम्बअीसे हजारों गाँठें रुअी लाया था । वह धळ-धळ अुतारी जा रही थीं । नौ बजे हमें पार जानेकी मोटर नौका मिली । नदी बहुत चौळी नहीं है । कलकत्तेकी भागीरथीसे आधी होगी । लेकिन जहाजों, अगिनबोटों, मोटर-नौकाओं तथा नावों और डोंगियोंकी भरमार है । यहाँ **डालर लाअिन** का पैसेंजर-जहाज खळा है और वहाँ फ्रेंच **मेसाजिरी मारीतीम्**का विशाल जहाज । परले पार सफेद जापानी गन्-बोट तोपोंसे सुसज्जित खळे हैं । पारके घरोंके शिखर गगन-चुम्बन कर रहे थे । विशेषकर सासून बिल्डिग । यह बीस मंजिला मकान अिस ओर पूर्वका सबसे अूँचा मकान समझा जाता है । यह अुसी यहूदी सासून-खानदानका मकान है, जिसकी कितनी ही कपळेकी मिलें बम्बअीमें चल रही हैं । हम लोग चुंगीवाली जेटी-पर गये ।

शाङ्-घाअी शहर तीन भागोंमें बँटा है——अिन्टर्नेश्नल्-कन्सेशन्, फ्रेंच-कन्सेशन् और बृहत्तर शाङ्-घाअी । पहला भाग अँगरेज़ोंने १८४२ अीसवीमें लिया था । अुस समय शाङ्-घाअी अेक छोटा-सा-ग्राम था । पीछे फ्रांसवालों और अमेरिकनों तथा दूसरी जातियोंको भी हिस्से मिले । बादमें फ्रांसवालोंको छोळ बाकीने अपने हिस्से अेकमें कर दिअे और अुसका 'अिन्टर्नेश्नल्-कन्सेशन्' नाम रक्खा । तो भी अिस भागपर अँगरेजों-का ही सबसे अधिक प्रभाव है । अिसका अेक प्रमाण यह है कि हाङ्-काङ्-की तरह यहाँ भी सळकोंके चौराहोंपर सिक्ख कान्स्टेबुल ही रास्तेकी व्यवस्था करते हैं । बृहत्तर शाङ्-घाअी खास चीनी नगर है । सन १९३२ में जापानकी तोपोंने यहीं प्रलयकाण्ड मचाया था ।

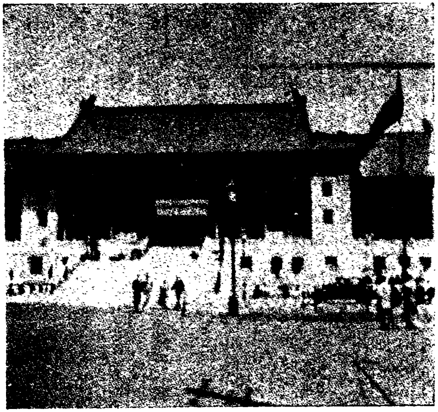
हमारे सामनेकी सळकपर सैकळों मोटर और रिक्शा खळे थे । बैजनाथके पंडोंकी भाँति अुन्होंने हमें घेर लिया । अेक टैक्सीवाला तीन

डालर घंटेके हिसाबसे शहर दिखलानेके लिअे तैयार था। अेक डालर आज कल प्राय: अठारह आनेका है । लेकिन हमें पहले डाकखानेसे निपटना था । पासमें ही 'नार्थ-चाअिना-डेली न्यूज़'की विशाल अिमारत थी । हाङ्-काङ्के बाद समाचार पत्र पढ़नेको नहीं मिला था और चीनके सम्बन्धमें कुछ साहित्य भी लेना था; अिसलिअे हम पहले वहाँ गअे। अिसका साप्ताहिक 'नार्थ-चाअिना-हेरल्डके नामसे निकलता है । दो संख्याअें साप्ताहिक और अेक दैनिक की लीं । चीन संबंधी कोअी अच्छा साहित्य नहीं मिला। रास्तेमें अेक सरदार साहबसे बळे डाकख़ानेका रास्ता पूछा। अुन्होंने बळी नम्रताके साथ बतलाया। डाकख़ाना दो घुमावोंके बाद था। यह मुहल्ला खास कर बळी-बळी योरपीय कम्पनियोंका है। आलीशान मकानों-में चीज़ें खूब सजाकर रक्खी गअी हैं । खैर, घूम-घामकर हम वहाँ पहुँचे। तीन पार्सल और छै: चिट्ठियाँ डालीं । (हाङ्-काङ्से भी कोअी चिट्ठी नहीं डाली थी) । वहीं अेक सरदार साहबसे भेंट हो गअी । अुन्होंने ३ डालर घंटेपर टैक्सी कर देने को कहा । हमने पहले समझा, शायद कोअी हिन्दुस्तानी ड्राअिवर होगा । लेकिन टैक्सीके अड्डेपर जानेपर मालूम हुआ चीनी है, और अँगरेज़ीके दो-अेक शब्द ही जानता है। पासमें ही अेक हिन्दुस्तानी होटल था, जहाँ हमने खाना खानेके लिअे कहला दिया ।

दस बजे हम शहर देखने चले । दो घंटेमें सब देख लेनेका निश्चय हुआ । तीस लाखकी आबादी (कलकत्ता और बम्बअी दोनों मिलाकर भी अुतने नहीं) का शहर क्या दो घंटेमें देखा जा सकता है ? पहले हमारी टैक्सी बृहत्तर शाङ्-घाओी (चापअि)की ओर चली। रास्तेमें जापानी अड्डा मिला। सैनिक मोटर (आर्मर्डकार) तोपोंके साथ तैयार खळे थे। कुछ ही आगे म्यूनिसिपल बाग़ है । भीतर जानेके लिअे कुछ सेंट देने पळते हैं । भीतर गये । अधिक मैदान और कुछ वृक्ष हैं । अुस

वक़्त बंदूक लिये हुअे चीनी सिपाही लुकाछिपी खेल रहे थे। चीनी सिपाहियों और अुनके जनरलोंके बारेमें बादमें कहेंगे। यहाँ अितना ही कहना है कि, यद्यपि देखनेमें वे मोटे-ताज़े मालूम होते थे; किन्तु कपळोंके पहनावे और दौळनेसे तो महादेव बाबाके बरातियोंसे कुछ ही आगे मालूम होते थे।

थोळा ही आगे जानेपर खेत आ गये। हरे गेहूँ लहरा रहे थे। होला खानेके लिये मन हो आया था। यहाँ जहाँ-तहाँ जापानी तोपोंका लंका-कांड दिखलाअी पळ रहा था। किसी मकानकी आधी दीवार खळी है, किसीके जँगले और दरवाज़े टूट-फूट गअे हैं, किसीके सामनेसे देखनेसे बहुत कम नुक़सान मालूम होता है, लेकिन छत गिर गअी है। ध्वस्त मकानोंमें कहीं-कहीं जली लकळियोंका कोना भी दीवारोंमें लगा दिखाअी दे रहा था। आगे चीनकी राष्ट्रीय सरकारकी कुछ अिमारतें थीं। दूर, हरे खपरैलकी चीनी ढंगकी अेक विशाल अिमारत थी। हमारी टेक्सी वहाँ पहुँची। छत और सामनेकी दीवारें दोनों ही चीनी शिल्प-कलाके आधुनिक नमूने हैं। कितने ही पुलिस और फ़ौजी सिपाही दिखाअी पळे। दर्शकोंको भीतर जानेकी अिजाज़त न थी। होनी भी नहीं चाहिअे। कहीं आफ़िस भी अजायबघर होते हैं! अेक फोटो लिया और फिर लौट पळे। अिस अुजळी भूमिमें राष्ट्रीय सरकार सळकें बनवा रही है। अेक जगह नये शहरकी स्कीमका नक़शा भी देखा। बळा भारी आयोजन है। अब फिर हमें जले और टूटे मकान मिलने लगे। बहुत-से मकानोंको लोगोंने फिरसे बनवा लिया है और बहुत-से वैसे ही खळे हैं। अेक सीमेंटकी दीवार वाले अूँचे मकानको सूना खळा देखा। मालूम होता है, मकान कुछ ही समय पूर्व बनकर तैयार हुआ था। गोलोंके जगह-जगहपर निशान थे। छत जहाँ-तहाँ टूट गअी थी। जान पळता है, मालिकके पास फिरसे बनानेके लिअे रुपया नहीं रह गया।



८——शाङ-घाओ——चीनी सरकारका भवन (पृ० ४२



९——तोक्यो——बालसैनिक मिचुयोशी (पृ० ७९)

फिर घनी बस्ती मिली, 'अिन्टर्नैश्नल्-कन्सेशन्'में आये। यहाँ सिक्ख पुलिसमैन मिले। मोटरों और राहगीरोंके चलनेकी व्यवस्था करनेके लिये यहाँ यंत्रसंचालित हरी, लाल रोशनियाँ थीं। चीनी मुहल्लेमें हाङ्-काङ्की भाँति विज्ञापनों और साअिनबोर्डोंकी रंग-बिरंगी सजावट थी। शाङ्-घाअीके चीनी लोगोंमें विशेषकर मध्यम श्रेणीके लोगोंमें बिगळे हुअे पाश्चात्य फैशनका खूब प्रचार है। अधिकांश स्त्रियाँ बाल कटाये मिलेंगी। मक्केके भूयेकी भाँति रूखे अेक-अेक बीता लम्बे अुनके बाल गर्दनपर दूर तक बिखरे हुअे थे, जो बहुत ही बीभत्स-से मालूम होते थे। टोपी नहीं पहनती हैं, नहीं तो शायद वे अितनी बीभत्स न मालूम पळतीं। अूपरसे पैर तक लम्बा बिना कमरबन्दका अुनका जातीय अँगरखा रही-सही कमीको पूरी कर देता है। यदि किसीने बिना मोज़े का हाफ़पेंट पहन लिया तो फिर पूछना ही क्या? और अैसोंकी संख्या यहाँ काफी है (यद्यपि हाङ्-काङ् जैसे नहीं, क्योंकि शाङ्-घाअीमें अभी काफ़ी जाळा है) अिसके विरुद्ध आप शाङ्-घाअीकी जापानी स्त्रियोंको देखिअे (यहाँ १८,८०० जापानी बसते हैं)। अुनका सुन्दर कमर-पट्टीसे बँधा किमोनो और केशोंकी सज्जा बिलकुल ही दूसरे तरहकी है।

पीछे हम 'फ़्रेंच कन्सेशन्' में गये। सब पास ही पास हैं। फ़्रेंच और अिन्टर्नैश्नल्-कन्सेशनोंमें कोअी फ़र्क़ नहीं है।

१२ बजेसे कुछ पहले ही हम हिन्दुस्तानी भोजनालयमें पहुँच गये। पंजाबकी प्यारी माह (अुळद)की दाल, अेक तरकारी, चपाती, चावल और मांस तैयार था। भोजन हुआ। अेक गिळास दहीकी लस्सी पीनेको मिली। भोजनालयके बारेमें पता लगा कि, अिसे कअी आदमी मिलकर चलाते थे। आपसमें झगळा हो गया। मामला अदालतमें जाना चाहता था; परन्तु हालमें हिन्दुस्तानियोंके अेक मुक़द्दमेमें जजने बळी कळी टिप्पणी की थी, अिसलिये आपसमें समझौता करनेके लिये हिसाब-किताब

तैयार हो रहा है। झगळेसे पहले, कहते हैं, डेढ़ सौ डालर तककी रोज बिक्री हो जाया करती थी। हिन्दुस्तानियोंकी संख्या शाङ्-घाओीमें दो हज़ारसे ज़्यादा है।

छः आदमीके भोजनपर साढ़े चार डालर (५ रुपयेसे अधिक) ख़र्च हुअे। फिर हम लोग जहाज़-घाटकी ओर चले। चीनी चित्रोंकी आजकल यहाँ अेक प्रदर्शनी हो रही थी। हमारे पास घंटा भरका समय था। साथी लोग चित्र देखने गये, और हम जेटीपर जा अखबार पढ़ने लगे। मोटर-नौकाके आने में अभी कुछ देर थी।

राष्ट्रीय सरकारके प्रधान जनरल चाङ्-कै-शकने साम्यवादियोंके प्रति जहाद बोल रक्खी है। आज-कल अख़बारोंको सबसे अधिक सामग्री अुसीसे मिल रही है।

१६४४ ओीसवीमें (अर्थात् अकबरके मरनेसे ३९ वर्ष बाद शाहजहाँके समकालमें) चीनमें छिन् या मंचू-वंशका राज्य* स्थापित

***चीनके अैतिहासिक राजवंश अिस प्रकार हैं—**

चिन्	२५५ ओी० पू०—२०६ ओी० पू०
हान् (पश्चिमी)	२०६ ओी० पू०—२५ ओी०
हान् (पूर्वी)	२५ ओी०—२२१ ओी०
तीन् क्षुद्र राज्य	२२१ ओी०—२६५ ओी०
चिन् (पश्चिमी)	२६५ ओी०—३१७ ओी०
चिन् (पूर्वी)	३१७ ओी०—४२० ओी०
उत्तर-दक्षिण-विभाग	४२० ओी०—५८९ ओी०
सुई	५८९ ओी०—६१८ ओी०
थाङ	६१८ ओी०—९०७ ओी०

हुआ। तबसे १९११ ओसवीतक मंचू-वंशका शासन चीनपर रहा। यूरोपियनोंसे बार-बार हारने तथा नअी शिक्षाके प्रचारसे चीनके नवयुवकोंमें नअी अिच्छा और नअी लहर पैदा हुअी। अन्तमें १९११ ओसवीमें मंचूवंशका अन्त करके चीनमें प्रजातन्त्रकी स्थापना की गअी। किन्तु साधारण जनतामें न वैसा ख़याल था और न अुतनी जागृति। अब प्रजातन्त्रकी ओरसे या पहलेसे नियुक्त गवर्नर मनमानी करने लगे। अुनके लिअे चीनी प्रजातन्त्रका कोई अस्तित्व न था। प्रजाका रक्त चूस-चूसकर अपनी थैली भरना तथा पल्टनोंका संग्रह करके आपसमें लळते रहना, बस अितना ही काम था। जहाँ किसीने अपने भाग्यको पल्टा खाते देखा कि, वह भागकर शाङ्-घाई चला आया, जहाँ घर और बैंकमें रुपयेका पहलेसे ही प्रबन्ध रहता है। डाक्टर सुन्-यात्-सेन् चीनी प्रजातन्त्रके जन्मदाता कहे जाते हैं। लेकिन प्रजातन्त्र स्थापित होनेपर उसकी बागडोर यु-आन्-शिकाओके हाथमें चली गअी। यु-आन्-शिकाओने महायुद्धके समय अपनेको सम्राट् भी अुद्घोषित किया; किन्तु वह कुछ ही महीनोंमें मर गया। अुस समय सुन्-यात्-सेन्ने दक्षिणमें

पाँच वंश	**९०७ ओ०—९६० ओ०**
ल्याउ	**९०७ ओ०—११२५ ओ०**
ल्याउ (पश्चिमी)	**११५२ ओ०—११६८ ओ०**
चिन् (काँचन तातार)	**१११५ ओ०—१२६० ओ०**
सुङ	**९६० ओ०—११२७ ओ०**
सुङ (दक्षिणी)	**११२७ ओ०—१२८० ओ०**
युआन् (मंगोल)	**१२८० ओ०—१३६८ ओ०**
मिङ	**१३६८ ओ०—१६४४ ओ०**
छिन् (मंचू)	**१६४४ ओ०—१९११ ओ०**

स्वागत करते हुअे कहा—"ओः सरदार साहब! आज बळे तळके आना हुआ। मैं आपके अुत्साहकी तारीफ़ किये बिना नहीं रह सकता। आज मुझे आपसे कअी क़ायदोंके बारेमें कहना है। मेरे बर्ताव कभी-कभी रूखे मालूम हुअे होंगे। क्या करूँ, मेरा स्वभाव कुछ वैसा हो गया है। मैं अुसके लिए क्षमा माँगता हूँ और आशा है सरदार साहब मुझे क्षमा करेंगे।"

किरा योशीनकाके अिस नम्रतापूर्ण बर्ताव और चापलूसी-भरे शब्दोंसे सरदार कामेअीका गुस्सा अुतर गया और उसने किराके मारनेका सङ्कल्प छोळ दिया।

थोळी देर बाद सरदार असानो नगानोरी भी आ गये। किराका अुनके साथ आजका बर्ताव और भी बुरा था। वह बात-बातपर अुन्हें झिळकता था। सरदार असानो अुसे चुपचाप सहते जाते थे। किराके बर्तावमें अिस परिवर्तन होनेकी अपेक्षा और अभद्रता आती जाती थी। थोळी देर बाद अुसने कहा—"सरदार असानो! मेरे मोज़ेका फ़ीता खुल गया है, कृपया इसे बाँध दीजिये।"

सरदार असानोको अपना क्रोध रोकना मुश्किल हो रहा था, तो भी अुन्होंने अुसे दबाकर फीतेको बाँध दिया। किराने अिसपर भी वाग्बाण छोळने शुरू किये—"कैसे मूर्ख हो, तुम्हें फीता बाँधनेका भी शअूर नहीं। कोअी भी आदमी देखकर कह सकता है कि तुम निरे गँवार हो, तुम्हें येदोके रीति-रिवाजका बिलकुल ज्ञान नहीं है।" यह कह वह भीतरके कमरेमें जाने लगा।

सरदार असानो अब और अधिक अपनेको रोक नहीं सकते थे। वह चिल्ला अुटे—

"सरदार किरा! थोळा ठहरो।"

"क्या है?" कहकर जिस वक्त सरदार किराने मुंह अुधरको फेरा, देखा सरदार असानो कृपाण निकाले अुसपर प्रहार करना चाहता है।

सौभाग्यसे सरदार किराके सिरपर अुस वक्त दरबारी लोहेकी टोपी थी, अिसलिअे सरदार असानोका वार चेहरेपर एक हल्के-से घावके अतिरिक्त और कुछ नहीं कर पाया। सरदार किरा भाग निकला। असानोने दूसरा वार किया, किन्तु वह जाकर खम्भेमें लगा। उसी समय काजीकावा योसोवेअी नामके एक अफ़सरने आकर असानोको रोक लिया। इस प्रकार किरा भाग जानेमें समर्थ हुआ।

अिस घटनासे सारे महलमें तहलका मच गया। असानोको गिरफ़्तार-कर अुसका हथियार छीन लिया गया और अुसे क़ैद कर दिया गया। असानोके अपराधका फ़ैसला करनेके लिअे न्याय-सभा बैठी। चूँकि असानोने शोगुनके महलमें हथियार निकाला था, अिसलिअे यह अपराध बहुत भारी समझा गया, और फ़ैसला सुनाया गया कि असानो हराकिरी (पेटमें कृपाण मारकर आत्महत्या) करे, अुसकी सम्पत्ति जब्त की जाये।

सरदार असानोने हराकिरी की। अुनकी सम्पत्ति जब्त हो गअी। अुनका ख़ानदान बर्बाद हो गया, और अुनके अनुचर रोनिन् (बेमालिक) हो गये, अुनमेंसे कुछने दूसरे सरदारों (दाअिमिओ)के यहाँ नौकरी कर ली, और कुछ व्यापारी बन गये। अिन अनुचरोंमें सरदार असानोका प्रधान दरबारी ओअिशी योशीकाने था। जिस दिन सरदार असानोके साथ वह घटना हुअी, अुस समय योशीकाने येदोमें न था। यदि वह वहाँ होता, तो अुसने भेंट-नजर भेजकर किराको ठीक कर लिया होता। अब अुसने असानोके ४६ और सामुराअियोंके साथ मिलकर प्रतिज्ञा की कि हम किराको मारकर अपने मालिकका बदला चुकायेंगे। कुछ समय तक वे दाँव ढूँढ़ते रहे, किन्तु सरदार किरा बहुत सजग रहता था, वह जानता था कि असानो-के आदमी अुसपर वार करेंगे। मौक़ा न पानेपर अुन सैंतालीस सामुरा-अियोंने आपसमें सलाहकर कोई अुनमें बढ़अी बन गया, कोअी लुहार, किसीने बनियाका काम शुरू किया, और योशीकाने स्वयं क्योतो चला

गया। वहाँ अुसने यमाशीना मुहल्लेमें अपने लिअे अेक घर बनाया, और खुलेआम शराबमें मतवाला हो वेश्याओंके साथ रहने लगा।

किरा बेफ़िक्र न था। वह असानोके आदमियों, विशेषकर योशीकानेपर बराबर ध्यान रखता था। अुसने क्योतोमें भी अपने भेदिया रख छोळे थे। जब अुसने यह ख़बर सुनी तो अुसकी चिन्ता कुछ दूर हो गअी।

योशीकाने शराबका मतवाला बना था। अेक दिन वेश्याके यहाँसे अितनी शराब पीकर लौटा कि सळकपर बेहोश हो गिर पळा। रास्ता चलनेवाले अुसे देखकर हँसी करते थे। अुस समय सचुमाका अेक सामुराअी अुधरसे निकला, अुसने यह देख, पैरसे ठोकर मारकर घृणापूर्वक कहा—"क्या यही वह सरदार असानोका दरबारी ओअिशी योशीकाने है? कायर पशु! अपने मालिकका बदला न लेकर रण्डी और शराबपर मर रहा है। छिः छिः, हरामख़ोर, नमकहराम!! धिक्कार है तुझे, सामुराअीके नामको लजानेवाले!!!" और जमीनपर लेटे योशीकानेके मुँहपर थूक दिया।

यह ख़बर भी सरदार किराको मिली, और अब वह असानोके आदमियोंसे निश्चिन्त-सा हो गया। अुसने अपने ससुर सरदार उयेसुगी सामाके भेजे पहरेदारोंको भी लौटा दिया।

योशीकानेकी स्त्री अपने पतिकी चालको दिनपर दिन बिगळती देख रही थी। अुसने बळी नम्रतासे कहा—

"स्वामी! तुमने मुझसे पहले कहा था, तुम्हारा रण्डी और शराबका प्रेम सिर्फ़ अेक बहाना है, जिससे कि तुम्हारे शत्रु बेफ़िक्र हो जायें; किन्तु अब मैं देख रही हूँ, यह सीमाको पार कर रहा है। मैं हाथ जोळकर प्रार्थना करती हूँ कि अब अिस चालको छोळिये।"

योशीकानेने डाँटकर कहा—"चुप रहो, मुझे दिक मत करो। मैं तुम्हारी अेक सुननेवाला नहीं हूँ। तुम्हें मेरी चाल पसन्द नहीं है, तो मैं

तुम्हें तलाक देता हूँ। जाओ, तुम अपना रास्ता पकळो। मैं किसी रण्डी-खानेसे अेक सुन्दर लळकी ख़रीदूँगा, और अुसके साथ विवाह कर सानन्द रहूँगा। तुम्हारी जैसी बुड्ढी औरतकी सूरतसे भी मुझे नफ़रत है। तुम यहाँसे तुरन्त निकल जाओ।"

यह कहकर योशीकाने गुस्सेसे लाल हो अुसे मारने दौळा। स्त्रीने बहुत बिनती की—

"स्वामी! दया करो। मत अैसा कहो। मैं बीस वर्षसे तुम्हारी विश्वासपात्र स्त्री हूँ। बीमारी और आराम, सुख और सम्पद्‌में मैंने तुम्हारा साथ दिया है। मैं तुम्हारे तीन बच्चोंकी माँ हूँ। मत अैसे निर्दअी बनो। मत मुझे घरसे निकालो। मैं अपनी और अिन बच्चोंकी ओरसे दयाकी भिक्षा माँगती हूँ। दया करो, दया करो।"

"मत बकबक करो। मैंने निश्चय कर लिया है। तुमको यहाँसे निकलना होगा। यह लळके भी मेरे रास्तेमें बाधक हैं, अिन्हें भी ख़ुशीसे तुम ले जाओ।"

किसी तरह भी पतिको पसीजते न देख, स्त्रीने अपने ज्येष्ठ पुत्र ओअिशी चिकाराको बिनती करनेके लिअे कहा। लेकिन योशीकानेने चिकाराकी बात भी न सुनी, और अन्तमें स्त्रीको अपने दोनों छोटे लळकोंको ले मायके चला जाना पळा। चिकारा अपने बापके साथ रहा।

दूतोंने किराको ख़बर दी—योशीकानेने अपनी स्त्रीको तलाक दे दिया। वह रण्डीख़ानेकी अेक लळकीको ख़रीदकर शराबमें मस्त रहता है। अब किराका रहा-सहा डर भी जाता रहा। अुसने समझ लिया, योशीकानेको हिम्मत नहीं है कि वह अपने मालिकका बदला ले।

योशीकाने अिस प्रकारका जीवन बिताने लगा। अुसके साथी क्योतो-से येदो चले गये। वे मज़दूर या फेरीवाले बन किराके घरका भेद जानने

लगे। अुन्होंने घरकी बनावट, हरअेक कमरे और आँगनकी जानकारी प्राप्त की। अुन्होंने अिसका भी पता ले लिया कि किराके सिपाहियोंमें कितने बहादुर हैं और कितने कायर। वे अिन बातोंकी सूचना बराबर योशीकानेके पास भेजते रहे। जब मालूम हो गया कि अब किरा बिलकुल बेफ़िक्र हो गया है, तो योशीकाने अेक दिन चुपकेसे क्योतोसे ग़ायब हो गया।

तब सैंतालीस रोनिन् आपसमें सलाहकर मौक़ेकी प्रतीक्षा करने लगे।

आधा जाळा बीत चुका था। बारहवाँ (माघ) महीना था। सर्दी कळाकेकी पळ रही थी। अुस रातको ख़ूब बर्फ़ गिर रही थी। रोनिन्ने समझा, अब अिससे अच्छा मौक़ा हाथ नहीं आयेगा। अुन्होंने अपनेको दो टुकळियोंमें विभक्त किया। पहली टुकळीको ओअिशी योशीकानेकी अध्यक्षतामें सामनेके द्वारसे हमला करनेका काम दिया गया। दूसरी टुकळी, जिसका मुखिया ओअिशी चिकारा था, घरके पिछवाळेसे हमला करनेपर नियुक्त की गअी। योशीकानेका पुत्र चिकारा अभी १५ ही वर्षका था, अिसलिअे योशीदा चियुजयेमो अुसका संरक्षक नियुक्त किया गया। यह निश्चय हुआ था कि जब योशीकाने नगाळेपर चोब मारे, अुमी समय दोनों टुकळियाँ अेक साथ हमला बोल दें। यदि कोअी किराका शिर काटनेमें समर्थ हो तो अुसे सीटी बजानी चाहिअे, फिर सब लोग जमा होकर अुसकी पहिचान करेंगे। फिर अुसे लेकर सेङ्गाकुजी मन्दिरमें चलेंगे, और स्वर्गस्थ स्वामी असानोकी समाधिपर भेंट चढ़ायेंगे। फिर सरकारको अपने कामकी सूचना देंगे, और मृत्युकी प्रतीक्षा करेंगे। सैंतीलीस रोनिनोंमेंसे प्रत्येकने अुपर्युक्त बातकी शपथ ली। फिर सबने अेक साथ अन्तिम भोजन किया। योशीकानेने साथियोंको सम्बोधित किया—

"आज हम शत्रुके महलपर धावा बोलने जा रहे हैं। अुसके अनुचर बाधा देंगे, अिसलिअे हम अुन्हें मारनेपर मजबूर होंगे। किन्तु बच्चे, बूढ़े और स्त्रियोंको मारना हमारे लिअे लज्जाकी बात है, अिसलिये मेरी

प्रार्थना है कि आप खूब सावधानी रखें, जिससे अेक भी निस्सहाय व्यक्तिको हत्या न हो।" सभी साथियोंने इसे स्वीकार किया, और वे आधी रात होनेकी प्रतीक्षा करने लगे।

जब वह घळी आअी, रोनिन् चल पळे। हवा तेज़ चल रही थी। बर्फ़ ज़ोरकी पळ रही थी। किन्तु रोनिन्को अुसकी परवा न थी। वे बदला पूरा करनेकी धुनमें मस्त रास्तेसे चले जा रहे थे। अन्तमें वे किराके महलपर पहुँचे। बर्फ़ और हवाके मारे सभी आदमी घरोंके भीतर थे। रोनिनोंने अपनेको दो टुकळियोंमें विभक्त किया। चिकारा २३ आदमियों-के साथ महलके पिछवाळेकी ओर गया। तब रस्सीका फन्दा फेंक चार आदमी छतसे आँगनमें पहुँचे। अुन्होंने देखा कि सभी लोग सोये हुअे हैं। वे पहरेवालेकी जगह गये, और अुन्होंने अुसे कुछ करनेका मौक़ा दिये बिना ही बाँध लिया। वह अपने प्राणोंकी भीख माँगने लगा। रोनिनोंने उसे स्वीकार किया, यदि वह दरवाज़ेकी कुञ्जी दे दे। किन्तु कुञ्जी दूसरे अफ़सरके पास थी। रोनिन् और प्रतीक्षा न कर सकते थे, अिसलिअे अुन्होंने घनसे बिलाअीको तोळ डाला, और इस प्रकार फाटक खुल गया। अिसी समय चिकाराकी पार्टी भी पिछवाळेके दरवाज़ेको तोळकर भीतर दाख़िल हुअी।

योशीकानेने पळोसी घरवालोंको सूचित कर दिया था—"हम रोनिन् लोग पहले सामन्त असानोके सेवक थे। किरा योशीनकानेने हमारे स्वामी-का सर्वनाश कर दिया है। आज हम अुससे बदला लेने जा रहे हैं। हम चोर-बदमाश नहीं हैं कि पळोसियोंके प्राण-धनपर हाथ डालें। हमारी आप लोगोंसे प्रार्थना है कि आप चुपचाप अपने-अपने घरोंमें रहें, और हमारे काममें बाधा न डालें।"

सामन्त किरा परले दर्जेका मक्खीचूस और स्वार्थी था। पास

पळोसमें कोओी भी अुससे प्रसन्न न था। अिसलिअे कोओी सहायताके लिअे नहीं आया।

योशीकानेने अपने साथियोंको समझा रखा था कि जो आदमी सरदार किराके घरसे निकलनेकी कोशिश करे, उसे मार डालो। अिसलिअे अिस हमलेकी खबर किराके सम्बन्धियोंको भी नहीं मिली।

योशीकानेने अपने हाथसे ढोलपर चोब मारी, और युद्ध आरम्भ हुआ। ढोलकी आवाज़ सुनते ही किराके दस आदमियोंकी नींद खुल गओी। अपने मालिककी रक्षाके लिअे वे हाथमें तलवार ले आगेकी ओर झपटे। अुसी समय रोनिन् सामनेका दरवाजा तोळ दालानमें दाखिल हो अुसी कमरेमें पहुँच गये। दोनों टोलियाँ एक-दूसरेपर प्रहार करने लगीं। अिसी समय चिकाराकी टोली बाग़से होती हुअी पिछले दरवाज़ेको तोळ भीतर घुसी। किरा अिसके लिअे तैयार न था। अुसे कोअी अुपाय नहीं सूझ पळा, और वह प्राण बचानेके लिअे अपनी स्त्री और दासियोंके साथ अेक गुप्त स्थानमें छिप गया। बाक़ी नौकर भी तब तक जग चुके थे; वे भी साथियोंकी मददके लिअे दौळे। तब तक रोनिनोंने पहले दस आदमियोंका काम खतम कर दिया था, और अुनकी दोनों टोलियाँ आगे बढ़कर अेक-दूसरेसे मिल चुकी थीं। अब किराके आदमियोंके साथ अुनकी भिळन्त शुरू हुअी। योशीकाने अेक चौकीपर बैठ प्रहार करनेका आदेश देने लगा। किराके आदमियोंको यह मालूम करनेमें देर न लगी कि वे दुश्मन-से पार नहीं पा सकते। अुन्होंने किराके ससुर सामन्त अुयेसुगीके पास खबर भेजी; किन्तु छतपर बैठे रोनिन् धनुर्धारियोंके तीरसे अेक भी बचकर न निकल सका। किराके कितने ही आदमी मारे गये, किन्तु रोनिन्के अेक आदमीकी भी हानि न हुअी थी। अुसी समय योशीकानेने कहा—

"सिर्फ़ किरा योशीनका हमारा शत्रु है। जाये कोअी आदमी, और मरे या जीते उसे पकळ लाये।"

किराके निजी कमरेके द्वारपर नङ्गी तलवार लिये तीन आदमी खळे थे। तीनों बहादुर, पक्के स्वामिभक्त और तलवार चलानेमें दक्ष थे। वे अितनी सफ़ाअीके साथ तलवार चलाते थे कि थोळी देर तक कोअी रोनिन् भीतर नहीं घुस सका। योशीकाने यह देख दाँत पीसने लगा, वह चिल्ला अुठा—"अरे! क्या तुमने मालिकके खूनका बदला लेनेकी शपथ नहीं खाअी थी? कायरो! रणपर चढ़कर पीछे हट रहे हो!! सामूराअी (राजपूत)का नाम हँसानेवालो! धिक्कार है!" फिर अपने लळके चिकाराकी ओर मुँह फेरकर कहा—"बच्चे! जा अुनसे भिळ। यदि वे तेरे बूतेसे बाहरके हैं, तो जा प्राण दे।"

पिताके वचनसे उत्साहित पन्द्रह वर्षका तरुण चिकारा हाथमें भाला लेकर आगे बढ़ा। किन्तु विरोधीके आघातसे बचनेके लिअे अुसे पीछेकी ओर हटना पळा। वह पीछेकी ओर हटता जिस वक्त बग़ीचे में आ रहा था, अुसी समय अुसका पैर फिसला, और वह बाग़की बावलीमें जा गिरा। प्रतिद्वन्द्वी प्रहार करनेके ख्यालसे जिस वक्त पानीकी ओर देख रहा था अुसी समय चिकाराने पैर खींचकर अुसे पानीमें गिरा दिया, और फुर्तीसे बाहर निकलकर वहीं अुसे ख़तम कर दिया। अिस वक्त तक बाक़ी दो आदमियोंको भी रोनिनोंने समाप्त कर दिया था। अब किराके आदमियों-में अेक आदमी भी लळनेवाला न बचा था। खून टपकती तलवार लिअे चिकारा घरके भीतर घुसा। किराके नौजवान पुत्रने चिकारापर प्रहार किया, किन्तु चिकाराके हाथसे घायल हो वह भाग गया। शत्रुओंमें अब कोअी लळनेवाला न था, अिसलिअे लळाअी ख़तम थी। तो भी सामन्त किराका कहीं पता न था।

योशीकानेने अपने आदमियोंको कअी टोलियोंमें बाँट खोज करवाअी, किन्तु रोते हुए स्त्री-बच्चोंको छोळ वहाँ कोअी न था। रोनिन् अेक बार निराश हो गये। अुन्होंने समझा कि अुनका सारा परिश्रम निष्फल गया।

मालूम होता है, सरदार किरा महलसे निकल गया। अुन्होंने, बल्कि वहीं आत्महत्या कर लेनेकी ठान ली; किन्तु वैसा करनेसे पूर्व अेक बार और अच्छी तरह ढूँढ़ लेना निश्चय किया गया। ओअिशी योशीकाने किराके शयनागारमें गया, और सरदारके विस्तरेको हाथसे छूकर बोला—"विस्तरा अभी तक ठण्डा नहीं हुआ है, अिसलिअे सरदार जरूर कहीं पास-हीमें छिपा है।"

अुत्साहित हो रोनिनोंने फिर खोज शुरू की। अुन्होंने कमरेकी पूजा-वेदीपर भीतके सहारे लटकते चित्रपटको हटाकर देखा, तो वहाँ दीवारमें बळा छेद था। अुन्होंने भाला डालकर देखा, किन्तु कोअी चीज़ न मालूम हुअी। अन्तमें अुनमेंसे अेक (यजमा जिअुतारो) भीतर घुसा। अुसने दूसरी ओर अेक छोटा-सा आँगन पाया, जिसमें कोयला-अींधन रखनेका अेक घर था। झाँककर देखनेपर वहाँ परले छोरपर अुसे सफ़ेद-सी कोअी चीज़ दिखायी पळी। जब अुसने भाला चलाया, तो वहाँसे दो आदमियोंने निकलकर वार किया, किन्तु अितनेमें जिअुतारोके साथी अेक रोनिन्‌ने पहुँचकर अेकको मार डाला, और दूसरेसे लळाअी करने लगा। जिअुतारो घरके भीतर घुसकर टटोलने लगा। अुसे कोअी सफ़ेद चीज़ फिर दिखाअी पळी। अुसने भाला मारा, और वहाँसे आहकी आवाज़ आअी। जिअु-तारो जब अुधर चला, तो अुस आदमीने कृपाणका वार करना चाहा। जिअुतारोने अुसे छीन लिया, और आदमीका गला पकळ बाहर खींच ले गया। फिर दूसरा साथी भी आ गया, और वे आदमीको ध्यानसे देखने लगे। वह ६० वर्षका-सा मालूम होता था। आकारसे भद्र कुलीन जान पळता था। अुसके शरीरपर सोते वक्तका साटनका चोगा था, जो जिअु-तारोके भालेसे फटी जाँघके खूनसे सन गया था। दोनोंको विश्वास हो गया कि वह अुनका बन्दी किरा है। अुन्होंने बहुतेरा अुससे नाम पूछा, किन्तु वह जवाब न देता था। अन्तमें अुन्होंने सीटी दी, और सारे रोनिन् अेकत्रित

हो गये। चिरागसे देखकर योशीकानेने पहचान लिया। अुसके ललाटपर घावका दाग़ था, जिसे कि सामन्त असानो नगानोरीने किया था। पहचान ठीक हो जानेपर योशीकाने घुटने टेककर बैठ गया, और बळी नम्रताके साथ बोला––

"सरकार! हम सामन्त असानो नगानोरीके सेवक हैं। पिछले वर्ष आपका और हमारे मालिकका दरबारमें झगळा हो गया था, और हमारे मालिकको आत्महत्या (हराकिरी)का दण्ड हुआ, तथा अुनका वंश बर्बाद कर दिया गया। मालिकके नमकहलाल नौकरकी भाँति हम आज आपसे बदला लेने आये हैं। हमें आशा है कि सरकार! हमारे कामको न्यायोचित ठहरायेंगे। अब हमारी प्रार्थना है कि आप हराकिरी कर लें, मैं स्वयं अिस बारेमें आपका अनुगामी होनेके लिअे तैयार हूँ। जब आपका शिर हमें मिल जायेगा, तो अुसे लेकर हम अपने स्वामीकी समाधिपर भेंट चढ़ाना चाहते हैं।"

अिस प्रकार सरदार किराके पदकी मर्यादाको ध्यानमें रख योशीकानेने बार-बार नम्रतापूर्वक हराकिरीके लिअे प्रार्थना की; किन्तु किरा चुपचाप काँपता रहा, और अपने हाथसे अपना प्राण लेनेके लिअे तैयार न हुआ। योशीकानेने जब देखा कि किरा भद्रजनोचित मृत्यु मरनेके लिए तैयार नहीं है, तो अुसने अुसे ज़मीनपर बैठनेके लिअे मजबूर किया, और जिस कृपाणसे सामन्त असानोने आत्महत्या की थी, अुसीसे अुसके शिरको काट लिया। अपनी मनोकामना पूर्ण हुअी देख सभी रोनिन् अत्यन्त प्रसन्न थे। अुन्होंने किराके शिरको अेक बर्तनमें रखा, और चलनेसे पूर्व घरकी सभी आग और दीपकको बुझा दिया, जिससे कहीं आग न लग जाये और पळोसियोंका नुक़सान हो।

जिस वक्त शिरको लेकर वे सेङ्गाकुजी (मन्दिर)की ओर जा रहे थे, अुसी वक्त सवेरा हो गया। लोहूमें भीगे कपळोंवाले अिन ४७ आदमियों-

को रास्तेसे जाते देख, लोगोंकी भीळ जमा हो गअी, और हरअेकके मुखपर अुनकी वीरताकी प्रशंसा थी। किराके समुरकी ओरसे हमला होनेका डर था, अिसलिअे तलवार हाथमें लिअे वे शिरको बळी सावधानीके साथ ले जा रहे थे। जिस वक्त वे तत्कालीन १८ प्रधान सामन्तोंमेंसे अेक मत्सुदाअिराके महलके सामनेसे गुजर रहे थे, सामन्त अुन्हें देख बहुत सन्तुष्ट हुआ; क्योंकि अुनके मृत सामन्तका अिस वंशसे विशेष सम्बन्ध था। अुसने अपने नौकरको यह कहकर रोनिन्के पास भेजा—"हम तुम्हारी बहादुरीकी बहुत प्रशंसा करते हैं। तुम लोग थके-माँदे होगे, अिसलिअे आओ, जलपान करके जाना।"

योशीकानेने धन्यवादपूर्वक निमन्त्रणको स्वीकार किया। भोजन करके वे फिर सेङ्गाकुजीकी ओर चले। वहाँ पहुँचकर अुन्होंने शिरको कुअेंके पानीसे धोया और फिर अुसे अपने स्वामीकी समाधिके सामने रखा। उन्होंने मन्दिरके पुजारीको प्रार्थनाकरनेके लिअे कहा, और स्वयं धूप जलाया। पहले योशीकानेने धूप जलाया, फिर अुसके लळके चिकारा-ने, अुसके बाद बाक़ी ४५ साथियोंमेंसे हरअेकने धूप जलाया। योशीकानेने अपने पासके रुपयोंको मन्दिरके महन्तको अर्पित कर कहा—

"जब हम ४७ आदमी हराकिरी कर लें, तो हमारे शवोंको अच्छी तरह दफ़नानेकी कृपा करें। हमें आपपर पूरा भरोसा है। यह थोळा-सा पैसा जो हम आपको अर्पित कर रहे हैं, अुससे हमारी श्राद्धक्रिया करवा दें।"

महन्तने अुन बहादुरोंकी वीरतासे अश्रुपूर्ण हो वैसा करनेका वचन दिया। रोनिन् निश्चिन्त हो सरकारी आज्ञाकी प्रतीक्षा करने लगे। अन्तमें प्रधान न्यायालयमें चलनेके लिअे हुक्म आया। वे न्यायाधीशोंके सामने गये, और सब सुनकर आत्महत्या करनेका फ़ैसला सुनाया गया।

४७ रोनिन्ने बळी प्रसन्नता और शान्तिके साथ आत्महत्या की,



१८—तोक्यो—सेङ-गाकु-जी विहार (पृ० ११४)

और सेङ्गाकुजीके भिक्षुओंने अुनकी लाशोंको ले जाकर अुनके स्वामीकी समाधिकी बग़लमें दफ़ना दिया।

ख़बर फैलनेपर कितने ही नरनारी अुनकी समाधिपर पूजा और प्रार्थना करनेके लिअे आने लगे। जब सचुमाके उस सामुराअीको ख़बर लगी, जिसने योशीकानेको शराबमें मतवाला हो सळकमें पळा देख, ठोकर मार गाली दी थी, तो वह सेङ्गाकुजी पहुँचा, और योशीकानेकी समाधिपर हाथ जोळकर बोला—

"तुम्हें शराबमें मतवाला हो रास्तेमें पळा देख, मैं यह नहीं समझ सका कि वह स्वामीके ख़ूनका बदला लेनेका ढंग था। मैंने अुस समय तुम्हें ठोकर मारी थी, और मुँहपर थूका था। मैं आज अुस अपराधके लिअे क्षमा माँगने तथा प्रायश्चित्त करने आया हूँ।"

यह कह वह समाधिकी वन्दना करने लगा, और फिर बैठकर अुसने क्रृपाण निकाल अपने पेटमें मारी, और वहीं मर गया। महन्तने अुसे भी ४७ रोनिन्की समाधियोंके पास ही गाळ दिया।

× × ×

४७ रोनिन्की समाधियाँ जिस सेङ्गाकुजी बौद्ध मठमें हैं वह पहले शहरके बाहर था, किन्तु तोक्यो अब बहुत बढ़ चुका है, और अब वह शहरके बीचमें पळ गया है। जापानके मध्यकालीन अितिहासमें रोनिन्-जैसी आत्म-त्यागकी कहानियाँ बहुत-सी पाअी जाती हैं। और बल्कि वह भाव तो आज तक जापानी जातिमें है, हाँ, अितने अन्तरके साथ कि जहाँ पहले रोनिन्-जैसे वीर अपने सामन्तोंपर सब-कुछ न्योछावर करनेके लिअे तैयार थे, वहाँ आजके वीर जापानके लिअे सब-कुछ न्योछावर करनेको तैयार हैं। पिछले शाङ्घाअीके युद्धमें पाठकोंने पढ़ा होगा, किस प्रकार चीनी सैनिक-पंक्तिको तोळनेके लिअे तीन जापानी सैनिक अपने शरीरमें बम बाँधकर कूद पळे

थे। तोक्योमें अुनके स्मृति-रक्षार्थ बमके साथ अुनकी मूर्ति बनी हुअी है। हरअेक जापान-यात्रीके लिअे रोनिन्‌की समाधिका दर्शन करना आवश्यक है। अिसीलिअे १९ मअीको हम भी देखने गये। आज रविवार था, अिसलिअे दर्शक अधिक थे। प्रधान द्वारको पारकर हम बळे आँगनमें पहुँचे। हमारी दाहिनी ओर घंटाके पास अेक नये ढङ्गकी पुरुष-परिमाण मूर्ति है। मालूम हुआ, यह योशीकानेकी प्रतिमा है, और दस ही बारह वर्ष पहले स्थापित हुअी है। रोनिन्‌के आत्महत्या कर लेनेपर अुनके हथियार, वस्त्र, जिरहबख्तर, कागज़-पत्र आदि सभी चीज़ें सेङ्गाकुजी मन्दिरमें बळी श्रद्धासे सुरक्षित रखी गअीं। पहले अुनका दर्शन अुतना आसान न था, किन्तु अब अेक दोमहला संग्रहालय स्थापित कर दिया गया है। जापानी जातिने युद्ध और व्यापारमें ही अपार कुशलता नहीं प्राप्त की है, अुसकी अिस कुशलताका परिचय वहाँके मन्दिरों, पुजारियों तथा जातिके हरअेक अंगसे मिलता है। भारतमें अैसी चीज़ें होतीं, तो सन्दूकमें बन्द-ही-बन्द अुन्हें दीमक या चूहा खा जाता। अिस संग्रहालयके होनेसे जहाँ लाखों यात्रियोंको अुनका दर्शन सुलभ हो गया है वहाँ मठको भी वह नफ़ेका सौदा है। हरअेक यात्रीको भीतर जानेके लिअे दस सेन् (प्रायः सवा आना) देना पळता है। रोनिन्‌में कुछकी मूर्तियाँ भी यहाँ हैं, और अुनके व्यवहारकी सभी चीज़ें सूचनापत्रकके साथ शीशेकी आलमारियोंमें रखी हैं। यद्यपि हमें भाषा और अक्षरका ज्ञान न था; किन्तु हमारे मेजबान श्री सकाकिबारा हमारे साथ थे, अिसलिअे चीज़ोंके बारेमें पूरा परिचय मिला।

•

संग्रहालयको देख हम अब खुले फाटकसे समाधियोंकी ओर जाने लगे। हमारे आगे ५० स्कूली लळकियोंकी जमात खळी थी। वहाँ, शिर धोनेके कुअेंपर खळी अध्यापिका अुन्हें रोनिन्‌के अूपर व्याख्यान दे रही थी। कुआँ बहुत गहरा नहीं है, किन्तु पानी अब भी है। कुछ सीढ़ियाँ

चढ़, हम समाधियोंमें पहुँचे। वे अेक घेरेके भीतर हैं, और हरअेक समाधिके अूपर हाथ-सवा-हाथ लम्बे पत्थरपर हरअेक रोनिन्का नाम लिखा हुआ है। श्रद्धालु दर्शक फूल चढ़ा और धूप जलाकर अपना सम्मान प्रकट कर रहे थे। रोनिन्के स्वामीकी समाधि कुछ बळी है। योशीकाने और चिकाराकी समाधियोंपर विशेष सम्मान प्रदर्शित किया जाता है।

अिस प्रकार आत्म-बलिदान होनेवालोंमें अेक ७७ वर्षके होरिवे कानामुराको छोळ चिकारा (१५ वर्ष) तथा और कितने ही जो बहुत ही अल्पवयस्क थे, यदि अैहिक–जीवनके मोहसे जीना चाहते तो वर्षों तक जी सकते थे। किन्तु अैसी दशामें आज अुन्हें संसार अमर-रूपमें जीवित नहीं पाता!

समाधिसे लौटते वक्त अेक और मन्दिर मिला। पता लगा अिसमें ४७ रोनिन्की काष्ठ-प्रतिमाअें हैं और अुन्हें रोनिन्की मृत्युके कुछ ही वर्षों बाद किसी प्रसिद्ध कलाकारने बनाया था। यहाँ भी टिकट लगता है। मूर्तियोंके वस्त्र, शस्त्र, रंग, भावभंगीको अंकित करनेका बहुत प्रयत्न किया गया है।[1]

[1] इस लेखके लिखनेमें लार्ड रेडेस्डेलके ग्रन्थ Tales of old Japan से सहायता ली गअी है।

१०—तोक्योमें तीन सप्ताह

यद्यपि तोक्योमें मेरे मेजबान श्री सकाकिबाराने अपने घरमें अैसा प्रबन्ध कर रखा था कि वह मुझे अपरिचित स्थान-सा न मालूम हो, तो भी लिखनेके काम खत्म करनेके लिअे मुझे दो मास तक अेकान्तमें रहनेकी आवश्यकता थी। अिसलिअे मैं चाहता था कि तोक्योकी दर्शनीय चीजें देख लूँ। अिसके लिअे प्राय: तीन सप्ताह मुझे तोक्योको देने पळे। १५ मअीको सिंहलके श्री नारद भिक्षु भी तोक्यो पहुँच गये, अिसलिअे हम दोनो प्राय: साथ ही दर्शनीय स्थानोंमें जाते रहे। (जापानकी यात्रा करनेवाले भारतीयोंके लिअे यह बहुत सस्ता होगा, यदि वे चार या पाँचकी टोलीमें आअें। अेक टैक्सीमें पाँच आदमी आसानीसे बैठ सकते हैं, और अेक येन् या बारह आनेमें वह आठ मील तक पहुँचा देगी)। शासक-मंडल हर जगह ही धर्मके लिअे सिर्फ़ वहीं तक अुत्सुक रहता है, जहाँ तक कि अुससे राजनीतिमें हानि-लाभ होनेवाला हो, तो भी साधारण जनताके भावोंको जाननेके लिअे अुस देशके धर्म-भावको जानना ज़रूरी है। जापानी लोगोंमें तीन धर्म प्रचलित हैं, जिनकी संख्या अिस प्रकार है—

बौद्ध	७१,२१६	मन्दिर	४,१९,६२,०००	अनुयायी
शिन्तो	१,११,७३९	देवस्थान	१,७४,७७,०००	”
ओसाओी	१,७०८	गिर्जे	२,५४,०००	”

पिछली शताब्दीमें जब जापानमें नअी जागृति शुरू हुअी थी, तो बौद्धधर्मकी केवल अुपेक्षा ही नहीं की गअी, बल्कि शासकोंकी ओरसे

कितने ही कटु बर्ताव भी हुअे। अुस वक्त शिन्तो और बौद्धधर्म मिले-जुले थे। कितने ही स्थानोंमें दोनोंके मन्दिर भी सम्मिलित थे। यदि कहीं किसी बौद्ध-मन्दिरसे लगा अेक छोटा भी शिन्तो-मन्दिर होता था, तो बौद्ध-मन्दिरकी सम्पत्ति शिन्तो-मन्दिरको दे दी जाती थी, और बौद्ध-पुरोहितको निकाल दिया जाता था। अुस समय कितने ही स्थानोंपर पुस्तकों और मूर्तियोंको भी निकाल फेंका जाता था। अुसी समय यूरोपियन लोग हज़ारों सुन्दर मूर्तियाँ ख़रीद-ख़रीदकर यूरोप और अमेरिका ले गये। गति और परिस्थितिको देखकर लोग समझने लगे थे कि अब जापानसे बौद्धधर्मके लुप्त होनेमें कुछ ही वर्षोंकी देर है। अीसाअी पादरी सबसे अधिक आशावान् थे कि जापान अीसाअी हो जायगा। सन् १८९० के पहले यह प्रस्ताव भी अुपस्थित हुआ था कि जापानको अीसाअी धर्मको राजधर्मके रूपमें स्वीकारकर लेना चाहिअे। अितना ही नहीं, बल्कि अिसके लिअे जाँच-कमेटी भी बनी थी; किन्तु बौद्धधर्म जापानकी जातीय आत्माके साथ अितना घनिष्ट सम्बन्ध रखता है, और जापानकी सारी सभ्यताका अितिहास बौद्धधर्मसे अितना ओतप्रोत है, कि अुसका छोळना अुसके लिअे आसान नहीं है। जिस समय बौद्धधर्मपर काली घटाअें छा रही थीं, अुस समय अुसके नेता भी चुपचाप बैठे रहनेवाले न थे। जहाँ सरकार तथा राजनैतिकोंकी ओरसे सैकळों विद्यार्थी अमेरिका, जर्मनी या अिङ्गलैंड पढ़नेके लिअे भेजे गये, वहाँ बौद्ध नेताओंने भी बुन्ज्यो-नन्ज्यो जैसे कितने ही विद्यार्थियोंको संस्कृत तथा तत्सम्बन्धी विज्ञानके अध्ययनके लिअे विदेशोंको भेजा। अुन्होंने अपनी पुरानी बातोंको नअे ढंगोंसे संगठित किया। अीसाअियोंकी भाँति अुन्होंने भी शिक्षा, चिकित्सा, समाज-सेवा आदिको अपने हाथमें लिया, और अिस प्रकार पिछली शताब्दीका अन्त होते-होते अुन्होंने अपनेको भलीभाँति सम्हाल लिया। अकेले तोक्यो हीमें बौद्धोंके रिश्शो, कोमाज़ावा और थाअिशो—तीन विश्वविद्यालय

हैं। ओतानी और सेन्-शू दो विश्वविद्यालय क्योतोमें तथा अेक कोया-शान्में हैं। अुनकी तरुण बौद्ध-संघ (Y. B. A.) बळी सजीव संस्था है। तोक्योमें अुसके प्रधान केन्द्रके नअे मकानके लिअे दस लाख येन्का अिन्तजाम किया जा रहा है। सन् १९२३ के महान् भूकम्पके पीछे पन्द्रह लाखसे अधिक येन् लगाकर तोक्योमें निशी-होङ-वान्-जीका मन्दिर बना है।

जापान आनेका मेरा अेक मतलब था, बौद्ध पंडितोंसे मिलना। १० मअीको मैं तोक्यो पहुँचा था। १४ मअीको रिश्शो-विश्वविद्यालयमें प्रोफेसर अेन्० किमूरासे मिलने गया। यह विश्वविद्यालय अुसी निचिरेन्-सम्प्रदायसे सम्बन्ध रखता है, जिसके भिक्षुने भारत (कलकत्ता) में पहला जापानी बौद्ध-मन्दिर स्थापित किया है। प्रोफेसर किमूरा बीस वर्षके क़रीब भारतमें रह चुके हैं। कितने ही वर्षों तक वे कलकत्ता-विश्वविद्यालयमें अध्यापक रहे थे। वे अुन सुसंस्कृत जापानियोंमें हैं, जिन्हें भारतीय नागरिक मंडलीमें बहुत काल तक आत्मीयोंकी भाँति रहना पळा, और जो अुससे बहुत प्रभावित हुअे हैं। जिस वक्त वे अपने गुरु स्वर्गीय महामहोपाध्याय हरप्रसाद शास्त्रीका वर्णन करते थे, प्रेम और श्रद्धाके मारे वे गद्गद-कंठ हो जाते थे। बळी देर तक हम दोनों भारतीय बौद्ध-दार्शनिकोंके कालके सम्बन्धमें बातचीत करते रहे।

१७ मअीको अिन्डो-जापानी अैसोसियेशनकी ओरसे, २४ मअीको रिश्शो-विश्वविद्यालयकी ओरसे, २७ मअीको अन्तर्राष्ट्रीय बौद्ध-संघकी ओरसे तथा १ जूनको जापान-तरुण-बौद्ध-संघकी ओरसे स्वागत हुआ। रिश्शो-विश्वविद्यालयमें प्रोफेसर किमूरा सभापति थे। मैंने भाषणमें विशेष तौरसे कहा कि जापानी बौद्धोंको भारतमें अपने प्रचारक भेजने चाहिअे—अैसे प्रचारक, जो धर्मके प्रचारके साथ जापानी कृषि, गृहशिल्प आदिको भी सिखलाअें। प्रोफेसर किमूराको भारतके सम्बन्धमें भाषण

करते समय भावावेशके कारण कअी बार एक जाना पळा। व्याख्यानके बाद छात्र-संघकी ओरसे भोज दिया गया। अुसमें छात्रोंके प्रतिनिधिने जो भाषण दिया था, वह यहाँ दिया जाता है—

"आपके देशवासियोंके प्रति हमारे भाव मित्रतापूर्ण ही नहीं, वरन् घनिष्ट प्रेमके हैं। भारतका नाम ही हमारे हृदयमें भगवान् बुद्धका स्मरण कराता है। अुनके सर्वांगपूर्ण व्यक्तित्व और सिद्धान्तोंके द्वारा सुखावती लोकधातुका चित्र हमारी आँखोंके सामने खिंच जाता है। हम नवयुवक बौद्धोंके लिअे भारतवर्ष वही अर्थ रखता है, जो फिलिस्तीन अीसाअियों-के लिअे।

"हमारा आदर्श भारतवर्ष है; किन्तु वह भारत नहीं, जो अंगरेजोंकी मातहतीमें है, और न वह भारत, जहाँ भगवान् बुद्धकी पवित्र धातु (बोध गया का मंदिर) अन्य धर्मावलम्बियोंके हाथमें है। हमारे हृदयमें वह भारत है, जहाँ २,५०० वर्ष पहले भगवान् बुद्धका जन्म हुआ था, जहाँ अुन्होंने ज्ञान अर्जन किया, संन्यास ग्रहण किया, गृद्धकूटपर सद्धर्मपुण्डरीक-सूत्रका प्रचार किया, और जहाँ अुन्होंने निर्वाण प्राप्त किया।

"जब कभी हम आपके देशवासियोंको देखते हैं, हमारे नेत्रोंके सामने यही दृश्य घूम जाता है, अिसलिअे आपको यहाँ देखकर हमें जो प्रसन्नता होती है, वह वर्णनातीत है। भाषा, जाति और आचार-विचारमें भिन्न होते हुअे भी भगवान् बुद्धके महान् नामपर हममें और आपमें अेकता है। सांसारिक अेकता टूट सकती है; किन्तु आध्यात्मिक अेकता कभी नहीं टूटती। हम समझते हैं कि दोनोंकी भौगोलिक स्थिति और अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थिति-को देखते हुअे भारत और जापानको अेकताके सूत्रमें बँध जाना चाहिअे।

"हमारे निचिरेन्-सम्प्रदायके संस्थापकने ७०० वर्ष पहले ही बळी बुद्धिमत्तासे यह कहा था कि भारतमें अुत्पन्न हुआ बौद्धधर्म जापानमें आकर

पूर्णताको प्राप्त करेगा। यह परिपूर्ण धर्म फिर भारतको अुसी प्रकार आशा और प्रकाश प्रदान करेगा, जिस प्रकार भगवान् बुद्धके सिद्धान्तोंने जापानको प्रदान किया है। हमें आशा है कि जापानमें रहते समय आप हमारे निचिरेन्-सम्प्रदायके सिद्धान्तोंका अध्ययन करके भारत लौटनेपर वहाँ अुनका प्रचार करेंगे।

"आपके यहाँ पधारनेपर यहाँकी प्रकृति भी असाधारण मौसिममें आपपर कृपा दिखला रही है। अैसा मौसिम जैसा आजकल हमें मिल रहा है, वर्षके अिस भागमें जापानमें बहुत कम नसीब होता है। हम समझते हैं कि यह आपके शुभागमनकी बदौलत ही है। हमें आशा है और हम प्रार्थना करते हैं कि जब तक आप रहें, मौसिम अैसा ही सुन्दर रहे और आपका स्वास्थ्य ठीक रहे।

"हम सब प्रकारसे आपकी सहायता करनेको प्रस्तुत हैं। हमें खेद है कि आप दिनमें केवल अेक बार ही भोजन करते है, सो भी मध्यान्हके पूर्व, अिसलिअे हम अपने सुस्वादु जापानी भोजनसे आपका सत्कार करनेमें असमर्थ हैं।"

अिस भाषणमें भारतके प्रति जो भाव प्रकट किया गया है, वह बनावटी नहीं है। सिवा कुछ साम्राज्यवादियोंके अधिकांश शिक्षित बौद्ध अिसी भावको रखते हैं। यहाँ जापानी विद्यार्थियोंकी सादगीके बारेमें कुछ कहना अप्रासंगिक न होगा। प्राअिमरी, हाअी स्कूल और विश्वविद्यालयके छात्रोंकी अेक खास पोशाक होती है, जिसमें बन्द गलेका कोट, पतलून और सामने सायादार टोपी शामिल है। हरअेक छात्रकी टोपीपर अुसके विश्वविद्यालयका नाम (पीतलमें ढला) लगा रहता है। बालोंको बढ़ाना या सँवारना यहाँके विद्यार्थियोंमें पाया ही नहीं जाता। पोशाक भी बहुत सादी और सस्ती होती है—बूटसे लेकर सारी पोशाक १० रुपयेमें आ जाती है। चाहे राजा या लार्डका ही लड़का क्यों न हो, पोशाक सबकी

अेक-सी मिलेगी। अुस दिन कौन्ट ओतानीसे मुलाकात हुअी। कौन्ट अभी बाअीस-तेअीस वर्षके तरुण हैं। तोक्यो अिम्पीरियल यूनिवर्सिटीके ग्रेजुयेट होकर, आजकल अनुसंधान-विभागमें पढ़ रहे हैं। अिनके खान-दानका शादी-ब्याहका सम्बन्ध राजवंशसे है। सालमें पचास लाखसे अूपरकी आमदनी है, और वे बौद्धोंके अेक बळे सम्प्रदायके गद्दीधर हैं। अुनकी पोशाक देखनेसे आपको कभी मालूम ही नहीं हो सकता कि वे साधा-रण धनी भी होंगे। अिस सादगीके साथ ही जापानी छात्र बळे मेहनती होते हैं। अुनकी शिक्षामें शारीरिक श्रमको काफ़ी स्थान दिया जाता है। चूँकि जापानमें सैनिक सेवा हर पुरुषके लिअे अनिवार्य है, अिसलिअे भी यह आवश्यक ठहरा! बल्कि यों कहना चाहिअे कि हरअेक पुरुषको सैनिक बनाना जापानी शिक्षाके प्रथम ध्येयोंमें है। प्राअिमरीकी पहली श्रेणीसे ही अिसका श्रीगणेश होता है। चौथी कक्षासे तो बाक़ायदा फ़ौजी कवायद सीखनी पळती है। पाँचवें दर्जेमें झंडीसे संवाद भेजना तथा लकळीकी बन्दूकका अभ्यास सिखलाया जाता है। अिस प्रकार जहाँ तक क़वायदका सम्बन्ध है, वह प्राअिमरीके छै वर्षोंमें समाप्त हो जाती है। अुसके बाद पाँच वर्ष माध्यमिक शिक्षा होती है, जिसे अपने यहाँ हाअी स्कूलकी शिक्षा कहते हैं। जिसमें तो बराबर सैनिक अफ़सर आकर निशाना लगाना, व्यूह रचना आदि सिखलाते हैं। सुकुमार शरीरवाले भला अिसमें कैसे डट सकते हैं। अिस सैनिक शिक्षाके अतिरिक्त हरअेक शिक्षण-संस्थामें जुजुत्सु तथा गद्का या लाठीके हाथ भी सिखलाये जाते हैं। और कुश्ती? आप कभी-कभी विश्वविद्यालयके अखाळेमें, दिनमें स्त्री-पुरुषोंके सामने तरुण मल्लोंको नंगा-मादरजाद होकर छाल-जैसी कपळेकी चिटको कमरसे लपेटते देखेंगे।

प्राअिमरी पासकर विद्यार्थी चाहे तो कृषि-विद्यालयमें जा सकता है, चाहे माध्यमिक शालामें, चाहे व्यापारिक स्कूलमें। सभी जगह पढ़ाअी

पाँच वर्षकी है। अिसके बाद दो-तीन वर्ष विश्वविद्यालयकी तैयारीके क्लासों (F. A., I. A.) में लगते हैं, और फिर तीन वर्ष पढ़नेपर ग्रेजुअेट होता है। अिस प्रकार जापानी विश्वविद्यालयके ग्रेजुअेट बननेके लिअे कम-से-कम सोलह-सत्रह वर्षकी पढ़ाअी आवश्यक है, जो भारतसे दो वर्ष अधिक है।

बीस वर्षकी अवस्थामें सेनामें भर्ती होनेके लिअे हरअेक जापानी पुरुषकी डाक्टरी परीक्षा होती है। यदि वह विश्वविद्यालयमें पढ़ता होता है, तो ग्रेजुअेट हो जानेपर अुसकी परीक्षा होती है। स्वास्थ्य और शारीरिक गठनके अनुसार अुन्हें 'अे', 'बी' और सी' तीन श्रेणियोंमें विभक्त किया जाता है। 'अे' और 'बी'के लिअे सेनामें भरती होना अनिवार्य है। शरीरकी लम्बाई-चौळाईका ध्यान रखकर रंगरूट तोपखाना, पैदल, सवार, मोटर, रेलवे, सैनिक फैक्टरी, हवाअी-जहाज़, कमसरियट या नौसेनामें भरती किया जाता है। नौसेनामें चार वर्ष सेवा करनी होती है, घुळसवारोंमें तीन वर्ष, तोपखानेमें ढाअी वर्ष और बाक़ीमें दो-दो वर्ष। यहाँ मैं जापानी सैनिक जीवनकी अेक विशेषता बताना चाहता हूँ, जिसको मेरी तरह कितने ही भारतीय पहले-पहल माननेके लिअे तैयार न होंगे। वह यह है कि जापानी सिपाहीको अेक पैसा भी तनखाह नहीं मिलती। वह अवैतनिक सिपाही है! मैंने पहले-पहल जब यह बात सुनी, तो अपने जापानी मित्रको अविश्वासकी दृष्टिसे देखते हुअे पूछा—"क्या सैनिक सेवा अनिवार्य भी है और अवैतनिक भी! क्या रूस-जापान-युद्धमें मरनेवाले सभी सिपाही अवैतनिक थे? क्या शांघाई और मंचूरियामें लळनेवाले सभी सिपाही अवैतनिक थे?"

अुन्होंने बळे शीतल शब्दोंमें कहा—"हाँ, सभी अवैतनिक। अुन्हें खाना, कपळा, मकान और पाकेट-खर्चके लिअे ४ सेन् (आध आना) प्रतिदिन मिलता है।"

"और घरमें बाल-बच्चोंको ?"

"अुस उम्रमें बहुत कम सैनिक ही विवाहित होते हैं। यदि विवाहित हों, तो वे ज़्यादा-से-ज़्यादा महीने-भरके अुस पन्द्रह आने पाकेट-ख़र्चेको बचाकर भेज सकते हैं। या अुसके सम्बन्धी, मित्र अथवा गाँवकी सैनिक सभा अुनके लिअे कुछ कर सकती है।"

"और मंचूरिया या शांघाअीके रणमें काम आनेपर ?"

"पहले तो चौबीस-पचीस वर्षकी अुम्र तक जापानमें ब्याह करनेवाले ही दुर्लभ हैं। यदि कोअी विवाहित हुआ और अुसने विशेष श्रेणीका मेडल पाया, तो अुसकी स्त्रीको ३०,३२ येन् (२०,२१ रुपये) वार्षिक पेंशन मिलेगी।"

"क्या अिसके कारण कुछ विधवाओंको बुरी अवस्थामें नहीं पळना होगा ?"

"शायद, किन्तु, आज तक जापानमें किसीने अिसकी शिकायत नहीं की।"

मैंने पूछा—"क्या सेनामें स्थायी नौकरी करनेवाले होते ही नहीं ?"

"हाँ, छोटे-बळे अफसर स्थायी नौकर होते हैं। सिपाहियोंमें यदि कोअी अधिक चतुर निकलता है, तो अिच्छा प्रकट करनेपर वह हवलदार या जमादार बना दिया जाता है। अुसका मासिक वेतन ३० येन् (२० रु०) होता है। बीस वर्षकी नौकरीके बाद अुसको अेकतिहाअी पेंशन पानेका अधिकार है। जापानकी सभी पेंशनें पतिके मरनेपर स्त्रीके जीवन तक मिलती रहती हैं।"

मेरे पूछनेपर मेरे मित्रने यह बतलाया—"भरती हो जानेपर सिपाही अपनी छावनियोंमें चले जाते हैं, जो प्रायः हरअेक ज़िलेमें हैं, और जहाँसे दो-तीन घंटेमें घर पहुँचा जा सकता है। पहले छै मास तो नहीं; किन्तु

बादमें हर रविवारको सिपाही जाकर अपने परिवारके खेत या दूसरे काममें सहायता कर सकता है। आने-जानेके किरायेमें अुसे आधी रियायत मिलती है।"

मैंने अिस अजीब सैनिक संगठनकी और भी कुछ बातें पूछीं, जिनका अुत्तर मिला—"जापानमें नौ, स्थल और वायु-सेनाओंके अफसरोंकी शिक्षाके लिअे सैनिक विश्वविद्यालय, नौसैनिक विश्वविद्यालय आदि हैं। अुनकी प्रवेशिका-परीक्षा बहुत कठिन है—शारीरिक और बौद्धिक दोनों ही प्रकारकी। पास होनेवाले ही अफसर होते हैं।"

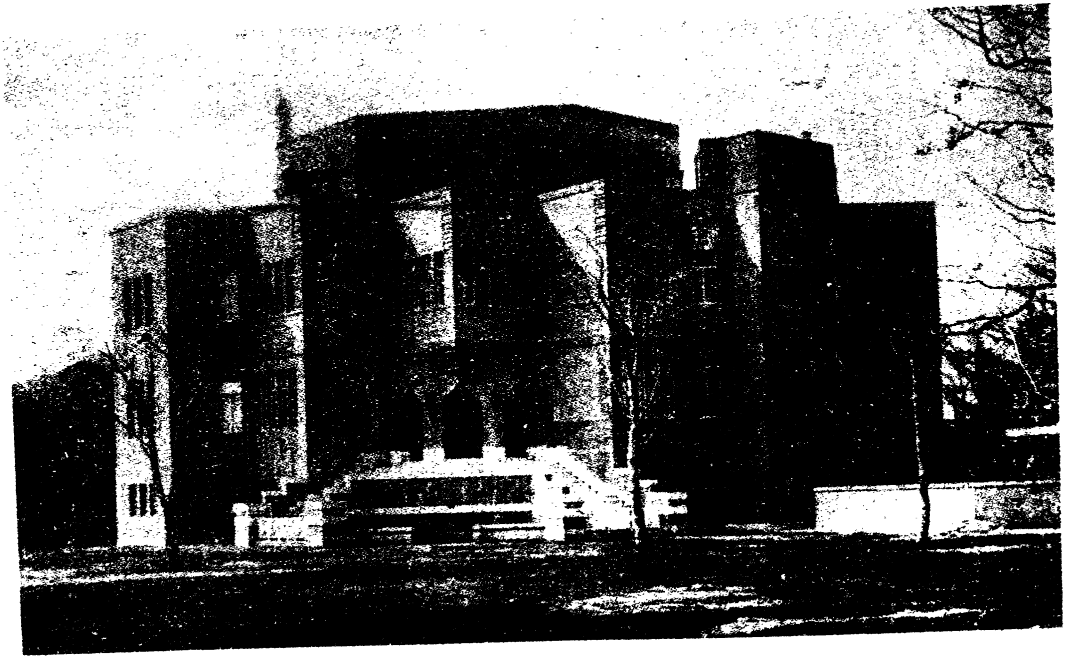
जापानमें वेतन बहुत कम है। उदाहरणार्थ—

	वार्षिक येन्	(मासिक रुपया)
प्रधान मंत्री	९,६००	(६००)
राज-मंत्री, कोरिया-गवर्नर-जेनरल	६,८००	(४२५)
प्रीवी कौंसिल के सभापति, राजदूत, प्रधान-जज, फार्मूसा-गवर्नर-जेनरल	६,६००	(४१२॥)
राजकीय विश्वविद्यालयोंके चान्सलर	६,८००	(३२५)
मंत्रिमंडलके चीफ़-सेक्रेटरी, तोक्योके प्रधान-पुलीस-अफसर, सरकारी प्रधान-इंजीनियर	५,८००	(३६२॥)
जिला-मजिस्ट्रेट	४,६५०	(२९०॥=)
छोटे अफसर	४०से १४५ मा०	(३०से१०५)
यूनिवर्सिटीके प्रोफेसर		(७५ से ३२५)
साधारण अध्यापक	४५ से २०० मा०	(३३$\frac{3}{4}$ से १५०)
साधारण मज़दूर	१५ से ३० मा०	(११$\frac{1}{4}$ से २२॥)

२७ मअीको अन्तर्राष्ट्रीय बौद्ध-संघकी ओरसे स्वागतका आयोजन हुआ। प्रोफेसर अिनोये (तोक्यो अिम्पीरियल यूनिवर्सिटीके अवसर-

प्राप्त प्रोफेसर) सभापति थे। प्रोफेसर नगाओी (अिम्पीरियल यूनिवर्सिटी तोक्यो), तिब्बत-पर्यटक प्रो० अेकाओी कावागूची, प्रो० किमूरा आदि बहुतसे विद्वान् और प्रसिद्ध व्यक्ति अुपस्थित हुअे थे। प्रोफेसर नगाओीने पालीमें स्वागत-भाषण पढ़ा। हमारे साथी और ज्येष्ठ भिक्षु नारदने पालीमें अुत्तर दिया। मेरा भाषण संस्कृतमें था, जिसका प्रो० किमूराने अनुवाद किया। इतने सम्भ्रान्त बौद्ध विद्वानोंके मिलनेसे प्रसन्नता तो होनी ही थी; किन्तु अुस वक्त मुझे सबसे अधिक प्रसन्नता हुओी, जब मैं श्री अेकाओी कावागूचीसे मिला। अुनकी अवस्था सत्तर वर्षसे अूपर है। भारतमें रहते समय अेक-आध बार सुना था कि वे अब संसारमें नहीं रहे। कावागूचीके 'तिब्बतमें तीन वर्ष'को कितने ही पाठकोंने पढ़ा होगा। अिस शताब्दीके आरम्भके वे अदम्य अुत्साही पर्यटक हैं। तिब्बत जानेसे पूर्व मैंने अुनकी पुस्तक पढ़ी थी, और अुसके कर्ताके प्रति कृतज्ञ होना मेरे लिअे ज़रूरी था। हमारी बातचीत तिब्बती भाषामें होती रही। अुन्होंने मेरे पिछले वर्षके तिब्बत-प्रवासके बारेमें पूछा। मुझे यह देखकर बळी प्रसन्नता हुओी कि अुनका तिब्बती ग्रन्थोंका विशाल संग्रह सुरक्षित रखा गया है, यद्यपि जापान अैसे भूकम्पग्रस्त देशमें किसी संग्रहकी सुरक्षाकी अुतनी आशा नहीं की जा सकती।

२४ मओीको तोक्योके कुछ विश्वविद्यालयोंको देखनेकी सलाह हुओी। रिश्शोसे हम लोग कोमाज़ावा गये। यह ज़ेन् (ध्यानमार्गी) सम्प्रदायका विश्वविद्यालय है। विश्वविद्यालयके प्रधान अेक भिक्षु हैं, और अध्यापकोंमें भी कुछ भिक्षु हैं। यहाँके पुस्तकालयमें ६० हज़ार पुस्तकें हैं। अधिकांश अिमारतें १९२३के भूकम्पके बादकी बनी हैं। फिर हम प्रसिद्ध राजनैतिक कौन्ट ओकूमा द्वारा स्थापित वासेदा-विश्वविद्यालयमें गये। विद्यार्थियोंकी संख्या, रसायनशाला आदिमें यह विश्वविद्यालय अिम्पीरियल यूनिवर्सिटीके बाद दूसरे नम्बरपर है, और जापानी साहित्यज्ञ और



१९—तोक्यो—कोमाजावा विश्वविद्यालय (पृ० १२६)



२०—तोक्यो—वासेदा विश्वविद्यालय (पृ० १२६)

पत्रकार पैदा करनेमें अिसका सबसे अधिक हाथ रहा है। हाअी स्कूलको भी ले लेनेपर यहाँके छात्रोंकी संख्या बीस हज़ार तक पहुँच जाती है। तोक्यो नगरके भीतर अेक मुहल्लाका मुहल्ला इसीका है। अिसके पुस्तकालयमें पुस्तकोंकी संख्या चार लाख है। वासेदाके साहित्य-अध्यापक चु-बो-अु-चीका आधुनिक जापानी साहित्यमें बहुत अूँचा स्थान है। अेक विशाल तिमहला भवन चु-बो-अु-ची-स्मारक-नाटच-संग्रहालय नामसे निर्माण किया गया है, जिसमें निधनगत साहित्यिककी सभी चीज़ें—पोशाक क़लम, चायदान, पुस्तकें आदि—जमाकी गअी हैं। चु-बो-अु-चीने शेक्सपियरके सम्पूर्ण नाटकोंका जापानीमें अनुवाद किया है। अुन्होंने वर्तमान जापानी रंगशालाको अुन्नत करनेका ही प्रयत्न नहीं किया, बल्कि अुन्हें जापानकी पुरानी नाटचकला-सम्बन्धी चीज़ोंके संग्रह करनेका भी बहुत प्रेम था। तरह-तरहके बाजे, चेहरे, वस्त्र, चित्र तथा सचित्र पुस्तकें अुन्होंने जमाकी थीं, और वे सभी चीजें अिस संग्रहालयमें रखी हैं। अिस मकानके बनानेमें अेक लाख साठ हज़ार येन् लगा था, जब कि येन्का भाव एक्कीस आनेके बराबर था।

अपने देश-भाअियोंको कहनेपर वह कह देंगे—"अरे, कहाँ जापान और कहाँ हम? वह स्वतन्त्र देश है।" गोया परतन्त्रता हमारे लिअे सारे पापोंकी ढाल है। हम जो चीज़ें अपनी बुद्धि और धनसे कर सकते हैं, अुसे भी अिसी बहाने टाल देना चाहते हैं। जैसे भारत ग़रीबीमें अपना सानी नहीं रखता, वैसे ही धनाढचतामें भी—मैं व्यक्तियोंकी बात कर रहा हूँ—किसीसे पीछे नहीं है। अुसके तरुण अेक रातके प्रेमके लिअे बीस लाखका चेक काट सकते हैं; हाँ, वह रुपयेका सदुपयोग नहीं कर सकते। हिन्दू-विश्वविद्यालय-जैसी संस्थाएँ क्यों नहीं अिस तरहके संग्रहके कामोंमें हाथ लगातीं? वास्तवमें हम कलाके अुस दर्जेपर नहीं पहुँच सके हैं—

हज़ार वर्ष पहलेकी बात छोळ दीजिअे—जहाँ हमारी अन्तःप्रेरणा असम्भव-को सम्भव कर दिखाती।

वासेदासे हम थाअिशो-विश्वविद्यालय गये। यह जोदो-सम्प्रदायका विश्वविद्यालय है। जापानके दो-तीन बळे संस्कृतज्ञोंमें अेक प्रोफेसर वोगीहारा अिसीमें पढ़ाते हैं। अुनकी अवस्था सत्तर वर्षकी है; किन्तु अुनके कामकी लगनको देखकर ओीर्ष्या होती है। सद्धर्मपुंडरीक, अभि-समयालंकारटीका, बोधिसत्त्वभूमि, अभिधर्मकोश, जैसे कितने ही बळे-बळे संस्कृत-ग्रन्थोंका अुन्होंने सम्पादन किया है। आजकल अेक संस्कृत-जापानी कोशके निर्माणमें लगे हुअे हैं। जापानी बौद्ध कितने कर्मठ हैं, अिसके आप अेक अुदाहरण हैं। आज कअी जापानी विद्वान् मिलकर पाली-त्रिपिटकका जापानीमें अनुवाद कर रहे हैं। पिछले अप्रेल (१९३५)से प्रतिमास अेक-अेक जिल्द निकलने लगी है। पाँच वर्षके भीतर अिस तीन-चार महाभारतोंके बराबरके संग्रहका अनुवाद और प्रकाशन-कार्य समाप्त कर देना चाहते हैं। प्रोफेसर अेकाअी कावागूचीका अिस विश्वविद्यालयसे विशेष सम्बन्ध है। यहाँके पुस्तकालयकी अेक लाख चालीस हज़ार पुस्तकोंमें अुनका तिब्बतीय संग्रह भी है।

२९ मअीको अिम्पीरियल यूनिवर्सिटी देखने गये। यह जापानका सबसे बळा विश्वविद्यालय है। यहाँके विश्वविद्यालय विभागमें ८५१४ विद्यार्थी (वासेदामें ४४५०) पढ़ते हैं। यह सरकारी और राजधानीका विश्वविद्यालय है, अिसलिअे अिसके वैभवकी बातका क्या पूछना है। अिस विश्वविद्यालयका प्रोफेसर होना बळे गौरवकी बात समझी जाती है। धनके ख़यालसे नहीं—अुसकी तो ३२५ रुपये मासिक हद है। भूकम्पमें सारा विश्वविद्यालय ध्वस्त हो गया था। अिसका विशाल पुस्तका-लय जलकर राख हो गया था। वर्तमान पुस्तकालय और अुसकी छे लाख पुस्तकें सन् १९२३ के बाद संग्रह की गअी हैं। अिस पुस्तकालयकी अिमा-

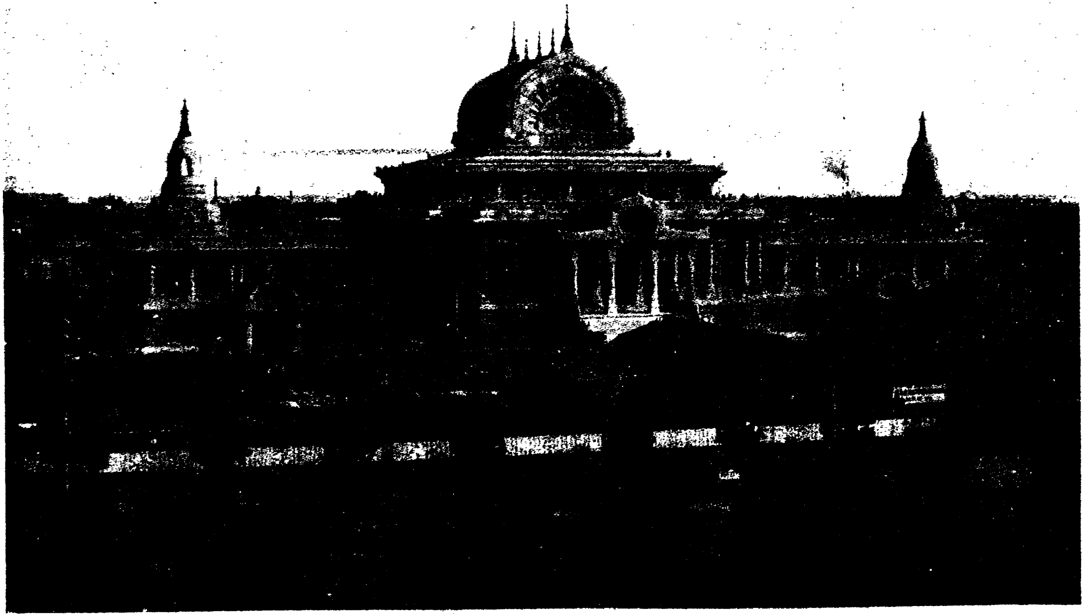
रतके लिअे अमेरिकाके धनकुबेर राक्फेलर्ने बीस लाख डालर प्रदान किया था। अर्थशास्त्रके प्रोफेसर मोरीने ले जाकर बहुतसे विभागोंको बळे प्रेमसे दिखलाया; किन्तु क्या यह सब चीज़ें कुछ घंटोंमें देख लेनेकी हैं? संक्षेपमें यही कहा जा सकता है कि यह जापानके गर्वकी चीज़ है।

शिक्षा-संस्थाओंके बाद तोक्योके कुछ मन्दिरोंके बारेमें भी कह देना चाहिये। अिसमें सोजी-जी मन्दिर बळा अैतिहासिक महत्त्व रखता है। जापानके अितिहासका थोळा भी ज्ञान रखनेवाले जानते हैं कि सन् १८६८ से पूर्व जापानका सम्राट् पर्देमें रहा करता था, और देशका शासन शोगुन करता था। एक प्रकारसे शोगुन ही देशका यथार्थ शासक था। अिसके वंशका नाम तोकूगावा था। तोकूगावा-वंशने अिस प्रकार सन् १६०२-१८६७ तक जापानपर शासन किया। अन्तिम शोगुन केदकी तोकुगावा पन्द्रहवाँ शोगुन था। अब यद्यपि शोगुन नहीं है; किन्तु आज भी प्रिन्स तोकूगावा जापानके सर्वश्रेष्ठ सरदारोंमें हैं, और वाशिंगटनकी सन् १९२१-२२ वाली निःशस्त्रीकरण सभामें वही जापानका प्रतिनिधि था। यदि अुसका वंश अपने पदपर क़ायम रहता, तो वह सत्रहवाँ शोगुन होता। सोजी-जी मन्दिर तोकूगावा शोगुनोंका विशेष कृपापात्र रहा है। द्वितीय शोगुनसे लेकर कितने ही शोगुनों और अुनकी स्त्रियोंकी समाधियाँ अिसी मन्दिरमें पाअी जाती हैं। ये समाधियाँ जापानी कलाके वृहत् संग्रहालय हैं। लकळीपर भिन्न-भिन्न जातिके पक्षियों और पुष्पोंको खोदनेकी कला यहाँ चरम अुत्कृष्टताको पहुँच गअी है। पक्षी अैसे मालूम होते हैं, मानो उळ रहे हैं। पुष्प अैसे जान पळते हैं, मानो अभी लाकर रखे गये हैं। और लाक्षा शिल्प भी यहाँका अत्युत्कृष्ट समझा जाता है। यह समाधियाँ असलमें छतरियाँ हैं, अिनमें भस्म रखी हुअी है। छतरीके आँगनमें आगे-पीछे सुन्दर अुपवन है। भीतर जाते ही हम तोक्योके आधुनिक रूपको भूल जाते हैं। अेक समाधिके आँगनमें हाथ-डेढ़-हाथ लम्बा अेक अनगढ़

पत्थर गळा हुआ है। न बतलानेपर आप समझेंगे कि अैसे ही टूटा हुआ पत्थर है; किन्तु अिसे अपने स्वाभाविक रूपमें रखते हुअे भी अिसमें कमालकी सूक्ष्म मुर्तियाँ उत्कीर्ण की गअी हैं। दृश्य है बुद्धका निर्वाण, और चारों ओर देव तथा मनुष्य ही नहीं, पशु-पक्षी भी शोकाकुल दीख पळ रहे हैं।

प्रधान मन्दिर भी बहुत भव्य है, और अिसीमें अन्तिम शोगुनकी रानीकी मूर्ति है। रानी हाथमें ताळपत्रकी पुस्तक लिये श्रद्धावनत रूपमें खळी है। बाहर आनेपर हातेमें आमने-सामने कुछ फ़ासलेपर दो पिंजळे रखे अेक ज्योतिषी लोगोंके भाग्य देख रहा था। प्रार्थी पैसा रख देता था। लालकी जातिकी अेक छोटी चिळिया अुसे दूसरे पिंजळेके सामने रखे बक्समें डाल देती थी, और चोंचसे बहुत-सी पळी हुअी चिट्ठियोंमेंसे अेक ला रखती थी। अुसी चिट्ठीमें शुभाशुभ लिखा मिलता था। बेवक़ूफ़ी समझिये या बुद्धिमानी, यह सभी देशमें पाअी जाती है। जापानमें तो ख़ैर अिसके खिलाफ़ क़ानून भी नहीं है, अिग्लैण्डमें क़ानून होनेपर भी भाग्य देखनेवालों-का व्यवसाय ख़ूब ज़ोरोंसे चलता है।

१८ मअीको हम रिश्शो-विश्वविद्यालयके स्वामी होम्मोन्जी मठमें गये। यह शहरके बाहरकी ओर है। मठकी अपनी मोटरें हैं। जिस वक्त हम मठमें पहुँचे, अुस वक्त आकाश मेघाच्छन्न था और बूँदें पळ रही थीं। निचिरेन्-सम्प्रदायका यह प्रधान मठ है। यहाँ महात्मा निचिरेन्की सबसे पुरानी प्रतिमा तथा अुनकी हड्डियोंका स्तूप है। मठके नायकने हमारा स्वागत किया। फिर हमें सारा मठ और अुसके अनेक मन्दिर दिखलाये गये। सोजी-जीके मन्दिरमें हमने दो-तीन शताब्दी पूर्वके पुष्प, पक्षी अुत्कीर्ण देखे थे, यहाँ हमने आधुनिक शिल्पियोंकी कृतियाँ देखीं, और अुससे कह सकते हैं, कि जापानी कलाकारोंका हाथ बिगळा नहीं है। अिस मन्दिरके पीछेका अुपवन अत्यन्त सुन्दर है। जापानके गृह-अुद्यानोंको दरअसल



२१—तोक्यो—निशी-होङः-वान्-जी (मंदिर) (पृ० १३४)

अुपवन ही कहना चाहिये, क्योंकि अिन्हें वनके रूपमें सज्जित किया जाता है। वनके पीछे छोटा-सा पहाळ बहुत अच्छा समझा जाता है, क्योंकि तब अुपवनके अन्तमें अनन्तका परिचायक नभमंडल दिखलाअी पळता है।

निशी-होङ्-वान्-जी शाखा-मन्दिर (चुकुजी होङ्-वान्-जी) भूकम्पके बादके बने मन्दिरोंमें है। अिसके बनानेमें पन्द्रह लाख येन (अुस समय येन् इक्कीस आनेका था) लगे हैं। द्वार और शिखर भारतके कार्ला और अजन्ताकी गुफाओंकी नक़लपर बने हैं। भेरीघर और घंटाघरको दो स्तूपोंके रूपमें दिखाया गया है। मन्दिर भूकम्पसह बनाया गया है, और अिसको प्रकाशित करने, अलंकृत करने तथा रक्षा करनेमें नये-से-नये वैज्ञानिक प्रयोगोंका अुपयोग किया गया है। यहाँ तक कि यहाँके प्रधान अुपासनागारमें बैठनेके लिअे भी चटाअियोंके फ़र्शकी जगह कुर्सियाँ रखी गअी हैं। अिस सम्प्रदायका प्रधान केन्द्र क्योतोमें है। यह मन्दिर पूर्वीय जापानके केन्द्रके तौरपर बनाया गया है। यह शिन्-शू-सम्प्रदायकी निशी-होङ्-वान्-जी शाखाका मन्दिर है, जिसके अनुयायियोंकी संख्या एकहत्तर लाखके अूपर तथा मन्दिरोंकी ग्यारह हज़ारसे अूपर है। अिसके मिश्नरी कोरिया, मंचूरिया, चीन, हवाअी-द्वीप और अमेरिका तकमें फैले हुअे हैं। अेक मन्दिर सिंगापुरमें भी है। अिसके तरुण नायक कौन्ट ओतानी दो-अेक वर्षमें तीर्थ-यात्राके लिअे भारत जानेवाले हैं।

११—जापानमें बौद्धधर्म

जिस जहाज़से हम जापान जा रहे थे अुसीसे अेक अमेरिकन महिला भी जा रही थीं। वह दक्षिण-भारतमें १५, १६ वर्षसे ओसाओ धर्मका प्रचार कर रही है। मेरे सामने तो नहीं किन्तु मेरे दूसरे साथियोंके सामने वह बहुत दुःख प्रकट कर रही थीं कि अितनी अुन्नत और शक्तिशाली जाति होनेपर भी जापान ओसाओ न होकर हीदन् (म्लेच्छ) बौद्धधर्मको मानता है। जो यात्री दो-चार सप्ताह भी, और अंग्रेज़ी ढंगके होटलोंमें रहते मोटरोंमें दौळते जापानकी सैर कर लौट जाते हैं, अुन्हें भी अिस बातका पता लगनेमें ज़रा भी देर नहीं लगती, कि जापानके रोम रोममें बौद्धधर्म घुसा हुआ है। शहरोंमें चलें, हर सळकपर हर गलीमें तिरकोनी छतवाले बौद्ध-मन्दिर मिलेंगे। नित्ता—जिस गाँवमें मैं पौने दो मास रहा हूँ, सिर्फ़ चार हज़ारकी बस्ती है—किन्तु यहाँ भी १४ बौद्ध-मन्दिर हैं। खेतों या गाँवमें घूमिअे, हर तीस क़दमपर किसी बोधिसत्त्व—विशेषकर क्षितिगर्भ (जिज़ो बोसत्सु)की मूर्ति आपको मिलेगी। सरकारी रिपोर्टके अनुसार जापानमें भिन्न-भिन्न धर्मोंकी संख्या अिस प्रकार है—

	मन्दिर	जनसंख्या
बौद्ध	७१,२१६	४,१९,६२,०००
शिन्तो	१,११,७३९	१,७४,७७,०००
ओसाओ	१,७०८	२,५४,०००

अिनमें शिन्तोधर्म पिछली शताब्दीमें नअी जागृतिके आरम्भ (१८६७ अी०)से जापानी सरकार और राजनीतिकोंका लाळला रहा है। अिस लाळ-प्यारके लिअे बल्कि जापानके राष्ट्र कर्णधार बौद्धधर्मपर अत्याचार करनेसे भी बाज नहीं आये। अन्धी राष्ट्रीयताको अुत्तेजित करनेके लिअे अुन्होंने स्वदेशी धर्मको आगे बढ़ाया। शिन्तोधर्म मृत पितरोंके प्रति श्रद्धांजलि अर्पण करनेसे अधिक नहीं है। और बौद्धधर्मने अुसका कभी विरोध नहीं किया। यही नहीं बल्कि हज़ारों बौद्ध-मन्दिरोंने अपने हातेमें शिन्तोमन्दिर (पितृ-मन्दिर) स्थापित किअे थे, और वहाँ बाक़ायदा पूजा होती थी। पिछली शताब्दीमें अिसका यह फल हुआ, कि जहाँ कोअी भी शिन्तो पूजास्थान पाया गया, अुस मन्दिरको शिन्तो क़रार दिया गया। अुसे बौद्ध पुरोहितसे छीनकर शिन्तो पुरोहितके हवाले किया गया। अुसके भीतर-की बौद्ध-मूर्तियों और धर्म-ग्रंथोंको बाहर निकालकर होली जलाअी गअी। शिन्तोके बाद दूसरा काम राष्ट्रनेताओंका था, अीसाअी धर्मके प्रचारको प्रोत्साहित करना। वस्तुतः यदि १८७०-१८९० अी०के बीचमें कोअी जापानकी यात्रा करता, तो वह साफ़ कह अुठता—बौद्धधर्म जापानमें अब चन्द वर्षोंका मेहमान है। अिसके भी मन्दिरों और मूर्तियोंकी वही अवस्था होगी, जो अुनकी भारतमें हुअी। किन्तु, बौद्धनेताओंने अक़लसे काम लिया। जहाँ राष्ट्र कर्णधार सेना, विज्ञान, कलाकौशल सीखनेके लिअे सैकळों विद्यार्थी बाहर भेज रहे थे, वहाँ बौद्धनेता बुन्ज्यो नन्ज्यो जैसे तरुणोंको आक्सफ़ोर्ड तथा जर्मनीमें संस्कृत और पश्चिमी ढंगके अन्वेषणको सीखने के लिअे भेज रहे थे। अिसका परिणाम यह हुआ, कि १८९० के बादसे अुनका शीघ्र ह्रास रुक गया, और वर्तमान शताब्दीके आरम्भसे तो पासा ही पलट गया। और आज Japan Illustrated (1934)के अनुसार—

"At Present Japan is the Principal Buddhist



२२—तोक्यो—सोजी-जी विहार (पृ० १३१)

Country in the world. Buddhism has declined in the country of its origin but burst forth into new flowers in the Japanese islands. It has influenced the people's conception of life and moulded their ideas of good and the beautiful."

भारतमें कुछ दिमाग़ भारतके बुरे दिनोंको लानेका अिल्ज़ाम बौद्ध-धर्मपर लगाते हैं। अुनके ख़्यालमें बौद्धधर्मकी शान्तिमयी शिक्षाने भारतके क्षत्रियत्त्वको लुप्त कर दिया। किन्तु अुक्त ग्रंथहीमें जापानको निर्भीक क्षत्रियत्त्व प्रदान करनेका श्रेय बौद्धधर्मको दिया गया है (पृष्ठ ११८)—

"The fact is well known that the Samurais' code of honour known by the name of Bushido was largely inspired by the Buddhist doctrine of life and death" (यह सर्वविदित बात है, कि सामुराअी=क्षत्रियके कर्त्तव्यनियम, जिसे बुशिदो कहते हैं, बहुत कुछ जन्म-मरण संबंधी बौद्धसिद्धान्त से अन्तः प्रेरित हुये हैं)। १८६९ अी० के बादसे सामुराअी अलग जाति या श्रेणी नहीं रह गअी, अब सारे जापानी पुरुष राष्ट्रके सामुराअी (=क्षत्रिय) हैं, किन्तु बुशिदो आज भी वैसी ही है। यह जापानी बुशिदो ही है, जो आज जापान यूरोप, अमेरिका सभीको विचलित कर रहा है। चित्तौळके राजपूत जिस भावसे प्रेरित हो केसरिया बाना पहनते थे, अुसीको जापानी शब्द बुशिदो प्रकट करता है। यदि रूस-जापान-युद्धमें सेनामें भरती करनेमें अिन्कार करनेपर अेक व्यक्ति अपने आश्रित प्राणियोंको मारकर भरती होने जाता है, तो यह बुशिदो है। शंघाअीमें तीन सिपाही शत्रुकी अभेद्य पंक्ति को तोळनेके लिअे अपने शरीरमें बम्ब बाँधकर दौळते हैं कूदते हैं, तो यह बुशिदो है।

जापानके भिन्न-भिन्न बौद्ध सम्प्रदायोंकी संख्या अिस प्रकार है—

	पुरोहित	भिक्षुणी	मन्दिर	उपदेश शाला	संख्या	जापानमें स्थापना या प्रवेश
१—शिन्-शू	१५,९३९	३	१९,६६६	२,५१८	१,३३,७०,०००	स्था. ११७३-१२४२ ई.
२—जोदो	६,१११		८,२१३	३७०	४६,३०,०००	स्था. ११७४
३—ज़ेन्	१६,११०	७७१	२१,०७३	५२१	८९,१८,०००	प्र. ११४०-१२१५
४—शिङ्-गोन्	७,६९९	६६	११,७५७	१,२४२	७९,३३,०००	प्र. ८१५
५—निचिरेन्	४,०२१	४५	५,०४५	१,१९०	३१,१४,०००	स्था. १२२२-८९
६—तेन्दाई	२,७४६	८३	४,५१५	११८	२१,३४,०००	प्र. ७८८
७—जिशू	१	०	४९६	४	३,२१,०००	स्था. १२३९-६२
८—युजुनेम्बुत्सु	२५	१०	३५३	४	१,३३,०००	स्था. १११७
९—रित्सु	६	१७	२२	४	६५,०००	प्र. ७५४
१०—केगोन्	१६	१	३२	६	२२,०००	प्र. ७४२ (?)
११—होस्सो	१३	०	४४	२४	१४,०००	प्र. ६२९-७००
	५२,९०५	१,३४५	७१,२१६	६,००५	४,१९,६२,०००	

१२—जापानके अशोक उपराज शोतोकू

५३८ ओी० में कुदारा (दक्षिण कोरिया)के बौद्ध राजाने जापानको बौद्धधर्मकी भेंट भेजी। भेंटमें बुद्ध और अर्हतोंकी मूर्तियाँ धर्मग्रंथ, पूजोपकरणके साथ एक पत्र था। जिसकी कुछ पंक्तियाँ अिस प्रकार थीं—

"यह धर्म सभी शिक्षाओंमें अति उत्तम है, यद्यपि अिसका अवगत करना कठिन, और समझना मुश्किल है। चीनके मुनियोंको भी अिसका समझना आसान न होता। अिसके माननेवाले अपरिमित सुख और फलके भागी, और बुद्धत्वप्राप्ति तकके अधिकारी होते हैं। चिन्तामणि जैसे सभी कामनाओंको पूर्ण करनेवाली कही जाती है, वैसे ही चाहनेवालेको यह महान् रत्न अभिलाष पूरा किअे बिना नहीं रह सकता। यह धर्म सुदूर भारतसे कोरियामें आया है, और बीचवाले देशोंके लोग सभी अिसके पक्के अनुयायी हैं, कोअी अिससे बाहर नहीं है।"

पत्रके साथ आअे अुत्कृष्ट कलाके नमूने अुन मूर्तियों और चित्रपटों तथा संस्कृति और संयमके मूर्तिमान् अुदाहरण साथ आये भिक्षुओंको देख जापानके भाग्य-विधाताओंकी आँखें-सी खुल गअीं। अिससे दो ढाअी सौ वर्षसे पूर्वहीसे जापानने कोरिया द्वारा चीनसे संबंध स्थापित किया था और अुसने चीनी लिपि तथा कुछ और बातें भी सीखी थीं; किन्तु अभी तक असे सभ्यताके विकासके अिन अुच्चतम नमूनोंको देखनेका अवसर

नहीं मिला था। दर्बारियोंमें मतभेद रहा, कि अिस भेंटको स्वीकार किया जाये या नहीं। सोगा वंशने सबसे पहले बौद्ध-धर्म स्वीकार किया, और दर्बारकी अनिश्चित अवस्था होनेपर भी बौद्धधर्म धीरे-धीरे फैलने लगा।

बौद्धधर्मके प्रवेशके ३६ वर्ष बाद ५७४ अी० में महाराज (३२वें[1] मिकादो) सुशुन् तेन्नोको अेक पुत्र हुआ, जिसका नाम अुमयदो रक्खा गया, किन्तु वह शोतोकू=पुण्यशील के नामसे प्रसिद्ध हुआ। अेक अमेरिकन सम्भ्रान्त लेखक लिखता है—

"The Japanese call him the father of civilization and the present writer regards him as the noblest Japanese of all time. In Shotoku we find mildness and magnanimity and devotion to beauty and truth. Shotoku was every inch a scholar, philonthropist and gentleman, without sacrifice of any of those sterner qualities that fitted him to rule a rude people."[2]

शोतोकूके शैशवकालमें शिन्तो पुरोहितोंकी ओरसे खूब विरोध चल रहा था। तो भी अुनके पिता और माता व्यक्तिगत रूपसे बौद्ध थे। दर्बारियोंमें भी बौद्ध और बौद्ध-विरोधी दो दल था। और प्रगतिका पक्षपाती होनेसे बौद्ध-दल अपनी शक्ति बढ़ा रहा था। ५९२ अी० में सम्राट् सुशुन्की मृत्यु हो गअी। कहते हैं, अुन्हें सोगाकी ओरसे जहर दिया गया था; किन्तु,

[1] वर्तमान सम्राट हिरोहितो (१९२६ ई०, १२४ वें मिकादो हैं)।
[2] The Romance of Japan (J.A.B. Scherer).

शोतोकूने न अिन्साफ़ किया, न पिताकी हत्याका बदला लिया। यह आक्षेप पुराना नहीं है, अभी हालकी बात है, अेक जापानी जेनरलने बळे कठोर शब्दोंमें शोतोकूपर कायरताका दोष लगाया था, और अुसके लिअे जापानमें अैसा विरोध हुआ, कि जेनरलको अपने पदसे अलग होना पळा। सोगाने अितना ही नहीं किया, बल्कि पुत्रको राज्यसे वंचित कर उनकी चाची सुअिको (५९२-६२९ अी०)को गद्दीपर बैठाया, १९ वर्षकी अवस्थामें शोतोकू अुपराज बनाये गये। शक्तिसम्पन्न होते हुये भी शोतोकूने यह सब क्यों सहा, अिसका अुत्तर अेक ही हो सकता था, कि शोतोकूको व्यक्तिगत महत्त्वाकांक्षा नहीं थी।

राज्यकार्य सँभालनेसे पहले ही पिताकी अिच्छासे अुपराज शोतोकूको बौद्ध-विरोधियोंसे मुक़ाविला करना पळा; और अपने शिरस्त्राणपर चार महाराज-देवताओं (वैश्रवण, विरूढक, धृतराष्ट्र, विरूपाक्ष)की प्रतिमायें लगाकर वह युद्ध करनेके लिअे निकले। विजय प्राप्त करनेपर अुसके उपलक्षमें अुन्होंने ननिवा (वर्तमान ओसाका)में चारों महाराजाओंका मन्दिर (तेन्नोजी) बनवाया।

५९२ अी० में राज्य सँभालनेके साथ ही अुन्होंने बौद्धधर्मको राजधर्म घोषित किया। अुन्होंने वर्तमान ओसाकामें तेन्नोजीका धर्मस्थान स्थापित किया। अिस स्थानमें अेक मठ, अेक आश्रम, अेक चिकित्सालय तथा अेक औषधशाला चार संस्थायें थीं। मठ ध्यान-पूजा मात्रका स्थान नहीं था, बल्कि वहाँ अेक अच्छा विद्यालय था, जिसमें साहित्य, धर्म और दर्शनकी शिक्षा दी जाती थी। शोतोकूने स्वयं माध्यमिक (नागार्जुन)-दर्शनका विशेष अध्ययन किया था।

जापान अुस समय कलाविज्ञान आदिसे कोरा था। शोतोकूने जहाँ सैकळों विद्यार्थियोंको कोरिया और चीनमें शिक्षा पानेके लिये भेजा, वहाँ बहुतसे वास्तुशिल्पी, प्रस्तरशिल्पी, मूर्तिकार, चित्रकार, राज, जुलाहे,

बढ़अी, लोहार तथा दूसरे शिल्पियोंको बुलाकर वैसे ही वेगसे जापानकी शिक्षा शुरू की, जैसी कि तेरह सौ वर्ष बाद पिछली शताब्दीके उत्तरार्द्धमें देखी गअी। शोतोकू बहुमुखी प्रतिभा रखते थे। अुन्होंने ६०४ औ०में जापानका पहला राजविधान सत्रह धाराओंमें बनाया। यह केम्पो आज भी जापानकी सबसे बळी अभिमानकी चीज़ है। अुसमें अेक जगह वह कहते हैं—

"मतभेद होनेपर हमें चिढ़ना नहीं चाहिये। हर अेक आदमीके पास अपना दिमाग़ है, और हर अेक दिमाग़ अपना विशेष झुकाव रखता है। हो सकता है, जो अेककी दृष्टिमें अुचित हो, वह दूसरेकी दृष्टिमें अनुचित हो। हम लोग न निर्भ्रान्ति ऋषि हैं, न बिल्कुल ही मूर्ख। हम सभी सिर्फ़ साधारण मनुष्य हैं।"

दूसरी धारामें वह कहते हैं—"हृदयसे तीनों रत्नोंका सम्मान करो। बुद्ध, धर्म, संघ—यह तीन रत्न सभी प्राणियोंके शरण्य और सभी मनुष्योंके परम श्रद्धाभाजन हैं। कौन समय या मनुष्य हो सकते हैं, जो अुन्हें बिल्कुल भुला दें? बिल्कुल ही दुष्ट व्यक्ति बहुत कम हैं, हर अेक पुरुष अिस (सत्य) को अनुभव करेगा, यदि अुसे ठीकसे बतलाया जाय। बिना तीनों रत्नोंकी सहायताके भला कौन बुराअी दूर की जा सकती है?"

राजमंत्री या राज्याधिकारीके कर्त्तव्यके बारेमें कहा है—"व्यक्तिगत बातोंसे विमुख हो, सार्वजनिक कामोंमें लगना—यह राजमंत्रीका मार्ग है।"

अुपराज शोतोकू कोरे आदर्शवादी न थे। अुन्हें अपने अशिक्षित देशबंधुओंको सुशिक्षित करना था, यह पहले कह चुके हैं। अुन्हें नाना वंशोंकी अलग अलग सर्दारियोंमें बिखरी जापानी जातिको अेकताके अेक सूत्रमें ग्रथित करना था। अुन्होंने अिसके लिअे शिक्षण, चिकित्सा तथा और और मार्ग अिस्तेमाल किये। शोतोकू जापानके सर्व प्रथम सळक

बनानेवाले हैं। नये नये बीजों और फलोंकी खेतीका प्रचार कर अुन्होंने कृषिकी भी बहुत अुन्नति की। शोतोकू स्वयं अेक अच्छे धर्मोपदेष्टा और धार्मिक लेखक थे। जब वह धर्मासनपर बैठकर धर्मोपदेश करते थे, तो छोटे-बळे सभी श्रेणियोंके हज़ारों नर-नारी धर्मोपदेश सुननेके लिअे आया करते थे। अुन्होंने सद्धर्मपुंडरीक विमलकीर्तिनिर्देश और श्रीमालादेवी-सिंहनाद अिन तीन बुद्धोपदेशोंपर व्याख्यान लिखे हैं, जिनमें सद्धर्मपुंडरीककी व्याख्या तो अुनकी अपनी हस्तलिपिमें आज भी मौजूद है। सद्धर्मपुंडरीकमें बुद्धने कहा है---अपने ही दुखसे बचनेकी कोशिश मत करो। जब तक अेक भी प्राणी दुःख और शोकमें है, तब तक तुम्हें अपनी मुक्तिकी चिन्ता न कर अुसे दुःखसे निकालनेकी कोशिश करनी चाहिये। उनका अिस सर्वस्वत्यागपूर्वक परोपकारमय बोधिसत्त्व-कर्त्तव्य-का जिस सूत्रमें उपदेश किया गया है, अुस ग्रंथको अपनी व्याख्याका विषय बनाना, विशेष तात्पर्यसे था। अुपराज शोतोकूका वही अपना आदर्श था, और वह चाहते थे, कि अुस आदर्शके दीवाने और भी साथी अुन्हें मिलें। विमलकीर्त्तिनिर्देश भी अुनके अपने आदर्शका परिपोषक उपदेश है। विमलकीर्त्ति वैशालीका अेक बौद्ध गृहस्थ था, जिसके बारेमें सूत्रमें कहा गया है---"प्रज्ञा अुसकी माता है, सबका संग्रह करना पिता, सभी प्राणी अुसके बंधु हैं, अनासक्ति अुसका वासस्थान, संतुष्टि अुसकी स्त्री है, करुणा पुत्री, और सत्य पुत्र। अिस प्रकार गार्हस्थ्य जीवन व्यतीत करते भी वह सांसारिक बंधनोंसे निर्मुक्त है।" अिस सूत्रपर व्याख्या करते हुअे शोतोकू लिखते हैं---"विमलकीर्त्ति पहुँचा हुआ मुनि था। अुसका आध्यात्मिक जीवन राग-द्वेषकी सीमाको पार कर चुका था। अुसका मन राज या समाज के कारबारमें आसक्त न था।...किन्तु अुसके भीतर अपार करुणा थी, और अिसीलिअे अपार दयासे प्रेरित हो गृहस्थका जीवन बिताते हुअे वह निरन्तर लोगोंके हितके कामोंमें लगा रहता था।" अिसमें क्या सन्देह

है, कि यहाँ शोतोकू विमलकीर्त्तिके नामसे अपने ही जीवन के आदर्शको अंकित कर रहे हैं।

काशीकी रानी श्रीमाला आदर्श गृहस्थ महिला थी। वह मातृ-भक्त और पतिपरायणा थी। रानीका जीवन बिताते हुअे भी अुसने अपने गुरु बुद्धके सामने अपने कर्त्तव्यकी अिस प्रकार प्रतिज्ञा ली थी—मेरा सर्वस्व ग़रीबों और अनाथोंको अर्पण है। मैं हर तरहसे दीनों दुखियों-की सेवा करूँगी, यदि अिसके लिअे मुझे अपने प्राणोंको देनेकी आवश्यकता होगी, तो उसमे भी मैं नहीं हिचकिचाअूँगी। श्रीमालाके अिस आदर्श जीवनको लेकर, अवश्य शोतोकू अपनी चाची रानीको अुसी आदर्शपर ले जाना चाहते थे। और अनाथों और रोगियोंकी सेवाके लिअे देशमें हर जगह आश्रम अुन्होंने अिसी आदर्शसे बनाअे थे। बोधि सत्त्व-जीवनके अिस अुच्च आदर्शने कहाँ तक लोगों को प्रभावित किया, अिसके आगे भी हम अुदाहरण पाते हैं। सम्राट् शोमू (७२४-४९ अी०)—जो जापानके दूसरे महान् बौद्ध-आदर्शपरायण शासक थे—की रानीके बारेमें कहा जाता है, कि वह रोगियोंकी अनन्य भावसे अपने हाथों सेवा करती थीं। अुनकी परीक्षा लेनेके लिअे बुद्ध स्वयं कोढ़ीका रूप धारण करके आअे। जब मक्खियाँ भिनभिनाते कोढ़-चूते अुस रोगीको देखकर, घृणाका भाव ज़रा भी चेहरेपर न लाये सहानुभूतिके साथ रानी ने अपने हाथों घावको धोना शुरू किया, तो बुद्धने अपना रूप प्रकट कर दिया।

अुपराज शोतोकू यह सब करते हुअे अपने आत्मिक विकासके दूसरे साधनोंको भी हाथसे न जाने देते थे। होर्योजीमें आज भी वह अठपहलू मंदिर (युमें-दोनों) दिखलाया जाता है, जहाँ शोतोकू ध्यानावस्थित हो, आत्मपरीक्षण करते थे। होर्योजीमें बोधिसत्त्व अवलोकितेश्वरकी अद्भुत काष्ठ प्रतिमाको शायद अुसी अपने भावको दर्शानेके लिअे अुन्होंने

अपने हाथों बनाया था। अिस प्रतिमाको देखकर लोग कहते हैं, शोतोकूने जिसमें हाथ लगाया, अुसीको कमालपर पहुँचाया।

शोतोकूके बनवाये मंदिरोंमें प्रधान होर्योजीका मंदिर है, जो जापानी बौद्धोंका बोध-गया और जापानी राष्ट्रीयताका मूर्तिमान् रूप है। अुसपर हम अलग लिख चुके हैं, अिसलिअे अुसे यहाँ दुहराना नहीं चाहते।

अितने अधिक आदर्श अितनी अधिक धार्मिकताके कारण अवसर राजाओंको शासकके गुणसे वंचित होते देखा जाता है, किन्तु शोतोकूमें आदर्श और व्यवहारका अद्भुत संमिश्रण था। राजकार्यमें अुनका व्यवहार अपने पदके अनुकूल ही होता था। सन् ६०७ अी० में अुन्होंने सर्व प्रथम चीनसे सीधा राजनैतिक संबंध स्थापित किया। राजदूतके हाथ अुन्होंने जो पत्र भेजा था अुसमें चीन सम्राट्को—"सूर्योदय-भूमि (जापान)-का शासक सूर्यास्त-भूमिके शासकको अपना संदेश भेजता है," कहकर संबोधित किया। अिससे चीन सम्राट् नाराज हो गये और अुन्हें बळी व्याख्याके बाद शांत किया जा सका। अुत्तरमें चीन सम्राट्ने यह कहकर पत्र लिखा—"सम्राट्, यमातोके राजकुमारसे कहते हैं।" अुत्तरमें शोतोकूका अुत्तर अिन शब्दोंके साथ गया—"पूर्वका देवराजा पश्चिमके सम्राट्से कहता है।" अिस प्रकार चीनके सामने अुन्होंने अपने बराबरीके दावेको नहीं छोळा। अुन्होंने अपने तीस वर्षके शासनमें क्या किया—अिसके बारेमें जापानी संस्कृतिके सर्वश्रेष्ठ विद्वान् डाक्टर मसाहरु अनेसाकी कहते हैं[१]—

"अुनका तीस वर्षका शासन जापानी अितिहासमें अत्यन्त युग-प्रवर्त्तक काल है।... वह जापानी सभ्यताके प्रतिष्ठापक, तथा जापानकी राष्ट्रीय अेकताके निर्माता थे।" वह और भी लिखते हैं[१]—"अुन्होंने राष्ट्रीय

---

[१] History of Japanese Religion, pp. 57, 65.

अेकताकी स्थापनाकी, बौद्धधर्मके आध्यात्मिक आदर्श द्वारा जातिको अन्त:प्रेरणा दी, पथप्रदर्शन किया। अुन्होंने जापानियोंको कला, विज्ञान तथा दूसरी सांस्कृतिक बातोंकी शिक्षा दी। यह बिल्कुल स्वाभाविक है, जो पीछेके ही बौद्ध नहीं समकालीन भी अुन्हें करुणामय बोधिसत्त्व अवलोकितेश्वरका अवतार मानते हैं। अुनका अुद्योग और आदर्श, अुनकी प्रतिभा और प्रज्ञा अुनकी वैयक्तिक विशेषता है (अिसमें शक नहीं); किन्तु अुस (वैयक्तिक विशेषता)में भी बौद्धधर्मको श्रेय देना पळेगा, जिसने अुस पुरुषमें आत्मा फूँकी, अुसकी प्रतिभाको शिक्षित और विकसित किया, और अुसके द्वारा अुसे अेक अुच्च आदर्शपर राष्ट्रीय जीवनकी आधार-शिला रखनेमें सफल होनेमें सहायता की।"

जब ६२१ अी०में अुपराजका देहान्त हुआ तो अुस समयके बारेमें पुराने अितिहास-लेखक लिखते हैं, हलवाहेने हल जोतना छोळ दिया, और कूटनेवालीने मूसल रख दिया। सब कह रहे थे—"सूर्य और चंद्र निस्तेज हो गये। पृथिवी और नक्षत्रलोक चूर्ण विचूर्ण हो गये। अबसे हम किसका आसरा करेंगे।" ग़रीब अमीर सारा जापान व्याकुल था। बूढ़े समझते थे, अुनका अेकलौता प्रिय पुत्र मर गया। तरुण समझते थे, अुनसे अुनका पिता छीन लिया गया। सारी सळकें और गलियाँ अिन सन्तप्त, क्रन्दन करते नर-नारियोंसे भर गअी थीं।

पिछली शताब्दीका भयंकर तूफ़ान क्यों जापानसे बौद्ध धर्मको नष्ट नहीं कर सका, और क्यों आज भी जापानकी अितनी भक्ति बौद्ध धर्ममें है, यह अुपराज शोतोकू (शोतोकू थैशी)के जीवनसे मालूम होगा।

१३—महात्मा निचिरेन्

तेरहवीं शताब्दीके आरम्भमें जब कि भारतके नालंदा, विक्रमशिला-की चितायें अभी अच्छी तरह ठंडी नहीं हुअी थीं, और बौद्धधर्म अभी दम ही तोळ रहा था, जापानमें भी बौद्ध धर्म अनेक निर्बलताओंसे जकळा था। अुस वक्त आवश्यकता थी, अेक अैसे महापुरुषकी जो कि फिर अुसमें जीवन डाले, और बुराअियोंको निर्भीकताके साथ खंडित करे। निचि-रेन् वैसे ही महापुरुष थे। उनको हम भारतके अुन्नीसवीं सदीके सुधारक स्वामी दयानंदसे तुलना कर सकते हैं। निचिरेन्का जन्म १२२२ अी०में जापानके दक्षिण-पूर्वी कोनेमें अेक मछुवेके घर हुआ था। बचपनहीमें वह अपने पासके पहाळके अूपर बने मठमें भेज दिये गये। वहाँ वह कितने ही वर्षों तक तरुण श्रामणेरके रूपमें शिक्षा पाते थे। कुछ सयाना होनेपर वह अिस चिन्तामें डूबे रहते थे, कि तरह तरहके प्रचलित मतोंमें कौन भगवान् बुद्धका अपना मत था। अिसी खोजमें वह तत्कालीन शासन केन्द्र कामाकुरा पहुँचे; और फिर १२४३ अी०में क्योतोके पासके महान् बौद्ध विहार हि-अे-अी गये। वह अुस विहारमें दस वर्ष रहे। और बौद्ध सिद्धान्त-की गंभीर गवेषणाके लिअे अन्य बौद्ध केन्द्रोंमें भी जाते रहे।

अिसी अध्ययन और खोजमें लगे रहने, जब वह तीस वर्षके क़रीब पहुँचे, तो अुनको निश्चित हो गया—हि-अे-अीके संस्थापक महात्मा साअि-चोने जैसे सद्धर्मपुंडरीक सूत्रके सिद्धान्तकी व्याख्या की है, वही सच है, बाकी

सब सम्प्रदाय झूठे, और अशुद्ध हैं। अुनको यह भी सूझ पळा, कि सद्धर्म-पुंडरीक और महात्मा साअिचोकी शिक्षाको देश-कालके अनुसार नअी व्याख्याकी आवश्यकता है।

अिस निश्चयके बाद अपने सिद्धान्तके प्रचारके लिअे अुन्होंने पहले अपने अुसी पुराने मठको चुना, जिसमें कि अुन्होंने लळकपनमें शिक्षा पाअी थी। १२५३ अी०की गर्मीका मौसिम था, अेक दिन सबेरे निचिरेन् मठ-वाले पहाळकी चोटीपर चढ़ गये, और प्रशांत महासागरकी ओरसे अुगते सूर्यको साक्षी करके अुन्होंने, **नमः सद्धर्मपुंडरीकाय** (नम्म्यो-होरेङगे-क्यो) अिन शब्दोंमें अपने मान्य ग्रंथके पवित्र नामकी संसारमें घोषणा की। अुसी दिन दोपहरको अुन्होंने मठके अधिपति और दूसरे भिक्षुओंके सामने अपने विचारोंको प्रकट करते हुअे, सभी प्रचलित मतोंकी कळी आलो-चना की, जिसे सुनकर सभी नाराज हो गअे, और अुन्होंने निचिरेन्को मठसे निकाल दिया।

अुस समय क्योतो यद्यपि जापानकी राजधानी थी, किन्तु, मिकादो (सम्राट्)को राज शासनसे अलग रक्खा गया था, और राजकार्य शोगुन करते थे। शोगुनकी राजधानी कामाकुरा थी। निचिरेन् भी कामाकुरा पहुँचे, और सात वर्षके लिअे अुन्होंने अपना डेरा वहीं जमा दिया। रात-दिन चौबीसों घंटे वह अपनी धुनमें लगे रहते थे। हाटमें जहाँ कुछ आदमी जमा मिलते, वहीं निचिरेन् स्टूलपर खळे हो अपने मन्तव्य, और दूसरे मतोंकी आलोचनापर व्याख्यान देने लगते थे। सळकों और हाटोंपर अिस बेतकल्लुफीसे व्याख्यान देनेकी प्रथा अुससे पूर्व जापानमें न थी। अुस समय शासक होजो-वंश आपसके षड्यंत्रमें लगा हुआ था। भूकंप, बाढ़, अकाल, महामारीका देशमें आतंक था। आकाशमें अुगते धूमकेतु-को देखकर और भी तरह तरहकी शंका अुठने लगी थी। लोग अुपद्रव-शांतिके लिअे शिन्तो मतके पूजा-स्थानों और बौद्ध मंदिरोंमें पूजा-अनुष्ठान

करवा रहे थे। निचिरेन्का पक्का विश्वास था, कि यह सब झूठे मतोंके प्रचारके कारण हो रहा है। बुद्ध और अुनके अर्हतोंने जापानकी रक्षासे अपना हाथ खींच लिया है। अपने अिस भावको प्रकट करते हुअे अुन्होंने "सत्य और देश-रक्षाका स्थापन" नामक अेक पुस्तिका लिखी। अुसमें अुन्होंने तत्कालीन धर्मोंकी कुरीतियोंकी खूब पोल खोली। अमिताभ बुद्धपर श्रद्धामात्रसे सुखावती (अेक सुखमय लोक) प्राप्तिके प्रचारक होनेन्को अुन्होंने नारकीय जीव कहा। मंत्र-तंत्र और पूजा-पाठके प्रचारक शिङ्-गोन् संप्रदायको राष्ट्रीय जीवनके लिअे सबसे भारी घातक कहा। अिस प्रकार सभी मतोंको मिथ्यावादी और देशघातक सिद्धकर अुन्होंने राज्याधिकारियोंसे कहा कि वह अिन सब मतोंका प्रचार रोकें, और सभी सद्धर्मपुण्डरीकके सच्चे रास्तेको स्वीकार करें; यदि अैसा न करेंगे, तो जो अुपद्रव हो रहे हैं, सो तो हो ही रहे हैं, विदेशसे देशपर बहुत भारी हमला भी होगा।

अधिकारियोंने अुस पुस्तिकाका कोअी ख्याल भी नहीं किया, बल्कि अुनकी सहसे अेक भीळने महात्माकी झोंपळीमें आग लगा दी, और वह रातके अँधेरेमें जान लेकर भाग सके। अिसके बाद कअी महीने तक आस-पासके जिलोंमें प्रचार करके फिर कामाकुराकी सळकें और बाग अुनकी कळकती आवाज़से प्रतिध्वनित होने लगीं। अधिकारियोंने अुनपर शान्ति-भंगका दोष लगा अिजू प्रायद्वीपमें निर्वासित कर दिया। अिस जंगली और खतरनाक समुद्री तट-भूमिमें अेकान्त-वास करते निचिरेन्ने अपने भूत जीवनपर नज़र डाली, और हताश होनेकी जगह अुन्हें अपने पवित्र अुद्देश्य-पर और भी दृढ़ विश्वास हो गया। अुन्होंने अपने विचारोंको "पाँच निबंध" नामक पुस्तकमें लिपिबद्ध किया। अिसमें अपने सिद्धान्तकी बुद्धके परिपूर्ण अुपदेश सद्धर्मपुंडरीक-सूत्रसे पुष्टि, लोगोंको आसान शिक्षाकी आवश्यकता, सद्धर्मपुंडरीककी कालानुसार अुपयोगिता, संसार भरके लिअे

जापानका बौद्ध धर्मका केन्द्र होना, और पूर्व आचार्यों और सिद्धान्तोंका अपना काम करके सद्धर्मपुंडरीकके प्रचारके लिअे रास्ता साफ़ करनेपर बहसकी गअी थी। अिस प्रकार तीन वर्षके अुस निर्वासनने निचिरेन्के जोशको ठंडा करनेकी जगह घीमें आग का काम किया।

१२६३ अी०में जब निचिरेन् लौटे तो अुनके पास जोशीले अनुयायियोंकी पहिलेसे अधिक संख्या अिकट्ठी हो गअी। अब वह और भी अधिक अुत्साह और निर्भीकताके साथ अेक स्थानसे दूसरे स्थानमें विचरते प्रचार-करने लगे। अुनके सुखावती-वादियोंके कठोर खंडनसे बहुत कुपित हो, अेक सर्दार अुन्हें मार डालना चाहता था, किन्तु संयोगसे वह उससे बच गये। अुसी समय चीनका मंगोल सम्राट् कुब्ले खान कोरियाको विजय-कर जापानपर चढ़ाई करना चाहता था। अिसकी अफवाहसे लोगोंके होश-हवास अैसे ही अुळ रहे थे, और अन्तमें अेक मंगोल दूत जापानसे कर माँगनेके लिअे पहुँचा। निचिरेन् मौका देख सर्कारको अपनी सात वर्ष पहिले कही भविष्यद्वाणीका हवाला दे सजग करने लगे। अुन्होंने सर्कारी सहायता पानेवाले मठाधीशों और आचार्योंको शास्त्रार्थ करनेके लिअे ललकारा। किन्तु, अधिकारियोंने अुसकी अुपेक्षा की।

मंगोलोंके साथ झगळा आरम्भ हो गया, और तीन वर्ष तक चल ही रहा था, अिस बीच निचिरेन् भी बळे जोरशोरसे चेतावनी दे रहे थे। सर्कार अब और अिस धृष्ठताको सहनेवाली न थी, अुसने अुन्हें सोदो द्वीपमें निर्वासित करनेकी आज्ञा दी। पुलिस अफसर निचिरेन्का जानी दुश्मन था। वह रास्तामें जाते वक्त अुनको खतम कर देना चाहता था। १२७१का जाळा शुरू हो चुका था। आधी रातको निचिरेन् बध्यस्थानपर ले जाये गये। तलवार अुनके गर्दनपर गिरना ही चाहती थी, कि आकाशमें अेक प्रकाशमान दहकता आगका गोला पूर्व-दक्षिणसे उत्तर-पश्चिमकी ओर चला गया। अुसकी रोशनीमें सबके चेहरे दिखाअी देने लगे। अफसर

और सिपाही डर गअे, और बधिकके हाथसे तलवार गिर गअी। प्राण-बध अब असंभव हो गया, और निचिरेन्‌को फिर निर्वासित कर दिया गया। यह तीसरी बार मृत्युसे बाल-बाल बचना था। अिसके बाद निचिरेन् स्वयं मानते थे, कि अुनका दूसरा जन्म हुआ है। अब तककी पचास वर्षकी आयुको वह तैयारीका काल समझते थे, और अिस कालापानीको वह अपने कार्यके लिअे अेक महत्त्वपूर्ण अवसर समझ रहे थे।

सोदो द्वीप जापानके अुत्तरी समुद्रमें है। निचिरेन् अभी तक अुत्तरी समुद्रके जाळे और हड्डी चीरनेवाले हवाके झोंकोंको न जानते थे। नाव-पर चढ़तेही अुनको अिसका अनुभव होने लगा। अुन्होंने अपने अेक लेखमें अिसे "पहाळपर पहाळ" और "लहरोंपर लहरें" कहकर वर्णित किया है। अुन बर्फानी जाळेकी रातोंकी भयंकर सर्दी और भूखको अुन्होंने अेक सूने झोपळेमें बिताया। अुस अेकान्तवासमें निचिरेन्‌का जैसा सजीव दिमाग़ कहाँ चुप रहनेवाला था। अुन्होंने अिस समय कितने ही पत्र और निबंध लिखे। सोदोके अपढ़ मछुओंमें भी अुनको कुछ अनुयायी मिल गये, यह अुनके लिअे कम सन्तोषकी बात न थी। समय समयपर अुन्हें अपने शिष्योंकी कार्यतत्परताकी खबर भी मिलती रहती थी। अिन सारी कठिनाअियोंके बाद भी अुनका अुत्साह अुनकी निर्भीकता पहिले ही जैसी थी, यह हमें अुनके पहिले जाळेकी समाप्तिपर १२७२ अी० में लिखे "आँखोंका खोलना" नामक निबंधके अिस वाक्यसे मालूम होता है—

"चाहे देवगण रक्षासे हाथ खींच लें, चाहे सारी आफ़तें मेरे अूपर आवें, तो भी मैं अपने जीवनको अिस कार्यके लिअे अर्पण करूँगा।... चाहे विपत् हो चाहे संपत्, सद्धर्मपुंडरीकका छोळना मेरे लिअे नरकपातके बरा-बर है। मैं अपनी महान् प्रतिज्ञापर दृढ़ रहूँगा। सारे प्रलोभनों और सारी भीषणताओंका मुझे सामना करना होगा। यदि कोअी कहेगा—'तुम अपने विचारोंको छोळ दो, तुम्हें जापानका राज्य मिलेगा...'

अैसे प्रलोभनोंसे मेरा मन जरा भी चलित न होगा। . . . कोअी भी आफत मेरे लिअे आँधीके सामने धूल जैसी होगी। मैं जापानका स्तम्भ बनूँगा, मैं जापानकी आँख बनूँगा, मैं जापानका जीवन(-घट) बनूँगा। मेरी यह प्रतिज्ञाअें अटल रहेंगी।"

निचिरेन्की दृढ़प्रतिज्ञाके ही लिअे भर्तृहरिने कहा था—
"निन्दंतु नीतिनिपुणा यदि वा स्तुवन्तु, लक्ष्मी समाविशतु गच्छतु वा यथेष्टम्।
अद्यैव मरणमस्तु युगान्तरे वा, न्यायात्पथः प्रविचलंति पदं न धीराः॥"
वधस्थानकी नंगी तलवार और सोदोकी बर्फ़ानी रात और भूखने भी उन्हें नहीं विचलित किया।

ढाअी वर्षके अेकान्त-निर्वासनके बाद सर्कारने दंड हटा लिया। कुब्लेखाँकी नाविकसेना तुरन्त ही जापानपर टूटनेवाली थी, अिसीलिअे शासकोंका भाव सन्त निचिरेन्की ओर बदला हुआ था। वह अुनसे सुलह करना चाहते थे। सर्कार अिस शर्तपर अुन्हें प्रचारकी अनुमति देनेके लिअे तैयार थी, कि वह अन्य बौद्ध सम्प्रदायोंपर कठोर आक्षेप न करें। लेकिन निचिरेन् अिसके लिअे तैयार न थे। जिसे वह झूठ समझते थे, अुसे झूठ न कहना अुनके लिअे पाप था। अेक मास तक सुलहकी बात चलती रही; और अिसी बीचमें लोगोंने देखा कि वह दहाळता सिंह शान्त हरिण बन फुजीयामाके पश्चिम मिनोबूकी पहाळियोंमें अेकान्तवासके लिअे चला गया। अिस शान्तिको सन्त निचेरेन्ने क्यों पसंद किया? अुन्होंने अितने समयमें अपने विचारोंका काफ़ी प्रचार कर लिया था। लेकिन वह समझते थे, अुनके कामको जारी रखनेके लिअे अेक केन्द्रीय संस्थाकी आवश्यकता है। तबसे आठ वर्ष तक वह मिनोबूकी पहाळियोंमें अिसी धुनको लेकर पळे रहे।

महात्मा निचिरेन् अब ६१ वर्षके हो चुके थे। अितने शारीरिक कष्टोंने अुनके स्वास्थ्यपर प्रभाव डाला था, और कितने ही समयसे दुर्बल और रोगी रहते थे। अुन्होंने सोचा—"हमारे भगवान् शाक्यमुनिने अपने

जीवनके अंतिम आठ वर्षोंमें गृध्रकूट (राजगृह)पर सद्धर्मपुंडरीकका प्रकाश किया था, और फिर वह महापरिनिर्वाणके लिअे अुत्तर-पूर्व दिशामें कुशी नगरकी ओर चले। मैं भी अपने आठ वर्ष मिनोबूमें बिता चुका, अब मुझे जीवनके अन्तके लिअे तैयारी करनी चाहिअे।" वह अुत्तर-पूर्वकी ओर चलते अिकेगामी स्थानमें पहुँचे। अुस समय वर्तमान तोक्योमें कुछ मछुओंके झोपळोंके सिवा कुछ न था। किन्तु आज अिकेगामी तोक्यो म्युनिस्पेल्टीके भीतर है, और वहाँका निचिरेन् बौद्ध मठ बहुत ही प्रभावशाली संस्था है। अिकेगामीमें अुनकी बीमारी बहुत बढ़ गअी। अपने अेक मासकी अिस अन्तिम बीमारीमें वह बळे अुत्साहसे सद्धर्मपुंडरीकका अुपदेश करते रहे; और अपने श्रद्धालु शिष्योंके बीच १२८२ अी०में वे दसवें मासकी तेरहवीं तिथिको मृत्युको प्राप्त हुअे।

अैसा जीवन दूसरोंमें जोश डाले बिना कैसे रह सकता था? और हम देखते हैं, कि अुनका सबसे छोटा शिष्य निचिज़ो १२९४ अी०में राजधानी मियको (क्योतो)को अपना प्रचार केन्द्र बनाता है, और सम्राट्को धर्मका निमंत्रण देता है। १२९५ में दूसरा शिष्य निचिज़ू अुत्तरके जंगली अैनूजातिमें धर्म-प्रचार करने जाता है। अुनके शिष्य किसीके भी उपदेश करते वक्त जाकर शास्त्रार्थके लिअे आह्वान करते थे—आओ, चाहे तुम हमारी मानो, या हमें अपनी बात मनवाओ। अिस व्यवहारके कारण पिछली शताब्दियोंमें अुनपर अत्याचार भी बहुत हुअे। आज जापानमें निचिरेन्के अनुयायियोंकी संख्या ३१ लाख है। अुनके ४,०२१ भिक्षु ४५ भिक्षुणी, ५०४५ मंदिर और ११९० अुपदेशशालाअें हैं। तोक्योमें अुनका अपना रिश्शो विश्वविद्यालय है। यद्यपि संख्याके लिहाजसे दूसरे बौद्ध संप्रदाय अुनसे कहीं बढ़कर हैं, किन्तु, महात्मा निचिरेन्का जोश अब भी अुनके अनुयायियोंमें है। जहाँ तक जापानी जातिका संबंध है, जापानी बौद्ध बहुत कर्मठ और सुसंगठित हैं; किन्तु अन्य जातियोंमें धर्म-प्रचार

करनेका कष्ट अुठानेके लिअे वह तैयार नहीं। तो भी यदि कभी आप अेकाध अैसे प्रचारक बाहर पावेंगे, तो वह निचिरेन्के ही धर्म-पुत्रोंमेंसे। अिसका अुदाहरण हालमें कलकत्तामें स्थापित जापानी बौद्ध विहार है। अुन जापानी भिक्षुओंको पंखा बजाते "नम् म्यो होरङ्ग्यो क्यो" अुच्चारण करते सळकों और गलियोंमें कितने पाठकोंने देखा होगा। यद्यपि जापानमें हमने अिस तरह पंखा बजाते निचिरेन्के अनुयायियोंको नहीं देखा; और सद्धर्मपुंडरीकके जैसी अुच्च आदर्श तथा गंभीर विचारपूर्ण शिक्षा और पंखा बजानेसे कोअी संबंध नहीं है, बल्कि वह बाज वक्त भारतीय दर्शकके मनमें अुल्टा प्रभाव डालती है, तो भी अिससे अितना तो मालूम हो जाता है, कि निचिरेन्के अनुयायी आज भी सजीव हैं।

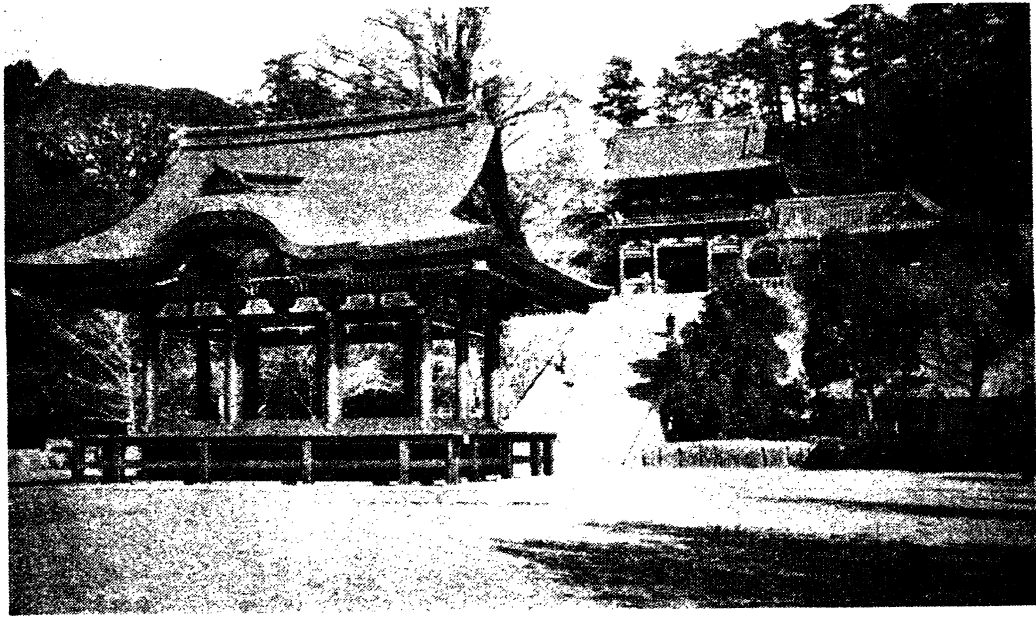
१४—कामाकुरा

२६ मओीको कामाकुरा चलनेकी सलाह पक्की हुअी थी। निश्चित समयसे आध घण्टा पूर्व ही सात बजे श्री सकाकिबाराके साथ मैं तोक्योके शिनागावा स्टेशनपर पहुँचा। मुसाफिरखानेमें हज़ारों आँखोंकी बौछारमें ९ बजे तक अिन्तिज़ार किया ,किन्तु हमारे दूसरे सहगामी भदन्त नारदका पता नहीं था। पीछे मालूम हुआ, वह प्लेटफार्मपर हमारी प्रतीक्षा कर रहे थे। खैर, हम दोनोंने कामाकुराका टिकट ले प्रस्थान किया। कामाकुरा तोक्योसे प्राय: ३५ मील है। यद्यपि गाळियाँ बिजलीके ज़ोरसे चलती हैं, किन्तु हमें दो-तीन जगह गाळी बदलनी पळी, अिसलिअे १० बजे कामाकुरा पहुँचे। स्टेशनके बाहर मोटरबसें खळी मिलीं। अेक येन् (बारह आने) दे दीजिये और कामाकुराके सारे प्रसिद्ध स्थानोंको देखते हुअे ६ मील दूर कतसे तक चले जाअिये। हमने अेक-अेक येन् दे टिकट खरीदे और मोटरबस-पर सवार हुअे। जापानी बसोंका भारतीय लारियोंसे मुकाबिला न कीजिये। यहाँ बेंचोंपर साफ़, मुलायम, हरी मखमली गद्दियाँ होती हैं। प्राय: बेञ्चें तीन और वह अगल-बगल तथा पीछेकी दीवारोंसे लगी होती हैं। सवारी अधिक होनेपर लोग छतसे लटकते कळेको पकळकर खळे हो जाते हैं। किन्तु जिस बसपर हम बैठे थे, वह बीचमें रास्ता छोळकर दोनों ओर दो-दो आदमियोंके बैठने लायक बेञ्चोंवाली थी। ड्राअिवर भी वैसी ही अेक गद्दीदार कुर्सीपर बैठा था। उसकी बगलमें टिकट कलक्टर लळकीका

गद्दीदार स्टूल था, किन्तु अुसे या किसी भी टिकट-कलेक्टर लळकीको हमने बैठे नहीं देखा। प्रसिद्ध स्थानके आते ही लळकी ड्राअिवरके पास खळी होकर व्याख्यान देने लगती थी; "महाशयो यह खेन्-चो-जी (मन्दिर) है। यह कामाकुराके पाँच प्रधान मन्दिरोंमें अेक है। सात सौ वर्ष पहले (१२५३ अी०) जब होजो तोकियोरीके हाथमें जापानके शासनकी बाग-डोर थी, अुसीने चीनी भिक्षु दाअिगाकुजी (ता-अु-लुङ)के लिअे अिसे बनाया था...।"

साराका सारा व्याख्यान रटा हुआ था और अपने यहाँके रामलीलाकी टोनमें दुहराया जाता था। रेडियोमें जापानके भिन्न-भिन्न भागोंकी पथ-प्रदर्शिका लळकियोंके भाषणकी अेक बार बानगी सुननेमें आअी थी। देखा, क्यूशूके दक्षिणी छोरसे लेकर होक्काअिदो (सघालेनके पासका जापानी टापू)तक सभी जगह अिनकी वही गति है। हाँ, तोक्योकी पथ-प्रदर्शिकाओंकी टोन कुछ स्वाभाविक-सी होती है। वहाँकी लळकियाँ शायद अच्छी शिक्षित होती हैं। वैसे रेल हो या ट्राम, बस हो या आफिस-की मेज़, सभी जगह काम करनेवाली लळकियाँ अंगरेजी पोशाक—केश-जूळामें देखी जाती हैं। किन्तु कामाकुराके बस-सञ्चालक अप्-टू-डेट होनेमें सबके कान काट रहे थे। अुनकी टिकट-कलेक्टर और पथ-प्रदर्शिका लळकियाँ घुळसवारके वेशमें कोट-ब्रिचेस और बूट पहने थीं। हाँ, सिरमें अुनके भी बळा जूळा था, जो अुस मर्दानी पोशाकपर बहुत खटकता था।

अुपराज शोतोकू (५९२-६२१ अी०)—जो जापानी बौद्ध धर्मके अशोक तथा जापानी सभ्यताके पिता कहे जाते हैं—के कालसे सभ्य जापानी राष्ट्रका आरम्भ होता है। किन्तु ७१० अी० तक जापानकी राजधानी प्रत्येक राजाके साथ घूमती रही। ७१० अी०में नारामें प्रथम राजधानी स्थापित हुअी। ७९४ अी०में अुसे हटाकर हेअि-अङ्-क्यो (वर्तमान क्योतो)



२३—कामाकुरा—हचीमान् (शिन्तो मंदिर) (पृ० १६०)

ले जाया गया। यद्यपि बीचमें भी अेकाध बार प्रभावशाली वंशोंने मिकादोको अपने हाथकी कठपुतली बना शासन किया था, किन्तु ११९२ अी० में (जिस वक्त भारतीय शासन हिन्दुओंके हाथसे निकलकर तुर्कोंके हाथमें जा रहा था) जापानमें अेक नये ढंगकी शासनकी नींव डाली गयी, जिसे शोगुन-शासन-प्रणाली कहते हैं। अिस प्रणालीके अनुसार मिकादोकी गद्दी अक्षुण्ण रखी गयी तथा अुनकी पूजा-प्रतिष्ठा भी वैसी ही कायम रखी गयी, किन्तु वास्तविक शासन शोगुनके हाथमें चला गया। शोगुनका शब्दार्थ महासेनापति है। मौर्य शासनके अन्तमें अुनके सेनापति पुष्यमित्रने भी बहुत काल तक सेनापतिके ही नामसे शासन किया था, किन्तु कहा नहीं जा सकता कि अुन्होंने किसी मौर्य सन्तानको गद्दीगर बनाये रखा या नहीं। हाँ, नेपालका शासन पिछली शताब्दीके मध्यसे अुसी शोगुन-प्रणालीपर हो रहा है। फर्क अितना ही है कि जहाँ शोगुनका उत्तराधिकारी अुसका लळका होता था, वहाँ नेपालके तीन सरकारका अुत्तराधिकारी राणा वंशका आयु और सम्बन्धमें ज्येष्ठतम व्यक्ति होता है। कामाकुराको शोगुन-प्रणालीके संस्थापक योरीतोमो मिनामोतोने स्थापित किया था। यद्यपि १८६८ अी० तक क्योतो मिकादोकी राजधानी रहा, तो भी शोगुनकी राजधानी होनेसे ११९२से १३३३ अी० तक कामाकुरा जापानका प्रधान नगर था। किसी वक्त कामाकुरामें सात लाख आदमी बसते थे, किन्तु अब अुसके दशांश भी नहीं हैं। पहलेके महलों और मकानोंकी जगह अब खेत, बगीचे या जंगल हैं। हाँ, पहलेकी कृतियाँ और कितने ही ऐतिहासिक स्थान अब भी हैं, जिनके कारण कामाकुरा हरअेक यात्री, जापानीके लिअे भी, अत्यन्त दर्शनीय स्थान है।

•

हमारी बस हचिमान् शिन्तो देवालयको बगलमें छोळती पहले केन्-चो-जी (अुच्चारण, खेन्-चो-जी भी) पहुँची। पर्वतके वक्षमें पुराने और नये देवदारोंके बीच यह पुराना बौद्ध मठ है। विहारके हातेमें चार देवदार हैं, जिनके बारेमें कहा जाता है कि अुन्हें भिक्षु दाअिगाकुजेन्जी (१२५३ अी०)

चीनसे लाये थे। बिहारकी पुरानी अिमारत तो वही पुरानी नहीं है, किन्तु कुछ मूर्तियाँ पुरानी और कलाकी दृष्टिसे बहुत सुन्दर हैं। हमारी बसकी पथ-प्रदर्शिका हर जगह अपना लम्बा व्याख्यान सुनाती थी। जमातमें हम ही अभागे थे, जो अुससे लाभ नहीं अुठा सकते थे। हमें बार-बार आफ़ीशियल-गाअिड-टू-जापानके पन्ने अुलटने पळते थे।

केन्-चो-जीसे लौटकर हम हचिमान् पहुँचे। यह शिन्तो देवालय है। आम तौरसे शिन्तो-देवालय बहुत सीधे-सादे होते हैं, किन्तु अिस मन्दिरका फाटक और अिमारतें नाना सुन्दर कारुकार्योंसे अलंकृत हैं। यह पता लगा कि मेअिजी क्रान्ति (१८६८ ऑ०)से पूर्व यह देवालय बौद्ध पुजारियोंके हाथमें था और पासमें बौद्ध मन्दिर, मूर्तियाँ और पुस्तकें भी थीं। किन्तु अुस क्रान्तिकी आँधी तथा पश्चिमकी अन्धी नक़ल करनेवालोंके उत्साहके कारण हज़ारों और मन्दिरोंकी भाँति अुन्हें नष्ट कर दिया गया। अुस समय जो मूर्तियाँ किसी यूरोपियन या अमेरिकनके हाथ लगीं, वे तो अब भी यूरोप या अमेरिकाके संग्रहालयोंमें सुरक्षित हैं, किन्तु अधिकांश आगकी भेंट की गअीं, जिनके लिये सहृदय जन अवश्य दो आँसू बहाये बिना नहीं रहेंगे। किन्तु क्रान्ति सारे गुणोंहीको लेकर नहीं आती, वह देवी सबसे प्रिय वस्तुका बलिदान माँगती है।

हचिमान् देवालयमें पुराने जिरहबख्तर और हथियारोंका अेक अच्छा संग्रहालय है।

देवालयसे कुछ दूरपर राष्ट्रीय कला-संग्रहालय है। अिसमें कामा-कुरा-कालकी तथा कुछ पीछेकी भी मूर्तियों, चित्रों, चेहरों तथा हथियारों-का अच्छा संग्रह है। भीतर जानेके लिये दस पैसे (२० सेन्) देने पळते हैं।

फिर हम पहाळकी जळमें पहुँचे और कुछ सीढ़ियाँ चढ़ कामाकुराके संस्थापक प्रथम शोगुन योरीतोमोकी समाधिपर पहुँचे। शताब्दियोंके बाद नाना सरदारियोंमें बँटे जापानको वीर योरीतोमो अेक शासनमें



२४—कामाकुरा—दाओी-बुत्सु (महान्बुद्ध) (पृ० १६३)

लानेमें सफल हुआ था। असलिये यह स्थान जापानी छात्रोंके लिये विशेष महत्त्व रखता है। समाधि अेक मामूली पत्थरका बेडौलडौल स्तूप है।

अगला स्थान कामाकुरा (शिन्तो) देवालय है, जिसकी स्थापना मेअिजी सम्राट्की आज्ञासे १८६९ अी०में हुअी थी। यह सरकारका कृपा-पात्र स्थान है। जापानी सरकारका बराबर यह प्रयत्न रहता है, कि सम्राट् और अुनके वंशको, पृथिवीपर होते हुअे भी देववंश सिद्ध किया जाये। स्कूली पुस्तकोंमें बळी गम्भीरतासे शिक्षा दी जाती है कि जापानका राजवंश सूर्यदेवीकी औरस सन्तान है। प्रथम सूर्यदेवीके पौत्र निनिगी पितामहीकी आज्ञासे जापानकी भूमिमें अुतरे। अुनके प्रपौत्र जिम्मूने जापानके बहुत-से भागको जीतकर अीसा-पूर्व ६६० में अभिषेक कराया। अी० पू० ६६० से १ अीसवी सन् तक ग्यारह मिकादो राज करते रहे। जिम्मूसे वर्तमान सम्राट् हिरोहितो तक सूर्यदेवीकी परम्परा जापानके सिंहासनपर आरूढ़ होती आ रही है। सूर्यदेवीका वरदान है कि जब तक पृथिवी और आकाश हैं, तब तक अुसकी सन्तान शासन करेगी। यह भाव धार्मिक विश्वाससे भी कळाअीके साथ हरअेक जापानीको हृदयङ्गम कराया जाता है। हरअेक जापानी वैसे ही अपने सम्राट्की हल्की-सी भी निन्दा सुननेके लिये तैयार नहीं, जैसे अेक पक्का मुसलमान अपने रसूलके बारेमें। पिछले जून मासमें शाङ-घाअीके किसी चीनी पत्रने जापान-सम्राट्के बारेमें कुछ विरोधी बातें लिखी थीं, जिसके लिये वहाँके जापानियोंने शाब्दिक विरोध ही नहीं किया, बल्कि चीन-सरकारको प्रतिवाद करने तथा कुछ अधिकारियोंको पदच्युत करनेकी शर्तके साथ अेक अल्टीमेटम-सा दे दिया। नेपालमें अपने अधिराजके प्रति बहुत सम्मानका भाव है और वह भी देवत्वके समीप तक पहुँचता है, किन्तु जापान-सम्राट्को तो मनुष्य-रूपमें साक्षात् देवता ही समझा जाता है। मेअिजी सम्राट् अकेले अपने जीवनमें जापानमें जो अितना परिवर्तन करनेमें समर्थ हुअे, अुसके

पीछे जनताका यह भाव बहुत सहायक हुआ। यही भाव था जिससे प्रेरित हो रूस-विजेता सेनापति नोगी अपने सम्राट्की मृत्युपर सपत्नीक हराकिरी (आत्म-हत्या) कर अुनके अनुगामी हुअे। अपने सम्राट्के लिये धन-प्राण सर्वस्व प्रदान करना अेक जापानीके लिये सबसे बढ़कर सौभाग्यकी बात है।

कामाकुरा देवालय—सम्राट्-वंशकी अेक अैतिहासिक घटनाका स्मारक है। अिसकी बगलमें वह गुफा है, जिसमें मिकादो गोदाअिगोके पुत्र राजकुमार मोरीनगाको क़ैद किया गया था और यहीं २८ वर्षकी अवस्थामें अुन्हें १३३५ अी० में क़त्ल किया गया था। १८७३ अी०में सम्राट् मेअिजी स्वयं अिस स्थानपर आये थे, और अुनके हाथके लिखे चीनी अक्षर आज भी तोरण-द्वारपर लगे हुअे हैं। लौटते वक्त सळकके किनारे हमें वह स्थान दिखलाया गया, जहाँ बाज़ारमें खळे हो महात्मा निचिरेन् (१२२२-८३ अी०) व्याख्यान दिया करते थे।

अब हम हसे कन्नन् (हसेके अवलोकितेश्वर)के मन्दिरमें गये। मन्दिर-की आजकल मरम्मत हो रही है। प्रधान मूर्ति अेकादशमुखी अवलोकि-तेश्वरकी है। सिर्फ़ अेक कपूरके वृक्षसे यह ३० फ़ीट ३ अिञ्च अूँची मूर्ति गढ़ी गअी है और अिस प्रकार लकळीकी मूर्तियोंमें संसारमें अद्वितीय है। अिसकी स्थापना बारह सौ वर्ष पूर्व (७३६ अी०) हुअी थी।

बारह बजेके क़रीब हम कामाकुराकी लोकप्रसिद्ध बुद्ध-प्रतिमा दाअी-बुत्सुको देखने गये। यह विशालकाय प्रतिमा १२५२ अी० में ढाली गअी थी। अिस ध्यानस्थ मूर्तिकी अूँचाअी ४२ फ़ीट ६ अिञ्च, निचलेभागका घेरा ९७ फ़ीट, चेहरेकी लम्बाअी ७ फ़ीट ८ अिञ्च और आँखोंकी चौळाअी ३ फ़ीट ५ अिञ्च है। ललाटकी बिन्दी (अूर्णा)में १५ सेरके क़रीब चाँदी लगी है; और सारी मूर्तिका वज़न ९२ टन (छब्बीस सौ मनके क़रीब) है। समुद्रकी ओर मुख करके अचल भावसे बैठी हुअी अिस मूर्तिके चेहरेसे

अपार शान्ति बरस रही है। यह जापानी कलाके अुत्कर्षका अच्छा नमूना है। मेअिजी क्रान्तिके आरम्भमें जब बौद्ध धर्मपर आफ़तके पहाळ ढाये जा रहे थे, अुस समय अमेरिकनोंके हाथ अिस मूर्तिको भी बेच डालनेकी बात चली थी। खरीदारोंने अपना गिरोह भी तैयार कर लिया था। सारी मूर्तिको अुठा कर ले जाना मुश्किल था, अिसलिये निश्चय हुआ था कि अिसके टुकळे करके गला लिये जायें। सरकार तो अुस समय जैसे हो तैसे बौद्ध धर्मको जापानसे बिदा करना चाहती थी, अिसलिये अुसकी ओरसे विरोध होनेकी सम्भावना तो थी नहीं; किन्तु मूर्तिको तोळने और गलानेका खर्च बहुत ज्यादा पळता था, और अिसीलिये कामाकुराके दाअी-बुत्सु बच गये। मूर्ति भीतरसे खोखली है। भीतर जानेका दरवाजा तथा भीतर-ही-भीतर अूपर चढ़नेकी सीढ़ी है।

अिन बसोंका अेक और भी अच्छा प्रबन्ध है। यदि आप किसी स्थानपर और देर तक देखना चाहते हैं, तो आप ठहर सकते हैं और कुछ मिनटों बाद आनेवाली दूसरी या तीसरी-चौथी बससे आगे जा सकते हैं। हमने अपनी बसको छोळ दिया और दर्शनके बाद बिस्कुट-सोडाकी दूकानमें चले गये, जो कि मूर्तिके पीछेकी ओर है। वहाँ पेट-भर जलपान किया।

दाअी-बुत्सुके अुद्यानसे निकल बसोंके अड्डेपर आये और कुछ मिनटके अिन्तज़ारके बाद हमें बस मिली। दो-अेक पहाळियोंको पारकर, हरियाली-भरे पहाळोंपर भूलभूलैया खेलती सळकसे ६ मील चलकर हम कतसे पहुँचे। यह भी समुद्र-तटपर है। प्रधान सळकपर दोनों ओर भोजनालयों, चायखानोंकी भरमार है। हरअेक दूकानपर तरुण परिचारिकायें खळी हैं, और आपकी दृष्टि अुधर जाते ही भोजनका निमन्त्रण देती हैं। जापानी व्यापारी ग्राहकोंके मनोविज्ञानको अच्छी तरह जानते हैं; वह जानते हैं कि साफ़-सुथरी तरुणी परिचारिकायें ग्राहकोंके लिये विशेष आकर्षणका काम देती हैं, अिसीलिये वे पाँच-छ

रुपये मासिक अधिक देकर भी चुनी हुअी लळकियोंको रखते हैं। योकोहामामें अेक दिन हम अपने दो मित्रोंके साथ अेक भोजनालयमें खाने गये। वहाँ जितनी परिचारिकायें थीं, यदि कुरूपतापर पारितोषिक दिया जाता, तो शायद निर्णायकोंके लिये किसी अेकका निश्चय करना कठिन हो जाता। मेरे पूछनेपर साथीने कहा—कम तनखाह होनेके लिये अैसा किया जाता है। और सुन्दरियोंको न रखनेसे जहाँ तनखाह कम देनी पळती है, वहाँ अेक फ़ायदा यह है कि अिन भोजनालयोंमें पतिके साथ पत्नी भी भोजन करने आ सकती है; किन्तु काफेमें जाकर सुन्दरियोंके बाज़ारमें फीकी बननेके लिये कोअी पत्नी तैयार न होगी। यही नहीं, काफ़ेमें विवाहित पुरुष छिपकर जाया करते हैं, और अिस बातका ध्यान रखते हैं कि सिगरेट पीनेके लिये अमूल्य वितरित दियासलाअी कहीं धोखेसे अुनकी पाकेटमें न चली जाय, और फिर दस झिळक पत्नीकी ओरसे सहनी पळे।

कतसे वही स्थान है, जहाँ महात्मा निचिरेन् बध-स्थानपर ले जाये जाकर बाल-बाल बच गये थे। कर माँगनेके लिये आये हुअे कुब्ले खाँके दूतोंका भी यहीं सर क़लम किया गया था। अेक पतली पानीकी धारके अुस पार अेनोशिमा द्वीप है।

सिरसे पैर तक हरियालीसे लदी पहाळीवाला यह द्वीप है। खाळीमें लकळीका पुल है, जिसके नीचे ज्वारके समय ही अधिक पानी होता है। पुल छोळते ही सीढ़ियोंसे अूपर चढ़ना पळता है। रास्तेके दोनों ओर पान्थशालायें तथा बिस्कुट आदिकी दूकानें हैं। काफ़ी चढ़नेपर अेनोशीमा (शिन्तो) देवालय है। मेअिजी क्रान्तिके पूर्व यहाँ अेक बौद्ध बिहार था, जिसे नष्ट कर वर्तमान देवालय बनाया गया। कुछ दूरपर अमा-तेरसू (सूर्यदेवी)की अेक कन्याका देवालय है। पूछनेपर बतलाया गया—सूर्यदेवीकी तीन कन्याओंमें यह अेक है। अपनी दो बहनोंकी भाँति अिसने



२५—कामाकुरा—अेनोशिमा द्वीप (पृ० १६५)

भी ब्याह नहीं किया। मैंने कहा—तब तो मालूम होता है, आजकलके जापानियोंसे तो कहीं अच्छे समझदार अुस समयके लोग थे, जो जन-संख्या-की वृद्धिकी भयंकरताको समझते थे, अिसीलिये तो सूर्यदेवीकी कन्यायें तक विवाह और पुत्र-प्रसवसे बाज आती थीं। अपने साथीकी बात नहीं कहता, किन्तु मेरे दिलमें तो सूर्यदेवीकी अिन अभागी आजन्म कुमारी कन्याओंपर बहुत तरस आया। वहाँसे प्रायः दो मील चढ़ते-अुतरते हम टापूकी दूसरी ओर पहुँचे। दूकानें यहाँ भी रास्तोंपर सब जगह हैं।

पथरीली चट्टानोंसे अुतरकर हम अेक ओर मुळे और कुछ मिनटोंमें अेक गुफाके द्वारपर पहुँचे। कहते हैं, पहले अिस गुफामें अेक भयङ्कर नाग रहा करता था। अुसके आतङ्कके मारे मनुष्य क्या, पशु-पक्षी तकका अिधरसे गुजरना मुश्किल था। महात्मा कोबो-दाअिशी (सातवीं शताब्दी) को अिसका पता लगा और वह आकर नागको दबा अुसी गुफामें कितने ही समय तक आसन लगाये रहे। हमारे साथी अिस कथाको गप कहनेके लिये तैयार मालूम होते थे। अुनका यह भी कहना था कि गुफाको डाअिनामाअिटसे पीछेसे अुळाया गया है, पहले यह अितनी लम्बी न थी। किन्तु अिसके लिये कोअी ठोस सबूत, युक्ति नहीं।

लौटते वक्त हम नावसे टापूकी आधी परिक्रमाकर पुलके पास आये और स्टेशनपर आ, तोक्योके लिये रवाना हुअे।

१५—अेक जापानी गाँवमें

जापान आनेपर अेक बातका बार-बार ख्याल आता है—हमें किसी पुस्तकमें जापानके अिस रूपका दर्शन पहिले क्यों नहीं हुआ। पुस्तकोंमें वर्णित दृश्य बहुत दूरसे और बहुत धुँधले अंकित किये गये जान पळते हैं। अथवा हम जिस दृष्टिसे, जिस अुद्देश्यसे जापानको देख रहे हैं, वह बात अुन पुस्तकोंके लेखकोंके सामने नहीं थी। अुन पुस्तकोंके लेखक अधिकांश यूरोपियन और अमेरिकन हैं, जिनका दृष्टिकोण हमसे बहुत भिन्न है। जापान आनेसे अेक बात भली भाँति समझमें आगअी, वह यह कि भारत और अन्य पूर्वीय देश अपने पूँजीवादको रखते हुअे यदि कहींसे कुछ सीख सकते हैं, तो जापानसे। जापानने सभी बातें—कल-पुर्जे, अुद्योग-धंधे, विद्या-विज्ञान पश्चिमसे सीखी हैं। हम भारतीयोंका भी पश्चिमसे कमसे कम डेढ़ शताब्दीसे घनिष्ट सम्बन्ध है, फिर भी हम पश्चिमसे काफ़ी कामकी बातें नहीं सीख सके। बात यह है कि पश्चिमसे सीखने लायक़ बातोंको भारतीय आवश्यकताके अनुसार नये रूपमें ढालना हमारी शक्तिसे बाहरकी बात है। कारण कुछ भी हो, लेकिन यह बात यथार्थ है कि हम सीधे पश्चिमी पेटेंट विज्ञानसे अुतना लाभ नहीं अुठा सकते, क्योंकि वह बहुत खर्चीला हो जाता है।

लेकिन जो काम हम नहीं कर सके, अुसे जापानने कर दिया है। अुसने पश्चिमके आविष्कारों, अुद्योग-विधानोंको अपने देशकी परिस्थिति,

वित्त और आवश्यकताके अनुसार परिवर्तित करके ग्रहण कर लिया है। यही बात है कि कृषि-सम्बन्धी यंत्रों, बिजलीके प्रकाश और बैंकोंकी संस्थाओं को यूरोपमें देखकर अुनकी अुपयोगिताको आप समझ लेते हैं, किन्तु अपने देशमें अुनका अुपयोग कैसे हो, जब अिसपर विचार करते हैं, तो सिरपर हाथ रखकर बैठ जाना पळता है। वे सब चीजें असम्भव, अव्यवहार्य, दूसरे लोककीसी जान पळती हैं। जापानमें अुन्हीं बातोंको देखकर वैसा हताश नहीं होना पळता। मेरा जैसा आदमी तो अिसे देखकर चिल्ला अुठता है––‘ओः ! यह पहले क्यों नहीं मालूम हुआ ? अिसे भारतीय क्यों नहीं सीखते ?’ आगे मैं अेक जापानी गाँवका विवरण दे रहा हूँ, जिससे ये बातें स्पष्ट हो जायँगी।

प्रायः अेक मास मैंने तोक्योमें ही बिताया। चौव्वन लाखकी आबादीके अुतने बळे शहरकी चहल-पहलमें तथा मित्रोंकी आवा-जाहीमें मुझे प्रतिकूलता अधिक दिखाअी दी, अिसलिये मैं अेक जापानी गाँव नित्तामें अपने मित्र श्री चुश्यो ब्योदोके मन्दिरपर चला आया। ब्योदो महाशय भारतमें ६ माससे अधिक बिता आये हैं, और मेरा अुनका वहींका परिचय है। वे बौद्धधर्मके शिन्शू सम्प्रदायके पुरोहित हैं। ब्राह्मणोंकी भाँति मन्दिरका पुजारीपद अिस सम्प्रदायमें पैतृक होता है, अिस प्रकार श्री ब्योदोका परिवार नित्ताके अिस मन्दिरका सत्ताअीस पीढ़ियोंसे पुरोहित और पुजारी है। ब्योदोजीके पिता-माता ७०-६६ वर्षके वृद्ध हैं––पके फलकी भाँति किसी समय टपक पळनेवाले। अुनके दो ही पुत्र हैं। छोटा पुत्र भी चुश्योकी भाँति तोक्यो सम्राजीय विश्वविद्यालयका ग्रेजुयेट है। बळे भाअीने संस्कृत और बौद्धधर्मका विशेष अध्ययन किया है, और छोटेने राजनीति आदिका। छोटा अेक समाचारपत्रका सम्पादक है। दोनों भाअी बत्तीस-तीस वर्षके हो गये हैं, किन्तु अभी तक अुन्होंने विवाह नहीं किया है। मैंने अेक दिन अपने मित्रसे कहा––“भारत होता,



२६--ह्योदो परिवारमें (पृ० १६९)

तो अैसे मृत्युके मुँहमें पैर लटकाये मातापिता—विशेषकर माता दिन-भरमें पाँच बारसे कम ब्याह कर डालनेका तक़ाज़ा किये बिना न रहते। पोतेका मुँह बिना देखे अिन्दरका सिंहासन भी अुनके लिये फीका मालूम होता।" व्योदोजीने कहा—"हमारे पितामाताने स्वयं देरसे ब्याह किया था।"

नित्ता अेक छोटासा गाँव है। हमारे यहाँकी भाँति जापानके गाँव सदा अेक झुंडमें नहीं बसते। लोग अपने घर अपने खेतोंके पास बनाते हैं। घरके चारों ओर साग-सब्ज़ीके खेत या बग़ीचे होते हैं। नित्ता भी अैसा ही गाँव है। व्योदोजीका मन्दिर-जेङ्कोजी अेक हरे-भरे छोटे पहाळकी जळमें है। सामने दो-तीन सौ गज़ चौळी समतल भूमि है। अुसीमें धानके खेत हैं। फिर दूसरी हरी-भरी पहाळी है। जिसकी जळमें भी जगह-जगह कितने ही किसानोंके घर हैं। आजकल धानकी पौध रोपनेके लिये तैयार है। खेत भी जोते जा चुके हैं, किन्तु वर्षाके बिना सारा काम रुका है। लोग चिन्तित हैं, क्योंकि धान जापानके कृपकोंकी प्रधान खेती है।

हमारे यहाँ भी जापानकी भाँति सीधे-सादे मेहनती किसान हैं, अुनके पास काफ़ी खेत भी हैं, मज़दूरी आदिमें बहुत फ़र्क़ नहीं है, फिर भी दोनोंमें काफ़ी अन्तर मिलेगा। कहाँ हिन्दुस्तानी खेत और अुसमें खळी फ़सल बिलकुल क्रमरहित आँधीमें फेंकी सूखी पत्तियोंकी भाँति जहाँ-तहाँ पळीसी मालूम होती है, और कहाँ जापानके खेत। गेहूँके खेतोंमें—जो अभी-अभी कटे हैं—गेहूँ क़तारसे बोया दीख पळता है। हर अेक पंक्तिके बीचमें अेक फ़ीटका अन्तर है। खीरेकी बेलको चढ़ानेके लिये बाँसकी दो-दो खपाचोंको जोळ-जोळकर सारा खेत सजाया मालूम पळता है। बकला या मटर, बंदगोभी या आलू, जिस किसीको देखिये, कोअी भी चीज़ फूहड़ स्त्रीके हाथकी सँवारी नहीं जान पळेगी। धानके पौधोंको देखिये—

मालूम होता है, हरी मखमलसे ढँकी मेज़ें रखी हैं। खेतीको प्रोत्साहन देनेके लिये कृषि-सभा प्रशंसापत्र और अिनाम दिया करती है। अुस दिन मैंने रास्तेमें अेक खेतपर लाल झंडीके साथ कुछ लिखा देखा। मेरे मित्रने बतलाया कि अिस खेतको दूसरे नम्बरका प्रशंसापत्र मिला है।

भूमि समतल नहीं है, आबादी भी अधिक है, अिसलिअे सभी प्राप्य भूमिको खेतके रूपमें परिणत कर दिया गया है, और अिसपर धानके खेतोंकी अधिकता, जिन्हें पानीके तलको ठीक रखनेके लिये बहुत बळा बनाया नहीं जा सकता। जापानी खेतोंके छोटे होनेका यह प्रधान कारण है। अिन छोटे खेतोंमें मशीनवाले बळे हल नहीं चलाये जा सकते। तो भी मेशीनका जितना भी अुपयोग हो सकता है, जापानी किसान करता है।

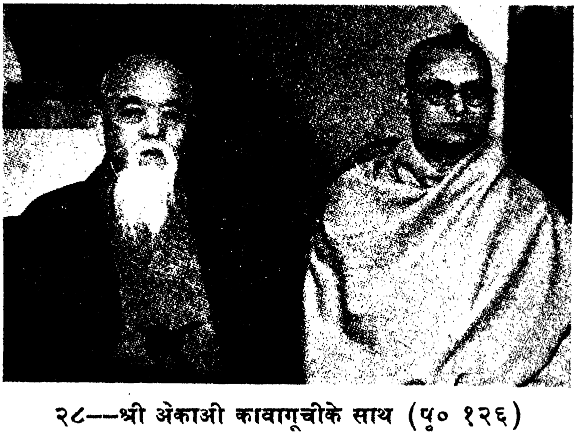
२० जूनको मैंने किसानोंकी विशेष जानकारी प्राप्त करनेके लिये आसपासकी कुछ बस्तियोंकी ख़ाक छाननी चाही। श्री व्योदो दुभाषिया और पथ-प्रदर्शक बने। गाँवकी सळकसे हम सामनेकी परली पहाळीकी ओर चले। पचास ही क़दमपर अेक सोलह वर्षका तरुण साअिकिलपर आता मिला। पर साअिकिल पैदल चलनेकी थकावटसे बचने या फ़ैशनके लिये नहीं है, जैसा कि आम तौरसे भारतीय गाँवोंमें होता है। साअिकिलके पीछे अेक नहीं, दो-दो दुपहिया छोटी-छोटी गाळियाँ बँधी हुअी हैं। अुनमेंसे हरअेकपर दो-दो तीन-तीन मन सामान रखा जा सकता है। फिर पैरसे चलाअी जानेवाली साअिकिल अिंजनका और पिछली दुपहिया गाळियाँ मालगाळीका काम देती हैं। आम तौरसे अेक साअिकिलके साथ अेक ही दुपहिया होती है। साअिकिलकी भाँति अिसमें भी दो रबर टायर-वाले पहिये होते हैं। दाम पूछनेपर मालूम हुआ—साअिकिल ३० येन्, दुपहिया २० येन्, जोळ ५० येन् (यानी ३७॥ रुपया)। तोक्यो जैसे शहरों-में तो बिना दुपहियाके भी साअिकिल सवार डेढ़-डेढ़ हाथ अूँचे पैकटोंकी थाक अेक हाथपर लिये मज़ेसे साअिकिल दौळाते देखे जाते हैं।

शायद जापानियोंका हलका और नाटा होना भी अिस कलाबाज़ीमें सहायक हो।

आगे दो घरोंको पारकर हम तीसरे घरके सामने पहुँचे। जापानी किसानका घर क्या है, लकळीके खम्भों और बल्लियाँका अेक ढाँचा, जिसके अूपर धानके पुआल या गेहूँ-जौके डंठलकी अेक बालिश्त मोटी छत। और दीवार? दीवारकी जगह सफ़ेद साफ़ कागज़ सटे लकळीके हल्के ढाँचे होते हैं, जो आगे-पीछे न ढकेले जाकर अगल-बगलमें खिसकाये जा सकते हैं। रातको लकळीके पतले तख्तोंके वैसे ही ढाँचे दीवारका काम देते हैं। फ़र्शके लिये धानके पुआलकी छै अंगुल मोटी गद्दीपर कपळेकी मगजीवाली सीतलपाटी मढ़ी रहती है। यह बैठककी बात है और सामान रखने आदिकी जगहमें मिट्टी या तख्तेका फ़र्श ही काफ़ी समझा जाता है। नित्ताका सारा गाँव ही नहीं जापानके अधिकांश गाँव अब रोशनीके लिये मिट्टीके तेल या किसी और तेलके मोहताज नहीं हैं। सभी घरोंमें बिजली-की बत्तियाँ चमचमाती हैं। अब हम जिस घरके सामने पहुँचे, वहाँ गेहूँ "दायाँ" जाता था। जापानके किसनोंके पास बैलोंकी कमी है। अेकाध बैल या घोळे जिनके पास हैं, अुनसे वे हल जोतने, या गाळी खींचनेका काम लेते हैं। अिच्छा प्रकट करनेपर व्योदो महाशय मुझे हातेके भीतर ले गये। अेक ओर किसानके रहनेका घर है, दूसरी ओर घास, लकळी और दूसरे सामान रखनेके घर। बीचकी खाली जगह खलियानका काम दे रही है। लम्बाअी-चौळाअी क्रमशः ३० और २० हाथसे अधिक न होगी। दो मशीनोंसे दँवाअीका काम लिया जा रहा है। अुनमें अेक सतयुगकी है, अेक द्वापरकी। कलियुगवालीको देखनेके लिये हमें अभी अगले घर जाना था। सतयुगकी मेशीन नोकदार लोहेके दस-बारह सीकचोंके पंजासी थी। गृहस्थ या गृहस्थिन गेहूँके पूलेको अुठा-अुठाकर अुसके अूपर पटकती है, और दाना अलग हो जाता है। द्वापरकी मेशीन अेक बक्स है, जिसमें अेक



२७—जापानी किसान (खलियानमें) (पृ० १७३)



२८—श्री अेकाओी कावागूचीके साथ (पृ० १२६)

फट्ठेदार बेलनपर लोहेके चार-चार अंगुल बळे काँटे लगे हैं। नीचे बेलन घुमानेका पायदान है, वैसा ही जैसा कि कपळा सीनेकी मेशीनमें होता है। आदमी स्टूलपर बैठकर पैरसे मेशीनको चलाता है। और बेलन बळे वेगसे घूमने लगता है। हाथसे अुठा-अुठाकर गेहूँके पूलेको मेशीनके मुख विवरपर दिया जाता है, और वह बालके दानेको नोचकर गिराती जाती है।

कुछ क़दम और आगे बढ़े, और हम महाशय साअिकीची हिरानोके घरपर पहुँचे। हिरानो महाशय, श्रीमती हिरानो, अेक लळका और अेक नौकर मेशीनमें लगे हुअे थे। यह मेशीन भी दँवाअीकी थी। पैरके बजाय यह तेलके अिंजनसे फटफट करती चल रही थी। गति भी अधिक तेज़ तथा मुख-विवर अधिक चौळा था। दाना निकालना तथा अुसे भुससे अलग करना, यह दोनों काम अिसमें अेक साथ ही हो रहा था। मेशीनका दाम ४० येन् (३० रुपया) और तेलके अिंजनका दाम ८० येन् (६० रुपया) कुल ९० रुपयेका सामान! और आयु ३० वर्ष, अर्थात् साल पीछे तीन रुपयेका व्यय। हिरानो महाशय मध्यम श्रेणीके किसान हैं। अुनके पास अपना खेत है, अिसलिये अुनके पास अपनी मेशीन है। दूसरे ग़रीब किसान साझेमें मेशीनें लिया करते हैं। हिरानोके हातेमें निवास-गृह, खाद-गृह, कर्मशाला, गोशाला, भंडार, वृद्धगृह और अिंधन-कुटिका—यह सात गृह हैं। बीचकी ख़ाली जगह खलिहान, तथा अनाज सुखानेका काम देती है। अेक ओर पेळके नीचे दो जालीदार बक्सोंमें ४०, ५० मुर्ग़ीके चूज़े बंदगोभीके हरे पत्ते खा रहे हैं। आँगनमें जहाँ तहाँ कामधेनु स्वरूपा कितनी ही मुर्ग़ीदेवियाँ चुग रही हैं। हमारे वहाँ पहुँचते ही घरके आधे दर्जन लळकोंके साथ पास-पळोसके भी कितने ही बच्चे जमा हो गये।

ब्योदो महाशयने कोन्नीची-वा (मंगल दिन) कहकर हैट अुतारकर सिर झुकाया, हिरानो महाशयने भी सिर झुकाकर मुस्कराते हुअे प्रत्यभि-

वादन किया। फिर कुछ मिनट बात करके वे हमें वासगृहके बराम्देमें ले गये। स्वच्छ लकळीके तख्तेपर हम बैठाये गये। जापानमें कुर्सीका चलन बहुत कम है। बैठनेके साथ ही काठकी तश्तरीमें कुछ बिस्कुट, चायदानी और चायका प्याला सामने रख दिया गया। बिना नमक मीठेकी जापानी चाय, बिस्कुट, हँसता और खुला चेहरा जापानमें हर जगह तैयार रहता है। भारतकी तरह पर्दा नहीं है, फिर भी स्त्रियाँ अेकाध बार चाय-पानी देने तथा स्मितमुख होकर घुटना टेकने भरके लिये ही मेहमानके सम्मुख आती हैं। अब हिरानो महाशयसे हमने प्रश्न शुरू किये, ब्योदोजी दुभाषिया थे, यह कह ही चुके हैं।

हिरानो दम्पतीके पाँच लळके, तीन लळकियाँ, अेक वृद्ध माता और दो नौकर कुल तेरह आदमी अिस घरमें हैं। मालूम हुआ, अुनके पास ३॥। अेकळ धान, ३। रबी, पाव अेकळ बाँस और २ अेकळ जंगल कुल ९। अेकळ भूमि है। खेती अुनकी प्रधान जीविका है। अुसके अतिरिक्त अेक सुअरी (तीन बच्चोंके साथ), पन्द्रह मुर्ग़ियाँ (३५ चूज़े भी) तथा अेक बैल भी है। सुअरी प्रति वर्ष २० बच्चे दिया करती है, जो कुछ समय बाद चार चार येन्‌में बिक जाते हैं। प्रत्येक मुर्ग़ी सालमें १८० अंडे देती है। हिरानो महाशय तथा दूसरे किसान भी, अंडोंको बेच लेनेमें ही आसानी देखते हैं। अेक अंडा २ सेन् (भारतीय अेक पैसा)में बिकता है।

और खेती? धानके खेतमें सालमें दो फ़सलें होती हैं। यह दक्षिणी और मध्य जापानकी बात है, अुत्तरी जापानमें जाळेमें खेती नहीं होती। धानके बाद अुसी खेतमें मटर, स्ट्राबरी या दूसरी सागभाजी लगा दी जाती है। धान मअी-जूनमें रोपा जाता है, और अक्तूबरमें वह खेत दूसरी फ़सलके लिये खाली हो जाता है। रबीके खेतमें तीन फ़सलें होती हैं— अक्तूबर-नवम्बरमें गेहूँ बोया जाता है। मअी-जूनमें काटकर खीरा आदि लगा दिया जाता है, फिर सितम्बरमें दूसरी सागभाजी लगाअी जाती

है। धानके खेतसे दोनों फ़सलोंमें फ़ी अेकळ ३६० येन् (२७० रुपया) आ जाते हैं। रबीके खेतकी तीनों फ़सलोंसे फ़ी अेकळ ९८० येन् (७४५ रुपया) सध जाते हैं। बाँसका दाम गिर गया है, किन्तु जापानी लोग बाँसके करीलकी भाजी बहुत पसन्द करते हैं, जिससे फ़ी अेकळ ४०० येन् (३०० रुपया) प्राप्त हो जाते हैं।

यह हुअी आमदनीकी बात। अब व्ययकी बात सुनिये। खेतोंकी खाद, लगान, श्राद्ध-ब्याह, पूजा, न्योता, ग्रामकर, कृषि-सम्बन्धी औज़ार, घर-मरम्मत, गृहनिर्माण, नौकर, भोजन-वस्त्र, मनोरंजन, पुस्तक-पत्र, बालकोंकी शिक्षा यह व्ययके मार्ग हैं। भारतीय किसानोंकी भाँति जापानी किसान भी हिसाब-किताब रखना झूठ-मूठका तरद्दुद समझते हैं। अथवा सारा हिसाब मौखिक ही रखते हैं। अिसलिये पूछनेपर हिरानो महाशयको काफ़ी सोच-सोचकर अुत्तर देना पळता था। कभी-कभी होनेवाले खर्चमें मेशीनकी खरीद, गृहनिर्माण, श्राद्ध और ब्याह मुख्य हैं। मेशीन आदिपर ६३० येन् (दवाँअीकी मेशीन १२० येन्, गाळी ५० येन्, हल १२० येन्, सािअकिल ७० येन्, बक्स ३५ येन्, दूसरी मेशीनें २२५ येन्) लगे हैं। घरपर ४१५५ येन्। हिरानो महाशयके पिता दो साल पूर्व मरे थे, तो श्राद्ध-क्रियापर ३०० येन् खर्च हुअे थे, जिसमें चारसौ येन् अुन्हें न्योते में आ गये थे। बचे १०० येन्को अुन्होंने सौगातके रूपमें लोगोंको दे दिया था। शादीमें अिनकी स्थितिके आदमी लळकीके ब्याहमें ५०० से १००० येन् तक खर्च करते हैं. और लळकेके ब्याहमें १००–२०० येन् तक।

हिरानो महाशयके अेक १२ वर्षकी बालिका और अेक १२ वर्षका बालक नौकर है। लळकीकी तन्ख्वाह वार्षिक २० येन् (१५ रुपया) और लळकेकी ५० येन् (३७॥ रुपये) है। अिसके अतिरिक्त भोजन-वस्त्र भी देना पळता है। भोजनका खर्च मासिक चार येन् (३ रुपये) कपळे सालमें तीन बार देने पळते हैं। बालकके लिये तीन किमोनो,

अेक हैट, तीन जोळे जूते, काम करनेके वक्तका क़मीज़-पायजामा, तथा-सोनेके वक्तके वस्त्र। बालिकाके लिये हैट और क़मीज़-पायजामेको छोळ कर बाक़ी सभी चीज़ें तथा कमरबंद, कंघी आदि भी। वस्त्रपर दोनों के लिये प्रायः १५ येन् (१२ रुपयेके क़रीब) सालाना ख़र्च करना पळता है। अुत्सव-त्योहारपर २ येन्के लगभग और देने पळ जाते हैं। अिस प्रकार बालिकापर प्रति वर्ष ८५ येन् (६३ रुपये) और बालकपर ११५ येन् ख़र्च होते हैं। मालिक और नौकरके भोजनमें भेद नहीं रखा जाता। कपळे भी प्रायः अेकसे होते हैं। १५ येन्में कपळा, जूता, आदि सारा सामान भारतमें नहीं मिल सकता। चीज़ोंके सस्तेपनके कारण नौकर भी सस्ते मिलते हैं, मेशीन भी धळाधळ अिस्तेमाल होती हैं, और जापानी मालके मारे विदेशी कारख़ानेवालोंका नाकमें दम है। मिलाअिये यूरोप, अमेरिकाके कारख़ानेवालोंसे। वहाँ चीज़पर लागत यदि पचीस रुपया है, तो २५ रुपया ख़र्च होगा प्रचार और विज्ञापनपर, २५ रुपया कमीशन देना होगा, और २५ रुपया नफ़ा। जापानमें मालपर ६५ रुपया लगाया जायेगा, नफ़ा और कमीशन १०–१० रुपये, और १५ रुपया विज्ञापन। यह है जापानियोंकी कामयाबीका गुर। अच्छा ज़रा हिरानो परिवारका बजट देखिये।

आमदनी	येन्	ख़र्च	येन्
धानके खेतसे ..	१०५०	खाद[1] (खेतोंकी) ..	१००१

---

[1]खादपर अिस प्रकार ख़र्च होता है—

रबी फ़ी अेकळ	२०० येन्
धान फ़ी अेकळ	१०० येन्

आमदनी		येन्	खर्च		येन्
रबीके खेतसे	..	३१८५	सरकारी लगान[1]	..	३६०
बाँस	..	५०	न्योता-पूजा	..	२००
जंगल	..	३२	ग्राम-कर	..	१५
सुअर	..	८०	कल-पुर्ज़ा	..	७०
मुर्ग़ी	..	५५	बिजली (प्रकाश)	..	३६
		-----	घर मरम्मत	..	२०
	योग	४४५०	घर-निर्माण	..	३००
			ब्याह	..	४००
			नौकर	..	२००
			घरका भोजन	..	६००
			घरका वस्त्र	..	११०
			मेला-तमाशा	..	१२
			समाचार पत्र, पुस्तक आदि	..	१८
			बालकोंकी पुस्तकें	..	८
			घरका सामान	..	२००

				योग	३५५०

हिरानो महाशयके पास ९ अेकळके क़रीब भूमि है, अुससे सालमें ४४५० येन् पैदा किया जाता है, अर्थात् फ़ी अेकळ प्रायः ५०० येन् (३७५

[1] लगान—

रबी फ़ी अेकळ	४० येन्
धान फ़ी अेकळ	६० येन्
बाँस फ़ी अेकळ	४० येन्

रुपये)। यह आमदनी देखनेमें अधिक मालूम होगी, किन्तु अुत्तरी बिहार-में भी अेक-अेक अेकळ अूखमें दो-दो सौ रुपये निकल आते हैं।

सरकारी और ग़ैर-सरकारी साधनोंसे किसानोंको और भी बहुतसे सुभीते प्राप्त हैं। छै वर्षकी प्रारम्भिक शिक्षा अनिवार्य होनेसे जापानके स्त्री-पुरुष सभी साक्षर हैं, अिसलिये वे अिन सब सुभीतोंसे पूरा फ़ायदा अुठाते हैं। कृषि-बैंकों, सहयोग-समितियों तथा क्रय-विक्रय-समितियोंसे किसानोंको बहुत सहायता मिलती है। बैंक ९ फ़ी सदी सूदपर दस वर्षके लिये ऋण देते हैं। मकान जल जानेपर सहयोग-समिति घर पीछे ३० से ५० येन् तक सहायता देती है, तथा गाँवके सभी घर चन्दा देते हैं, जिनका नाम काग़ज़पर लिखकर मकानके पास तख़्तेपर टाँग दिया जाता है। अच्छी फ़सल, अच्छी मुर्ग़ीकी नसल, या अच्छे फूलके लिये भी अुन्हें अिनाम और प्रशंसापत्र मिलते हैं।

जापानके गाँव अब भारतीय गाँवों जैसे नहीं रह गये हैं। हर अेक गाँवमें स्कूल, डाकख़ाना होता है। कावा गाँवके हिरानोके घरसे हम नकायामा तोमीजोके घर गये। तोमीजो परिवारका नाम है, जापानी ढंगसे कहनेपर तोमीजो नकायामा कहना पळता है। तोमीजो महाशय गाँवके दूकानदार हैं। यही श्री व्योदोके मन्दिरके कोषाध्यक्ष भी हैं, दूकानमें सेकळों प्रकारकी चीज़ें हैं—औषधियाँ, बिस्कुट, मिठाअी, काग़ज़ पेन्सिल, किमोनो, बनियान, क़मीज़, बिजलीके बल्ब, चीनीके बर्तन, जापानी शराब साके, सिर्का, बाँसकी डाली, भोजन पकानेका सामान, सोडा-लेमनेड और चावलसे लेकर डाकख़ानेके टिकट तक जो चाहिये ले लीजिये। यह अेक छोटासा डिपार्टमेंट स्टोर है। डिपार्टमेंट स्टोरका तरीक़ा अमेरिकासे निकला है, अिसका मतलब है, अेक अैसी दूकान जिसमें आप सभी चीज़ें अिकट्ठा पा जायँ। जापानके बळे-बळे शहरोंमें अैसे अनेक स्टोर हैं। महाशय तोमीजोके छै पुत्र और कन्यायें हैं। पुत्र-पौत्रोंके लिये

जापानपर देवता लोग बहुत प्रसन्न हैं। कोअी कहते हैं यह चावल मछली-की बरकत है। जापानमें हर घंटेमें २४९ बच्चे (१९३२ अी०) पैदा होते हैं, और १३४ आदमी मरते हैं, अर्थात् ४६ फ़ी सदीका नफ़ा ! १८७२ अी० में जापानकी जनसंख्या तीन करोळ अेकतीस लाख थी, और १९३० अी० में वह छै करोळ नवासी लाख हो गअी। मंचूरियाकी लळाअी और भूकम्प कितनी बलि लेंगे ? हाँ, तो तोमीजो महाशयके छै लळकोंमें तीनका ब्याह हो गया है। अुनमें दो अपनी स्त्रियोंके साथ याकोहामामें रहते हैं। अेक छोटा दूकानदार है—वह तोमीजो परिवारकी दूकान-दारीकी तीसरी पीढ़ीमें है। दूसरा लळका वहीं लारी-ड्राअिवर है। अेक लळका जहाजी कालेजमें पढ़ रहा है। ११ वर्षकी पढ़ाअी अर्थात् हाअी स्कूल पास कर लेनेके बाद अुस कालेजमें भरती होती है। प्रवेशके वक्त ३०० येन् (२२५ रुपये) देने पळते हैं। फिर ३० येन् (२२॥ रुपये) मासिक। पाँच वर्षकी पढ़ाअी ख़तम कर लेनेपर तरुण तोमीजो किसी जहाज़पर तीसरे दर्जेका अफ़सर नियुक्त होगा। तनख्वाह होगी ७० येन् प्रति मास। फिर धीरे-धीरे वह कप्तान हो जायगा। किसी समय अेन० वायी० के० लाअिनके जहाजको लेकर शायद वह कलकत्ता या बम्बअीमें देख पळे। अंग्रेजी और अमेरिकन कप्तानकी तनख्वाह आठ सौ, दस सौ रुपये मासिक होती है, किन्तु जापानी कप्तान तीन सौ, चार सौ येन् तक रह जाता है। हाँ, हर अेक यात्राकी समाप्तिके बाद अुसे कुछ अिनाम और बोनस् मिला करता है। तोमीजो महाशयके बाक़ी लळके और लळकियाँ प्राअिमरी शिक्षा समाप्तकर पिताके काममें सहायता करते हैं। परिवारके अतिरिक्त अेक २० वर्षकी लळकी नौकरानी भी है। अुसका वेतन ६० येन् वार्षिक है। मालिक भोजनपर ६० येन्, कपळेपर २५ येन् तथा अुत्सव आदिके लिये ५ येन् और ख़र्च करते हैं। अर्थात् सब मिलाकर १५०येन् (११२॥ रुपये), या साढ़े नौ रुपये मासिकसे भी कम। मिलाअिये भारतीय अवस्था



२९—जापानी किसान (खेतमें) (पृ० १७५)

से। १०, १० रुपये मासिक वेतन पानेवाले नौकर भारतमें अधिकतर मिलते हैं, किन्तु वे छै वर्षकी शिक्षा प्राप्त तथा अितने स्वच्छ और विनीत न मिलेंगे। तोमीजो महाशयकी सालाना बिक्री दस हज़ार येन् है, जिससे अुन्हें अेक हज़ार येन्‌का नफ़ा होता है। अुनके पास थोळासा खेत है, जिसमें वे तरह-तरहके फूल लगाते हैं। अुसमें सौ येन् खर्च करके अुन्हें ३०० येन् बच रहते हैं। अिसी १३०० येन् (९७५ रुपये, प्राय: ८२ रुपये मासिक) से वे अपनी गृहस्थी चलाते हैं। दूकानमें पूँजी पाँच हज़ारकी लगी है। योकोहामासे मिलनेवाले सामानको वे स्वयं लाते हैं, और बाक़ीके लिये तोक्योकी भिन्न-भिन्न कम्पनियोंके अेजेंट समय-समयपर स्वयं आकर आर्डर लेकर सौदा पहुँचा देते हैं। अुनकी दूकानमें अेक दैनिक तथा कुछ मासिक पत्र भी आते हैं। घरमें रेडियो भी लगा है। अेक बिजली अुन्होंने अपनी ओरसे सळकपर भी लगा दी है। यह है अेक जापानी गाँवका दूकानदार।

सूर्यास्त हो गया था, अिसलिअे वापस लौटे। दस क़दम चलते ही कोनेपर दो लकळीकी टेकोंके नीचे अेक छोटीसी पत्थरकी मूर्ति दिखाअी पळी। यह है जिज़ो-बोसत्सु (क्षितिगर्भ बोधिसत्त्व)की मूर्ति। यह हमेशा बालक रूपमें होती है। हर अेक गाँव या खेतोंके कोनेपर, सळकके किनारे, या मकानकी बग़लमें कितनी ही जिज़ोकी मूर्तियाँ मिलेंगी। किन्हीं-किन्हीं मन्दिरोंके हातेमें तो अुनकी संख्या हज़ारों होती है। जिज़ो स्वयं भी शिशु हैं और बच्चोंवाली माताओंके अत्यन्त प्रिय हैं। मरे बच्चे-वाली माता तो जिज़ोकी मूर्तिके सामने धूप और भोग अिस प्रकार रखती है, मानों वह अुसे अपने प्रिय बच्चेके सामने रख रही हो। यह जिज़ो या क्षितिगर्भ कौन हैं? बुद्धके शिष्य अेक भारतीयको मुक्तिकी देवी आलिं-गन करना चाहती थी, किन्तु अुन्होंने कहा—‘हमारा काम संसारमें है। वहाँ हम भूखोंकी प्यास बुझायेंगे, निराशोंको आशा बँधायेंगे, थकोंके

पैर दबायेंगे, भूलोंको रास्ता बतलायेंगे, बिछुळोंको मिलायेंगे। भगवान् शाक्यमुनिके निर्वाणके बाद कौन संसारकी सुध लेगा ? मैत्रेयके आनेमें तो अभी देर है। मुक्ति देवी ! ठहरो, तब तकके लिये मुझे यह सेवा-भार लेने दो।' यह हैं मुक्तिसे विरागी लोक-सेवक क्षितिगर्भ, जिसे जिज़ो-बोसत्सुके नामसे जापानका बच्चा-बच्चा जनता है।

× × ×

जापानमें दायभागका अुत्तराधिकारी ज्येष्ठ पुत्र होता है। छोटे लळकोंका पिताकी सम्पत्तिपर कोअी अधिकार नहीं। यदि बळा भाअी सहृदय होता है, तो अेकाध बीघे खेत या दो-चार सौ येन् दे देता है। जीतेजी पिता यदि कुछ नक़द दे जाता है, तो वह छोटे लळकोंका भाग है। जापानी लोग अपने संयुक्त परिवारपर बहुत गर्व करते हैं, किन्तु यह गर्व करनेवाले ज्येष्ठ सन्तान ही होते हैं। छोटे लळकोंके साथ कितना अन्याय होता है, यह समझना बहुत आसान है। तिब्बतमें भी घरका मालिक ज्येष्ठ पुत्र होता है, किन्तु वहाँ सभी भाअियोंकी सम्मिलित पत्नी होनेसे दायभागकी कठोरताका पता नहीं लगता। यहाँ छोटी सन्तानको होश सँभालते ही ठहरनेकी जगह बनानेकी फ़िक्र पळती है। अुस दिन हम पळोसके अेक अत्यन्त ग़रीब किसान मिरो खोजीके घर गये। ये अपने पिताकी कनिष्ठ सन्तान थे। बळे भाअीने कुछ नहीं दिया। फिर ये कितने ही दिनों तक महाशय व्योदोके मन्दिरमें नौकर थे। वहीं दूसरी नौकरानीसे परिचय हुआ। दोनोंने शादी कर ली। व्योदो महाशयके पिताने अेक डेढ़ अेकळ खेत अधिया बटाअीपर दे दिया। पळोसके अेक ख़ाली झोपळेको अुन्होंने २०० येन्पर ख़रीद लिया, और बस गये। सभी जापानी दम्पतियोंकी भाँति यह भी सन्तानके सम्बन्धमें सौभाग्यशाली निकले, और अिनके दस सन्तानें (४ पुत्र, ६ कन्यायें) हैं, जो पैदा होकर मर गअीं, सो अलग।



३०—जापानी वर-वधू (पृ० १७७)



३१—रोनिन् योशीकाने (पृ० ९९)

लळकियोंमें अेक ब्याह कर अपने घर चली गअी, दो क्रमशः २०, २५ वर्ष-की तोक्योमें दस और नौ येन् मासिकपर नौकरी कर रही हैं, जहाँसे वे सालमें दो बार ही घर आती हैं। यदि चार-पाँच सालमें चार-पाँच सौ येन् जमा हो गये, और कोअी चाहनेवाला हुआ, तो ब्याह करके घर बना लेंगी, नहीं तो बस यही जीवन रहेगा। दूसरा लळका मोटर ड्राअिवरी जानता है। योकोहामामें अुसका परिचय अेक पैसेवाले पिताकी लळकीसे हो गया। दोनोंने ब्याह कर लिया, और दामादने ससुरसे रुपया लेकर अेक सेकंड-हैंड टेक्सी खरीद ली। अब बेचारा अुसीसे गुज़र करता है। व्योदो महाशय शिकायत कर रहे थे—"नालायक़ निकला, माँ-बापकी कोअी ख़बर नहीं लेता।" किन्तु अब वह भी तो माँ-बाप होने जा रहा है। खोजी महाशयकी तीन लळकियाँ और अेक लळका अभी छोटे हैं। अेक अिक्कीस वर्षका लळका है, जो ५०० येन्‌पर ६ वर्षके लिये अेक फूल-वालेकी दूकानपर काम कर रहा है। अभी अुसे छुट्टी पानेमें अेक वर्षकी देर और है। जेठा लळका बापके साथ काम करता है। झोपळेके अति-रिक्त और सम्पत्ति ही क्या, तो भी अुसका मालिक यही बळा लळका है।

वस्तुतः संयुक्त परिवारकी रक्षाका सर्वोत्तम गुर तो तिब्बत ही वालों-ने निकाल पाया है, लोग चाहे बहु-पतित्वको देखकर भले ही नाक-भौं सिकोळें।

× × ×

१.

सभी घरोंमें तो नहीं, फिर भी रेडियो जापानमें ग्रामीण जीवनकी अेक विशेष चीज़ हो गअी है। शहरोंमें बिजली बराबर रहनेसे दिन भर गाना, बजाना, लेक्चर या दूसरे प्रोग्राम सुनाअी देते रहते हैं, किन्तु गाँवोंमें ६ बजेके बाद ही वह सुनाअी देता है। प्रोग्राममें लोगोंकी रुचिका ध्यान ख़ूब रखा जाता है। गानेमें जहाँ जापानके नामी संगीत-विशारद स्त्री-पुरुषोंका

गान रहता है, वहाँ हमारे यहाँके लोरकी, कुँवरविजयी या ढोलामारू जैसे देहाती गीतोंका प्रोग्राम प्रायः रोज़ ही रहता है। कभी-कभी किसी गहन अरण्यके पक्षियों और मेढकोंके स्वरको भी प्रसारित किया जाता है। जैसे अपने यहाँ भुचेंगको लोग 'ठाकुरजी' 'ठाकुरजी' बोलनेवाला मानते हैं, वैसे ही यहाँ 'वोप्पूसो' (बुद्ध, धर्म, संघ) बोलनेवाले भी कअी पक्षी हैं, जो अत्यन्त निर्जन पर्वतोंमें कभी-कभी दिखाअी पळते हैं। जूनमें दो दिन अुस पक्षीके गान भी प्रसारित किये गये थे। श्रोता लोग बळी श्रद्धासे शब्द सुननेके लिये जमा हुअे थे। लेक्चरोंमें पौराणिक आख्यायिकाओं-जैसे धार्मिक कथानकोंको भी काफ़ी स्थान दिया जाता है। देश-विदेशकी बहुतसी राष्ट्रोपयोगी खबरें कही जाती हैं। ७ बजे शामको दो मिनट अंग्रेज़ीमें भी खबर दी जाती है। हमारेलिये नित्तावासमें यही समाचारपत्र था।

१६—अेक गाँवकी पाठशाला

१० जुलाअीको नित्ता प्राअिमरी स्कूल देखने गये। नित्ता गाँवमें ५७२ परिवार हैं और जनसंख्या है ३५८२ (पुरुष १८१८, स्त्री १७६४)। जापानमें प्राअिमरी शिक्षा निःशुल्क और अनिवार्य है और अिस प्रकार जनसंख्याका अेक तिहाअी—५९० बालक-बालिकायें प्राअिमरी स्कूलमें शिक्षा पाते हैं। प्राअिमरी स्कूलमें ६ श्रेणियाँ हैं। लळके ६ या ७ (जापानी गणनानुसार ७ या ८) वर्षकी अवस्थामें स्कूलमें भरती होते हैं। वार्षिक परीक्षा प्राअिमरीसे लेकर युनिवर्सिटी तक अध्यापक ही लेते हैं। अूपरी कक्षामें चढ़नेके लिये सालमें २६० दिनकी हाज़िरी ज़रूरी है। बीमार होनेपर माता-पिता स्कूलमें सूचना दे देते हैं। और सौहार्द प्रकट करनेके लिये कुछ भेंटके साथ कक्षा-अध्यापक लळकेके घरपर आता है। 'रोग-मुक्त होनेपर भोजन करानेका जापानमें रवाज है, अुस समय शिष्य प्रति-भेंटके रूपमें गुरुके पास भोजनोंका थाल ले जाता है। हर अेक गाँवमें गाँवकी पंचायतकी ओरसे अेक डाक्टर नौकर है, जो स्कूलके लळकोंपर ख़ास तौरसे ध्यान रखता है।

•

नित्ता गाँव अेक जगह नहीं बसा हुआ है, अिसीलिये स्कूलके पास भी दो-चार ही घर हैं, और अुनमें भी दो-तीन तो क़लम-कापी और बिस्कुट-मिठाअीकी दूकानें हैं। अिस प्राअिमरी स्कूलकी अिमारत हमारे यहाँके अधिकांश हाअी स्कूलोंसे अच्छी है। मकान चूल्हाकार तथा दोमहला है।

सामने खेलनेके लिये काफ़ी जगह है। भीतरी प्रधान-द्वारकी बग़लमें अेक छोटासा मन्दिर जातिके पितरोंका है, जिसके सामने शिर झुकाना हर अेक विद्यार्थीका कर्तव्य है। भीतर जा हमने अपना गेता (लकळीका बद्धीदार खळाअूँ या पौआ) छोळा, और धानके पुआलका चप्पल लेकर पहिना। हेडमास्टर अध्यापकोंके कामन रूममें थे, जो कि बग़लमें ही था। अिस बळे कमरेमें पतली मेज़ें और कुर्सियाँ थीं। बीचमें ज़मीनपर खुदी अँगीठीपर चाय रखी हुअी थी। मेज़ोंपर प्याले पळे थे, किन्तु प्रधानाध्यापकके अतिरिक्त सारे अध्यापक अपनी कक्षाओंमें थे। परिचयके बाद हम श्री तोसाकू नोजी (यही हेड-मास्टरका नाम है)के साथ बग़लवाले कमरेमें गये। अिसके दो भाग थे, अेक भाग सीतल पाटियों द्वारा जापानी ढंगसे सजाया गया था, और दूसरेमें अेक मेज़के किनारे तीन कुर्सियाँ रक्खी थीं। हम बैठ गये, और थोळी ही देरमें नौकर चायके तीन प्याले रख गया। चाय जापानी ढंगकी, अर्थात् बिना नमक, चीनी, दूधके थी, अिसके कहनेकी आवश्यकता नहीं। हमारे कमरेमें बाहरकी ओर शीशेका बळा जँगला लगा हुआ था, जिससे अुस दस बजेकी धूपमें फ़ौजी क़वायद करते लळकोंको देख रहे थे। पीछेकी दीवारपर, जो जापानी बैठकको अलग कर रही थी, बीचमें छोटासा लकळीका पितर-देवालय था, और अुसकी अेक ओर वर्तमान सम्राट् हिरोहितो और सम्राज्ञी नगाकोके चित्र थे (सम्राट् फ़ौजी पोशाकमें और सम्राज्ञी मुकट पहिने अभिषेकके वेशमें); दूसरी ओर जापानके पुनरुज्जीवक सम्राट् मेअिजीका रथारूढ चित्र था।

•

क्लास देखनेसे पहले हमें स्कूलकी श्रेणियों और लळकों आदिके बारेमें जान लेना था। पूछनेपर नोजी महाशयने प्रसन्नतापूर्वक बतलाना शुरू किया। जिस अिमारतमें हम अिस समय थे, वह प्रधान स्कूल है। चार अध्यापकोंका अेक ब्रांच स्कूल भी है।

प्रधान स्कूलमें अध्यापक १२, अध्यापिकायें ५=१७, छात्र-संख्या ५८० (बालक ३०७, बालिकायें २७३)। जो कक्षाके क्रमसे अिस प्रकार हैं—

कक्षा	प्राअिमरी विभाग			ब्रांच स्कूल		
	बालक	बालिका	जोळ	बालक	बालिका	जोळ
१	३४	३५	६९	१८	९	२७
२	४५	३४	७९	९	९	१८
३	४४	३७	८१	९	१५	२४
४	४६	३६	८२	१४	११	२५
५	३२	३४	६६	६	१०	१६
६	४०	४१	८१	१०	८	१८
जोळ	२४१	२१७	४५८	६६	६२	१२८

अुच्च प्राअिमरी या मिडल कक्षा

कक्षा १ (=७)	३२	२५	५७
२ (=८)	३४	२७	६१
जोळ	६६	५२	११८
कुल जोळ	३०७	२६९	५७६

दोनों स्कूल प्राअिमरी

	३०७	२७९	५८६
कुल संख्या	३७३	३३१	७०४

प्रधान स्कूलकी पाँचवीं तथा सातवीं-आठवीं कक्षाओंमें बालक-बालिकायें साथ पढ़ती हैं। ब्रांच स्कूलमें दो-दो कक्षाओंको मिलाकर

अेक अेक श्रेणी बनाअी गअी है, तथा सभी श्रेणियोंमें लळके-लळकियाँ साथ पढ़ती हैं। अुच्च प्राअिमरी शिक्षा अनिवार्य नहीं है, और अुसमें पढ़नेके लिये ५० सेन (सवा चार आना) मासिक फ़ीस देनी पळती है। ग़रीब छात्रोंको क़लम, काग़ज़, किताबें मुफ़्त मिलती हैं, किन्तु नित्ता सम्पन्न गाँव है, अिसलिये यहाँ देनेकी ज़रूरत नहीं पळती। ग़रीब गाँवोंमें तथा तोक्यो जैसे शहरोंमें ग़रीब विद्यार्थियोंको भोजन भी दिया जाता है।

अध्यापक होनेके लिये अुच्च प्राअिमरीके बाद ५ वर्ष नार्मल या ट्रेनिंग स्कूलमें पढ़ना होता है। हाअी स्कूल (६ प्राअिमरी+५ हाअी= ११ वर्ष) पास होनेपर दो वर्ष ट्रेनिंगमें पढ़ना होता है। अध्यापिकाओंके लिये भी यही नियम है। अध्यापकोंकी नियुक्ति २०, २१ वर्षकी अवस्थामें होती है। प्रथम वेतन ४५ येन् (३५ रुपया) मासिक होता है। फिर ५० येन् तक हर दूसरे वर्ष तीनकी वृद्धि होती है, फिर ६० येन् पहुँचने तक हर ढाअी वर्ष ३ येन्‌की वृद्धि होती है। नौकरी छोळनेमें आयुका ख्याल नहीं है। अवसर प्राप्त अध्यापकोंको पेंशन मिलती है। देहाती अध्यापक १२० येन् मासिक तक पहुँच सकते हैं, शहरवाले २०० येन् तक। अध्यापिकाओंकी नियुक्ति ३५ येन् (२७। रुपये) मासिकपर होती है, और ५६ येन् तक पहुँच सकती है। जापानमें स्त्रियोंको स्वतन्त्र जीविका अुपार्जन करनेमें पद-पदपर अनुत्साहित किया जाता है। समझा जाता है---अुनका स्थान घरके भीतर रहकर पति और पुत्रकी सहायता करना है। अेक वर्षकी शिक्षाके बाद अध्यापकको फिर अेक वर्ष ट्रेनिंगका मौक़ा दिया जाता है। जापानकी शासक-श्रेणी चाहे अपने अधिकारके पोषक सळेसे सळे हज़ारों अन्धविश्वासोंकी समर्थक हो, किन्तु, जहाँ अुसे ख़तरा नहीं मालूम होता, वहाँ वह नयेसे नये विचारोंको लेनेके लिये तैयार रहती है। अध्यापकोंकी ट्रेनिंगमें शिक्षणविज्ञानके नूतनतम तत्त्वोंको रखा गया

है। बहुतसे प्राअिमरी स्कूलोंमें रेडियो द्वारा शिक्षाका भी प्रबन्ध किया गया है।

प्रधानाध्यापकसे हमारी बात तीसरे मित्रके दुभाषियापनमें हो रही थी। प्राअिमरी स्कूलके छात्रोंकी संख्या पूछनेके बाद जब गाँवकी जन-संख्या पूछी, तो वह अेकदम भळक अुठे—मैं आपको हर्गिज़ मौक़ा नहीं दे सकता, कि आप भारतमें जाकर जापानियोंको बुरे रंगमें चित्रित करें। मैं जापानी जाति और अपने सम्राट्की भक्त प्रजा हूँ।' मैंने हँसते हुअे कहा—आपको अैसा संदेह नहीं करना चाहिये। जहाँ अनिवार्य और निःशुल्क शिक्षा है, वहाँ आपकी जातिकी शिकायतकी बात मिल ही कहाँसे सकती है।" पाठक देख ही चुके १७४६ की जनसंख्यामें ७०४ लळके अिसी स्कूलमें हैं। अिसके अतिरिक्त खेतीबारीसे फ़ुर्सतवाले महीनोंमें दिन और रातको २५० (१५० लळके, १०० लळकियाँ) और भी छात्र हैं, जिनके लिये ७ अलग अध्यापक हैं। अभी तक छठी कक्षा ही तक निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा है, किन्तु निकट भविष्यमें मिडिलकी दोनों कक्षाओंको लेकर अुसे आठ वर्ष कर देनेका विचार है।

बात समाप्तकर नोजी महाशय हमें शिक्षण दिखलाने ले चले। जापानी आरम्भिक विद्यालयोंमें शिक्षाके विषय यह हैं—

कक्षा	आचारशिक्षण	भाषा	ड्राअिंग	संगीत	व्यायाम			
१	,,	,,	,,	,,	,,			
२	,,	,,	,,	,,	,,			
३	,,	,,	,,	,,	,,			
४	,,	,,	,,	,,	,,	विज्ञान		
५	,,	,,	,,	,,	,,	,,	भूगोल	अितिहास
६	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,

कक्षा	आचार-शिक्षण	भाषा[1]	ड्रॉअिंग	संगीत	व्यायाम			
७	,,	,,	,,	,,	,,	विज्ञान	भूगोल	अितिहास
८	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,

चौथी कक्षासे लळकियोंको सिलाअीकी शिक्षा दी जाती है। सातवीं आठवीं कक्षामें और विषयोंके अतिरिक्त कृषि तथा अुसके अुपयोगी बढ़अी, लोहार आदिके काम सिखलाये जाते हैं, और स्त्रियाँ अुनके स्थानपर गृह-शिल्प, सामाजिक बर्त्ताव तथा कुछ कृषि-संबंधी बातें सीखती हैं। शहरोंमें कृषिके स्थानपर वाणिज्य तथा कल-पुर्जे संबंधी बातें सिखलाअी जाती हैं।

यद्यपि क्लासमें बैठनेके लिये छोटी बेंचें तथा डेस्क हैं, किन्तु, लळके जूते छातेको कमरेसे बाहर ही रख देते हैं। जूतोंके रखनेके लिये तो वहाँ अेक कबूतरखानासा बना हुआ है। अेक अेक कक्षाके बालकोंका अेक अेक कमरा है। सामने भीतपर अेक लम्बा ब्लैक बोर्ड टँगा हुआ है। अुसके सामने अध्यापकके खळे होनेके स्थानपर अेक अूँची चौपाअी रखी हुअी है। किनारेपर अध्यापककी मेज़-कुर्सी तथा पढ़नेकी दूसरी चीज़ें हैं। सब लळकोंके पीछे बीचकी पंक्तिमें मानीटरका अकेला बेंच-डेस्क है। आगन्तुकके आनेपर सलाम करने आदिकी आज्ञा देना भी मानीटरका काम है। हम लोग पहले प्रथम कक्षाकी बालिकाओंके कमरेमें गये। अुस वक्त हिसाब पढ़ाया जाता था। मानीटरके डेस्कपर पळी हिसाबकी किताबको देखा—कितने रंगोंमें छपी सुन्दर पुस्तक थी। कहीं फूलोंका गिनना

[1] **निबंध, पाठ, डिक्टेशन। निबंध भी पहिली कक्षासे अक्षर परिचय के साथ ही शुरू कर दिया जाता है।**

बतलाया गया है। कहीं सफ़ेद नीली गोलियोंका। कहीं घळीकी सूअियोंको दिखलाया गया है। संक्षेपमें अिन छ सात वर्षके बच्चोंके लिये तो यह पुस्तक ही अेक बळी मनोरंजक चीज़ है। पाठ्यपुस्तकोंके हर अेक चित्रका अेक बळा रूप नक़शेकी शकलमें अध्यापकके लिये अलग छपता है। अुस समय अध्यापकके हाथमें अेक बळी गोल नक़ली घळी थी। अुसीसे वह हिसाब सिखला रहे थे। सूअीसे दस बजाकर—'कौन आकर लिख सकता है, कितने बजे हैं?' आठ दस बच्चोंने खळे हो हाथ हिलाते "हाअी, हाअी"—का शोर मचाना शुरू किया। दोका नाम लिया गया। दोनोंने जाकर ब्लैक बोर्डपर अंग्रेज़ी अंकोंमें १० लिख दिया। फिर पूछा गया—"कौन नौ बजे बना सकता है?" "हाअी, हाअी, हाअी...।" अेक लळकीने नौकी जगह ८.५० बजे जाकर बनाया। फिर पूछनेपर दूसरीने जाकर ठीक कर दिया। अध्यापक महाशयने ११ बजे बनाकर दो लळकियोंको लिखनेके लिये कहा। दोनोंने ग्यारह लिखा, फिर अेक दूसरेकी देखा-देखी ११२ बना दिया। फिर दो लळकियाँ शुद्ध करने गअीं। अेकने सबको मिटाकर ११ लिखा, दूसरीने सिर्फ़ फालतू दोके अंकको मिटा दिया।

अब नक़शेपर बनी तेरह, चौदह, पन्द्रह...गोलियोंके झुंडसे गिनती शुरू हुअी। अध्यापक जैसे गोलियोंपर अँगुली रखते जाते थे, वैसे ही वैसे सारी कक्षा—इची(=अेक), नी(=दो), साँ(=तीन),...बोल रही थी। गिननेके लिये लळकियाँ सीप और गोलियाँ भी अपने बस्तोंमें भरकर लाती हैं।

फ़िर हम लळकियोंकी तीसरी कक्षामें गये। अध्यापिका भाषा-पाठकी शिक्षा दे रही थीं। ब्लैक-बोर्डपर कुछ पंक्तियाँ लिखी हुअी थीं। निबन्धकी कापियाँ लौटाकर नया निबन्ध लिखनेको कहा गया। कोअी तितलीपर लिख रही थी, कोअी फूलपर। फिर हम बालकोंकी तृतीय

कक्षामें गये। पुराने अख़बारोंपर ब्रुशसे बळे बळे अक्षर लिखे जा रहे थे। अख़बारोंका कैसा सदुपयोग! लिखनेका क़लमदान पाव-आधसेर भारी चीज़ है, क्योंकि पत्थर जैसी कळी काली स्याहीकी सिल्लीको रगळनेके लिये अुसमें अेक पत्थरकी सिल रखनी पळती है। अक्षर लिखते देख मेरे दिलमें अुनके प्रति करुणा आ रही थी।—जिन्हें अपनी भाषामें अपने भावोंको अच्छी तरह प्रकट करनेके लिये सौ दो सौ नहीं आठ नौ हज़ार भिन्न-भिन्न अक्षरोंको सीखना होगा; क्या यह अुनकी स्मृतिपर अत्याचार नहीं है। अपने अेक मित्रके किसी जापानीके नोबुल-प्राअिज़ न पानेकी शिकायत करने पर मैंने अुसका दोष अुनके अिसी अत्याचारके मत्थे मढ़ा था। और यह अक्षर ऐसी समस्या है, जिसके कारण भारतीय तथा दूसरे देशोंके छात्र जापानी शिक्षणालयोंसे फ़ायदा नहीं अुठा सकते। दस हज़ार अक्षरोंका याद करना और चित्रण करना—सोचिये। आप कहेंगे, जापानी क्यों अुससे चिपटे हुअे हैं? लेकिन चिपटनेका कारण प्रबल है। जापानी भाषामें बहुतसे अर्थोंके लिये अेक ही शब्दका व्यवहार होता है। अिस समय की लिपिमें अर्थसंकेतको अंकित किया जाता, उच्चारणका ख्याल कुछ थोळीसी विभक्तियोंमें रखा जाता है (यही चीनी और जापानी लिपियोंका भेद है, चीनीमें उच्चारणका पूर्णतया बायकाट है)। यदि अर्थसंकेतको छोळ अुच्चारण-संकेतको ले लें, तो अर्थ समझनेमें बहुत गळबळी हो जायेगी। मेरे अेक मित्र तो सारा दोष शासक-श्रेणीके अूपर रखना चाहते थे। शासक नहीं चाहते, कि ख़ाली दिमाग़को ख़ुराफात सोचनेके लिये दो चार वर्षकी और फ़ुर्सत दे दी जाये।

संगीत-कक्षामें हारमोनियम बजाते हुअे अध्यापक संकेत सहित मुद्रित पुस्तकोंको गवा रहे थे। दूसरी संगीत-कक्षामें तो अध्याकपने ब्लैक-बोर्डपर स्वर-लिपि सहित सारी गीतको लिख रक्खा था। लळकियोंकी

सिलाअीका कमरा जापानी ढंगसे चटाअियोंसे सजा था। और वही बात अुस कमरेकी भी थी, जिसमें लळकियोंको दूसरे गृहशिल्प और सामाजिक बर्तावकी शिक्षा दी जाती है।

जिन कक्षाओंमें सहशिक्षा है, अुनमें कमरेकी अेक ओर बालिकाओंकी बेंचें होती हैं, और दूसरी ओर बालकोंकी।

नोजी महाशयने यह भी बतलाया, कि अिस स्कूलके अुत्तीर्ण छात्रोंकी शिक्षाके लिये अेक तरुण विद्यालय भी है, जिसमें १५० लळके और १०० लळकियाँ पढ़ती हैं। अुसके ७ अध्यापक हैं (हेड मास्टर नोजी महाशय ही हैं)। ख़ाली वक्तोंमें अिसी मकानमें वह विद्यालय लगा करता है। अुसमें आचार, सामाजिक सदाचार, साहित्य, अितिहास, भूगोल, व्यवसायशिक्षा बालक-बालिकाओं दोनोंको दी जाती हैं। किन्तु जहाँ बालिकाके लिअे सिलाअी और कृषिकी शिक्षा दी जाती है, वहाँ बालकोंको सैनिक-शिक्षाका विशेष प्रबंध है। अिस विद्यालयमें सैनिक शिक्षाप्राप्त सिपाहीको फ़ौजमें ६ मास कम ही शिक्षा ग्रहण करनी पळती है। ट्रेनिंग स्कूलमें मिडिल पासको ५ वर्ष, तथा प्राअिमरी पासको ७ वर्ष शिक्षा दी जाती है। फ़ीस सिर्फ़ लळकियोंसे ५० सेन् (सवा चार आने) मासिक ली जाती है। पाठक पूछेंगे—"लळकियोंपर क्यों अितनी कळाअी, और लळकोंपर क्यों अुतनी रियायत ?" उत्तर—"तोपोंके सामने क्या लळकियाँ खळी होंगी ? जापानी शिक्षाका अेक प्रधान उद्देश है, सुदृढ़ सैनिक तैयार करना।"

शिक्षाका मान कैसा है, यह अिसीसे मालूम हो जायेगा, कि तीसरी कक्षासे ही क्षेत्रमितिका परिचय कराया जाता है। छठीं कक्षामें चक्र-वृद्धि या सूद-दरसूद। आठवीं कक्षामें अंकगणित समाप्त, तथा रेखागणित और बीजगणितका आरम्भ हो जाता है।

अिस स्कूलके संचालनका सारा भार ग्राम-पंचायतके अूपर है। नित्ता

गाँवकी आबादी तीन हज़ार[1] है। पाँच हज़ारसे कमकी आबादीपर १२ सभासद् चुने जाते हैं। चुनाव चार वर्षके लिये होता है। और वोटर होनेके लिये सभी २५ वर्षसे अूपरके पुरुष अधिकारी हैं। सभापति गाँवका मुखिया होता है, जिसकी नियुक्ति अूपरसे होती है। सभापतिके अतिरिक्त सहायक मुखिया (वेतन ४५ येन् मासिक), माल-क्लर्क (४२ येन्), चार क्लर्क (२९–३९ येन्), तथा अेक सिपाही (२७ येन्) प्रबन्धका काम करते हैं।

ग्राम-पंचायतकी प्रधान आमदनी भूमिपर लगनेवाले ग्राम-कर द्वारा होती है। नित्ता ग्राम-पंचायतकी वार्षिक आय तीस हज़ार येन् है; जिसमें ६ सैकळा शिक्षा विभागपर खर्च होता है। शिक्षाके अतिरिक्त सळक, स्वास्थ्य, विविध और वेतन दूसरे खर्चके मद हैं। भूमिके करमें ग्राम पंचायतका सबसे अधिक भाग है, यह भी श्री तोयोजिरो नकामारूके अिस देय करसे मालूम हो जायेगा—

	जापान सरकार	ज़िलाबोर्ड (केन्)	ग्रामपंचायत
खेत ७ चो[2] (धान)	८० येन्	२५० येन्	३०० येन्
२ चो (रब्बी)	१३	२०	३०
१ चो (जंगल)	३	५	५

[1] यह सूचना ग्रामपंचायतके एक सभासद्से मिली है।

[2] १ चो ढाई एकळके बराबर होता है।

१७–हवाऔ हमलेकी नकली लड़ाऔ

स्वतंत्र और शक्तिशाली देश होना सिर्फ़ फ़ायदे ही फ़ायदेका सौदा नहीं है; यह बात स्वतंत्र शक्तिशाली देशोंकी भविष्यचिन्तासे अच्छी तरहसे समझमें आ जाती है। अतीतके युद्धोंमें युद्धकी सारी तैयारी सेना-पतियों और सैनिकोंके अूपर थी, बाहर वालोंको अुसके जाननेकी ज़रूरत न थी। अुस समय लड़ने और मरनेवाले सैनिक थे, अिसलिये साधारण जनताको अुसके परिचयसे क्या लाभ? किन्तु अब युद्धक्षेत्र बहुत विशाल हो गया है, अब वह सैनिकोंकी पंक्तियों और युद्ध क्षेत्रकी खाअियों तक परिमित नहीं किया जा सकता। सो क्यों? क्योंकि आकाशयानोंके प्रतापसे मनुष्य अनन्त आकाशके विस्तृत वायुमंडलका पक्षी हो गया है। जहाँपर कोअी शक्ति, निरन्तर सैनिकोंकी पंक्ति रास्ता रोकनेके लिये खड़ी नहीं कर सकती। स्थल और जलके युद्ध अब आकाशयुद्धके सामने महत्त्वशून्यसे हो गये हैं। और अिसी आकाश-युद्धके कारण अब हर अेक शहर, हर अेक गाँवके बच्चे-बूढ़े, स्त्री-पुरुष युद्धकी प्रथम पंक्ति हैं। आकाशसे अुनके घरोंपर बम् फेंका जा सकता है, जिससे घर चिन्दी चिन्दी उड़ सकता है; शहरका शहर आगसे स्वाहा हो सकता है। लाखों आदमी घर-बार, खाने-पीनेकी चीज़ोंसे वंचित हो मार्गके भिखारी हो सकते हैं; और हज़ारों, कुत्ते-बिल्लियोंकी मौत मर सकते हैं। आकाशसे विषाक्त गैसके गोले फेंके जा सकते हैं, जिनके फूटनेसे शहरके शहरमें कुछ मिनटोंमें गैस फैल सकती है; और सारे प्राणी

अुससे प्रभावित हो मरण या मरण समान पीळाके ग्रास बन सकते हैं। और सबसे भयंकर तो कीटाणुओंके बंब हैं, जो चुपके से आकाशसे छोळे जा सकते हैं। और जो कुछ ही समय में रक्तबीजकी तरह दोसे दस और दससे सौ होते शहरके शहर क्या देशके देशको श्मशान बना सकते हैं। जैसे ही जैसे समय बीतता जाता है, विज्ञान अेकसे अेक भयंकर हथियार मनुष्यके हाथोंमें दे रहा है, मानो कह रहा है—यदि हमारा अुपयोग सबकी भलाओीके लिये नहीं कर सकते हो, तो लो यह तुम्हारी आत्महत्याका साधन तुम्हारे हाथमें दे रहा हूँ।

भविष्यके युद्धकी भयंकरता वाचामगोचर होगी। अुस कल्पनासे भी दिल दहल जाता है। लेकिन अुस युद्धका प्रहार होगा, सिर्फ़ फ़र्स्ट क्लास स्वतंत्र देशोंपर। अुन्हींको संयमका पाठ पढ़ानेके लिये विज्ञान तैयारी कर रहा है।

जापान भी अुस युद्धसे रक्षा पानेका प्रबंध कर रहा है। सारे देशमें साधारण तौरसे और तोक्यो, योकोहामा आदि शहरोंमें विशेष तौरसे हवाओी युद्धका नाटक खेलकर लोगोंको सजग किया जा रहा है। २६ जूनको हमें पहले अिसे देखनेका मौक़ा मिला। हम लोग अेक सज्जनसे मिलने अुस दिन तोक्यो गये थे। रेलमें बळे बळे अक्षरोंमें कोओी नोटिस टँगी थी। हमारे जापानी मित्रने बतलाया,—आज हवाओी युद्धका नाटक खेला जायेगा। संयोगसे सभी कामोंके भुगतानेमें रातके आठ बज गये। फिर देखा, जगह जगह सळकोंपर हज़ारों आदमी खळे हैं। सळककी लालटेनें भी बुझ गओी हैं। स्टेशनकी बत्तियोंपर भी काला कपळा डाला हुआ है, और वही बात रेलके डिब्बोंकी है। दो-तीन स्टेशन चलकर, कुछ चीज़ें ख़रीदनेके लिये हम अुतर गये। यहाँ सळकपर और भीळ थी। साथीने कहा, ठहर जाअिये तमाशा देखकर चलेंगे। और आदमियोंके साथ हम भी अुस अँधेरी सळकके

किनारे खळे हो गये। अुस समय दूकानें भी अधिकतर बंद थीं। घरोंकी बत्तियोंको बहुधा बुझा दिया गया था, और काले कपळेसे ढँक दिया गया था। तो भी रोशनीका सोलहो आने बायकाट न हुआ था। सळकपर चलने-वाली मोटरें बत्तीके साथ थीं। चौरस्तोंपर यंत्रसंचालित हरी-लाल बत्तियाँ बारी-बारीसे मोटरोंको आगे बढ़ने या ठहरनेका आदेश दे रही थीं। मालूम हुआ, ख़ास संकेत आनेपर यह सब रोशनी भी बुझा दी जायेगी। हम लोग ग्यारह बजे रात तक इन्तिज़ार करते रहे। सिर्फ़ अेक या दो हवाअी जहाज़ों-को ही दूर मँडराते देखा। हाँ, सळकपर समय समयपर भोंपू द्वारा घोषणा देते मोटर-आरोही, या मोटर-साअिकिल-सवार सैनिकोंको ज़रूर आते जाते देखा। हवाअी हमलेसे बचने या सहायताकार्य करनेके अुद्देश्यसे नागरिकों—विशेषकर तरुणोंके विस्तृत संगठन हैं। हज़ारों स्त्री रोगि-परिचारिकायें तैयार की गअी हैं। हमारी बग़लसे कितनी ही बार स्ट्रेचर उठाये नौजवान और अुनके पीछे द्रुतगतिका श्वेतवसना परिचारिकायें (नर्स) निकलीं।

हमें अभी घंटाभर रेलसे चलकर गाँवमें पहुँचना था। और कोअी निश्चयपूर्वक कह भी नहीं रहा था, कि कब अन्तिम अभिनय होगा स्वयं-सेवक और सैनिक भी अनिश्चितता ही प्रकट कर रहे थे, इसलिये हमने आकर बिजलीकी रेल पकळी। कहाँ हज़ारों विद्युत्प्रदीपोंसे रातके दिन बने प्लेट-फ़ार्म और कहाँ अधिकांश निर्वाण-प्राप्त दीपमंडलीमें जहाँ-तहाँ काला बुर्क़ा ओढ़े एकाध दीप। ट्रेनमें दो-तीन मिनटकी देर थी। प्लेटफ़ार्मसे ज़रा आगे बढ़कर आकाशकी ओर देखनेके लिये खुली जगहमें हम खळे हुअे। हमारे सामने प्लेटफ़ार्म रेलकी पटरीके छोरसे कट गया था। ज़रा ही देरमें किमोनो (लम्बा जापानी चोगा) पहिने कोअी यात्री नाककी सीध आगे बढ़ते करारसे धमसे नीचे गिरा। हमने समझा, शिर या हाथमेंसे अेक ज़रूर टूटा होगा। हमारे मित्र

और अेकाध दूसरे सहयात्री भी सहायताके लिये आगे बढ़े। बदन झाळकर वह पट्ठा स्वयं खळा हो गया, और ज़रासी हाथकी सहायतासे ऊपर आ गया। हाथ और शिर दोनों बचा था, सिर्फ़ कमरमें थोळीसी चोट आओी थी। किन्तु, अुसने अपनेको बहुत पीळित नहीं प्रकट किया। जापानियोंका स्वभाव है—अपनी पीळाको प्रकटकर दूसरोंको क्यों पीळित किया जाये। हमारे मित्रने कहा—शराबके नशेमें है, मुँहसे साके (= जापानी शराब)की गंध आ रही है। गाळी पकळते-पकळते हवाओी हमलेके अेक प्रभावको तो देख लिया।

आज गाळी अँधेरेमें जा रही थी। बाहर कोओी बत्ती नहीं, और भीतरकी बत्तीको ढाँक दिया गया था। आसपासके हज़ारों घर जहाँ विद्युत्प्रदीपोंसे जगमग हो रहे थे, वहाँ आज चारों ओर अँधेरा था। कहीं अेकाध ही गवाक्ष थे, जिनके भीतर हल्का प्रकाशसा दीख पळता था। अिन बिजलीगाळियों के आने-जानेके लिये दोहरे रास्ते हैं, अिसलिये गाळियोंके लळनेका हमें डर न था। बारह बजेके बाद हम स्टेशनपर अुतरे। यहाँसे अभी दो मील जाना था। टेक्सीवालेने कहा—बत्ती नहीं जलाओी जा सकती; कुछ मिनटमें परीक्षा समाप्त हो जायेगी, फिर चलेंगे। कुछ मिनटमें सळक और घरोंकी बत्तियाँ जल अुठीं। छै आना पैसा ले टेक्सीने दो मील रास्ता पहुँचा दिया। आधा मील और चले, और घास वृक्षसे लदी पहाळीको पारकर हम अपनी जगह आये। अिस बरसातके दिनमें पहाळीमें साँपोंकी कमी नहीं है, किन्तु जापानी साँप अुतने ज़हरीले नहीं होते।

६ जुलाओीको फिर हवाओी हमलेका अभिनय होनेवाला था। योकोहामासे ब्रिटिश-कौंसल-जेनरलका पत्र भी पासपोर्टके संबंधमें आया था, अिसलिये अुस दिन योकोहामा चलनेकी सलाह हुओी। आसमानमें बादल मँडरा रहे थे, किन्तु अभी बूँदा-बाँदी शुरू नहीं हुओी थी। हमारे गृहपति मित्रके अतिरिक्त आज गाँवकी पंचायती सभाके सभासद् अेक परिचित मित्र

और हमारे साथ थे। नित्ता गाँवके जिस भागमें हमारे रहनेका मंदिर था, वहाँसे मोटरबसोंका अड्डा डेढ़ या दो मील पर है। अितने रास्तेके लिये पैदल छोळ दूसरा अुपाय नहीं। अपने राम बौद्ध भिक्षुओंकी पीली पोशाकमें चल रहे थे, और अगल-बगलके खेतोंमें काम करनेवाले स्त्री-पुरुषोंके चकित नेत्रप्रहारोंके लक्ष्य हो रहे थे। यद्यपि हमारे पैरोंमें तावी (=जापानी मोज़ा) और ज़ोरी (=जापानी चप्पल) था, किन्तु अुधर कौन ध्यान देता था? सभासद् महाशय जापानी पोशाकमें थे। शरीरपर रेशमी काले चारख़ानेका किमोनो था। जिसपर काला कमरबन्द बँधा हुआ था। पैरमें काली तावी थी; और फिर वह लकळीके बद्धीदार खळाऊँपर खट-खट चल रहे थे। यह खळाऊँ ठीक वैसा ही होता है, जैसा कि बरसातके दिनोंमें युक्तप्रान्त-बिहारके गाँवोंमें अुपयुक्त होनेवाला बधिया पौवा (खळाऊँ)। हमारे यहाँके शिक्षित लोग जिसे असभ्यताका चिह्न समझकर नाक-भौं चढ़ायेंगे, वही पौवा यहाँ पुरुषोंका ही नहीं निप्पोन् (=जापान) की सुंदरियोंका पादभूषण है। आप बरसातमें तोक्योकी स्वच्छ प्रशस्त सळकोंपर चौरंगी जैसे महल्लेमें हज़ारों स्त्री-पुरुषोंको अिसीपर खटखट करते चलते देखेंगे। हमारे दूसरे साथी अंग्रेज़ी पोशाकमें थे। प्रस्थान करते ही ९॥ बज गये थे। हमें बारह बजेसे पूर्व दो काम ज़रूर समाप्त कर लेने थे—कौंसल-जेनरलसे साक्षात्कार—क्योंकि शनिवार को आफ़िस बारह बजे ही तक खुला रहता है; और पेटपूजा—क्योंकि दोपहर बाद अुसमें तमादी लग जाती है। अड्डे या सळक कहिये, मोटर-बस आगे-पीछे जाते क्षणमात्रके लिये ही वहाँ ठहरती है। पहुँचते ही मोटर बस आ गअी। जापानी बसोंकी सफ़ाअीका क्या कहना है। टेक्सी हो या बस, मालूम होती है, आज ही ख़रीदकर लाअी गअी है। बेंचोंपर गद्दियाँ भी साफ़, सुंदर और नर्म होती हैं। ग्यारह बजेसे कुछ पूर्व कौंसल-भवन पहुँचे। साथी डाकख़ाने गये, और हम भीतर आफ़िसमें। मालूम हुआ, स्थानापन्न कौंसल बाहर

गये हुये हैं। दूसरे समय आना होगा। साढ़े ग्यारह बजेके कुछ मिनटों बाद साथी आये। टेक्सी कर हम अेक जापानी भोजनागारमें पहुँचे। यह देखनेमें छोटी, तथा सादगीमें हद कर देनेवाली भोजनशाला अितनी पुरानी है, जितना योकोहामा शहर। योकोहामाकी ६,२०,३०० की आबादीको देखकर मत समझ जाअिये, यह कोअी मानधाताकी बनाअी नगरी है। १८५९ अी० में अिस स्थानको विदेशियोंके रहनेके लिये खोला गया। अुससे पहले यहाँ मछुओंके अेकाध छोटे छोटे गाँव थे। जापानका सबसे बळा बंदरगाह तथा राजधानीका समुद्रद्वार होनेसे अिसकी श्रीवृद्धि अितनी शीघ्रतासे हुअी। भोजनशालाको बाँसकी दीवारों और फूसकी छतके रूपमें दिखलानेका प्रयत्न किया गया है। अन्-अलंकृत प्रकृतिके नग्न-सौंदर्यको जापानी बहुत पसन्द करते हैं। परिचारिकाओंकी सलामी और पथप्रदर्शनके बाद हम अेक कोनेवाली मेज़पर गये। मेज़ क्या है, अेक मोटे पुराण वृक्षके आळे कटे फलकको चार बाँसके पायोंपर रख दिया गया। फलक किनारा जैसा टेढ़ा-मेढ़ा घुन या दीमकसे खाया था, अुसे वैसे ही रूपमें रखा गया है। बैठनेके लिये अेक बित्ता चौळे गोल स्टूल हैं। बग़लमें पुराण कोटरोंवाला अेक नकली वृक्षका तना है, जिसकी जळमें पथर बिखरे तटवाले छोटे जलाशयमें कुछ लाल-पीली छोटी छोटी मछलियाँ चल रही हैं।

नलकेसे हाथ-मुँह धोकर मेज़पर बैठे। फिर तिरभंगी लकळीकी थालीमें तीन-चार प्रकारके भात-पिंड आये। किसीके ऊपर मछलीकी एक फाँक रखी थी। किसीपर लाल झींगेका रीढ़ रखा हुआ था, और किसीके ऊपर आटेका ग़िलाफ़ चढ़ा था। हरी चायके एक-दो प्याले पीकर हमने पहले ही अपनेको तैयार कर रखा था। अब अिस परकारके साथ सोया-का सिर्का भी था। हमने खानेकी लकळीको अुठाया। साथीने बतलाया—तीन स्थानोंपर भोजनमें जापानी लोग हाथका अिस्तेमाल करते हैं। आग लगने या खेतमें काम करनेके वक्त जापानी खानेमें लकळीका अुपयोग

नहीं करते, और यह भोजन तीसरा स्थान है, जहाँ लकळी द्वारा भोजन नहीं किया जाता। ख़ैर, दो महीने बाद हाथके अिस्तेमालकी स्वच्छन्दता मिली। अेक थाली समाप्त हुअी। फिर दूसरी थालीमें भातका दूसरा परकार था। भोजन समाप्त किया। दाम मित्रने चुकाया, अिसलिये कितना दिया—मालूम नहीं हो सका।

सलाह हुअी संकेअि-अेन् उद्यान देखनेकी। यह उद्यान अेक धनी परिवार (हारा)की सम्पत्ति है, किन्तु यह जनताके उपयोगके लिये भी खुला रक्खा गया है। बस से दूर तक आकर अेक संकीर्ण सळकसे चल हम अुद्यान-द्वारपर पहुँचे। अुद्यानकी जगह अिसे वन या अुपवन कहना अच्छा है; क्योंकि यहाँ मनुष्यके हाथके कामको छिपाकर प्रकृति सुंदरताको ही दिखलानेका प्रयत्न किया गया है। अेक जलाशय है, जो आजकल कमलवनसा मालूम होता है। पद्म और पुंडरीक दो ही जातिके कमल दिखाअी पळे। अुपवनकी दो ओर हरी पहाळी है। अेक पहाळीपर अेक जापानी ढंगका पंचतल्ला बौद्ध-स्तूप है, जिसके अधिक भागको वृक्षोंने ढँक रखा है, सिर्फ़ शिखर ही आकाशमें अुठा हुआ है। दो लकळीके पुलों तथा दो अेक झोपळोंको पारकर हम अेक छोटे मन्दिरके सामने पहुँचे। यह तेरहवीं शताब्दीके मन्दिरके ढंगपर बना हुआ है। अिसका मूल मन्दिर कामाकुरामें है, जिसे पतिवंचिता-आराम कहते हैं। अिस बौद्ध-भिक्षुणी-विहारको किसी राजमहिलाने बनवाया था; जो पीछे अुत्पीडित स्त्रियोंका शरणगेह हो गया। अुस मठके भीतर चले जानेपर व्यक्ति राजदंड तकसे मुक्त समझा जाता था। अुक्त मन्दिरकी भिक्षुणियोंमें राजघराने तथा सामन्तघरानेकी भी कितनी ही महिलायें शामिल हुअी थीं।

मन्दिरसे थोळी सी चढ़ाअी चढ़कर हम पहाळीके अूपरी भागपर पहुँचे। यह समुद्रके करारपर है। अूपरसे दूर तकके समुद्र और टापू दिखाअी पळते

हैं। अेक ओर कुछ चिमनियाँ काला धुआँ अुगल रही थीं, मालूम हुआ, यह फ़ौजी कारखाने हैं। चारों ओर किलेबंदी होनेसे फोटो लेनेकी सख्त मनाही है। लौटकर अेक झोपळेमें पहुँचे। बीचमें छतसे लटकते ताँबेके बर्तनमें लकळीकी आँच द्वारा चाय पक रही थी। अुद्यानके मालिककी ओरसे यह चायका सदाव्रत है। बूँदें पळनेसे कुछ और रुक जाना पळा। फिर बाहर कुछ दूर चलकर हम अष्टक-मन्दिरमें पहुँचे।

अष्टकमन्दिर अपने ढंगका निराला मन्दिर है। अिसे जापानके अेक प्रमुख राजमंत्री ने बनवाया था। अठपहलू तथा दो-महला मकान है। कोठेसे विस्तृत समुद्र दिखाअी पळता है। कोठेके अूपर व्याख्यानशाला है, जिसके मंचपर आठ महापुरुषोंकी मूर्तियाँ हैं। बीचमें काँसेका दर्पण है। दाहिनी ओर मथुरा-कलाके ढंगकी बुद्ध-मूर्ति है, और बाअीं ओर जापानके अशोक उपराज शोतोकूकी मूर्ति है। शोतोकूकी बाअीं ओर कोबो-थाअिशी, शिन्-रेन् और निचिरेन् अिन तीन जापानी बौद्ध धर्म-नायकोंकी मूर्तियाँ हैं। बुद्धकी दाहिनी ओर कन्-फू-शस्, सुक्रात और अीसामसीहकी मूर्तियाँ है। आठ महापुरुषोंका मन्दिर होनेसेही अिसे अष्टकमन्दिर कहा जाता है।

थोळा चलनेपर हमारे चप्पलकी बद्धी टूट गअी, और रस्सीसे पैरमें बाँधकर हम आगे बढ़े। दूकानपर लकळीका पौआ ही मिल सका, और अिस प्रकार आज अुसका भी अनुभव हो गया। हमें कुछ चीज़ें खरीदनी थीं। डिपार्टमेंट स्टोर अिसके लिये अच्छे समझे जाते हैं। डिपार्टमेंट स्टोर-का मतलब है, जहाँ अेक ही कअी तल्लेकी दूकानमें हज़ारों तरहकी चीज़ें रखी हों। वहाँ आपको अेक ही जगह सभी चीज़ें मिल जायेंगी। अुस मुहल्लेमें पहुँचनेपर मालूम हुआ, हवाअी हम्लेका अभिनय शुरू हो गया है। अेक बळे डिपार्टमेंट स्टोरकी छतपर कुछ सैनिक अुच्च अफ़सर थे, जिनमें प्रथम सेना-अनीके संचालक अेक राजकुमार भी थे। हमारे

सामने ही सातवें महलसे अेक कपळेका चोगा लटका दिया गया। और अुस तिर्छे ताने चोगेसे कुछ आदमी नीचे गिरने लगे। घरमें आग लग जानेपर कोठेसे अुतरनेका यह अेक अुपाय है। अुसके बाद आकाशमें हवाअी जहाज़की गनगनाहट शुरू हुअी, और विमानमारिणी तोपें दगने लगीं। सैनिकोंके झुंड अिधरसे अुधरकी ओर दौळने लगे। अेक अेक बित्ते लम्बे पतले टिन्के टयुबोंको सळकोंपर फेंका गया और अुनसे नीले, लाल, सफ़ेद रंगका धुआँ निकल आसमानमें फैलने लगा और कुछ ही समय बाद जान पळता था सारा मुहल्ला कुहरेसे ढँका हुआ है। यह अिसलिये कि शत्रुका विमान नीचेके स्थानका पता न पा सके। किन्हीं किन्हीं चोंगियोंसे लाल और नीले रंगका भी धुआँ निकल रहा था। अिसी समय गैस-रक्षक चेहरे पहने कितनेही आदमी आये, और फिर स्टेचर-वाहक, तथा परिचारिकायें।

दूसरे डिपार्टमेंट स्टोरपर भी सैनिक थे। जेनरल अराकी स्वयं पहुँचे हुये थे। आठ बजे बाद हम लोग घरके लिये रवाना हुये। आज रेलवे प्लेट-फ़ार्म, ट्रेन सभी ओर अधिक अँधेरा था।

जापान यह सब तैयारी किस शक्तिसे रक्षा पानेके लिये कर रहा है? कोअी कहते हैं, इंग्लैंड या अमेरिकाके लिये। किन्तु, इंग्लेंडका हवाअी बेळा अितना नज़दीक नहीं है, जहाँसे जापानके शहरोंपर बम गिराया जा सके। अमेरिकाका फिलीपाअिन भी काफी दूर है, अिसलिये वह भी नहीं हो सकता। सबसे अधिक ख़तरनाक हमलेकी सम्भावना जिससे है, वह सोवियट रूस है। अुसके ब्लादीबोस्तोक्के हवाअी जहाज़ तीन घंटेमें तोक्यो आसानीसे पहुँच सकते हैं। जापान सोवियटकी तीन हज़ार विमानों-वाली वायव्य शक्तिको जानता है, और यह भी जानता है, कि अुसका आधा हवाअी बेळा पैस्फिकके तटपर है। वह यह भी जानता है, कि सोवि-यट सेना अुसके सामने तैयार खळी है। सोवियट सेनाकी हवाअी शक्ति ख़ास चीज़ है, जो कि जापानको मंचूरियासे अुत्तरकी ओर क़दम नहीं बढ़ाने

दे रही है। सोवियटकी अुत्तरी चीनी रेलवेको जो जापानने दामसे खरीदा है, वह भी अिसी बातको बतलाता है, कि जापान निकट भविष्यमें साअिबेरियाकी ओर जानेकी आशा नहीं रखता। और अिसीलिये अब अुसकी गति पेकिङ(=पाइपिङ)की ओर हो रही है। यह बात धीरे-धीरे स्पष्ट होती जा रही है, कि कुछ समयमें चीनके पेकिङके आस पासवाले चार प्रान्त फिर दूसरी मंचूरिया बननेवाले हैं। और अुसके बाद कौन जानता है, कि जापान कपासकी प्राप्तिमें स्वतंत्र होनेके लिये चीनी तुर्किस्तान न पहुँच जायेगा। जापानके अिस हाथ पैर फैलानेमें रूस और अमेरिकासे खटपट होनेका डर तो नहीं है, किन्तु अिसके कारण ब्रिटन्का विरोध अधिक बढ़ता जायेगा, अिसमें सन्देह नहीं।

१८—अेक जापानी बौद्ध कन्या-पाठशाला

योकोहामा जापानका सबसे बळा बन्दरगाह है। १४ जूनको वहाँके सोजीजी मंदिरके लळकियोंके हाअी स्कूलमें व्याख्यान था, अिसलिये श्री ब्योदोके साथ दोपहरको हम वहाँ पहुँचे। तोक्यो और आसपासके शहरोंकी समृद्धिको देखकर जापानके कितने ही मंदिर दूरके स्थानोंसे तोक्यो या अुसके आसपासके स्थानोंमें आ गये हैं। सोजीजी मंदिर भी अैसे ही बौद्ध मंदिरोंमें अेक है।

५२० अी० में दक्षिण भारतके आचार्य बोधिधर्म चीन पहुँचे। वह बौद्ध ध्यानयोगके प्रचारक थे। चीनमें आकर अुन्होंने ध्यान संप्रदाय की स्थापना की। यही ध्यान संप्रदाय जापानमें ज़ेन् कहा जाता है। ५२८ अी० में बोधिधर्मका चीनहीमें शरीरान्त हुआ। धीरे-धीरे अिस सम्प्रदायका चीनमें बहुत प्रचार हुआ। जापानी आचार्य जोया-थाअिशी (१२००-५३ अी०)ने चीनमें जाकर ध्यान संप्रदायकी योगविधियोंको सीखा, और जापान लौटकर अुन्होंने १२२७ अी० में अेअिहेअिजी मठकी स्थापना की। अिसी सम्प्रदायके ध्यान-आचार्य केअिज़न् (१२६८-१३२५ अी०)ने विनय-सम्प्रदाय (=रिश्शू)के अेक पुराने मठ शोगाकुजीको ध्यानमठके रूपमें परिणतकर अुसका नाम सो-जी-जी रक्खा। जापानके मंदिर अधिकतर लकळीके होते हैं; और भूकम्प-ग्रस्त देशमें अिस तरहके मकान अधिक अुपयोगी हैं भी, किन्तु अिनमें आग लगनेका भय बहुत रहता है। १८९८ अी०

में सो-जी-जी मठमें आग लग गअी, और क़रीब-क़रीब सारा ही मठ जलकर स्वाहा हो गया। पीछे साधारण मकान बना लिये गये, किन्तु जब विशाल अिमारतोंके बनवानेका प्रश्न आया, तो अधिकारियोंने निश्चय किया कि मठका स्थान बदलकर योकोहामाके आसपास लाया जाये। तदनुसार योकोहामाके चुरुमी प्रदेशमें देवदारसे घिरी अेक पहाळी चुनी गअी, और १९०७ अी० से अिमारतें बननी शुरू हुअीं। पुराने सो-जी-जीकी भी बची पुरानी चीज़ें यहाँ लाकर रक्खी गअीं।

ध्यान या ज़ेन्-सम्प्रदाय जापानकी सैनिक और शासक श्रेणीका धर्म है। राजवंश तथा दूसरे सम्भ्रान्तवंश अिस सम्प्रदायसे विशेष संबंध रखते हैं। वर्तमान सम्राज्ञी गाकोके पिता अिसी सोजीजी मठके शिष्य थे। सम्राट् मेअिजी स्वयं अिस मंदिरमें आये थे, अुस वक्त जिस फाटकसे वह मंदिरके भीतर प्रविष्ट हुये थे, वह अितना पवित्र समझा गया है, कि अुससे दूसरा कोअी प्रवेश नहीं कर सकता, और वह फाटक ही अब बंद कर दिया गया है। अैसे प्रभावशाली मठकी पुनर्रचनामें क्यों न शीघ्रता होगी। बीस अेकळसे अूपर भूमिमें मठके मकान बने हुये हैं। लकळीके कारुकार्यसे सुसज्जित विशाल द्वार, घंटाघर, ध्यानशाला, अतिथिशाला, बुद्धमंदिर, पितरोंका मंदिर, भोजनशाला आदि कितनी ही सुंदर अिमारतें हैं। अतिथिशालामें राजवंशिकों तथा सामन्तवंशिकोंके ठहरनेका अलग स्थान है। अिन कमरोंमें भी वही नर्म चटाअियाँ बिछी हैं, वैसे ही तूलनद्ध आसन हैं, किन्तु भीतकी ठोस कनातोंमें कुछ सुंदर चित्र भी हैं। सादगीके साथ कलाका सम्मिश्रण ध्यान-सम्प्रदायहीने जापानको सिखलाया है। और यह बात अिस मठमें प्रचुर परिमाणमें पाअी जाती है। अतिथिशालाके पीछे क्रीळा उद्यान भी है। कृत्रिम जलाशय, पत्थर, वृक्ष, घास, पुलको अिस ढंगसे रक्खा गया है, कि मालूम होता है, जैसे सभी चीज़ें प्राकृतिक हैं। प्राकृतिकता-को प्रकट करनेके लिये पत्थरोंको अनगढ़ रक्खा गया है। लकळीके पुलपर

छोटे-छोटे नदीके पत्थर फैलाये हुये हैं। देवदारकी जातिके वृक्षोंकी शाखाओं और पत्तोंपर क़ैंची लगाकर अुन्हें सुंदर छत्राकार बनाया गया है, तो भी मनुष्यके हाथको अितना छिपा दिया गया है, कि देखनेवालेको अुसका भान भी नहीं हो सकता! पीछेकी ओर पहाळी भाग ज़रा अूँचा है। अैसे उद्यानोंमें पीछे पहाळी भागका होना आवश्यक समझा जाता है। अैसा होनेसे वृक्षोंके पीछेकी ओर पृथिवीकी झलक न दिखलाअी पळकर अनन्त आकाश दिखलाअी पळता है।

क्रीडा-उद्यान देख ज़रासी अूँची जगहपर कुछ सीधे-साधे तथा नीची छतके मकान दिखाअी पळे। पास जानेपर पीली मिट्टीकी भीतसी थी। देखनेसे कभी सन्देह नहीं हो सकता था, कि यह सीमेंट की बनी है। बाहर सरलता प्रदर्शित करनेके लिये बाँस और फूसकी कुछ टट्टियाँ भी खळी थीं। दर्वाज़ेपर हमें कपळेका जूता दिया गया, और हम भीतर घुसे। वहाँ दियासलाअीके घरोंदे जैसी छोटी-छोटी बहुतसी कोठरियाँ थीं। यहाँ भी सादगीमें कमाल किया गया है। यही चाय-कोष्ठक हैं, जिनमें ध्यान और कलाके प्रेमी सविध चायपानकी क्रिया पूरी करते हैं। यह चाय-पान विधान ध्यान-सम्प्रदायका विशेष आविष्कार है। बल्कि चाय स्वयं अेक ध्यानीय भिक्षु द्वारा चीनसे जापान लाअी गअी थी। अिसका वर्णन हम किसी दूसरे समयकेलिये रखते हैं। चाय-कोष्ठक-समूहसे लौटकर हम फिर अतिथिशाला होते ध्यानशालाकी ओर चले। रास्ता मुलायम चटाअी बिछे अेक सुदीर्घ वरांडेसे था। हमारे थोळा आगे बढ़ते ही पीछेसे अेकके पीछे अेक विनम्रभावसे चलते काला चोगा पहने पचास-साठ व्यक्ति आ रहे थे। यह अिस मठके दो सौ भिक्षुओंमेंसे थे। सबका शिर घुटा हुआ था। काले चोगेके सामने संक्षिप्तरूपमें बौद्ध-भिक्षुओंका चीवर लटक रहा था। हम ध्यानशालाके द्वारपर पहुँचे। द्वारका काला पर्दा अिस वक्त खुला हुआ था, अिसलिये बाहर खळे ही खळे हमने भीतरकी चीज़ें

देखीं। बीचमें मंजुश्रीकी सुंदर मूर्ति है। फिर अुठे लकळीके चबूतरोंपर चटाअियाँ बिछी हैं। हर अेक भिक्षु द्वारसे भीतर घुसकर मूर्तिकी प्रदक्षिणाकर अपने आसनके सामने जाता था, फिर सामने और पीछेकी ओर दो बार प्रणामकर पीछेकी ओरसे अपनी गद्दीदार आसनी-पर बैठ वह भीतकी ओर मुँह घुमा लेता था। फिर पद्मासन बाँध ध्यान शुरू करता था। ध्यान यहाँ घंटे दो घंटेका नहीं होता। सबेरे ३॥ बजेसे लेकर रातके नौ बजे तक वह चलता रहता है। यदि कोअी अूँघने लगता है, तो दंडपाणि भिक्षु डंडेसे हल्की चोट लगाता है। सायंकालके भोजनके अतिरिक्त बाक़ी भोजन भी भिक्षु यहीं करते हैं। सभी कोअी यहाँ भिक्षु नहीं बन सकता। हर अेक अुमेदवारको किसी हाअी स्कूलसे पास होना ज़रूरी है। अिसलिये अैसे भिक्षुओंका विशेष नम्र होना ज़रूरी ही ठहरा। भिक्षुओंकी ध्यानशालासे हम गृहस्थोंकी धर्मशालामें गये। यहाँ भी प्रबंध पूर्वके जैसा ही है। सिर्फ़ शाला कुछ छोटी है। बुद्धमंदिरमें तपोमग्न भगवान् गौतमकी मूर्ति है। फूलों, चित्र-पटों, कमखाबके पर्दोंको अिस ढंगसे सजाया गया है, कि देखते ही बनता है।

अन्तमें हम पितरोंके घरमें गये। जिस किसीके घरमें कोअी मर जाता है, तो अुसकी दाह-क्रियाकर हड्डीको यहाँ लाकर तीन सप्ताह रखा जाता है। फिर दो छोटे अस्थि-खंडोंको चीनी मिट्टीकी डिबियामें रख, तहख़ानेमें डाल दिया जाता है, और बाकी अस्थि ख़ान्दानकी समाधिमें रक्खी जाती है।

यह सोजीजी बौद्धविहार है।

लळकियोंका हाअी स्कूल मंदिरसे फ़र्लाङ्ग भर पर है; और अिसकी स्थापना मंदिरने ही की है। यहाँ पंद्रह सौ लळकियाँ पढ़ती हैं, और अध्यापकों तथा अध्यापिकाओंकी संख्या पचाससे अूपर है। छात्राओंमें ३२ अमेरिका-शासित सुदूर हवाअी द्वीपकी भी हैं। प्राअिमरीकी पढ़ाअी छै



३२—सोजो-जी कन्या-पाठशालाकी अध्यापिकायें (पृ० २११)

वर्षकी है, अुसे समाप्तकर छात्रायें अिस माध्यमिक विद्यालयमें पाँच वर्ष पढ़ती हैं। प्रत्येक कन्याको सालमें ४८ येन् (प्रायः ३७ रुपये) फ़ीस देनी पळती है। यदि लळकी अपने पिता-माताके साथ रहती है, तो पढ़ाओीका सब ख़र्च २० येन् प्रतिमास पळेगा, नहीं तो तीसके क़रीब होगा। जापानमें लळकियोंके अैसे बळे-बळे बहुतसे स्कूल हैं। अुनमें पढ़नेवाली लळकियोंकी यह संख्या बतला रही है, कि जापानी पिता अपनी लळकियोंको सुशिक्षित देखना चाहते हैं। पढ़ाओीके अतिरिक्त लळकियोंको भोजन बनाना, सीना-पिरोना, फूल सजाना, संगीत, चित्रण, तथा चाय-विधान भी सिखलाया जाता है।

अेक बळे हालमें लकळीके फ़र्शपर ६ सौके क़रीब लळकियाँ घुटनोंके बल बैठी थीं। पीछे कुर्सियोंपर पचासके क़रीब अध्यापक-अध्यापिकाओंकी मंडली बैठी थी। श्री ब्योदोने भारतकी अपनी तीर्थयात्रापर डेढ़ घंटे व्याख्यान दिया। हमने भी कुछ बौद्धधर्मपर कहा, और धन्यवादके साथ व्याख्यान समाप्त हुआ।

१९ – नारा

२७ जुलाअीको रातके ग्यारह बजेकी ट्रेनसे तोक्योसे रवाना हुये। श्री शकाकिवारा साथ चल रहे थे; किन्तु अुनकी माता-पिता, बहिन और भाअी भी साथ ही रेल द्वारा जंकशन तक पहुँचानेके लिये आये। सारे परिवारने मुझे अपने घरका अेक व्यक्ति समझ रखा था, अिसलिये अन्तिम बिदाअीके वक्त दोनों ओरके चित्त खुश कहाँ रह सकते थे? आख़िर ट्रेनने सीटी दी। दोनों ओरसे 'सायोनारा' हुआ। कुछ देर तक बिजलीसे प्रकाशित प्लेटफ़ार्मपर हिलती रूमाल दिखाअी पळती रही, अुसके बाद हमारी ट्रेन अंधकारमें विलीन हो गअी।

जापानकी रेलें और सब दृष्टिसे अच्छी हैं, किन्तु गाळीके बीचोंबीच रास्ता होनेसे दो आदमी बैठने लायक़ बेंचपर सोया नहीं जा सकता। अिस प्रकार जब तब बैठे ही बैठे झपकी ली। तीनसौ मील चलकर सात बजे सवेरे कोदा स्टेशनपर पहुँचे। अिचिजो मंदिरके पुरोहित स्टेशनपर पहुँचे हुये थे। हमारे बक्स साअिकिलपर रक्खे गये, और हम दो मीलपर अवस्थित अुस मंदिरकी ओर चल पळे। बाज़ारसे निकलते ही हम धानके खेतोंके बीच जा रहे थे। यहाँ हर अेक गाँवमें मोटर जाने लायक़ सळकें होती हैं। खेतोंकी मेंडें भी थोळी-थोळी दूरपर अितनी चौळी होती हैं, कि अुनपर तिपहिया साअिकिल दौळाअी जा सकती है। धानके खेतोंके बाद अूँचे खेत आये। अिनमेंसे कितनोंमें दो-दो फ़ीट अूँचे तूतके पौधे लगे थे। रेशमके



३५—अेक प्राचीन बौद्ध भिक्षु (पृ० २१८)

कीळोंका पालना भी जापानी किसानोंका अेक व्यवसाय है। मठके कोठेके प्रतिष्ठित कमरेमें हम दोनोंका डेरा लगा। घरभरने दिल खोलकर स्वागत किया।

अब यहाँ से चौथे दिन चलना था। श्री शकाकिवाराको दो दिन तक प्रति दिन तीन बार व्याख्यान देना था। और बीच-बीचमें हमें भी कुछ कहना था। पासके टोलेमें दस-बारह घर हैं। दूसरे दिन शामको ग्राम-जीवन देखने निकले। अेक परिवारमें वृद्ध पिता-माता, बहू, तीन भाअी और दो बच्चे हैं। साढ़े तीन अेकळके क़रीब खेत है, जिसमें आधे अेकळमें तूत रहता है। सालमें चार बार रेशम निकलता है। हर अेक क़िस्तमें ६० येन् (प्रायः ४५ रुपये) का रेशम बिकता है। अर्थात् परिवारको १८० रुपये साल रेशमसे मिलते हैं। परिवारके पास चारसौ मुर्ग़ियाँ हैं, जिनसे प्रति दिन ८० अंडे प्राप्त होते हैं। प्रति अंडेका दाम भारतीय अेक पैसा है, अर्थात् सवा रुपये रोज़ अिससे भी आमदनी होती है। तीन सुअर भी हैं, जिनसे आठ दस बच्चे सालाना होते हैं, और कुछ मास रखनेपर बच्चे दो-तीन रुपयेपर बिक जाते हैं। यह अिस गाँवके अेक ग़रीब घरका ज़िक्र है। जोळिये आमदनीको। और मुक़ाबिला कीजिये भारतीय किसान घुरहू तिवारीसे। घुरहू तिवारी-के पास साढ़े तीन अेकळ खेत है। अेक अेकळ सालभर ख़ाली पलिहर पळा रहेगा। बाक़ी अढ़ाअी अेकळमें जलानेसे बचे गोबरकी कुछ खाद डाल दी जायेगी। खादके मोलसे चाहे तिगुना भी नफ़ा हो, तो भी घुरहू तिवारी खाद मोल लेनेके लिये तैयार नहीं हैं। जापानमें जहाँ मनुष्य-के पाख़ानेको खादके लिये बहुत अिस्तेमाल किया जाता है, और स्वच्छ सभ्य किसान पैसेसे ख़रीदकर अपने हाथसे पाख़ानेको खेतमें डालनेसे ज़रा भी नहीं हिचकता, वहाँ घुरहू तिवारी अुसका नाम तक लेनेके लिये तैयार नहीं। रामभरोसे खेती होती है, जो हो गया सो हो गया। खेत बोने,

काटने, निराने, सींचनेके वक़्त कुछ काम कर दिया, बाक़ी समय बस गप्, झगळा या फ़ाक़ेमस्ती। चर्ख़ा चलानेको कभी-कभी वह तैयार हुये थे, किन्तु दिन भरकी मेहनतसे दो-तीन पैसे ही मिलनेके कारण अुनका मन नहीं लगा। और रेशमका कीळा? अुनके खेतमें तूत भी हो सकता है, और रेशमके कीळेको भी पाल सकते हैं, किन्तु अुस नअी बातको वह धर्म-विरुद्ध समझते हैं। और मुर्ग़ी पालना तो अुनकी जैसी बळी जातिके लिये सोचना भी सम्भव नहीं। कहाँ तिवारी ब्राह्मण और कहाँ मुर्ग़ी पालना!! और सुअर! राम राम नाम मत लो, घुरहू तिवारी भूखे मरनेके लिये तैयार हैं, किन्तु वह अपने सनातनधर्मको छोळनेके लिये तैयार नहीं। और गाँधी बाबा और अुनके अनुयाअी भी स्वच्छ सात्विक पेशों तककी ही शिक्षा देंगे। मुर्ग़ी पालने और रेशमके कीळे जैसे काममें अुन्हें हिंसाकी गंध आयेगी। अुन्हें आख़िर लोगोंको खींचकर सतयुगकी ओर ले जाना है न? चाहे धर्म और सतयुगवादके मारे जनता भाळमें पळे। चाहे दिनपर दिन बढ़ती ग़रीबीकी भट्टीमें जले। यदि जापानी किसानों की तरह सुखी बनना चाहते हो, तो रास्तेमें रुकावट डालनेवाले पोथे-पत्रे, गुरु महात्मा सबको अुठाकर ताखपर रख देना होगा।

३१ जुलाअीको हमें अंजो गाँवमें जाना पळा। यहाँका कृषिविद्यालय सारे जापानमें प्रसिद्ध है। यदि कोअी विद्यार्थी यहाँ आकर पढ़ना चाहे तो १५ रुपये मासिकमें यहाँ रहकर गुज़ारा कर सकता है।

रातको रवाना हो पहली अगस्तको सवेरे तोक्यो पहुँचे। वहाँ कोसो-जीके प्रसिद्ध मंदिरमें डेरा लगा।

२ अगस्तको हम नारा देखने गये। नाराकी स्थापना ७०९ अी० में हुअी थी। यह जापानकी प्रथम राजधानी है। अुससे पूर्व हर अेक राजाके मरनेके बाद नअी राजधानी बनानी पळती थी। पुराने शिन्तो धार्मिक विचारके अनुसार जिस जगह अेक शासक मर जाता, वह जगह मनहूस



३६--नारा--याकुसी-जी (स्तूप) (पृ० २२२)

समझी जाती थी। किन्तु अुपराज शोतोकू (५९३-६२१ अी०)के समयसे बौद्ध विचार जापानी जातिके अन्तस्तल तक पहुँच रहे थे, अिसीलिये अब मनहूसियतका अुतना डर न था। नारा राजधानीकी नींव सम्राट् शोमूने डाली थी। अुपराज शोतोकूके बाद सम्राट् शोमू ही जापानके प्रतापी और अतिश्रद्धालु शासक माने जाते हैं। अुन्होंने जहाँ अपनी राजधानीको सुंदर प्रासादों और दर्बारोंसे अलंकृत करना शुरू किया, वहाँ मठों और मंदिरोंपर भी पानीकी तरह सोना बहानेमें कोअी कोर-कसर छोळ न रक्खी। ७५२ अी० में अुन्होंने संसारकी प्राचीनतम और उच्चतम पीतलकी बुद्ध-मूर्ति दाअीबुत्सु (=महाबुद्ध)को ढलवाया। यह कितनी विशाल है, अिसके अनुमानके लिये देखिये—बैठी मूर्तिकी अूँचाअी ५३·५ फ़ीट, चेहरा १६-९·५ फ़ीट, आँखें ३·९ फ़ीट लम्बी, कान ८·५ फ़ीट लम्बे, मुँह ३·७ फ़ीट, नाक ३.९ फ़ीट, नाकका छिद्र ३ फ़ीट परिधि, अँगूठा ४·५ फ़ीट। सिंहासनका पद्म १० फ़ीट अूँचा और ६९ फ़ीट परिधिमें। अिसके ढालनेमें १२२७५ मनके क़रीब पीतल, २२५ मन मोम, साढ़े दस मन सोना, साठ मन पारा लगा था।

नारा पहुँचनेपर हम लोग पहले वहाँके म्यूज़ियमको देखने गये। म्यूज़ियम मृगदाव या हिरनोंके बन में है। सारनाथ (बनारस)में भगवान् बुद्धने अपना प्रथम अुपदेश या धर्मचक्र-प्रवर्तन किया था। सारनाथका पुराना नाम मृगदाव या हिरनोंका वन है। अुसी ख्यालको लेकर राजधानी नाराके मृगदावकी स्थापना हुअी। यह अुद्यान जापानका सबसे बळा बाग़ है। हज़ारके क़रीब पालतू हिरन अिसमें घूमा करते हैं। दो पैसेकी रोटियाँ ले लीजिये, अेकको डालिये, देखिये पचासों आपके गिर्द जमा हो जाते हैं। जापानके और म्यूजियमोंकी भाँति अिस म्यूजियममें भी बहुत थोळी ही चीज़ें हैं, तो भी संख्याकी कमी गुणकी अधिकतासे पूरी हो जाती है। अिस म्यूज़ियममें नाराकाल (७१०-८०अी०) तथा कुछ पीछेकी भी बहुतसी मूर्तियाँ और चित्र

अेकत्रित किये गये हैं। कुछ द्वारपाल यक्षोंकी मूर्तियाँ अद्भुत हैं। देखिये अुनके तने शरीर, रगों और पुट्ठोंके अुभार, शरीरके सुडौलपनको। अेक-अेक रोममें मालूम होता है, हज़ारों हाथियोंका बल है। जापानी शारीरिक बलके बळे प्रेमी हैं। जापानके स्कूलों और कालेजोंमें लळकोंके शरीरपर बहुत अधिक ध्यान दिया जाता है। विद्यार्थियोंको नियमपूर्वक हर हफ़्ते कुछ घंटे, गदका-फरी, जुजुत्सु आदिको सीखना पळता है। मंत्रिमंडलके सदस्य तक जुजुत्सु या तीर-धनुषके दो हाथ दिखलानेमें नहीं हिचकिचाते। जापानप्रवासी मेरे कअी भारतीय मित्रोंने आग्रहपूर्वक कहा——भारतसे पहलवानों, गदका-फरी, तीर तलवारके जानकारोंको जापान भेजना चाहिये। यहाँके लोग अुनके बळे शौक़ीन हैं। और खेलोंकी विजय बहुत जल्द घर-घर और आदमी-आदमीके पास पहुँच जाती है। अिसमें शक नहीं, अैसे अुस्तादोंको यहाँसे रुपया मिलनेकी अधिक आशा नहीं है। खेल ही क्या अख़बारनवीसी, पुस्तक-लेखन सभी चीज़ोंके लिये यहाँ अितना कम पैसा मिलता है, कि भारतीय भी अुस आमदनीको अत्यन्त तुच्छ समझेंगे। किन्तु, इन खेलों द्वारा हम नवीन भारतके रूपको अच्छी तरह यहाँके सर्वसाधारणके हृदयपर अंकित कर सकते हैं। क्या भारतके धनी-मानी पुरुषोंमें अिसके महत्त्वको जाननेवाले कुछ आदमी नहीं मिल सकते ?

म्यूज़ियमके पास ही कोफुकुजी मंदिर और विशाल स्तूप है। स्तूप राष्ट्रीय निधि है। राष्ट्रीयनिधि बतलाते हुये मेरे साथीने टिप्पणी की——पिछली शताब्दीमें सरकार अिस स्तूपको ५० येन्‌पर बेच रही थी किन्तु कोअी ख़रीदनेवाला नहीं मिला। सरकारके कर्णधार अुस समय जापानसे बौद्धधर्मका नाम मिटा डालनेपर तुले हुये थे। स्तूपके तोळनेमें ख़र्च ज़्यादा पळता, अिसलिये तोळा नहीं, और आग लगानेपर आसपासके घरोंके खतरामें पळनेका डर था, अिसलिये वह नहीं किया गया। अिस प्रकार

स्तूप नष्ट होनेसे जब बच गया, तब पीछे सरकार असे राष्ट्रीयनिधि दर्ज कर रही है।

नाराके वन, असके विशाल देवदारों और मृगोंके झुंडको देखते हम दाअि-बुत्सुकी ओर चले। यद्यपि दोपहरकी गर्मी थी, तो भी सैकळों यात्री आये हुये थे। फाटकके बाहर अक छोटी पुष्करिणी है। फाटकमें द्वारपाल यक्षोंकी विशाल काष्ठ-प्रतिमायें हैं। आठवीं शताब्दीके अिस शिल्पीने ओज और वीर्य दिखलानेमें कमाल कर दिया है। जापानकी यह प्रतिमायें कलामें अद्वितीय समझी जाती हैं। भीतर अेक और जापानके सबसे बळे घंटोंमें तीसरा[1] टँगा हुआ है। प्रधान मंदिरके सामने अेक पीतलकी लालटेन खळी है। यह भी आठवीं शताब्दीकी कारीगरीका उत्कृष्ट नमूना तथा राष्ट्रीयनिधि करके संरक्षित है। मंदिरकी विशाल दाअि-बुत्सुकी मूर्तिका वर्णन पहिले कर चुका हूँ। आग लगनेमें सिर दो बार गिर गया था, जिसे फिरसे लगा दिया गया। मंदिर कितनी ही बार जल चुका है। ३५ हाथसे अूपरकी यह बैठी मूर्ति देखनेमें अतनी बळी नहीं मालूम होती। आसपासकी सभी चीजोंके असी प्रकार बळे होनेसे यह भ्रम होता है। अिस मूर्तिके प्रभामंडलमें अवस्थित १२ बुद्धमूर्तियाँ ही मनुष्यके बराबर होंगी। यद्यपि कामाकुराकी बुद्धमूर्ति अिससे पीछेकी तथा क़दमें छोटी है, किन्तु, अिसमें कोअी शक नहीं, वह मूर्ति अिससे कहीं सुंदर, कहीं शान्त, कहीं प्रभावशाली है।

दाअिबुत्सुके मठका नाम तोदाअिजी है। यहाँके भिक्षु जापानके सर्व पुरातन तीन बौद्ध सम्प्रदायोंमेंसे अेक केगोन्-सम्प्रदायके माननेवाले हैं। केगोन् कहते हैं अवतंसकको। अिस मठको अवतंसकसूत्र अधिक मान्य

[1] प्रथम ओसाका (शितेन्नोजीका), दूसरा क्योतो चिओन्-अिन्का।



४०—नारा—द्वारपाल (पृ० २२५)



४१——नारा——तोशोदाजि-जी (पृ० २२९)

थे, अिसीलिये सम्प्रदायका नाम सूत्रके नामपर पळ गया! जहाँ दूसरे सम्प्रदायोंके हज़ारों भिक्षु और मंदिर हैं, वहाँ अिस सम्प्रदायके भिक्षुओंकी संख्या २३, और मंदिर दस हैं। सम्प्रदायके मंत्री भिक्षु बळे प्रेमसे मिले। अुन्होंने भारतके बौद्धधर्मके बारेमें बहुत प्रश्न किये, अपने सम्प्रदायके बारेमें पूछनेपर वह अधिक आशावान् नहीं जान पळे। मैंने कहा—यदि संख्यामें आपके भिक्षु अधिक नहीं बढ़ सकते, तो गुणमें तो बढ़ सकते हैं। क्यों नहीं कोशिश करते, अधिक शिक्षा, अधिक योग्यता बढ़ानेकी।

शोसोअिन् नाराका अद्भुत संग्रहालय है। शोसोअिन् और होर्योजी जापानके पुरानी वस्तुओंके अद्वितीय संग्रहालय हैं। अिसके बारेमें अेक लेखक (सन्सोम्) लिखता है—

"अिस भंडारमें सम्राट् शोमूकी ७५६ वस्तुयें सुरक्षित हैं, जिन्हें अुनकी विधवा रानीने महाबुद्धको अर्पित किया था वह आज तक वैसी ही अक्षुण्ण चली आअी हैं। अिनमें हस्तलेख, चित्रपट, आभूषण, हथियार, वाद्ययंत्र, पात्र तथा दूसरे पूजाभांड शामिल हैं। यह वस्तुयें अुस समयके राजकीय जीवनको अच्छी तरह अंकित करती हैं। अुनमें कुछ वस्तुयें विदेशी प्रभाव प्रदर्शित करनेके कारण अधिक महत्त्वपूर्ण हैं। कितने ही काँच, मिट्टी या धातुके बर्तन, लाक्षाकर्म, पट हैं, जो मध्य अेशियाके रास्ते अीरान या यूनानसे आये या अुनकी नक़लमें बने हैं।"

सम्राट् शोमूकी अुक्त रानी अपने पतिकी भाँति धर्मपरायणा थीं। अुनका हृदय अत्यन्त करुणापूर्ण था। वह अपने हाथों रोगियोंकी सेवा किया करती थीं। कहते हैं, अुनके हृदयकी परीक्षा करनेके लिये अेक बार बुद्ध (?) स्वयं गले शरीरवाले कोढ़ीका रूप धारण करके आये। रानीने न सळे शरीरकी दुर्गंधका ख्याल किया न अुससे ज़रा भी घृणा की। जब अुन्होंने निस्संकोच भावसे गर्म पानी ले अपने हाथों कोढ़ीके ज़ख़मको धोना शुरू किया, तो बुद्धने अपना असल रूप प्रकट किया।

पहाळके अूपर थोळा चढ़कर निगात्सु-दो और सङ्गात्सु-दो दो पुरातन मंदिर हैं। निगात्सुदोका निर्माण ७३३ अी० में हुआ था। अिसके भीतरकी ब्रह्माकी मूर्ति सुंदर और अति प्रसिद्ध है।

लौटते हुये हम कासुगा-जिनूशा (शिन्तो मंदिर) में गये। यह मंदिर अपनी पीतलकी हज़ार लालटेनोंके लिये बहुत प्रसिद्ध है। अिस मंदिरके बाहर हज़ारों पत्थरकी लालटेनें हैं। पासमें अेक वृक्ष है, जिसके तनेपर छ भिन्न-भिन्न जातिके वृक्षोंकी कलम लगी है।

पिछली बार होर्योजीसे नारा आते वक्त हमने तोशोदाअिजी मंदिरकी प्राचीनताके बारेमें सुना था। अिसलिये अबकी बार अुसे भी देखनेका निश्चय किया था। बिजलीकी रेलसे अेक जगह गाळी बदलकर पौन घंटेमें वहाँ पहुँचे। मंदिर स्टेशनसे तीन-चार फ़र्लाङ्गसे अधिक नहीं है। रास्ता गाँवमेंसे है। जब नारा राजधानी थी, तो अुसकी आबादी ५ लाख थी, और यह मंदिर शहरके पास था। आज भी नाराके पास धानके खेतोंमें जहाँ-तहाँ पुराने घरोंके नींववाले पत्थर दिखलाअी पळते हैं। तोशोदाअि मंदिर बस्तीसे लगे चहारदीवारीसे घिरे अेक बग़ीचे अथवा अुपवनके भीतर है। नारासे हमारे चलनेकी सूचना टेलीफोन द्वारा पहुँच गअी थी। ७२ वर्षके वृद्ध स्थविर कितागावा भारतीय भिक्षु सुन द्वारपर अगवानीके लिये आये। आप भिक्षुनियमों या विनयके बळे विद्वान् ही नहीं हैं, बल्कि अुसके अनुसार चलना चाहते हैं। दो घंटे तक हमारी अुनकी बात होती रही। तोशोदाअिजी मंदिर जापानके सर्वपुरातन बौद्ध-सम्प्रदाय रित्सु (=विनय)से संबंध रखता है। आरम्भमें यह बहुत प्रभावशाली सम्प्रदाय था। मेअिजी क्रान्ति के समय (१८६८ अी०) भी अिस सम्प्रदायके ४०० मंदिर और १००० भिक्षु थे। मेअिजी क्रान्तिके बाद अेक बार तो यह सम्प्रदाय ही सरकारी काग़ज़ोंमें लुप्त हो गया था। पीछे स्थविर कितागावाके प्रयत्नसे सरकारने अिसकी अलग सत्ता स्वीकार की। आजकल अिसके तीस भिक्षु और २५

मंदिर हैं। विशेष नियमोंके पालन करनेवाले ४०० गृहस्थ अुपासक तथा अेक लाख अनुयायी हैं। स्थविर बळे निराशापूर्ण स्वरमें बार-बार पूछते थे—"कैसे अिस विनय-सम्प्रदायकी जापानमें रक्षा की जाये ? मेरी समझमें बौद्धधर्मकी रक्षाके लिये विनयकी अत्यन्त आवश्यकता है।" भिक्षुओंके बारेमें पूछनेपर कहते थे—"क्या करें? पढ़ते वक्त तो भिक्षु अुत्साही दीख पळते हैं। विनय प्रतिपादित मानवबुद्धके महत्त्वको भी जानते हैं। और विनयानुकूल आदर्शयुक्त भिक्षुजीवनके गौरवको भी समझते हैं। किन्तु, आख़िर यौवन अुनपर हावी हो जाता है, और वह स्त्रीके फंदेमें पळ जाते हैं।" कोबेमें अेक दिन मैं सळकपर जा रहा था। मेरे पीले कपळेको पहचान अेक श्रद्धालु गुजराती गृहस्थने आकर सादर प्रणाम किया। वार्तालापमें कहा—"महाराज! यह देश तपस्वियों और महात्माओंके लिये नहीं है।" मैंने कहा—"क्यों, यहाँ तो हिमालयके सुंदर दृश्य और कुछ दूर जानेपर अेकान्त स्थान भी योगसाधनके लिये मिल सकते हैं? यदि वास्तविक साधक हो, और थोळी भाषा जान जाये, तो भारतहीकी तरह यहाँ भी भक्त मिल सकते हैं।"

बोले—"सो हो सकता है, किन्तु, यहाँकी ललनायें यदि वैसे करने दें, तब तो।"

अुक्त सज्जनका कहना वही था, जो हमारे स्थविर कितागावा कह रहे थे। स्थविर कितागावाको भारतीय समाजका ज्ञान न था, अिसलिये वह मुक़ाबिला नहीं कर सकते थे, और गुजराती सज्जन तुलना करके कहते थे। अैसा कहनेका यह मतलब नहीं, कि जापानके स्त्री-पुरुष भारतकी अपेक्षा अधिक कामुक हैं। सिवाय बैठे-ठाले धनपतियोंकी कामवासना भी भूख-प्यासकी तरह ही स्वाभाविक और अेक सीमा रखती है। वह असीम और प्रचंड वहीं बनती है, जहाँ अुसके स्वाभाविक रास्तेमें भी बहुतसी रुकावटें पैदा कर दी जाती हैं। किसी जीवित नदीके स्रोतको मज़बूत बाँध-

से बाँध दीजिये, क्या परिणाम होगा? वही बात कामकी भूखके बारेमें भी जाननी चाहिये। भारतमें अिसकी तृप्तिमें हज़ारों रुकावटें पैदा की गअी हैं, जिसका परिणाम है, अुस भूखका अुचित सीमाको पार करना। जापानमें अुसे अुतना महत्त्व नहीं दिया जाता। अुसे भूख-प्यासकी श्रेणीसे थोळा ही फ़र्क़ करके रक्खा जाता है। यद्यपि यहाँ योरोपकी भाँति मतवालापन नहीं है, तो भी स्त्री-पुरुषोंके संबंधके लिये बहुत खुला रास्ता है। परिणाम यह होता है, कि तरुण भिक्षुकी दृष्टि किसी न किसी अप्सरापर पळ जाती है, और वह छर लिया जाता है। स्थविरने चार-पाँच बार तो अवश्य अुपाय पूछा होगा, लेकिन क्या जवाब देते। अन्तमें यही कहा—"क्या वृद्ध या प्रौढ़ अुपासकोंमेंसे कोअी आगे नहीं बढ़ सकते?" जापानमें बुद्धकी भिक्षाप्रणालीका रवाज बहुत कम है। अिस विहारमें अुसका चलन है। दिनके दस बजे स्थविर अपने भिक्षापात्रको लिये शिष्योंके साथ गाँवमें प्रवेश करते हैं। हर अेक घरकी गृहिणी कुछ भोजन भिक्षाके लिये तैयार कर रखती है। आते ही सप्रणाम भिक्षुओंके पात्रमें डाल देती है। स्थविरका कहना था—"ओह! बुद्धके चरणोंका अनुगमन बळा ही मधुर, बळा ही शान्तिमय, बळा ही प्रभावशाली है। लेकिन प्रलोभन अुसपर चलने नहीं देता।"

हमें अभी पासके अेक और मठको देख क्योतो लौटना था, अिसलिये मठके मंदिरोंको देखने चले। पहले अुपदेशशाला देखी। यहाँ कितनी ही काष्ठ और पीतलकी पुरानी मूर्तियाँ हैं, जो अधिकांश राष्ट्रीयनिधि हैं। अिस मंदिरकी स्थापना ७५६ अी० में हुअी थी। पुरानी अिमारतें तथा बहुतसी प्राचीन मूर्तियाँ अिस मठमें सुरक्षित चली आअी हैं। अिसलिये अपने पळोसी याकुसी मंदिरके साथ अिस मंदिरका स्थान होर्योजी जैसा महत्त्वपूर्ण है। शताब्दियों तक अिस मठकी शालाओंके नमूनेपर जापानके मंदिर बनते रहे हैं। मठका प्रधान मंदिर आठवीं शताब्दीकी अिमारतोंका सर्वांग परिपूर्ण

नमूना समझा जाता है। भीतर भारतीय देवदारकी सुंदर बुद्ध प्रतिमा है। अिसके प्रभामंडलमें तीन हज़ार छोटी-छोटी बुद्धमूर्तियाँ हैं।

अुपदेशशाला और प्रधान मंदिरको देख लेनेपर स्थविर नये बनवाये स्तूपके पास ले गये। स्तूपका चबूतरा मात्र है, स्तूप कपळा और लकळीसे समय-समयपर तैयार किया जाता है। सारा संघाराम अेक स्वाभाविक वन जैसा रमणीय है। चलते वक्त आग्रह करनेपर भी वह फाटकके बाहर तक पहुँचाने आये। यदि भारतीय भिक्षु आकर रहना चाहे, तो अुसे भेजना—कह विदा दी। तरह-तरहके विचार करते हम याकुसी विहारकी ओर चले, जो स्टेशनके बहुत क़रीब है।

याकुसीजी—अिसकी स्थापना ६८० अी० में हुअी थी। अिसका तिनतल्ला स्तूप अुसी समयका है। वर्तमान प्रधान मंदिर पुरानी अिमारतके जल जानेपर १६७४ अी० में बना था। अिसीके भीतर भैषज्यगुरु बुद्धकी मूर्ति है। मूर्ति पीतलकी है, किन्तु काली वार्निशसे मालूम होता है, लाहकी है। अिसका निर्माण आठवीं शताब्दीके आरम्भमें हुआ था। मूर्ति सुंदर तथा अत्यन्त भावपूर्ण है। अिसके प्रभामंडलमें सातवीं शताब्दीकी अुत्तरी भारतकी लिपिमें मंत्र लिखा हुआ है। अिस मंदिरमें भी द्वारपाल यक्षोंकी ओजपूर्ण मूर्तियाँ हैं। अुपदेशशाला यद्यपि अुन्नीसवीं सदीके आरम्भमें पुनर्निर्मित हुअी थी, किन्तु अिसके भीतर पीतलकी खळी अवलोकितेश्वरकी मूर्तिको ६७२ अी० में कुदारा (कोरिया)के राजाने भेंटमें भेजी थी।

सूर्य कभीके डूब चुके थे। सघन देवदारकी पंक्तियोंमें अँधेरा भी आ चला था। मंदिरके पथके विद्युत्प्रदीप जल अुठे थे। अभी हमें घंटे भरकी रेलयात्रा करनी थी, अिसलिये लौटनेकी जल्दी पळ रही थी। किन्तु, याकुसी मठके प्रधान श्री हाशीमोतोसे मिल लेना चाहते थे, क्योंकि जापानके सर्वपुरातन तृतीय सम्प्रदाय होस्सो (योगाचार)के बारेमें कुछ जानना था। योगाचार सम्प्रदायसे हम अपनी अधिक आत्मीयता अनुभव

करते हैं। क्योंकि वसुबंधु, दिङ्नाग, धर्मकीर्त्ति जैसे महान् नैयायिक बुद्धिवादी अिसी सम्प्रदायके पोषक थे। नालन्दा अिसका प्रधान केन्द्र था। सोचा था कुछ मिनटोंमें छुट्टी मिल जायेगी, किन्तु हाशीमोतो अपने योगाचार दर्शनके ही जानकार नहीं हैं, अुन्होंने तिब्बती भाषा भी पढ़ी है, और वसुबंधुकी मूल पुस्तक त्रिंशिकाका तिब्बती भाषासे चीनी (जापानी) भाषामें अनुवाद भी किया है। अुन्होंने बतलाया——होस्सो सम्प्रदायमें ६०० भिक्षु, २० भिक्षुणी और ११२ मंदिर हैं। अिस सम्प्रदायके प्रधान——जो होर्योजी विहारके भी प्रधान हैं——जोअिन् सअेकी जापानके प्रधान विद्वानोंमें हैं। क्योतोके प्रधान भदन्त ओन्निशीके बारेमें आगे लिखूँगा, अुससे मालूम होगा वह भी अद्वितीय व्यक्ति हैं। अैसे नायकोंकी योग्यता और प्रचारके कारण गहन दार्शनिक सिद्धान्त रखते भी यह सम्प्रदाय अुन्नति कर रहा है। भारतीय जानते हैं, कि विरोधी आचार्य, शंकरके वेदान्तको प्रच्छन्न बौद्धमत कहते हैं। और शंकरके सिद्धान्त अिसी योगाचार या विज्ञानवादसे लिये गये हैं।

रातको नौ बजे लौटकर हम दोनों अपने निवासपर लौट आये। मालूम हुआ, दो समाचारपत्रोंके प्रतिनिधि, दो कोरियाप्रवासी जापानी बौद्ध तथा दो और सज्जन दो घंटे प्रतीक्षाकर कुछ ही मिनट पहले चले गये। अुनकी तकलीफके लिये अफ़सोस प्रकट करनेके सिवा और चारा क्या था।

२०—क्योतो

७९४ अी० से १८६८ अी० तक क्योतो जापानके सम्राट्की राजधानी रहा। अिस प्रकार पौने ग्यारह शताब्दियोंका जापानी अितिहास क्योतोके साथ संबद्ध है। नाराको सिर्फ़ सत्तर वर्ष ही तक (७१०-८० अी०) जापानकी राजधानी बननेका सौभाग्य प्राप्त हुआ। कहते हैं, नारामें बौद्ध मठाधीशोंकी शक्ति बहुत बढ़ गअी थी, और अुसका प्रभाव शासकोंपर भी पळता था, अिसी ख्यालसे सम्राट् क्वम्मूने मियको (=क्योतो)को अपनी राजधानी बनाया। किन्तु असल बात यह है कि दर्बारियोंने नारामें अपनी दाल गलती न देख वैसा करवाया। अिसी द्वारा फुजीवारा-वंशने ४०० वर्षों तक (७८४-११९२) सम्राटोंको अपने वशमें कर रखा। अुसके बाद तो खुल्लम-खुल्ला शोगुन प्रणाली आरंभ होती है, और सम्राट् फिर पूजाके योग्यमात्र रह जाता है। यद्यपि शोगुन शासनकालमें (११९२-१८६८ अी०) शोगुनकी राजधानी, कामाकुरा, या येदो (तोक्यो)में रही, जिसके कारण अुक्त नगर बळे समृद्धिशाली हो गये थे, तो भी क्योतोमें सम्राट्के निरंतर रहनेसे अुसका वैभव सारा क्षीण नहीं हुआ। क्योतोमें जापानके सभी बौद्ध-सम्प्रदायोंके केन्द्र हैं, अिसलिये भी क्योतोको बळा सहारा मिला। १८६८ के बाद यद्यपि तोक्योके राजधानी हो जानेसे क्योतोको हानि हुअी, तो भी कितनी ही चीज़ें हैं, जिनके लिये आज भी क्योतोका स्थान तोक्योसे भी अूँचा है। क्योतो लगातार चित्रकारों, कवियोंका निवासस्थान

रहा है। आज भी कलाकी दृष्टिसे क्योतोका जापान भरमें प्रथम नंबर है। आज भी बळे-बळे चित्रकार, काष्ठ-प्रस्तर-शिल्पी क्योतोके विख्यात हैं। हालमें जब सेनेमा फ़िल्म कम्पनियोंने काम शुरू किया, तो क्योतोकी अद्वितीय प्राकृतिक सुंदरताको देख, अुन्होंने फ़िल्म स्तुदियो यहीं बनाये चित्र, नृत्य, कविता मानों क्योतोकी हवामें है, अिसीलिये सांस्कृतिक विशेषतामें क्योतो अव्वल है।

जापानके दर्शनीय शहरोंमें यात्रीको सस्तेमें देखनेका बळा अिन्तज़ाम है। वैसे तो यदि पाँच सहयात्री हों, तो टेक्सीपर भी दिन भरका प्रत्येक आदमी दो रुपयेसे अधिक नहीं पळेगा। किन्तु, हम थे दो ही आदमी। साढ़े तीन येन् (२॥।-)) आदमी पीछे दे, हम नगरप्रदर्शिका मोटर-बसपर बैठ गये। जापानकी मोटरों और बसोंकी प्रशंसा काफ़ी कर चुका हूँ। और जगहोंकी भाँति यहाँ भी बसकी टिकट काटनेवाली लळकी स्थान-स्थानपर रटे व्याख्यानको रामलीलाके राम-लछमनकी टोनमें दोहरा रही थी। ख़ैर, हमारे पल्ले तो कुछ पळनेवाला न था।

पर्वत-कक्षमें बसा नारा भी रमणीक स्थान है, किन्तु क्योतोको प्रकृतिने सौंदर्यको दिल खोलकर दिया है। जिस ओरसे देखिये हरे-हरे पहाळ दिखलाअी पळते हैं। कहीं-कहीं तो नगर अुनके भीतर तक घुस गया है, और कहीं-कहीं वह कुछ दूरपर छूट जाता है। कामो और कत्सुर नदियाँ नगरके बीचसे बहती हैं। यद्यपि वह अुतनी लम्बी-चौळी नहीं हैं, तो भी अुनमें पानी रहता है, और बरसातके दिनोंमें कभी-कभी अुनकी प्रचंड बाढ़ क्योतो-वासियोंको वह पाठ पढ़ाती है, जिसे समय-समयपर आनेवाले भूकम्प तोक्योको सिखाते हैं। जापान भूकम्पकी भूमि कही जाती है, किन्तु अुसका यह मतलब नहीं कि सारा ही जापान। नारा-क्योतोवाले प्रदेश बहुत कम भूकम्प द्वारा त्रस्त होते हैं। अुनके नीचेवाली पृथिवीकी बनावट अधिक ठोस है।

स्टेशनसे छूटकर हमारी बस पहले निशी-होङ्गान्जी मंदिर गअी। यह शिन्-सू-सम्प्रदायके बौद्धोंकी सबसे प्रभावशाली गद्दीका केन्द्र-स्थान है। अुक्त सम्प्रदायके संस्थापक महात्मा शिन्-रन् (जन्म ११७३ अी०)की पुत्रीकी सन्तानकी यह पुरातन गद्दी ह। पिछली शताब्दियोंमें अिस सम्प्रदाय वालोंका अितना प्रभाव बढ़ गया था कि अिनके योद्धाओंने शासकोंके छक्के छुळा दिये, अिसीलिये १७वीं शताब्दीके आरम्भमें तोकूगावा शोगुनों (=जापानके अुस समयके यथार्थ शासकों)ने अिसके दो हिस्से कर अेक भागकी गद्दी महंतके दूसरे भाअीको दी, और अुसके लिये हिगाशी-होङ्गान्जी मंदिर बना। निशी-होङ्गानजीका मंदिर क्योतोके सुंदरतम मंदिरों मेंसे है। मकान यद्यपि लकळी और खपळैलहीका है, किन्तु विशाल छत और अुसका सुदीर्घ ढलाव अत्यन्त मनोरम है। मंदिरके भीतर काष्ठ कारुकार्य, लाक्षाकार्य आदि, अपने समयके अद्वितीय कलाकारोंके हाथके सुंदर नमूने हैं। मंदिरकी अमिताभकी प्रधान मूर्तिको प्रसिद्ध शिल्पी कसुगाने बनाया है। भीतरका सारा ही भाग सुंदर चित्रों और कारुकार्योंसे अलंकृत है। पासकी आचार्यशालामें शिन् रन्की मूर्ति है, जो कलाकी दृष्टिहीसे सुंदर नहीं है, बल्कि अुसके लेप और पालिशमें शिन्-रन्की राख और हड्डी अिस्तेमाल की गअी है। मूर्तिके दाहिने बायें अुनकी गद्दीके गुरुओंके चित्रपट हैं। शालाके द्वारपर मोटे चीनी अक्षरोंमें केन्-शिन् लिखा हुआ है। यह जापानके पुनरुज्जीवक सम्राट् मेअिजी (मृ० १९१२ अी०)का स्वहस्तलेख है।

अिस मठके चित्रफलकोंमें आपको चित्रकार रचोकेअि, **कोअी**, हिदेतोबु, तन्न्यू, अेअितोकू, सन्-रकु जैसे कानो-कलमके प्रसिद्ध चित्रकारोंकी कृतियाँ मिलेंगी। दूसरी कलमके धनियोंके भी चित्र कितने ही हैं। यह सारा मंदिर ही जापानी कलाका अेक बृहत् संग्रहालय है। अिस सम्प्रदायके महंतसे लेकर पुरोहित तक सभी विवाहित होते हैं। निशी-होङ्गान्जीके शाखा-

मंदिर आपको कलीफोर्निया, हवाओी, सिंगापुर, चीन, मंचूरिया, कोरिया तक मिलेंगे।

वहाँसे हम अिनरी देवताके देवालयमें गये। गीदळ अिस देवताके वाहक हैं, अिसीलिये द्वारके दोनों ओर दो स्यारोंकी मूर्तियाँ हैं। यह शिन्तो देवालय क्योतोका बहुत सम्माननीय देवालय है। हज़ारों दर्शनार्थी रोज़ आया करते हैं।

कुछ और स्थानोंको देख अब हम सम्राट् मेअिजीकी समाधि देखने मोमोयामा पर्वतकी ओर चले। रास्ता कारखानोंके नगर फुशीमीसे होकर जाता है। पहले यह शहर अलग था, किन्तु अब क्योतोमें मिला दिया गया है। क्योतोकी आबादी नौ लाख चौवन हज़ार है। मेअिजी-समाधि पहाळके अूपर है, और अिसके गिर्द ३०० अेकळ सुरक्षित वन है। अिसी समाधिके नीचे नवीन जापानके विधाता सम्राट् मेअिजीका शरीर रक्खा हुआ है। समाधिको ठोस और स्थायी बनानेमें कोअी कसर नहीं रक्खी गअी है, तो भी अुसमें हद दर्जेकी सादगी है। कहीं कुछ भी बेल-बूटा, मूर्ति या दूसरी कला नहीं। समाधि विशाल स्तूप या अनाजकी राशिके आकारकी है, जिसके अूपर संग खारेके स्वाभाविक चट्टानोंको मछलीकी चोंअियाँकी शकलमें जोळा गया है। पासमें थोळी दूरपर अुसी आकारकी किन्तु कुछ छोटी समाधि सम्राज्ञीकी है। पहाळीसे थोळा नीचे अुतरकर जेनरल नोगी-का समाधि-मंदिर है। पोर्ट आर्थर विजेता नोगीने सम्राट्के मरनेपर सपत्नीक आत्महत्या कर ली थी, जिससे अुनको यह देवपद मिला है। आज नोगी सम्राट् मेअिजीकी भाँति ही देवतुल्य समझे जाते हैं। फाटकके भीतर मंदिरके द्वारके पास नोगीके घोळेकी मूर्ति है, जिसे पराजित रूसी सेनापतिने पोर्ट-आर्थर-विजेताको प्रदान किया था। अुस वक्त की विजयोपहारमें मिली अेक दो तोपें भी हातेमें रक्खी गअी हैं। अेक ओर वह काठकी कोठरियाँ हैं, जिनमें रह कर जेनरल नोगीने मंचूरियामें युद्ध का संचालन किया था।

अिन्हें अुनके पुराने काठको मँगवाकर अुसी शकलमें तैयार किया गया है।

चि-ओन्-अिन् क्योतोका सबसे बळा मंदिर है, और ३० अेकळ क्षेत्रफलमें है। यह जोदो सम्प्रदायका केन्द्र है। प्रधान द्वार ८० फ़ीट अूँचा है, और जापानके अतिविशाल चंद द्वारोंमेंसे अेक है।

चि-ओन्-अिन् मंदिरसे लगा ही मरुयामाका पहाळी उद्यान है। अपने प्राकृतिक सौंदर्यके लिये यह बहुत प्रसिद्ध है। और अप्रैल मासमें अिसका अेक चेरी वृक्ष तो फूलोंसे ढँक जाता है, अुस समय अिसके सौंदर्यके देखनेको हज़ारों नर-नारियोंकी भीळ जमा हो जाती है।

लौटते वक्त हम रस्से और चक्केके ज़ोरसे अूपर खिचती रेलके रास्तेसे गुज़रे। अिसका जापानी नाम अिन्कुराअिन् है, जो कि अंग्रेज़ी अिन्क्लाअिन् (Incline) का बिगळा रूप है। स्वरहीन अक्षरोंका जापानीमें अभाव है और लकारकी जगह सर्वत्र रकारका प्रयोग होता है, अिस प्रकार अिन्कुराअिन् शब्दकी रचना हुअी।

सन्जु-सङ्-गेन्-दो क्योतोके अत्यन्त दर्शनीय बौद्ध मंदिरोंमें है। अिस मंदिरकी स्थापना ११३२ अी० में हुअी थी, किन्तु वह १२४९ में आगसे नष्ट हो गया। वर्तमान अिमारत १२५१ अी० में बनी थी। सात शताब्दियों बाद आज भी यह काष्ट-मंदिर बळी सुरक्षित अवस्थामें है। मंदिर अेक लम्बी शालाके रूपमें है, जिसका विस्तार ३९२×५६ फ़ीट है, और खपळैलकी छतको सँभालनेके लिये १५८ लकळीके विशाल स्तम्भ लगे हैं। प्रधान मूर्ति करुणामय (अवलोकितेश्वर) की है। अवलोकितेश्वर बोधिसत्त्वने अपनी मुक्तिको भी तिलांजलि दे दी। अुन्होंने कहा—

जब तक संसारमें अेक भी प्राणी दुःखमें है, मैं अुसकी सहायता करना छोळ कैसे मुक्ति लेनेका ख्याल कर सकता हूँ। जब सहायता करते अुन्होंने अपने दो भुजोंको अपर्याप्त समझा, तो वह चतुर्भुज बने, पीछे अुन्हें भी अपर्याप्त समझ वह सहस्र भुज हो गये। यहाँकी प्रधान मूर्ति सहस्रभुज है,

जिसे महान् तक्षण-शिल्पी तन्केअी और अुसके दो शिष्यों कोअेन् और कोसेअिने निर्मित किया था। मूर्तिके गिर्द चारो दिग्पाल देवता (चतुर्महा राज)की मूर्तियाँ हैं। और फिर अेक हज़ार करुणामयकी मूर्तियाँ सारी शालाको भर रही हैं। पीछेकी ओर करुणामयके २८ अनुचरोंकी मूर्तियाँ हैं, जो मूर्ति कलाकी अुत्कर्षताको प्रकट करती हैं। अिस मंदिरकी अनेक मूर्तियाँ **राष्ट्रीय निधि** हैं।

आगे जानेपर हमें कियोमिज़ू बौद्धमठ मिला। प्राकृतिक दृश्यमें यह मठ अद्वितीय है। ओतोवा पर्वतकी आधी अूँचाअी चढ़कर हम मठपर पहुँचते हैं, और वहाँसे पहाळकी ओर देखनेपर जहाँ देवदारु, मापल और चेरीके वृक्षोंकी भरमार है, वहाँ नीचे क्योतोकी ओर देखनेपर सारा शहर चित्रखचितसा मालूम होता है। मठका क्रीडोद्यान भी बहुत सुंदर है। जिस पुरुषने मठ बनानेके लिये अिस स्थानको चुना था, वह पैर चूमने लायक़ था। अिस मठकी स्थापना ८०५ अी० में योगाचार और होस्सो अथवा सम्प्रदायके साधुओंके लिये हुअी थी, जिनकी तूती अुस समय चार शताब्दियोंसे नालंदाके विश्वविद्यालयमें भी बोल रही थी। तबसे आज तक यह योगाचार सम्प्रदायके ही अधिकारमें है। बीचमें आग लगनेसे मंदिर जल गया था। वर्तमान अिमारत १६३३ अी० में शोगुन अिअेमित्सुने बनवाअी थी। प्रधान मूर्ति सहस्रभुज और सहस्राक्ष अवलोकितेश्वरकी है। अुस दिन तो मैं मठ और अुसके प्राकृतिक सौंदर्यहीको देखकर लौट आया था, किन्तु तीन अगस्तको मित्रोंसे मठके प्रधान स्थविर ओन्नीसीकी प्रशंसा सुनी। दूसरे दिन क्योतो छोळना था, तब भी वहाँ पहुँचा। बसुबंधु, दिङ्-नाग, धर्मकीर्त्तिके सम्प्रदायका अनुयायी होनेसे विद्वत्ता तो अुनमें होनी ही चाहिये; किन्तु, अुसके साथ अुनमें हद दर्जेकी शिष्टता है। आप अच्छे धर्मोपदेष्टा तथा क्योतो नगरके बौद्धोंके प्रधान नेता हैं। फिर अैसे पुरुषको फ़ुर्सत अधिक कहाँसे हो सकती है। मेरे पहुँचनेकी ख़बर पा अुन्होंने बुलाया। दिङ्-नाग

और धर्मकीर्त्तिके नाते तथा दार्शनिक विचारोंके सादृश्यसे योगाचार सम्प्रदायपर मेरी बळी भक्ति है, और वह तो बहुतसे अबौद्ध भारतीयोंको भी होगी, जब वह सुनेंगे, कि शंकरको अुनके वेदान्तकी कुंजी देनेवाला यही बौद्ध अद्वैत (विज्ञानवाद) सम्प्रदाय है। स्थविर मामूली कपळे पहने थे। अेक चौकीके आमने-सामने हम लोग बैठे। मुझसे भारतके बौद्ध-धर्मके बारेमें पूछा। मैंने जापानमें योगाचार दर्शनके बारेमें पूछा। मालूम हुआ, अब कितने ही विद्वान् अुधर आकृष्ट हो रहे हैं। मैंने कहा—भारतमें बौद्धधर्म लुप्त हो गया था, किन्तु अब फिर पुनर्जागृति हो रही है, और भविष्य अुसके अनुकूल मालूम होता है। किन्तु, बहुतसा भारतीय बौद्ध-साहित्य अब चीनी या तिब्बती भाषाओंमें ही मौजूद है, अिसलिये अैसे साहित्यको फिर भारतको देनेमें जापानी भाअियोंकी विशेष सहायताकी आवश्यकता है। किन्तु, यह काम सफल और ठीक तभी हो सकता है, यदि कुछ जापानी तरुण भारतमें रहकर संस्कृतमें निपुणता प्राप्त करें, तथा कुछ भारतीय तरुण यहाँ आकर चीनी त्रिपिटकका पूरा अध्ययन करें। अुन्होंने बळे अुत्साहसे कहा—आप प्रतिभाशाली पाँच लळकोंको भेजें, अुनके खाने, रहने, पढ़ानेका ज़िम्मा मैं लूँगा। अुनकी अिच्छा हालहीमें भारत तीर्थयात्रा करनेकी है। दिङ्नाग और वसुबंधुके संबंधके बारेमें पूछा, तो अुन्होंने कहा—अिस विषयके चीनी दर्शनग्रंथोंको देखनेसे अितना ही मालूम होता है, कि दिङ्नाग न्यायशास्त्रमें वसुबंधुके अनुगामी थे, शिष्य होनेकी बात मैंने नहीं देखी। अुन्होंने अपने शिष्यको अेक पुस्तकका नाम और पृष्ठ वैसे ही बतलाया, जैसे काशीके पुराने दिग्गज पंडित बतलाया करते थे।

मुझे जल्दी हो रही थी, और अुनका बहुमूल्य समय मैं ले रहा था, तो भी वह छोळना न चाहते थे। अन्तमें रोककर दो बळे बळे आळूके फल लाकर सामने रख दिये—खाकर जाओ। आज्ञाका अुल्लंघन असम्भव



४२--नारा--याकुसीजी (भैषज्य-गुरु बुद्ध) (पृ० २३२)

था। चलते वक्त बळे आग्रहपूर्वक अन्तिम दर्वाज़े तक पहुँचाने आये। अुनके अैसे पदके पुरुषमें अितनी नम्रता बहुत कम देखी जाती है। मैं तो अुनके बारेमें अितना ही कह सकता हूँ—जापानी बौद्धनेताओंमें अुनकी भद्रता अद्वितीय है।

अुस दिन क्योतो दर्शन करते कियोमिज़ूसे कुछ और प्रसिद्ध स्थानोंको देखते शहरके उत्तर-पूर्व छोरपर पहाळके किनारे अवस्थित रौप्यमंदिरको देखने गये। रौप्यमंदिर (गिन्‌काकुजी)से यह न समझ जाअिये, कि मंदिर चाँदीका बना है। चाँदीका तो वहाँ नाम नहीं है। पहाळको मिलाते अेक कृत्रिम वन तैयार किया गया है, जिसमें नदी, पुल और जलाशय भी दिखलाये गये हैं। अेक दोमहला मकान है, जिसमें कअी छोटी-छोटी कोठ-रियाँ हैं। कुछ कोठरियाँ अेकमहली भी हैं। कोटरियाँ छोटी, तथा अुनमें सादगी परले दर्जेकी है। अुनके भीतर टाँगे सादे चित्रपट, तथा प्याले और चायपात्र अनमोल चीज़ें हैं, अैतिहासिक और कला दोनों दृष्टियोंसे। मंदिरको शोगुन योशीमस अशीकागा (१४४३-७३ अी०)ने अपने अेकान्त-आश्रमके तौरपर १४७९ अी० में बनवाया था, जो कि अुसकी मृत्युके बाद मंदिरके रूपमें परिणत कर दिया गया। मंदिरकी अेक कोठरीमें अुक्त शोगुनकी मूर्ति योगाभ्यासीके आकारमें है। अिसी अिमारतमें अेक चायकोठरी है, जिसके नमूनेपर जापानमें सारी चायकोठरियाँ बनती आअी हैं। अुपवनका निर्माण उपवनकलाचार्य सोअमीने किया था, और क्योतोके अुपवनोंमें अिसका बहुत अूँचा दर्जा है। रौप्यमंदिरके जोळेका अेक दूसरा सुवर्णमंदिर भी है, जिसका निर्माण भी अुसी समय हुआ था। अिसकी भी कोठरियाँ तथा अुपवन दर्शनीय वस्तुएँ हैं। सादगीको कलाका उत्कृष्ट रूप देनेमें अिन दोनों स्थानोंमें कमाल किया गया है।

और भी कितने ही स्थान देखे। क्योतोमें अैसे महत्त्वपूर्ण स्थानोंकी कमी क्या है, जब कि अेक हज़ारसे अूपरका जापानी अितिहास क्योतोका

अितिहास है ? और आज भी जब कि राजधानी तोक्यो है, किन्तु, सम्राट्-का राज्याभिषेक क्योतोहीमें होता है।

अन्तिम स्थानोंमें गोशो राजप्रासादका द्वार और निज्योप्रासाद हैं। निज्योप्रासाद शहरके भीतर पानी भरी खाअींसे घिरा बळे ही सुंदर स्थान पर है।

पाँच बजे नगरपर्यटन समाप्तकर हम निवासस्थानपर लौटे।

× × ×

क्योतोके पास हिअेअि-ज़न् रमणीय पर्वत है, जो अपने पुराने संबंध तथा प्रसिद्ध धार्मिक नेताओंके कारण जापानका अेक महान् तीर्थ है। क्योतोसे वैसे होता, तो काफ़ी समय लगता, किन्तु अब घंटाभर बिजली गाळीसे, फिर कुछ मिनट केबुलकारसे खळी चढ़ाअी, फिर मील डेढ़ मील पैदल समतल भूमि, और तब आधे घंटे तारसे लटकते डब्बेसे। बाद फिर दो मीलके क़रीब पैदल, किन्तु यात्राका आनन्द तुरन्त आरम्भ हो जानेसे अुसे गिनना नहीं चाहिये। हिअेअि पर्वत प्रायः तीन हज़ार फ़ीट अूँचा है। अूपरका दृश्य देवदारु-आच्छादित हिमालयसा मालूम होता है। कोयासान्के पर्वतका वर्णन मैंने अन्यत्र किया है; दरअसल यह दोनों अेक दूसरेके जवाब हैं। हिअेअि पर्वत-पर जापानके तेन्दाअी बौद्धसम्प्रदायका केन्द्रीय मठ है। अिस मठकी स्थापना ७०८ अी० में हुअी थी, अर्थात् क्योतोकी स्थापनासे छ वर्ष पूर्व। संस्था-पक साअिचो चीन देशीय अेक विद्वान् बौद्धभिक्षु थे। नारासे राजधानी हटाकर क्योतो लानेमें अुनका सहयोग बहुत सहायक हुआ था। अिसका महत्त्व आप अिससे समझ सकते हैं, कि बारहवीं सदीसे १९वीं सदीके मध्य तक अिस मठका प्रधान राजवंशिक कुमार होता आया है।

पूर्व समय तो मठके भिक्षुओंका प्रभाव और वैभव बहुत अधिक बढ़ गया, और जब वह अधिकार अयोग्य हाथोंमें गया तो अुसने मठके

भिक्षुओंको लळाकू सिपाहियोंके रूपमें परिणत कर दिया। अिसीलिये शोगुन नबूनगा (१५३४-८२ अी०)को यहाँके भिक्षुओंके ख़िलाफ़ तलवार अुठानी पळी। जहाँ हज़ारों भिक्षुओंको तलवारके घाट अुतारा, वहाँ अुसने सभी पुराने मंदिरोंको जलाकर राख कर दिया। वर्तमान अिमारतें सोलहवीं सदीके बाद बनी हैं। पहाळपर आजकल ३५ भिक्षु हैं, जो कि सुशिक्षित हैं, और सौके क़रीब बौद्धमठ हैं।

प्रधान मंदिरके नायकके सेक्रेटरी बळे प्रेमसे मिले। देर तक वहाँ वार्तालाप होता रहा। फिर कितने ही मंदिरोंका दर्शनकर सायंकाल तक हम अपने स्थानपर लौट आये।

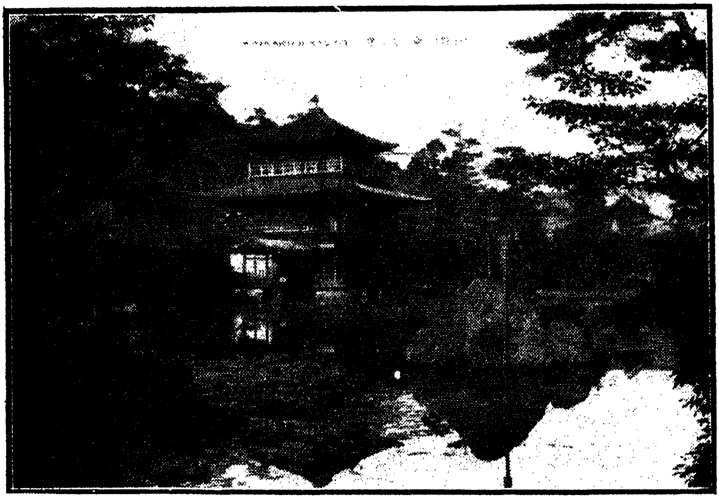
२१—कोयासान्

४ अगस्तको क्योतोकी यात्रा समाप्तकर अेक बजे स्टेशनपर पहुँचे। हमारे चिर-सहचर श्री सकाकिबाराका यहींसे साथ छूटनेवाला था। ट्रेनके बारेमें पूछताँछ करनेपर मालूम हुआ, तोक्योके लिये टिकटके रास्तेसे जानेपर गाळीको कअी जगह बदलना होगा और हमारे जैसे सौ जापानी शब्दोंके पंडितके लिये यह छोटी समस्या न थी। अन्तमें सकाकिबाराकी सलाह हुअी, ओसाका होते चलें, वहाँ तक साथ रहेगा। हम टिकटके आफ़िसमें गये और अेक मिनटके भीतर हमारा टिकट लौटाकर नक़द पैसे मिल गये। (मुक़ाबिला कीजिये भारतीय रेलोंसे)। हमारा टिकट तोक्योसे मंचुली (सोवियट-मंचूरिया-सीमा) तकका था। स्टेशनसे टेक्सी करके हम विजलीकी रेलसे नम्बा-स्टेशनपर पहुँचे। रिटर्न टिकट ले लिया। सकाकिबाराने ट्रेनपर बैठा दिया और कहा——यही ट्रेन सीधी कोयासान्-केबला-कार स्टेशन तक जायगी। फिर १५ मिनट केबलकारसे सीधी चढ़ाअी चढ़नी होगी और तब कोअी सवारी लेकर शिन्नो-अिन्-मठमें मीज़ुहारा सान्के पास चले जाअियेगा।

गाळीपर बैठ जानेके बाद मैंने देखा कि सकाकिबाराका चेहरा अुतर गया है। मेरे हृदयमें भी कुछ अेकान्तपनका अनुभव होता था। सकाकिबारा-का परिचय ३ वर्ष पूर्व जर्मनीमें हुआ था और अिधर जापान पहुँचनेपर पहले अेक मास तक अुनका ही अतिथि रहा। बाद भी रहनेका आग्रह कर रहे



४७--क्योतो--जेनरल नोगीका मंदिर (पृ० २३७)



४८--क्योतो--रौप्य मंदिर (पृ० २४२)

थे, किन्तु दूसरे मित्रको संस्कृतके अेक अनुवादमें सहायता देनेके लिये मुझे गाँवमें रहना पळा। अब अिधर फिर दो सप्ताह साथ रहा। सकाकिबाराके विषयमें अितना ही कहना चाहता हूँ कि यदि अेक सौ जापानी पुरुषोंने भी मेरे साथ अभद्रताका बर्ताव किया होता और मुझे सिर्फ़ अेक सकाकिबाराके साथ कुछ समय रहना पळता तो मेरी जापानके प्रति सारी बुरी धारणा लुप्त हो जाती। सकाकिबाराकी अुम्र ३३-३४ वर्षकी है। प्राअिमरी शिक्षाके बाद वे बौद्ध पुरोहित बननेकी तैयारी करने लगे। वह शिक्षा पा ही रहे थे कि १९२३ का भूकम्प आया। अुनकी कार्यतत्परताको देखकर भूकम्प-सहायताका काम करनेके लिये अुनके सम्प्रदायके प्रधान केन्द्र (कोशोजी, क्योतो)ने अुन्हें तोक्यो भेजा। अुनके कार्य्यसे लोग अितना सन्तुष्ट हुये कि अुनसे तोक्योमें अेक मंदिर बनाकर रहनेका आग्रह करने लगे। अुन्होंने नका-ओकाची-माचीमें दस हज़ार येन् (अुस समयके तेरह हज़ार रुपये)की ज़मीन ख़रीदी, और क़रीब अुतना ही और लगाकर मंदिर बनवाया। जापानमें दिनमें कालेज या हाअी स्कूलमें न पढ़ सकनेवालोंके लिये रातमें पढ़नेका सुन्दर प्रबंध है। सकाकिबाराने रात्रि-कालेजमें ही शिक्षा प्राप्त की थी। मंदिरका काम समाप्तकर १९३२ में विशेष अध्ययनके लिये वे जर्मनी चले गये थे। वहाँसे दो वर्ष बाद स्वदेश लौटे हैं। अिस संक्षिप्त कथासे मालूम होगा कि सकाकिबारा कठिनाअियोंका सामना करते हुये आगे बढ़े हैं, अतअेव अैसे आदमीमें विशेषता होनी ही चाहिये।

आख़िर हमारी गाळीने सीटी दी। 'सायोनारा' (विदाअीका अभिवादन)कर हम अेक-दूसरेसे अलग हुये। बिजलीकी रेलके स्टेशन क़रीब क़रीब होते हैं। दो-तीन स्टेशनोंके बाद गाँव आ गये। जहाँ-तहाँ घरौंदे-से छोटे छोटे खपळेलवाले मकान, दूर तक फैले हरे-भरे धानके खेत हैं। खेतोंमें पानीकी नहरें भी हैं, और कहीं कहीं पानीको अूपर अुठानेके लिये

हवासे चलनेवाले रहट हैं। सळकके किनारेवाले खेतोंमें मोटे मोटे अक्षरोंमें कितने ही साअिनबोर्ड लगे हैं। विज्ञापनबाज़ीसे किसानोंके झोपळोंकी छतें तक नहीं बची हैं। प्रायः पौन घंटा चलनेपर हम पहाळमें घुसे, किन्तु यहाँ बळे पहाळ नहीं हैं। हाँ, रेलकी सुरंगें काफ़ी हैं। अितनी सुरंगोंवाली रेलवे लाअिन कैसे कोअी प्राअिवेट कम्पनी अेक वाणिज्यरहित स्थानके लिये निकालेगी, हम तो अिसी विचारमें पळे थे। हाशीमोतो-जंकशनसे अब हम बळे पहाळकी ओर चले। यहाँका पार्वत्य दृश्य देखनेसे मालूम होता था कि हम कलिम्पोङ्के आस-पास हिमालयमें चल रहे हैं। फूसवाले घरोंकी छतें तो बिलकुल नैपाल-सी मालूम होती थीं। धानोंके खेत नीचेसे अूपर सीढ़ीकी भाँति वैसे ही चले गये थे। किन्तु अेक ख़ास बात थी। हर जगह बिजलीके तारके खम्भे थे। कहीं कहीं तो तारोंका पिंजळा-सा बन गया था। कअी दिनोंसे वर्षा न होनेके कारण आज बहुत गर्मी थी। गर्मीके दिनोंमें छळी-छाता भले ही भूल जायँ, किन्तु कोअी जापानी मुळनेवाली पंखी नहीं भूल सकता। अिन पंखियोंमें भी ज़नाना-मर्दाना भेद रहता है। आज ही नम्बा स्टेशनपर शकाकिबाराके मित्रकी स्त्रीने अपनी पंखी भेंट करनी चाही, और अिस गर्मीमें हम भी अिनकार करनेके लिये तैयार न थे, किन्तु मालूम हुआ, अिस भेंटको हम बक्समें रख भर सकते हैं, अिस्तेमाल नहीं कर सकते। ख़ैर, शकाकिबाराने अपनी पंखी दी, और अुसने बहुत सहायता पहुँचाअी।

आजकल गर्मीकी छुट्टियोंमें, बहुत-से स्कूलके लळके तथा दूसरे यात्री जापानके दार्जिलिंग और बदरीनाथ—कोयासान्की यात्रा कर रहे हैं। वसन्तमें कोयासान् फूलोंसे ढँक जाता है। अुस वक्त अिस पर्वत-स्थलीके दर्शनार्थ और भी अधिक यात्री आते हैं। प्रतिवर्ष दस लाख तीर्थाटक कोयासान् पहुँचते हैं। यद्यपि यह पर्वत समुद्रतलसे २,८५८ फ़ीट ही अूँचा है, तथापि भूमध्यरेखासे ३४ डिग्रीसे अधिक उत्तर होनेसे यह हिमालयके

छ हज़ार फ़ीटके बराबर ठंडा है। अिसकी हरियालीको देखकर मुझे बार बार शिकमके पहाळ याद आते थे।

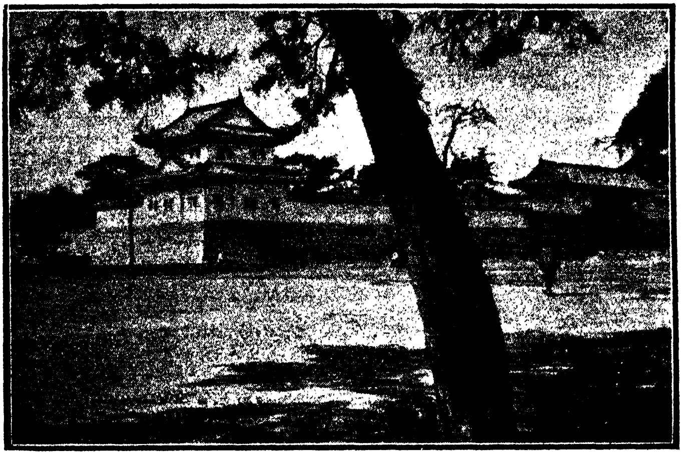
पाँच बजे हम अपनी ट्रेनके अन्तपर पहुँचे। दस क़दम चढ़कर केबल-कारका स्टेशन आया। केबलकार और दूसरी रेलोंमें अितना ही फ़र्क़ है कि अिसके खींचनेमें लाअिनके दोनों लोहोंके बीचमें लोहेका मोटा रस्सा (केबल) लगा रहता है, जो बिजलीके ज़ोरसे चक्केपर होकर अूपरकी ओर खींचा जाता है। चढ़ाअी अितनी सीधी थी, जिसे हमारे लळकपनके अध्यापक बाबू पत्तरसिंहके शब्दोंमें कह सकते हैं कि 'अूपर ताकनेपर पगळी गिर जाय'। यहाँ अब न कोअी गाँव दिखाअी पळता था और न अधिक घर। अपनी गाळी और लाअिनका ख्याल छोळ देनेपर मालूम होता था, हम जापानमें नहीं, हिमालयमें आ गये हैं। चारों ओर जिधर देखिये, अुधर सदा-हरित विशाल देवदार किसी विशाल शिवालयके शिखरकी तरह खळे हैं। यदि कहीं थोळी-सी भी भूमि वनस्पति-शून्य है तो वह पर्वतके सौंदर्यको बढ़ानेके लिये। पक्षियोंके कलरव और कीट-भृङ्गकी गुनगुनाहट बहुत मधुर मालूम होती थी।

ट्रेन से अुतरकर बाहर जाते ही दो-तीन मोटर-बसें खळी मिलीं। १० सेन् (पाँच पैसे) दे हम अेक बसपर बैठ गये, और चन्द मिनटोंमें दाअी-मोन् या न्योनिन्-दो (महिला-द्वार) पहुँच गये। १८७२ अीसवीसे पहले स्त्रियाँ यहीं तक आ सकती थीं। यहींसे अुन्हें देवालयोंके शिखरोंके दर्शन होते थे आगे अुनका जाना निषिद्ध था। अिसीलिये अिस द्वारका नाम महिला-द्वार पळा। फाटकपर अेक लेखक रहता है, जो यात्रीका नाम-धाम लिखता है। कोयासान्की आबादी ३५०० (८०० साधु) है। किन्तु यहाँ कोअी ठहरनेका होटल नहीं है; ठहरने का प्रबन्ध मठोंकी ओरसे अच्छे होटलसे भी बढ़कर है। फाटकका आदमी साथी देगा, जो ले जाकर आपको आपके ठहरनेकी जगहपर पहुँचा देगा। हमारे पास शिन्-नो-अिन् बिहारके

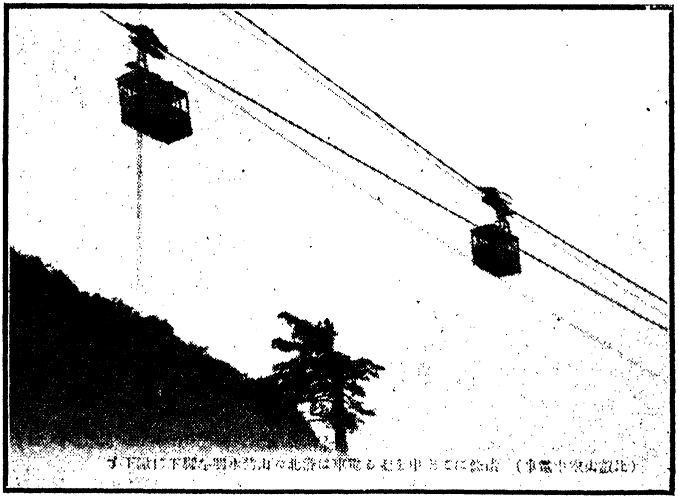
अधिपति भिक्षु मीज़ूहाराके लिये चिट्ठी थी, अिसलिये हमें वहाँ पहुँचानेके लिये आदमी मिल गया।

तार पहलेसे ही पहुँच चुका था, अिसलिये पहुँचते ही स्वच्छ सीतल-पाटियाँ बिछे तथा तीन सौ वर्ष पुराने सुन्दर चित्रफलकोंसे अलंकृत कमरेमें जगह दी गअी। बैठनेके साथ पानीमें अुबली गर्मागर्म तौलिया मुँह हाथ पोंछनेके लिये आ गयी और थोळी ही देरमें पीत-वस्त्रधारी भिक्षु मीज़ूहारा सान् भी आ गये। आप कोयासान्के आठ सौ भिक्षुओंमें बळे प्रतिष्ठित साधु हैं। भिक्षु-नियमोंके पालनका भी आपको बहुत ध्यान रहता है, अिसलिये घरके भीतर प्रायः भिक्षुओंके पुराने पीले वेषमें ही रहा करते हैं। हमारे मेज़बानको जापानीके अतिरिक्त किसी दूसरी भाषाका कोअी अेक शब्द नहीं मालूम था, अिसलिये हमने अपने जापानी सौ शब्दोंके कोषसे काम चलाया। रातको यह देखकर बळी प्रसन्नता हुअी कि यहाँ क्योतो जैसी मच्छरोंकी आफ़त नहीं।

भारतीयोंको कोयासान्का माहात्म्य समझानेके लिये कुछ विशेष लिखनेकी आवश्यकता है। कोयासान्-विहारके संस्थापक कोबो-थाअिशीका जन्म ७७४ अीसवीमें अेक संभ्रान्त वंशमें हुआ था। बचपनसे ही वे बळे मेधावी थे। अुनकी प्रतिभा सर्वतोमुखी थी। वे अच्छे दार्शनिक, सुन्दर लेखक, दक्ष चित्रकार तथा मूर्तिकार और पक्के साधक थे। वैसी सर्वतो-मुखी प्रतिभाके पुरुष जापानमें कम हुये हैं। ८०४ अी० में वे अध्ययनार्थ चीन गये। वहाँसे लौटनेपर राजधानी क्योतोमें अुनका बळा सम्मान हुआ। जब अुन्हें अपने मठके बनानेकी आवश्यकता हुअी तब क्योतो राज-धानीके आस-पासकी जगह न पसंदकर अुन्होंने अपने लिये अनुकूल स्थान खोजना शुरू किया। कहते हैं, जब वे कोयासान्की जळमें आये तब पासके देवताने शिकारीका रूप धारणकर काले और सफ़ेद दो कुत्तोंके साथ अुन्हें रास्ता बतलाया। पहाळके अूपर अपेक्षाकृत चौरस तथा देवदारसे



४९——क्योतो——गोशो-राजप्रासाद (पृ० २४५)



५०——क्योतो——हिअेअि-जनकी रोप-लाअिन (पृ० २४५)

हरी-भरी अुपत्यकाको देख, वहीं अुनका मन लग गया और अुन्होंने वहाँ अपने मठकी स्थापना की। ८३५ अी० में देहान्त होनेपर अुनका शरीर भी वहीं ओकुनो-अिन्में रक्खा गया। तबसे कोयासान् अुनके शिङ्-गोन्-सम्प्रदायका केन्द्र बन गया। आजकल भी कोबो-थाअिशीके अनुयायियोंकी संख्या नवासी लाखके क़रीब है, और अुनके मंदिर बारह हज़ारसे अधिक हैं। मंत्र और पूजाका मान्य करनेसे जापानके अिस सम्प्रदायके भिक्षुओंको कुछ संस्कृत-मंत्र तथा सातवीं शताब्दीमें प्रचलित अुत्तरी भारतकी लिपि-को ज़रूर सीखना पळता है।

५ अगस्तको जल-पानके बाद श्री मीज़ूहाराके साथ हम दर्शनार्थ निकले। दो मीलसे अधिक दूर तक फैले अिस संघाराममें सौसे अूपर मठ हैं। हर अेक मठमें कितने ही पुराने कलाकारोंके चित्र या मूर्तियाँ हैं। कितनी ही पुरानी स्मृतियोंसे युक्त आवास हैं, किन्तु अुनको देखनेके लिये महीनों चाहिये। अिसलिये हमें प्रधान प्रधान स्थानोंको देखकर ही संतोष करना था। पहाळपर देवदार वृक्षोंके नीचे स्थापित लाल स्तूपको देखते हुये हम दाअितो (महास्तूप)के पास गये। अिस स्तूपको पहले-पहल कोबो-थाअिशीने बनवाया था, किन्तु काठका होनेसे अिसमें कअी बार आग लगी, और कअी बार अिसका पुनर्निर्माण हुआ। ११४९ अी० में शोगुन (ताअिरानो) कियोमोरीने अिसका पुनर्निर्माण कराया और अपने रक्तसे लिखित मंडल-चित्रको अिसमें स्थापित किया। वह चित्र आज भी यहाँके म्युजियममें सुरक्षित है। १६० फ़ीट अूँचा यह स्तूप कोयासान्की अत्यन्त भव्य अिमारतोंमें है। कुछ वर्ष पूर्व यह आगसे जल गया था, अभी पुनर्निर्माण-का काम समाप्त नहीं हुआ।

पासमें ही मियेअिदो है। अिसमें राजकुमार शिन्न्यो द्वारा अंकित कोबो-थाअिशीका चित्र है। राजकुमार कोबो-थाअिशीके दस प्रधान शिष्योंमें थे। अिस चित्रको अुन्होंने अपने गुरुकी मृत्युसे ६ दिन पूर्व समाप्त किया

था। कहावत है कि अिस चित्रकी आँखोंपर कोबो-थाअिशीने स्वयं तूलिका फेरी थी।

कुछ दूरपर अिसी हातेमें कुन्दो विहार है। अिसे भी कोबो-थाअिशीने बनाया था, किन्तु मूल-विहार कअी बार आगसे जला और नया बना है। पिछले वर्ष संस्थापकके निर्वाणकी अेकादश शताब्दी मनाअी गअी थी, अुसी समय सीमेंट निर्मित नअी अिमारत तैयार हुअी।

हातेसे बाहर किन्तु थोळी ही दूरपर रेअिहोकान् (संग्रहालय) है। अिसमें पाँच हज़ार मूर्तियाँ, चित्रपट तथा दूसरी चीजें संगृहीत हैं। अिन वस्तुओंमें कितनी ही राष्ट्रीय निधि मानी गअी हैं। जापान भरके मठों और मंदिरोंमें जहाँ कहीं भी कला, अितिहास या दूसरी दृष्टिसे कोअी अधिक महत्त्वपूर्ण मूर्ति चित्र आदि हैं, अुन्हें सरकारने राष्ट्रीय निधिके तौरपर दर्ज कर लिया है। और अैसी राष्ट्रीय निधिकी सुरक्षा आदिके लिये विशेष नियम और प्रबंध किये गये हैं। कोयासान्के विहारोंमें अैसी राष्ट्रीय निधियाँ कअी सौ हैं।

वहाँसे कोयासान् कालेजमें गये। कोयासान्के विहारने अपने भिक्षुओं-की शिक्षाके लिये अेक हाअी स्कूल और अेक कालेज (या विश्वविद्यालय) स्थापित किया है। हाअी स्कूलके ४०० विद्यार्थियोंमें ३०० भिक्षु हैं। कालेजके २६० लळकोंमें ५-७ ही बाहरी हैं, बाक़ी सभी भिक्षु हैं। हाअी स्कूल पास करनेमें ग्यारह वर्ष लगते हैं, और कालेज पास करनेमें ५ वर्ष। कालेजको डिग्री देनेका सरकारसे चार्टर प्राप्त है, अिसलिअे अिसे यूनि-वर्सिटी भी कहते हैं। कालेजकी पढ़ाअीमें बौद्ध-धर्म और दर्शनके अतिरिक्त संस्कृत भी सम्मिलित है। संस्कृतके प्रधान अध्यापक प्रोफ़ेसर फुजिदा जर्मनीके पी-अेच्० डी० हैं। वे भारतमें भी तीर्थाटन कर चुके हैं। हम भारतीयोंको गर्व तो होता है कि दूर दूरसे लोग हमारी मातृ-भूमिकी वंदना करने पहुँचते हैं, किन्तु हमारा ख्याल अिस ओर नहीं जाता कि

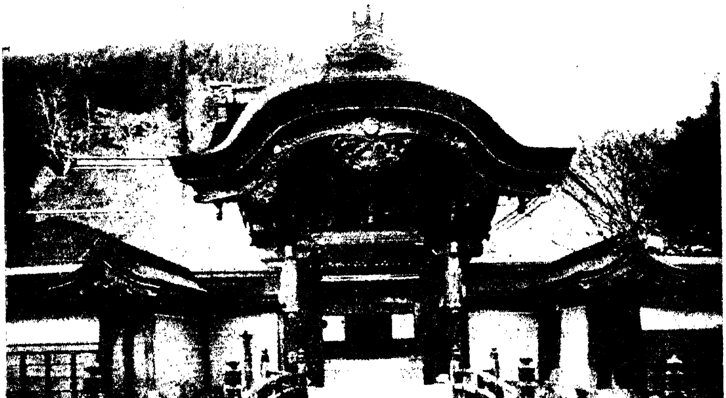
अिन प्रतिष्ठित मेहमानोंके साथ हमारा बर्ताव कैसा होता है। संसार-प्रसिद्ध बौद्ध विद्वान् डाक्टर तकाकुसू जब भारत तीर्थाटन करने गये थे, अुस समय प्यास लगनेपर अुन्हें म्लेच्छ समझकर रास्तेमें किसीने पानी देनेसे अिनकार कर दिया था। अेक दूसरे वृद्ध बौद्ध नकाजीमा कितने ही वर्षों तक संयम और ब्रह्मचर्य रखकर अपनी पूज्य माताकी अस्थियाँ लेकर बोध-गया गये थे (धर्म-भूमि भारतमें अपनी हड्डियोंके पहुँच जानेकी हर अेक बौद्धके हृदयमें बळी लालसा होती है) अुस समय अुनको भी अिसी प्रकारका कुछ अनुभव हुआ था। अुन्होंने साफ़ तो नहीं कहा, किन्तु अेक बार लोटा-पानीका ज़िक्र आनेपर जब मैंने कहा कि अब चौका-चूल्हा बहुत ढीला हो गया है, तब अुन्होंने आश्चर्य और प्रसन्नता प्रकट की थी। ख्याल कीजिये, जब भारतसे कोअी विद्वान् आवे तब तो अुसका जापानके तोक्यो, क्योतो, कोयासान् तथा दूसरे स्थानोंमें बौद्ध-शिक्षित समुदाय विशेष प्रकारसे स्वागत तथा अभ्यर्थना करें, किन्तु जब कोअी बाहरसे संभ्रान्त बौद्ध विद्वान् या नेता भारत जाय तब न गयामें, न बनारसमें अुसका मान या स्वागत हो। क्या अिसीपर हिन्दू चाहते हैं, सारे भारत-धर्मियोंका बन्धुत्व और सहानुभूति प्राप्त करना? तोक्यो, क्योतो आदिकी तरह यहाँके अध्यापकोंने भी आज शामको 'राहुळ सांकृत्यायन'के स्वागतोप-लक्षमें चायपार्टी की, और अुसकी कृतज्ञतामें अपने देशवासियोंसे यहाँ ये दो शब्द कह देना मैंने ज़रूरी समझा।

कालेजके पुस्तकालयमें सत्तर हज़ार पुस्तकें हैं। अिमारत तिमहला और चौमहला है। अिसपर तीन चार लाखसे कम ख़र्च न हुआ होगा।

भोजनोपरान्त अेक बजे हम फिर दर्शनार्थ निकले। पहले कोङ्-गो-बुजी गये। यह शिङ्गोन्-सम्प्रदायका केन्द्रीय विहार है। सम्प्रदायके प्रधान या खन्चो यहीं रहते हैं। प्रधान देवालय २१० फुट लम्बा और १८० फुट चौळा है। अिस सारे विहारको दसवीं शताब्दीसे लेकर



५१—कोयासान्—दाओ-मोन् (महान् द्वार) (पृ० २५१)



५२—कोयासान्—शोजो-शिन्-अिन् (द्वार) (पृ० २५८)

बीसवीं शताब्दी तकके अनेक चोटीके चित्रकारोंकी चित्र-प्रदर्शनी समझें। मोतोनोबु, तन्साओी, तोअेकी जैसे अमर चित्रकारोंकी अमर कृतियाँ यहाँ चलभित्ति-फलकोंपर अंकित हैं। और मंदिरोंकी भाँति अिस मंदिरमें भी कअी बार आग लगी है, किन्तु चित्र खिसकनेवाले पट-फलकोंपर होनेसे बचाये जा सके हैं। अेक कोनेमें वह कमरा है, जिसमें तरुण हिदेत्सुगुने शत्रुओंके हाथमें जीते पळनेसे बचनेके लिये हराकिरी की थी। हिदेत्सुगु तत्कालीन जापानके शासक हिदेयोशीका पोष्य पुत्र था, किन्तु पीछे विमाताकी अीर्ष्याके कारण हिदेयोशी (१५३६-९८ अी०)के कोपका भाजन बना।

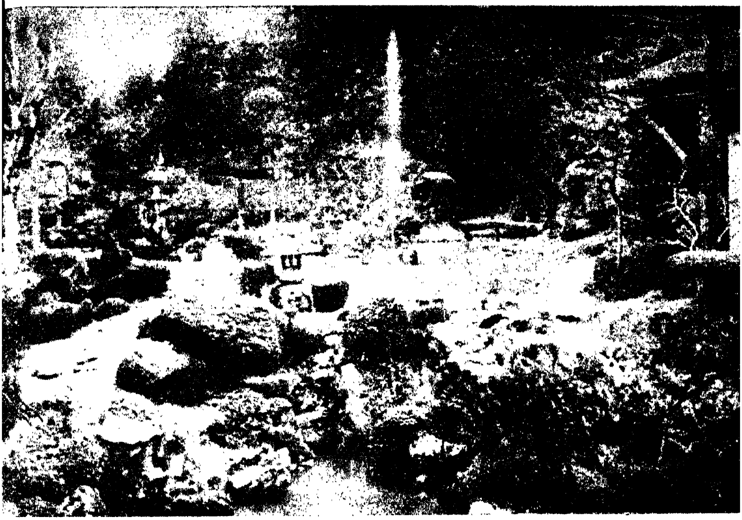
मंदिरके अेक बग़लमें वह कमरा भी है जिसमें जापानके कितने ही पुराने सम्राट् आकर रह चुके हैं। अेक बग़लमें और कितने ही कमरे हैं जिनमें पिछली अेकादश शताब्दी-महोत्सवके अवसरपर कितने ही प्रिंस, कौंट और बैरन् आकर ठहरे थे। अिन कमरोंमें जापानके कितने ही आधुनिक चित्रकारोंके चित्र-फलक हैं।

अब पीले कपळों-द्वारा बाज़ारवालोंका मनोरंजन कराते हम शोजो-शिन् विहारमें पहुँचे। यह कोयासान्के मठोंमें सर्वसुंदर समझा जाता है। पुराने चित्रों और मूर्तियोंका यहाँ भी अच्छा संग्रह है। पीछेकी ओर पहाळकी जळमें अिसका क्रीडा-अुपवन तो लाजवाब है। अिस विहारसे दो प्रेमियोंकी कथाका घनिष्ट संबंध है। ताकीगुची अेक संभ्रान्त सामुराअी (राजपूत) था। अिस सुन्दर तरुणका घरकी परिचारिका योकोबुअेसे प्रेम हो गया। दोनों ब्याह कर लेना चाहते थे। किन्तु राजपूत पिता अपने पुत्रकी शादी नीच कन्यासे क्योंकर होने देता। आखिर निराश हो ताकिगुची अेक मठमें जा साधु होगया। किन्तु क्योतोके अुस मठमें भी जब-तब अुसकी प्रेमिका पहुँचने लगी। तब वह भागकर कोयासान्के अिसी मठमें रहने लगा। प्रेमिका वन वनकी ख़ाक छानती फाटकपर पहुँची, किन्तु फाटकके भीतर

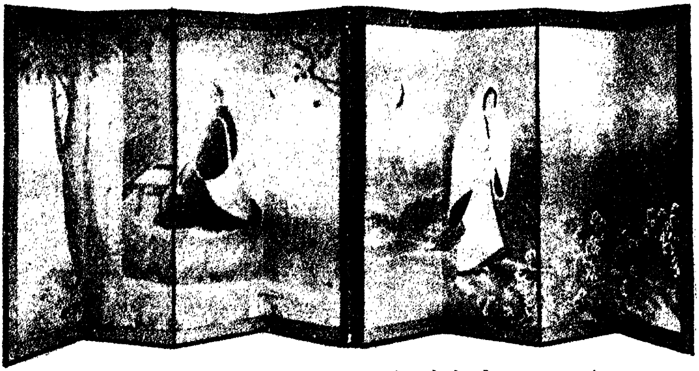
स्त्रीका प्रवेश तो निषिद्ध था। प्रेमिका कितने ही समय तक अपने प्रेमीकी झाँकीके लिये न्योनिन्-दोके बाहर बैठी रही। आख़िर निराश हो अुसने नदीमें कूदकर आत्महत्या कर ली। मरनेके बाद वह बुलबुल हुअी। अब भला किसकी मजाल थी, जो योकोबुअेको भीतर आनेसे रोकता। वह नित आकर अपने प्रेमभाजनकी कुटियाके सामनेवाले वृक्षपर बैठकर शब्द किया करती थी। किन्तु अुसके प्रेमीको अिसकी ख़बर न थी। आख़िर बुलबुल चिन्तासे कृश होते होते अेक दिन क्रीडा-पुष्करिणीमें डूबकर मर गअी। भिक्षुने अपने हाथसे अुठाकर दाह-कर्म किया। कालान्तरमें भिक्षुने भी शरीर छोळ दिया। कहते हैं, अुसके बाद दोनों अुस लोकमें गये, जहाँ अुनके प्रेममें न पिता बाधा दे सकता है, न माता, न जाति रुकावट पैदा कर सकती है, न संबंधी। जहाँ नित्य निरन्तर मिलनके ही दिन और मिलनकी ही रातें हैं।

अेक प्रसिद्ध चित्रकारके चित्र-फलकको दिखलाकर जब मुझे यह कथा सुनाअी गअी तब मैंने कहा शिन्-जूके प्रचारका यह अेक अुत्तम साधन है। हिन्दी-पाठकोंने शिन्-जूके बारेमें नहीं सुना होगा। जापानमें आजकल अिसकी भरमार है। दो तरुण-तरुणी आपसमें प्रेम करते हैं। दोनों ब्याह करना चाहते हैं। माँ-बापकी ओरसे विरोध होता है। आर्थिक, सामाजिक या दूसरी कठिनाअी बाधक होती है। तरुण-तरुणी सोचते हैं,—अिस जन्ममें हमारा सुखमय मिलन नहीं हो सकता। चलो अुस लोकको चले चलें। दोनों रेलके नीचे लेट जाते हैं, ज़हर खा लेते हैं या गैसका पाअिप नाकपर लगा लेते हैं या सबसे अधिक प्रचलित ढंग है मीहार-यामाका टिकट कटा लेना। मीहारयामा तोक्योसे थोळी दूर पर अवस्थित टापूमें अेक सजीव ज्वालामुखी है। रोज़ अुस टापूके लिये जहाज़ जाया करता है। प्रेमीयुगल जाकर मीहारके अग्नि-मुखमें कूद पळते हैं। शिन्-जूके मारे सरकारने मीहारपर कळा पहरा बैठा रक्खा है। रातको खुले कुत्ते पहरा देते हैं। तब भी कुत्तोंको

मांसका टुकळा डालकर कितने ही पहुँच जाते हैं। मैंने अपने जापानी मित्रसे पूछा—ज्वालामुखीके पेटसे लाश तो मिलेगी नहीं, फिर पता कैसे लगता है कि मीहारमें रोज़ दो अेक शिन्-जू होते हैं। अुत्तर मिला—जहाजके मुसाफ़िरोंकी गिनती करनेसे। पहली बार जब जापानमें रोज़ाना १२-१३ शिन्-जूकी बात मुझसे कही गअी तब मैंने अुसको अितना अविश्वसनीय समझा कि अुसपर आश्चर्य भी नहीं प्रकट किया। दूसरी बार भी मेरा वही भाव रहा। तीसरी बार जब मैंने गम्भीरतासे पूछ-ताछ की—क्या बारह तेरह रोजाना या सालाना? अुत्तर मिला—रोज़ाना, रोज़ाना। बात यह है, हम लोग मृत्युको बहुत महत्त्व देते हैं, अुससे बहुत डरते हैं। जापानी अुसको अुस तरह नहीं लेते। अुनके ख्यालसे मरनेवालेके लिये अन्तिम निश्चयके बाद वह कुछ समयकी मानसिक वेदना है। यदि मीहार जैसा सामान हो, तो मृत्युकी पीळा होती ही नहीं। और बचे लोगोंके लिये—'आह! हमारा मित्र चला गया। हमारा संबंधी चला गया। अच्छा कर्मको कौन टाल सकता है?' यदि कहा जाय जापानी-जाति मृत्युंजय है तो अिसमें अतिशयोक्ति बहुत कम होगी। अपने आदर्श, अपने भावके सामने अेक जापानी अपने जीवनका मूल्य तुच्छ समझता है। अुसने लळकपनसे निप्पोन् (जापान)की भक्ति, और अपने देवतुल्य सम्राट्के सम्मानकरनेका पाठ पढ़ा है। अुसने स्वामिभक्त ४७ रोनिनोंकी क़ुर्बानियाँ पढ़ी हैं और शायद अुनकी समाधियोंको जाकर देखा है अथवा अुनके फ़िल्म देखे हैं। अुसने पोर्टआर्थर विजेता नोगीको सपत्नीक अपने सम्राट् (मेअिजी)के वियोगमें हराकिरी करते पढ़ा है। वह समझता है, ज़ीवनका मूल्य किसी समय बहुत भी हो सकता है; किन्तु कुछ अैसे अवसर, कुछ अैसी वस्तुयें हैं, जिनके बदलेमें जीवन दे देना सबसे सस्ता सौदा है। जापानियोंमें ये भाव अितने भीतर तक घुस गये हैं कि अुसका अनुमान करना भी हमारे लिये मुश्किल है। मृत्युके साथ खेलनेमें वे बळे दक्ष हैं। यदि कोअी बळा युद्ध हो जाय, जिससे



५३--कोयासान्--अेक क्रीडोद्यान (पृ० २५८)



५४--कोयासान्--अिन्-ताकी-गुची और योकोबुअे (पृ० २५८)

दस लाख आदमी मर जायँ, तो जानते हैं, जापानी क्या कहेगा—"भवि-तव्यताके साथ किसका वश ? अच्छा वह तो हो गया। मृत्युका घाटा देखकर हमारी जाति हर साल दस लाख प्राणियोंके नफ़ेमें रहती है। चलो समझेंगे अेक साल नफ़ा नहीं हुआ" वस्तुतः अितने भीषण जन-विनाशका जापानी दिलपर अुतना ही असर होगा, जितना काअीसे आवृत तालाबपर फेंके हुये डलेका। संसारकी किसी जाति और अुसके योद्धाओंमें यह दृढ़ अधि-ष्ठान नहीं है। अधिष्ठान-बल, संख्या-बल, सेना-विज्ञान-बल—ये चीजें हैं जिनके कारण आज जापान संसारकी बळी बळी शक्तियोंको मुँहफट-सा जवाब दे रहा है। योरप या अमेरिका चीनकी आर्थिक सहायता करना चाहते हैं, जापान कहता है—खबरदार ! यह तुम्हारी अनधिकार चेष्टा है।

सब देखकर हम कोबो-थाअिशीकी समाधि आकुनो-अिन्की ओर चले। पहला पुल पार करते ही दोनों ओर समाधि-पाषाण दिखलाअी देने लगते हैं। हर अेक पत्थरपर अुस व्यक्तिका नाम खुदा हुआ है जिसकी राख अुसके नीचे दबी हुअी है। यदि आप चीनी अक्षर पढ़ सकते हैं तो अेक अेक पत्थरको पढ़ते जाअिये। अथवा अिन लाखों पत्थरोंका पढ़ना असंभव समझते हों तो बळे बळे स्तूपाकार पत्थरोंको पढ़िये। अिनमें आप पुराने जापानके कितने ही सेनापतियों और सामन्त राजाओंको पायेंगे। या मिट्टीके स्तूपोंको पढ़िये। ये सम्राटों और सम्राट्कुमारोंकी समाधियाँ हैं। अिन सबकी यही अन्तिम कामना थी कि मरनेके बाद अपने अुपदेशक अपने गुरुकी समाधिके पास अुनको जगह मिले। कहीं आप तीन हाथ लम्बे खम्भे-जैसे चिकने पत्थरोंको अेक ओर खुले मुँहवाले आयत क्षेत्रके रूपमें देखेंगे। ये हैं क्योतो या तोक्यो, ओसाका या योकोहामाकी नर्त्तकियाँ (गेअिशा)। जीवनकालमें भी अुन्होंने अिसी तरह पंक्तिबद्ध हो नृत्य किया था। मरनेके बाद भी आज वे अुसी प्रकार पंक्तिबद्ध खळी हैं। बीच बीचमें

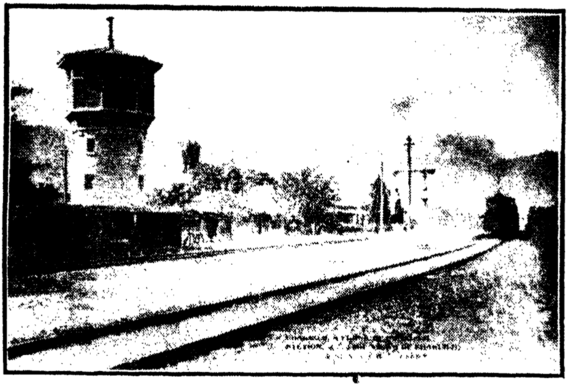
आपको कोबो-थाअिशीकी पीतल या पत्थरकी बाल्य, तारुण्य वा बार्धक्यकी मूर्तियाँ दिखाअी पड़ेंगी। और दो दो सौ फ़ीट अूँचे देवदार! अुनका तो कहना ही क्या। सुन्दर पुल, स्वच्छ पत्थर बिछे हुये रास्तेके छोरपर पहुँचिये। यहाँ कितने ही चिराग़ अहर्निश जल रहे हैं। किन्तु समाधि यह नहीं है। परिक्रमा करते हुये पीछे चलिये। चहारदीवारीसे घिरे देवदारके वृक्षोंके बीच देखिये वह छोटा झोंपड़ा-सा मकान। यही है अुस महान् दार्शनिक, महान् कलाकार, महान् पर्यटक, महान् सिद्धका समाधि-गेह। दो पैसा खर्चकर धूपबत्ती लीजिये। धूपदानपर रखकर जलाअिये। अैसे अद्भुतकर्मा पुरुषके प्रति अपना सत्कार प्रदर्शन करना हमारा कर्तव्य है।

लौटकर हम करुकायादो तथा कोङ-गो-सामअि-दोमें गये। हर जगह-का वर्णन अेक-दो अध्यायोंमें नहीं किया जा सकता। अुनके लिये पोथा चाहिये। सक्षेपमें तो कह ही दिया, ये विहार मूर्ति और चित्रकलाके अपूर्व संग्रहालय हैं।

पता लगा था, मंचूरियाके तीन मंगोल भिक्षु यहाँ पढ़ रहे हैं। सोचा अुनमें कोअी तिब्बती-भाषाका जानकार होगा, और अुससे मंचूको और मंगोलियाके बारेमें विशेष हाल मालूम होगा। भेंट होनेपर सच्चे मंगोलकी भाँति वे खुले दिलसे मिले। तिब्बती-भाषाका अुनका ज्ञान अत्यन्त अल्प था। पढ़कर वे देशमें जाकर धार्मिक सुधार करना चाहते हैं। सात बजनेका समय नज़दीक था, अिसलिये कालेजकी लाअिब्रेरीमें गया। कितने ही अध्यापक और कुछ छात्र जमा थे। चाय और फलका भोज दिया गया। सस्कृतके सहायक अध्यापक अुअेदाने स्वागत किया। दूसरोंने भी कुछ कहा। हमसे भारतमें बौद्ध-धर्मके बारेमें पूछा गया। हमने जापानी बंधुओं-को भारतमें बौद्ध-धर्मके पुनरुज्जीवित करनेके बारेमें कहा। अुन्होंने अिच्छा प्रकट की—यदि भारतीय बालक धार्मिक विद्याध्ययनके लिये आयें तो अुन्हें हम अपने मठोंमें भिक्षु बनाकर रख सकते हैं।



५५—श्री आनन्दमोहन सहाय (पृ० २६५)



५६—कोरिया—शकुओ-जी (स्टेशन) (पृ० २७६)

६ अगस्तको सवेरे सात बजे ही हम चल पळे। आकाश मेघाच्छन्न था, और बूँदा-बाँदी हो रही थी। फाटकपर प्रोफ़ेसर फुजिदा मिले। वे केबलकारके स्टेशन तक पहुँचाने आये।

अिस सुन्दरतम पार्वत्य दृश्यको देखते हुये हमारी कार अुतरने लगी। हाशीमोतो होते हुये साढ़े दस बजे ओसाका पहुँचे और गाळी बदलकर ११।। बजे कोबे। श्री आनन्दमोहनसहायको पहले सूचित कर रक्खा था। हिगाशी गोकुराकुजी बौद्ध-मंदिरमें डेरा पळा। तीन दिन ठहरकर जापानसे प्रस्थान करनेकी सलाह ठहरी।

७ तारीख़को इंडिया-लाज देखने गये। कोबेमें भारतीय छात्रों तथा अपरिचित व्यक्तियोंके रहनेके लिये किसी अच्छे स्थानकी आवश्यकता थी। आनन्दमोहन बाबू आज दस सालसे जापानमें हैं। असहयोगमें मेडिकल कालेजके अन्तिम वर्षसे अुन्होंने असहयोग किया था। पीछे राजेन्द्र बाबूके प्राअिवेट सेक्रेटरी हुये। यहाँ आनेके बादसे भारतके राष्ट्रीय कार्यमें संलग्न हैं। वे जापानी-भाषा बहुत अच्छी तरह बोलते हैं। अुनके जापानी-भाषाके व्याख्यान कअी बार रेडियोपर भी ब्राडकास्ट हुये हैं। अुनकी योग्यता और संलग्नताके कारण जापानके प्रधान पुरुषोंमें अुनका बहुत मान है। भारतीयोंके तो वे सर्वमान्य नेता हैं। भारतीय व्यवसायी पहलेसे भी जापानमें आते हैं, किन्तु आनन्दमोहन बाबूके प्रयत्नसे जापानियोंकी दृष्टिमें अुनका मान अधिक बढ़ा है। भारतीय विद्यार्थियोंकी वे हर तरहसे मदद करते हैं। कितने ही कामोंके सीखनेके लिये अधिक प्रभावशाली व्यक्तिकी सिफ़ारिश चाहिये, और वैसे कामोंमें आनन्दमोहनके जापानी मित्रोंका प्रभाव काम देता है। भारतीय विद्यार्थियों तथा यात्रियोंके लिये कोबेमें ठहरनेकी कोअी सस्ती जगह न थी। अुन्होंने स्थानीय भारतीयोंसे चंदा करके हालमें ही ७,५०० येन्में अेक जगह ख़रीदी है। श्री आनन्दमोहन और अुनके मित्र अिस पुरानी अिमारतको गिराकर वहाँपर अेक अच्छा

भारतीय आवास बनाना चाहते हैं। अिसपर पचास हज़ार येन् ख़र्च होंगे। कुछ सहायता जापानी सज्जन भी देंगे। किन्तु आवश्यकता है कि भारतीय अुनके अिस काममें मदद करें।

२–कोरिया

२२—शकुओजी

९ अगस्तको ग्यारह बजे दिनकी गाळीसे कोरियाके लिये रवाना हुये। गाळी अेक्सप्रेस थी। टाअिम-टेबुलके देखनेसे मालूम हुआ था कि १० अगस्तको हम कोरियाकी राजधानी केअिजो (सिओल) पहुँच जायँगे। शिमोनोसकी अंतिम स्टेशन है। यहाँसे १२२ मीलकी खाळी जहाज़से पार करनी होती है, जिसमें दस घंटे लगते हैं। किन्तु आज गाळी भी कुछ लेट पहुँची, जो कि जापानी रेलोंके लिये साधारण बात नहीं है। रेलसे जहाज़में पहुँचनेमें काफ़ी कठिनाअी हुअी। बळी भीळको अेक पतले रास्तेसे निकालनेमें वैसा होता ही था। हमारा टिकट तीसरे दर्जेका था। जहाज़में तीसरे दर्जेवालोंके लिये चटाअियाँ बिछी डेकका अिन्तज़ाम है। ब्रिटिश अिंडिया स्टीम नेवीगेशन कंपनीके जहाज़ोंकी डेकपर रंगून और पिनाङ्ग तक यात्रा करनेका हमें अनुभव है, और अुससे तुलना करनेपर दोनोंमें ज़मीन-आसमानका अंतर है। कहाँ लकळीके नंगे तख्तेपर गंदी, सळी जगहमें बैठना, और कहाँ खूब साफ़ सीतलपाटियोंका फ़र्श? अूपरसे छतमें लगी कुप्पियाँ ज़ोरसे हवाके फ़ौवारे छोळ रही थीं। आज भीळ अधिक थी, अिसलिये वह चार-चार हाथपर लगी कुप्पियाँ मनुष्यको ठंडक पहुँचानेमें असमर्थ थीं। रातको सो गये।

× × ×

समझ रहे थे, सबेरा होते कोरियाके तटपर पहुँच जायँगे, किन्तु जहाज़ तो अपनी जगहसे हिला ही नहीं। आठ बजे आज्ञा हुअी, तूफ़ान आनेका

डर अभी बना ही है, असलिये किनारे चलो, अभी जहाज़ नहीं जायगा। हमें अितनी सूचना पानेमें भी मुश्किल हो रही थी, क्योंकि हमारे साथियोंमें अेक सज्जन ही टूटी-फूटी अँगरेज़ी बोल लेते थे। आज सबेरे और भी ट्रेन आ गअी थी, असलिये कोरियाके यात्रियोंकी संख्या बढ़ गअी, और मुसाफ़िरख़ानेकी सभी कुर्सियाँ भरी पळी थीं। मेरे साथीने अपनी लाल पुर्ज़ी दिखलाकर कहा, अैसी पुर्ज़ी बाहरसे ले आओ। हमें स्थान ढूँढ़नेमें परेशान देख अेक अँगरेज़ी जाननेवाली महिलाने ले जाकर हमें अेक स्थान दिखला दिया। जापानी रेलोंके कुछ कर्मचारियोंके हाथपर लाल बिल्ला लगा रहता है। अेक लाल बिल्लेवाले कर्मचारीने हमें दूसरा स्थान दिखलाया। ख़ैर, वहाँसे जहाज़पर जानेका लाल काग़ज़ मिल गया।

दस बजे फिर भीळमें धक्के खाते किसी प्रकार जहाज़पर पहुँचे। रातको नींद कुछ कम आअी थी। ३० सेन् (≡)।।।)में भोजनका बक्स मोल लिया। जापानी लोग जहाँ चीज़ोंको सस्ते दाममें देते हैं, वहाँ चीज़ोंके पैक् करनेमें भी कला और सफ़ाअीका बहुत ख्याल रखते हैं। तीस सेन्में बळे सुंदर अठपहलू लकळीके बक्सके भीतर निचले डब्बेमें भात और अूपरके डब्बेके चार ख़ानोंमेंसे अेकमें दो तरहके अचार-तरकारी, मछली और फलके कुछ टुकळे भी थे। अूपर ढक्कन, जिसके अूपर विज्ञापन-छपे काग़ज़में लिपटी भात खानेकी दो लकळियाँ तथा दँतखोदनी और अेक मुँह पोंछनेका काग़ज़ी रूमाल भी था। सारी तैयारी देख अपरिचित आदमी तो कह अुठेगा—पंद्रह पैसे बक्सके लिये, या भोजनके ?

भोजनकर हम सो गये। रातको अच्छी नींद न आअी थी, असलिये तुरंत नींद आ गअी। क़रीब १ बजे नींद खुली, तो देखा, जहाज़ स्थिर खळा है। मालूम हुआ, तूफ़ानका डर अभी बना ही है। थोळी देरमें फिर तटपर

जानेका हुक्म हुआ। वस्तुतः जिस कठिनाअीके साथ यात्री जहाज़पर पहुँच रहे थे, अुसे देखनेपर अुनके साथ यह अत्याचार हो रहा था। लेकिन जगह साफ़ रखनेके लिये वैसा करना जरूरी भी था। फिर यात्रियोंसे खचाखच भरे मुसाफ़िरखानेमें पहुँचे। रातको दो जहाज़ोंके जानेका निश्चय था। और, यदि कर्मचारियोंने लोगोंको छोळनेमें कुछ ज़्यादा समय दिया होता, और रास्ते कुछ अधिक कर दिये होते, तो अिसमें शक नहीं कि अुतनी तकलीफ़ न हुअी होती। किन्तु कर्मचारी घळी देखकर नियमित समयपर भीळको छोळनेपर तुले हुये थे। अव्यवस्था होनी ही थी। मुझे तो भीळमें जाते कितने बच्चोंको देखकर डर लगता था कि कहीं बनारस-के ग्रहणकी भीळमें ये कुचल न जायँ। मेरे सामने कुछ लळके थे। पीछेकी भीळके धक्केको रोकनेमें, कुछ न पूछो, मेरी क्या गति हो रही थी। यह तो मुसाफ़िरखानेसे छोळनेके वक़्तकी बात है। जहाज़के पास जानेपर अभी अूपर छोळनेका समय न हुआ था, अिसलिये फिर भीळ रोक दी गअी। देख रहे थे, फिर घळी देखी जा रही थी। भीळके कुछ भागपर अुधर बूँदें भी पळ रही थीं। मैंने अपने सामानका बक्स लगेजमें दे दिया था, सिर्फ़ अेक छोटा-सा बेग हाथमें था, अिसलिये सोचा—"छोळो अिस जहाज़को, दूसरे जहाजपर चढ़ें।" वहाँ अिंतजार ही कर रहा था कि आजके नये परिचित कोरियावासी विद्यार्थी बुलानेके लिये पहुँच गये। अंतमें फिर कलकी जगहपर पहुँचे। पुलिसने रात ही पासपोर्ट देखकर लिखना-पढ़ना कर लिया था। किन्तु आज जहाज़में मुश्किलसे बैठने-भरकी जगह मिली। सोचा तो था, बैठे-ही-बैठे रात बिता दें, किन्तु कोरियन मित्र वैसा करने नहीं देना चाहते थे। हमारे तीसरे दर्जेके लिये जो-भोजनकी दूकान थी, अुसके सामने भोजनकी चौकियाँ अेक चबूतरेपर पळी थीं। मित्रोंने आकर कहा, चलिये, लेमोनेड पीने चलें।

आख़िर धीरे-धीरे खानेवालोंसे वह जगह ख़ाली हो गअी। सभी लोग

ख़र्राटे लेने लगे, तब हम भी भोजन-स्थानके अुसी फ़र्शपर लेट गये।

रातको जहाज़ खूब हिलता रहा। सभी लोगोंकी भाँति हम भी अुस हिलने-डोलनेकी परवा करनेवाले न थे। सबेरे सात बजे सकुशल हम फूसन्-बन्दरगाहपर पहुँच गये।

समुद्रसे कोरियाकी तट-भूमि, अुसके हरे-भरे पर्वत बिल्कुल वैसे ही मालूम होते थे, जैसे जापानके। कोरियन गाँव अुस वक़्त हमारे सामने न थे, सामने तो था फूसन्——अेक लाख तेरह हज़ार आबादीवाला कोरियाका तीसरा शहर, जिसके सीमेंटके अनेक तल्ले मकान, अूँची-अूँची चिमनियाँ तथा वहाँके अिकतालीस हज़ार जापानियोंको देखनेसे कौन कह सकता था कि हम जापानसे बाहर हैं।

१९११ अी० में कोरिया जापानमें मिलाया गया था। अुससे अेक लाभ तो हमें भी हुआ कि कस्टमवालोंकी परेशानीसे बच गये।

अुतरते ही अेक लाल बिल्लेवाला कर्मचारी मिला। जान ही रहा था, हमें अुसकी आवश्यकता है। आकर पूछा। हमने कहा——"केअिजो (सिओल)की गाळीसे हम जाना चाहते हैं।" अुसने कहा——"आपके पास डाकका टिकट है?" मैंने डाकके लिये अधिक लगनेवाले पैसे दे टिकट लानेके लिये कहा, और आप गाळीमें बैठ गया। जापानियोंकी भद्रता अद्वितीय है। हर अेक जापानीको मानो ख़ास तौरसे शिक्षा दी जाती है कि वह किसी विदेशीको अपने देशके प्रति अच्छा भाव लिये बिना जाने न दे।

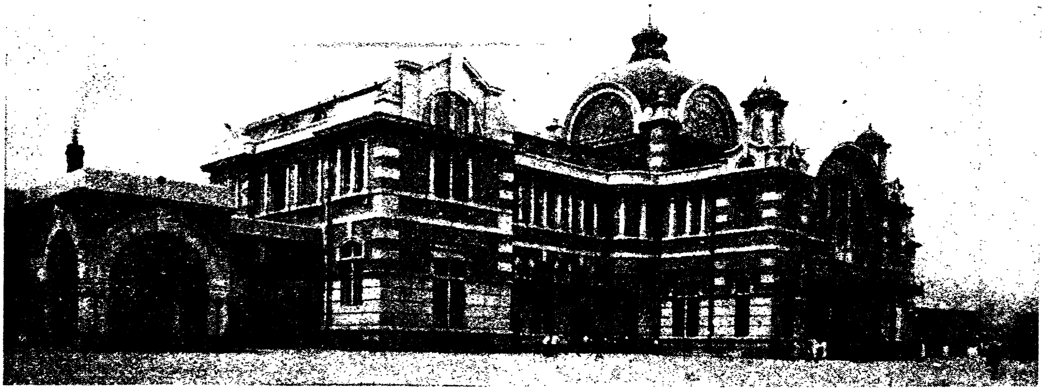
गाळीमें बैठ जानेपर अुतरनेके वक़्त बिछुळे कोरियन तरुण भी आ गये। यहाँ भी तीसरे दर्जेकी गाळीमें हरे रंगकी गद्दी लगी थी। भारतीय गाळियोंका अिसे सेकेंड क्लास ही कहना चाहिये, और अुसपर भी किराया तीसरे दर्जेसे भी सस्ता!

हमारे कंपार्टमेंटमें दो कोरियन विद्यार्थी थे। दोनों अँगरेज़ी जानते थे और गर्मीकी छुट्टीमें तोक्योसे लौट रहे थे। अुनके देखनेसे यह जाननेका अच्छा मौक़ा मिला कि कोरियन लोगोंमें राष्ट्रीय भाव कितना तीव्र है। अुनसे यह भी मालूम हुआ कि जापानमें (विशेषकर तोक्योमें) पढ़नेवाले कोरियन छात्रोंकी संख्या चार हज़ारसे कम नहीं है। यदि भारतसे अिंगलैंडका किराया बारह-तेरह रुपया होता, और वहाँ पचीस-तीस रुपये मासिकमें काम चल जाता, तो सोचिये, कितने भारतीय छात्र वहाँ पहुँचते। मैंने अिन छात्रोंसे यह जाननेकी कोशिश की कि कोरियन लोगोंको क्या-क्या शिकायतें हैं। वे स्वीकार करते थे कि जापानी लोग ब्याह-शादी, मेल-जोलमें कोरियन लोगोंसे ज़रा भी फ़र्क़ नहीं रखते। हज़ारों कोरियनोंने जापानी स्त्रियोंसे और सैकळों जापानियोंने कोरियन स्त्रियोंसे शादी की है। वहाँ वर्णसंकरताका प्रश्न है ही नहीं। हाँ, सेना तथा दूसरे अधिकार और विश्वासके स्थानोंमें अुन्हें जगह कम मिलती है। लेकिन अुसके लिये भी जापान कोरियनपर विश्वास कैसे करे, जब कि दर्जनों बळे-बळे जापानी कोरियन बमके शिकार हो चुके हैं। कोरिया और जापानकी समस्या कठिन ज़रूर है, किन्तु वह कठिनाअी अधिकतर भावुकतापर निर्भर है। जापानने जिस वक़्त कोरियाको अपनेमें मिलाया, अुस समय अुसका ख्याल था कि कोरियन धीरे-धीरे जापानी-जातिमें मिलकर अेक हो जायँगे। वस्तुतः जापानी और कोरियन मानव-शास्त्रके अनुसार अत्यन्त निकट संबंधी हैं। दोनों ही मंगोल-जातिके तूरानी-वंशसे संबंध रखते हैं। दोनोंकी भाषाओंकी बनावट में अितनी समीपता है कि कोरियन लोग बहुत जल्द जापानी सीख लेते हैं। लिपि तो दोनों भाषाओंकी चीनी है। सभ्यता और संस्कृतिमें भी अेक दूसरेसे बहुत निकट हैं। भेद है, किन्तु अुतना ही, जितना अुत्तरी भारत और मदरासमें। परन्तु कोरियन लोग नहीं चाहते कि अुनका जातीय व्यक्तित्व चला जाय। जापानी स्त्रियोंकी पोशाक

किमोनो, संसारमें सुंदरतम समझी जाती है। अुसके विरुद्ध कोरियन स्त्रीका लम्बा जामा बिल्कुल भद्दा है, तो भी आप किसी कोरियन स्त्रीको—चाहे कोरियामें हो, या जापानमें—अपनी पोशाक छोळ जापानी पोशाक पहने न देखेंगे। योरपियन पोशाक भले ही पहन लें। ब्याह-शादीमें भी कोरियन लोग जापानियोंकी अपेक्षा संकीर्ण हैं। सब तरह देखनेसे मालूम होगा कि जापान कोरियनको मिलाकर अेक जाति नहीं बना सका—अुसमें अधिकांश रुकावट कोरियनकी तरफ़से हुअी है। कोरियाकी भौगोलिक स्थिति और अुसका राजनीतिक महत्त्व अैसा है कि जापान अुसे हाथसे छोळ १२२ मीलपर अपने शत्रुओंका अड्डा जमने नहीं दे सकता। बल्कि चुशिमा-टापू लेनेपर यह फ़ासला आधा ही रह जाता है। भविष्यके देखनेपर मालूम होता है कि जीवित जापानके लिये कोरिया छोळना असंभव है। अुसके राजनीतिक कोरियाको अपना नज़दीकी भाअी कहते ही नहीं आये हैं, बल्कि शादी-ब्याह द्वारा अुसको प्रमाणित करते आ रहे हैं। कोरिया राजवंशके राजकुमारोंकी शादियाँ जापान-सम्राट्के ख़ानदानमें हुअी हैं। कोरियाकी कृषि आदिकी अुन्नतिमें जापानने अपने शासनके पिछले चौबीस वर्षोंमें बहुत काम किया है। शिक्षा, स्वास्थ्य आदिको देखनेसे भी अुसका काम प्रशंसनीय ठहरता है। किन्तु कोरियन शिक्षित तरुण कहते हैं—"नहीं, हम तुम्हारे जाति-भाअी नहीं बनना चाहते, हम तो तुमसे अलग स्वतंत्र कोरियन रहना चाहते हैं।" और, अिसके लिये वे ख़ून-ख़राबी, सबके लिये तैयार हैं। कोरियन अपने सामने आयर्लैंडका आदर्श रखते हैं। वे बेल्जियम या स्वीज़रलैंडका आदर्श नहीं रखना चाहते, जहाँ भिन्न-भाषा-भाषी लोग अेकजातीयतामें बँधे हैं। देखें, अिसका कहाँ अंत होता है।

जापानपर कोरियाका शासन—यह अेक अलग लेखका विषय है, अिसलिये अुसपर यहाँ अधिक कहना नहीं चाहता।

× × ×



५७—कोरिया—केअिजो—स्टेशन (पृ० २६५)

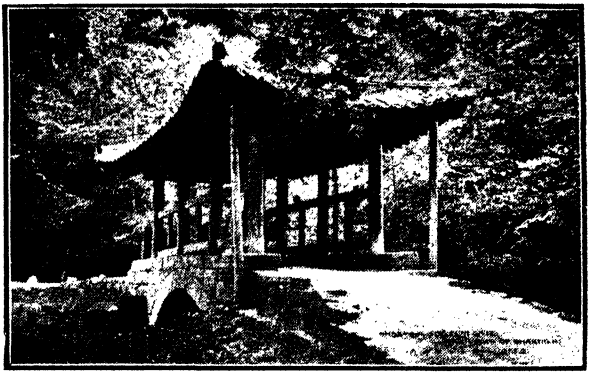
सवा तीन बजे हमारी गाळी केअिजो (सिओल)-स्टेशनपर पहुँची। केअिजो कोरियाकी राजधानी तथा सबसे बळा शहर है। अिसके तीन लाख पंद्रह हज़ार आदमियोंमें अठत्तर हज़ार जापानी हैं। अैसे बळे शहरमें बिना भाषा जाने जाना आसान काम नहीं है। किन्तु जापानी टूरिस्ट-ब्युरो संस्थाकी सहायता अनमोल है।

अिचार्ज सज्जनने नक्शेपर मेरे गंतव्य स्थान हिगाशी-होङ्-गान्जी-मंदिर और अुसके रास्तेका चिह्न ही नहीं बना दिया, बल्कि ५० सेन् (।=)।)पर वहाँ तकके लिये अेक रिक्शा करके बैठा दिया। पुराने दक्षिण द्वारसे जापानी बाज़ार होते हम मंदिर पहुँचे। मंदिरके प्रधान श्रीकुरिताके पास पत्र पहले ही पहुँच चुका था। अुन्होंने बळी खातिर की। मालूम हुआ, आज रातको ग्यारह बजे वह सपरिवार पूर्वीय समुद्रके गेन्जन्-बंदरगाह-पर जा रहे हैं। अुन्होंने कहा—“यदि आज चलें, तो मैं साथ ले चलकर कोङ्-गोसान और दूसरे मंदिरोंको दिखला दूँगा।” अंधेको दो आँखोंके सिवा और क्या चाहिये? जाना निश्चय हो गया।

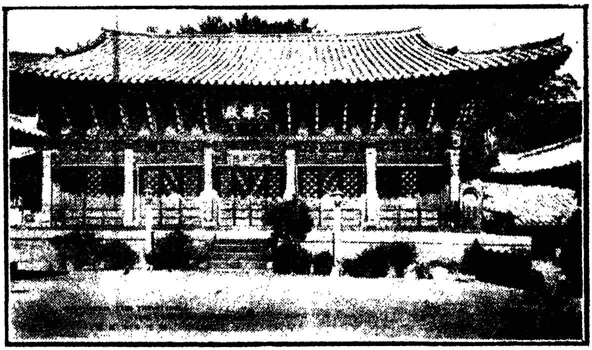
शामको मोटरपर तीन घंटा केअिजोकी अधूरी सैर हुअी, जिसके बारेमें अेक बार और बाक़ी हिस्सेको देखकर लिखूँगा।

नियत समयपर हम स्टेशन पहुँचे। सोनेवाली गाळीका टिकट लिया। हम, पुरोहित, पुरोहितानी, अुनकी छोटी लळकी मिज़ुअे गाळीसे रवाना हुये।

सलाह हो चुकी थी कि रास्तेमें अुतरकर शकुओजी (सक्वङशा)-मंदिरका दर्शन करके समुद्र-तटपर चलना चाहिये। पाँच बजे अुजाला हो गया था, जब हम स्टेशनपर अुतरे। मंदिर दो मीलसे अूपर है, किन्तु अितने सबेरे वहाँ कोअी मोटर नहीं मिल सकी। जापानकी भाँति यहाँ भी स्टेशनपर सामान रखनेका सुन्दर प्रबंध है। अिसलिये सामान स्टेशनपर ही छोळ हम लोग मंदिरकी ओर रवाना हुये। सळक छोटे बाज़ारसे होकर



५८—कोरिया—शकुओ-जो (पुल) (पृ० २७८)



५९—कोरिया—शकुओ-जीका प्रधान मंदिर (पृ० २८०)

जाती है। मकान सभी कोरियन लोगोंके हैं। मिट्टीकी दीवार, चिपटी फूस-की छत, खिळकी, दर्वाज़े कम तथा अपेक्षाकृत मैले--यही कोरियन गाँवके घरोंका रूप है। खेतोंमें धानके खेत अधिक हैं। कुछ अुळद तथा बाजरेकी जातिके भी पौधे दिखाअी पळे। जोतने-बोनेके ढंगसे मालूम होता था कि कोरियाके किसान बहुत-सी नअी बातोंको अपना चुके हैं।

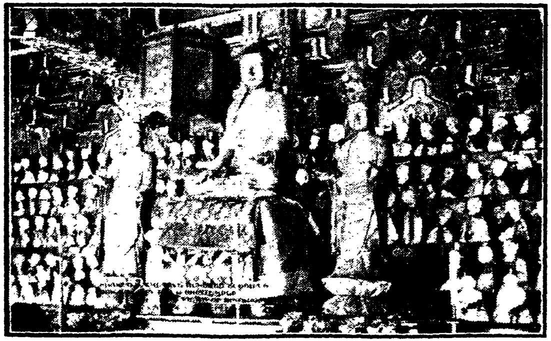
आठ बजेके क़रीब हम मंदिरसे १ मील अुरली ओरके गाँवमें पहुँचे। यहाँ कितने ही जापानी और कोरियन-होटल हैं। गाँव पहाळकी जळमें तथा देवदारुकी वृक्षावलीके बीचमें बसा है। हिमालयकी भाँति पास बहती धारका कल-कल भी बराबर सुनाअी देता है। कमरा हमारा बिलकुल वैसा ही था, जैसा जापान में हुआ करता है। होटल-परिचारिका ने भी आकर वैसे ही झुककर सलामी बजाअी। हैंड-बेग छोळ हम धारपर मुँह-हाथ धोने गये। लौटनेपर थोळी जापानी चाय और मीठे बिस्कुटका चर्वण-पान हुआ। नाश्ता तैयार होने तक हम लोगोंने अेक नींद ली। फिर जापानी छ प्रकारका नाश्ता कर, टैक्सीसे मंदिरकी ओर चले।

टैक्सी मंदिरसे आधे मीलपर ही छोळ देती है। पहला फाटक अुससे और भी पहले पळता है। फाटकके बाहर अेक सूखा देवदारुका वृक्ष है, जिसे लिवंशके प्रथम राजा ताअीसो (गद्दी १३९२ अी०)ने रोपा था। ताअीसो शकुओजी-मंदिरके प्रधान अुपस्तंभक थे। कोरियाके पहाळोंपर आम तौरसे वृक्ष बहुत छोटे-छोटे होते हैं। साथीने बतलाया--"कोरियन लोग लकळीको काटकर जाळेमें ताप जाया करते हैं, अिसलिये वे बढ़ने नहीं पाते। किन्तु अब सरकारने अुनकी रक्षाके लिये कळे क़ानून बनाये हैं। १५-२० वर्षों बाद आप बळे-बळे वृक्ष देखने लगेंगे।" किन्तु मंदिरका जंगल होनेसे यहाँका जंगल आबाद है। चारों ओर अूँचे-अूँचे देवदारु दिखाअी पळते हैं।

अेक-दो द्वार और छाये पुलको पारकर हम समीपवाले फाटकपर पहुँचे।



६०——नारा——दाओी बुत्सु (महान् बुद्ध) (पृ० २२५)



६१——कोरिया——शकुओ-जी (बुद्ध और अर्हत्) (पृ० २८०)

फाटक लकळीका बना तथा खपरैलसे छाया है। आगे बढ़नेपर ऑफ़िस आया। पुरोहितजीने परिचय-कार्ड दिया। हम अगली अुपस्थानशालामें बैठ गये। फिर मठके अुपाध्यक्ष भिक्षु काला चोग़ा पहने आ गये। मालूम हुआ, अुन्होंने क्योतोमें कअी वर्ष रहकर ओतानी-विश्वविद्यालयमें बौद्धदर्शन-पढ़ा है। अुनकी अिस शिक्षाका असर ऑफ़िसवाले कमरेमें तो ज़रूर मालूम होता था, किन्तु मठके ६० अन्य भिक्षु अभी वर्तमान कालसे कोसों पीछे हैं।

प्रधान मंदिरकी ओर जाते हुये हम चार दिक्पालोंके फाटकसे गुज़रे। ये मूर्तियाँ ढाअी सौ वर्ष पुरानी हैं। अुनके देखनेसे मालूम हो गया कि कलाकी छीछालेदर अुसी वक़्त काफ़ी हो चुकी थी। प्रधान मंदिरमें भैषज्य-गुरु (बुद्ध), गौतमबुद्ध और अमिताभ (बुद्ध)की पीतलकी मूर्तियाँ हैं। मंदिरको बने साढ़े पाँच सौ वर्ष हो गये। अुस समय भी कला काफ़ी अव-नतिकी ओर अग्रसर हो चुकी थी। सप्तर्षि, अमिताभ, पाँच सौ अर्हत् आदि दूसरे भी पाँच मंदिर देखे, किन्तु कलाके कोमल कलेवरपर सभी जगह अुसी प्रकार बेदर्दीसे छुरी फेरी गअी थी। पाँच सौ अर्हतोंकी मूर्तियाँ पत्थरकी हैं, जिनकी आँख आदिपर रंग फेरा हुआ है। ये मूर्तियाँ दूरके अेक मंदिरसे यहाँ लाअी गअी हैं, काल सात सौ वर्ष बतलाया जाता है। अर्हतोंके चेहरे अेक दूसरेसे भिन्न मुद्रा रखते हैं। अिस अंशमें कलाके अितने पूर्ण होनेपर भी अंगोंके बनानेमें क्यों अितना भद्दापन है, यह समझमें नहीं आता।

अेक शालामें मठके पुराने अधिपतियोंके कअी चित्रपट हैं। कोअी-कोअी चित्रपट अच्छे भी हैं।

शकुओजी-मंदिर कोरियाके चार-पाँच प्रधान मंदिरोंमेंसे है। अिसमें अिसके संरक्षक लिवंशके कुछ राजाओंकी समाधियाँ हैं।

२३—वज्रपर्वत या कोङ्गो-सान्

(१)

कोङ्गो-सान् कोरियाका अतिसुन्दर तथा जगत्प्रसिद्ध पर्वत है। अंग्रेज़ीमें अिसे डाअिमंड मौन्टेन् (Diamond Mountain) कहते हैं, और कोरियाकी भाषामें खिम्-खङ्ग-सान्। दक्षिण भारतके आन्ध्र-प्रदेशमें अवस्थित श्री पर्वत (वर्तमान नागार्जुनीकोंडा)का दूसरा नाम वज्रपर्वत था। बौद्ध-धर्मके प्रचारके साथ यह पर्वत कोरियाका वज्रपर्वत हुआ। दक्षिणका वज्रपर्वत या श्रीपर्वत कितना सुन्दर है, यह तो मैं नहीं कह सकता, किन्तु आचार्य नागार्जुनका चिरनिवास तथा दक्षिणमें शताब्दियों तक बौद्धभिक्षुओंके केन्द्रीय-विहारका स्थान होनेसे अुसे अद्भुत प्राकृतिक सौंदर्यका धनी ज़रूर होना चाहिये। कोरियाका वज्रपर्वत अपनी अनुपम शोभा और प्राकृतिक वैचित्र्यके लिये विश्वविख्यात हो चुका है। ख्याल रखिये वज्र हीरेको कहते हैं, अिसलिये यों समझिये कोङ्गो-सान् कोरिया-की अँगूठीका हीरा है। यह पर्वत कोरियाके पूर्वीय समुद्री तटपर ५० मीलके घेरेमें अवस्थित है। (कोरियाकी राजधानी सीओल् (केअिजो)से ८ घंटेमें रेल-द्वारा पहुँचा जा सकता है)। कोरियावासियोंकी कहावत है—"प्राकृतिक सौंदर्यकी बात मत चलाओ, जब तक कि तुमने खिम्-खङ्ग-सान् नहीं देखा।" जापानके श्रेष्ठ अुपन्यासलेखक किकूचीका कहना

है—"मेरे लिये कोङ्गो-सान् महान् प्राकृतिक दृश्योंमें है। जापानका याबाकेअी (क्युशू) अत्यन्त छोटे रूपमें अिसके पास तक पहुँचता है; किन्तु हज़ार याबाकेअी भी कोङ्-गो-सान्के विशाल और रहस्यपूर्ण रूपको (हृदयपर) चित्रित नहीं कर सकते।...यदि मैं कहूँ, कि कोङ्गो-सान् संसारका अति सुंदर पर्वत है, तो किसीको विरोध न होगा।"

कोङ्गो-सान्की अिस प्रकारकी ख्याति सुनकर किसका मन अुसे देखनेको न ललचायेगा। १३ अगस्तको श्री कुरिताके साथ हम वज्रपर्वत-के लिये रवाना हुये। गन्-ज़ेन्से समुद्रतटपर होती रेल चु-सेन् स्टेशन तक गअी है। (कोरियाके स्थानोंके नाम मैं जापानी भाषामें लिख रहा हूँ।) कोरियन् और जापानी दोनों भाषाओंमें नामके लिये वही चीनी शब्द-संकेत लिखे जाते हैं, अुच्चारणमें दोनों अपनी अपनी भाषाका प्रयोग करते हैं। अंग्रेज़ी भाषामें छपे काग़ज़-पत्रोंमें जापानी अुच्चारण ही बहुत लिखा जाता है; और वही बहुप्रचलित हो गया है, हम लोग पौने आठ बजे गाळीसे रवाना हुये। रास्तेमें कहीं धान, सवाँके खेत, कहीं छोटे देवदार और दूसरे वृक्षोंसे हरे-भरे पर्वत, कहीं फूसकी चौरस छतके छोटे छोटे घरोंवाले कोरियन गाँव पळते थे। जहाँ-तहाँ जापानियोंके भी घर—जो कि अपेक्षाकृत अधिक बळे, खपळैल या टीनकी छतोंवाले तथा काँच जळे सरकन्त कपाटोंसे युक्त दिखलाअी पळते थे। पचासों जगह गाळीको सुरंगें पार करनी पळीं। खेतोंको देखनेसे स्पष्ट मालूम होता था, कि यहाँके किसानोंने नये ढंगके खेतीके तरीक़ेको बहुत अंशोंमें अपना लिया है। आलूकी भाँति हाथ भर चौळी मेंडके अूपर ज्वार, मक्का, तथा साग-भाजी लगाअी गअीथी। जहाँ-तहाँ आळू, सेब, नास्पातीके बाग़ भी दिखाअी पळे। आदमियोंको देखनेसे मालूम होता था, जहाँ जापानी पुरुष आम तौरसे कोट-बूटमें हैं, वहाँ कोरियन

पुरुष प्रायः सभी ही अपने सफ़ेद अचकन और पायजामेमें दिखाअी पळते थे। हमारे सनातनी पाठक अिस सनातनधर्मसे बहुत खुश होंगे, किन्तु संसारमें पुरानी लकीरकी फकीर जाति कभी आगे नहीं बढ़ सकती, अिसका भी अुन्हें ख्याल होना चाहिये।

साढ़े दस बजेके क़रीब हम चु-सेन् स्टेशनपर पहुँचे। ओन्सेअिरी (ओन्-छङ्-नी)के लिये मोटरबस तैयार थी। होटलोंके आदमी आये हुये थे। अेकने पंडेकी तरह हमारा बेग ले लिया, और हम बसपर बैठ आध घंटेमें अेक जापानी होटलमें दाखिल हो गये। ओनेंसेअि-रिका अर्थ है, तातापानी गाँव। अिस गाँवमें गर्म पानीके चश्मे हैं, और हर अेक होटलने अपने यहाँ तप्तकुंड तैयार किये हैं। जापानी स्नानके बळे शौक़ीन होते हैं। जहाँ कहीं गर्म पानीका सोता मिल गया, बस वह अुनके लिये अेक बळा तीर्थ-सा बन जाता है। होटलका मकान तिमहला है, और सभी कमरे जापानी ढंगसे सीतलपाटियों (ततामी) द्वारा सजाये गये हैं। सफ़ाअीके लिये पूछना ही क्या है, जब परिचारिकायें अधिकांश जापानी हैं। कमरा बतलाया गया, और साथ ही चाय और जापानी मिठाअी मुस्कुराते चेहरोंके साथ पहुँच गअी। नहानेका पानी तैयार है, अिसकी भी खबर आ गअी। श्री कुरिता पहले गये। मालूम हुआ मैदान खाली है, अिसलिये हम भी झटपट पहुँच गये। जापानी लोग अैसे स्थानोंमेंभी सबके सामने अधिकतर नंगे नहाते हैं, और अींजानिबकी अभी धळक खुली नहीं है। खैर, प्राकृतिक अुष्ण जलसे खूब स्नान हुआ। भोजन सोलहो आने जापानी था। निबटने और थोळा विश्राम करनेमें अेक बज गये। फिर हम दो येन्पर मोटरकर शिन्केअिजी (छिन्-गे-सा) मठके लिये रवाना हुये। मोटर पौन घंटेमें चली जाती है, किन्तु रास्ता अभी अच्छा नहीं है। शायद कुछ वर्षोंमें बन जाये। दो-अेक गाँव मिले। फिर पहाळ शुरू होते ही देवदारोंके वृक्ष भी शुरू हो गये। और अुनके आकारके और बळे होनेके साथ हम छिन्-गे-सा



६२---कोङगो-सान्---शिन्केअि-जीमठ (पृ० २८३)



६३—कोङगो-सान्—संकेअि-जीके संस्थापक फु-अुन् (पृ० २८६)



६४—कोङगो-सान्—क्य-र्यु-अेन् जलप्रपात (पृ० २८७)

मठमें पहुँच गये। शकु-ओजीके अुपाध्यक्षका अेक परिचय-पत्र पासमें था, अुधर पीला वस्त्र और भारतीय भिक्षु होना भी अधिक परिचयका काम दे रहा था। दो मेज़ और कुछ कुर्सियाँ पळे मठके कार्यालयमें गये। थोळी देरमें ६३ वर्षके वृद्ध प्रधान भी लम्बा भिक्षुओंवाला चोग़ा पहने स्वागतके लिये आ गये। न वह हमारी भाषा समझते थे, न अुनकी भाषा हम। हमारे साथी श्री कुरिताकी अंग्रेज़ी भी बहुत कच्ची ही थी, और दस बातोंमें अेक बातको कहीं वह अनुवाद कर पाते थे, तो भी वृद्ध भिक्षुकी मुखाकृतिसे ही मालूम होता था, कि बुद्धकी जन्मभूमिके अेक भिक्षुका यहाँ आना अुनके लिये असाधारण घटना हुअी है। सत्कारके लिये मधुका शर्बत और चीनीके प्याले पहुँच गये। कोरियन मठोंमें मालूम होता है, स्वागतमें चाय-का स्थान मधुके शर्बतने दख़ल किया है। भारतमें भी आगन्तुकको शर्बत प्रदान करना पुरानी प्रथा है। भिक्षुने शर्बतको प्यालेमें अुळेलते वक़्त, बायें हाथको भी दाहिने हाथकी केहुनीके पास अिस ख़्यालसे लगा दिया कि जिसमें देना दोनों हाथसे हो। भारतकी भाँति कोरियामें भी (जापानमें भी) सत्कार-प्रदर्शनके लिये कोअी चीज़ देते वक़्त दोनों हाथोंका लगाना ज़रूरी समझा जाता है। प्रधानका आग्रह होने लगा—आज यहीं रहिये, किन्तु रहना तो होटलमें ठीक हो गया था। फिर कोरियन भोजनका आग्रह होने लगा, और श्री कुरिताके लिये तैयारी होने लगी।

पहिला काम हमें मठ देखना था। मालूम हुआ फु-अुन नामक भिक्षुने अीसाकी चौथी पाँचवीं शताब्दीमें अिस मठकी स्थापना की। बौद्धधर्म कोरियामें ३७२ अी० में पहुँचा था। और अुसकी बादवाली शताब्दियोंमें अुसका प्रभाव बहुत बढ़ गया। अुसी समय बौद्ध-भिक्षु अेकान्त-आश्रमके लिये स्थान ढूँढ़ते अिस पर्वत श्रेष्ठमें पहुँचे थे, और अपनी ग़ज़बकी परख-द्वारा अिसके महत्त्वको समझ वज्रपर्वतको कोरियाके बौद्धधर्मका केन्द्र तथा पवित्र स्थान बनानेमें सफल हुये। यद्यपि अिस मठकी स्थापना पंद्रह

शताब्दियों पूर्व हुअी थी, किन्तु लकळीका अधिकअिस्तेमाल होनेसे पुरानी अिमारतें कअी बार जल चुकी हैं। अिस समयका सबसे पुराना मंदिर सुखा-वती (खुग्-नग्-चोन्) तीन सौ वर्ष पहले बना था। प्रधान मंदिरको बने सिर्फ़ चालीस वर्ष हुये हैं, और अुसके भीतरकी गौतमबुद्ध, लोकेश्वर, मंजुश्रीकी काष्ठ-मूर्तियाँ तो सिर्फ़ छ वर्ष पहले बनी थीं; किन्तु प्रधान मंदिरके द्वारपर अेक पत्थरका चीनी ढंगका ८, ९ फ़ीट अूँचा स्तूप है, यह मंदिरके प्रथम निर्माणके वक़्त बनाया गया था। पत्थर संगखारा है, और पंद्रह शताब्दियोंके जाळे-गर्मीने अुसे जीर्ण-शीर्ण कर दिया है, तो भी स्तूपके चौखूटे घेरेमें कहीं कहीं पुरानी मूर्तियोंकी रूपरेखा दिखलाअी पळती है। दो-तीन और छोटे छोटे मंदिर हैं। वह भी नये हैं। मुख्य द्वार दोमहला है, और बिल्कुल नया है। अुसके देखनेसे मालूम होता है, कि कोरियाके बौद्धधर्ममें नअी जान आ रही है। मंदिरके हातेमें अेक ओर पाठशालाका मकान है, जिसमें आसपासवाले ३५ लळके चार दर्जे तककी पढ़ाअी करते हैं। अध्यापक मठके अेक भिक्षु ही हैं। यह भी मालूम हुआ, कि बराबर रहनेवाले भिक्षुओंकी संख्या २० है; और निर्वाहके लिये पहाळका जंगल और कितने ही खेत हैं।

बाहर निकलकर हमने आँखोंको दूर तक दौळाया। चारों ओर हरे विशाल पर्वत हैं। जिनमें अुत्तरकी ओरका शिखर तो सरो या देवदार वृक्षकी भाँति नुकीला और बहुत अूँचा है। पच्छिम और दक्खिनमें भी अुत्तुंग शिखर है। पूर्वका पहाळ अपेक्षाकृत दूर है। सारे क्षितिजपर अेक बार नज़र दौळानेसे मालूम हो जाता है, कि अिस स्थानको मठके लिये क्यों चुना गया।

मंदिरका दर्शनकर हम क्यु-रचु-अेन् जलप्रपातकी ओर रवाना हुये। अैसे कोङ्-गो-सान्में कितने ही जलप्रपात हैं, किन्तु यह जलप्रपात सबसे अूँचा है। मठसे प्रायः ५, ६ मील दूरपर है। रास्तेपर यद्यपि सीमेंटके पुल

आदि बने हुये हैं, तो भी चढ़ाअी काफ़ी है। नदीका कलकल, और पक्षियोंके नाना शब्द हरितवसना पर्वतस्थलीको और सुन्दर बना देते हैं। चित्र विचित्र पाषाणी पर्वत शिखरोंको भिन्न भिन्न नाम दिये गये हैं। यह अवलोकितेश्वर शिखर है, वह मंजुशिखर अित्यादि। वैसे सारी दुनिया ही अपने नामको अमर करना चाहती है, किन्तु, अिस विषयमें चीनी जापानी कोरियन सबसे आगे बढ़े मालूम होते हैं। रास्तेमें सैकळों जगह अंगुल-अंगुल गहरे पाषाण-लेख आपको मिलेंगे। जीवित शिलाओंमें खुदे यह लेख ज़रूर हज़ारों वर्षों तक रहेंगे, किन्तु हज़ारों वर्षों तक लिखे जाते अिन लेखोंको पढ़नेके लिये कितनोंको फ़ुर्सत होगी। जापानमें मैंने देखा, हलके कामके लिये हल्का चंदा देनेपर दाताका नाम काग़ज़की चिटपर लिखकर पट्टेपर चपका दिया जाता है। वर्ष छ महीनेके लिये अब आपका नाम स्थाअी हो गया। अधिक दान और बळा काम होनेपर काठकी पट्टीपर स्याहीसे नाम लिखकर विशेष स्थानपर लगा दिया जाता है। मंदिरके निर्माण और मरम्मतके वक़्तके सैकळों दाताओंके नामको अिस प्रकार पचीस पचास वर्षके लिये अमर होते आप सैकळों जगह देखेंगे। और अपने नामका पत्थर लगाना तो व्ययसाध्य है। लेकिन जीवित शिलाओंमें अुत्कीर्ण लेख ज़रूर सबसे अधिक दीर्घजीवी हैं।

रास्तेमें हमें अेकाध जगह दो-अेक सोडावाटर, सिग्रेट, फोटोकार्ड, आदिकी दूकानें भी मिलीं। अिन दूकानोंमें कोङ्गो-सान्में मिले नाना रूप-रंगके स्फटिक तथा दूसरे पत्थर भी बेचनेके लिये प्रस्तुत थे। छाल-सहित भोजपत्रके काष्ठपर स्थानीय दृश्य भी चित्रित किये हुये रक्खे थे। यात्रीके बैठनेके लिये बेंच, गर्म सादी चाय और स्वागत शब्द हर वक़्त तैयार। अेक तरुण दूकानदारने जब सुना, कि मैं भारतीय हूँ, तो जापानी भाषामें छपी महात्मा गांधीकी संक्षिप्त आत्मजीवनी अुठा लाया। मालूम होता है, कोरियन लोग महात्मा गांधीसे विशेष प्रेम रखते हैं।

क्यु-रयु-अेन्का अर्थ है नौ नागोंका ह्रद। जलप्रपातके अूपर आठ कुंड हैं। कहा जाता है, अेक समय भगवान् बुद्धकी आज्ञासे कितने ही सिद्धि-प्राप्त भिक्षु कोङ्गो-सान् आये। अुस समय वह अेक वृक्षकी डालियोंपर बैठे। अुसके नीचे नौ नाग रहते थे। अुन्होंने सिद्धोंसे कहा—यह हमारा स्थान है, यहाँसे चले जाओ। अुत्तर मिला—हमें बुद्धने भेजा है, हम नहीं जा सकते। अिसपर नागोंने मुँहसे आग और तूफ़ान निकालना शुरू किया। सारा पहाळ डगमग होने लगा। कुछ मिनटोंमें अुस वृक्षका कहीं पता न था, किन्तु सिद्ध लोग अक्षत शरीर अुसी जगह डँटे थे। नाग परास्त हो वहाँसे निकाल दिये गये, और यह आठ कुंड अुन्हें रहनेके लिये मिले। नौके लिये आठ कुंड विकट समस्या थी। किन्तु अुनमें अेक अंधा और कुरूप नाग था, अुसकी स्त्री अुससे पिंड छुळानेका मौक़ा ढूँढ़ रही थी। नाग लोग जब कुंडोंकी देखभाल कर रहे थे, अुसी समय नागिनने—जो फुटबालमें अभ्यस्त मालूम होती है—अैसा सच्चा पैर पतिपर जमाया, कि अंधे नाग-राम अर-र-र-र-धम् करते प्रपातके नीचे खौलते कुंडमें जा गिरे। तबसे आज तक वह वहीं क़ैद हैं। नागिन दूसरे सुन्दर नागको पति बना अेक कुंड-में आज भी वास कर रही है। यह है, अिस प्रपात-संबंधी ढाअी हज़ार वर्ष पुरानी अेक सच्ची घटना !

शामको पाँच बजे हम फिर लौटकर अुक्त मठपर आ गये। हमारे साथीके लिये कोरियन भोजन तैयार था। शराके रूसे बारह बजे बाद तो हम खा नहीं सकते थे, अुधर कोरियन भोजनकी बानगी भी देखनी ज़रूरी थी, अिसलिये भातके दो नेवाले, तथा, ६, ७ तरहकी प्यालियोंमें रखी साग भाजीसे अेक अेक कवर मुँहमें डाला। लाल मिर्च सिर्फ़ अचारमें थी। कोरियन लोग मिर्चके शौक़ीन हैं, किन्तु हमारे जापानी साथीका ख़्यालकर मिर्च डालनेसे हाथ रोका गया था। अेक समुद्री वनस्पतिकी पत्ती तथा पकौळी जैसी चीज़को ही तेलमें तला गया था, बाक़ी सभी चीज़ें



६५——कोङगो-सान्——वज्रपर्वतका अेक दृश्य (पृ० २८९)

पानीमें अुबली थीं। नमक ठीकसे पळा था, और प्याज़के पळनेसे रंग चोखा आ गया था। चीन, कोरियाके भिक्षु मांससे बहुत परहेज़ करते हैं, बेचारोंके कर्ममें घास लिख दी गअी है, अिसीलिये यह सारी दावत घासाहारकी थी।

हमारे साथीने जल्दी-जल्दी भोजन समाप्त किया, और चिराग़ जलते जलते हम अपने होटलमें आ दोबारा तप्तकुंडमें अुतरनेको तैयार हो गये। मालूम हुआ, लौटते वक़्तकी मोटरका किराया मठवालोंने बहुत आग्रह पूर्वक स्वयं दिया।

(२)

कोङ्गो-सान्के मठोंमें युनेन्-जी (यु-जम्-सा) सबसे बळा और सबसे पुराना मठ है। किसी समय कोङ्गो-सान्में जहाँ-तहाँ बिखरे हुये १०८ मठ थे। तीस वर्ष पूर्व अुनकी संख्या ४० थी, किन्तु आजकल ३२ हैं, जिनमें २१० भिक्षु और तीस भिक्षुणियाँ रहती हैं। दोनोंके मठ अलग-अलग हैं। हमारे साथी श्री कुरिता युदेन्जी नहीं जानेवाले थे, अिसलिये हमारे साथ कौन जायेगा। यह पहली समस्या थी, मोटर ह्यकु-सेन्क्यो तक जाती है, और आगे रास्ता ७ मील रह जाता है। पहाळमें कहीं भटक जायें तो मुसीबत आये। पूछनेपर मालूम हुआ तीन येन् (सवा दो रुपया)में अेक दिनके लिये पथप्रदर्शक मिल जायेगा। ह्यकुसेन्क्यो तक मोटरसे जानेका तो ९० सेन् (॥≡)॥) ही किराया लगेगा, किन्तु लौटते समय ख़ास तौरसे मोटर भेजनी पळेगी, जिसका किराया आठ येन (६ रुपये) होगा। ख़ैर अंग्रेज़ी जाननेवाला पथप्रदर्शक तो नहीं मिल सका, किन्तु वह जापानी भाषा जानता था। ७॥ बजे हमारी मोटर टेक्सी रवाना हुअी। अिस टेक्सीमें तीन बेंचें रख, अुसे दस आदमियोंके बैठने लायक़ बना दिया गया था। हमारी मोटर चुसेन्के स्टेशनकी ओर चलती गअी। भय होने लगा, कहीं दूसरी ओर जानेवाली टेक्सीपर तो नहीं बैठ गये।

स्टेशन पूर्वकी ओर है, और हमारा गन्तव्य स्थान पश्चिमकी ओर। स्टेशनके बाद जब मोटर सर्राटेसे पूर्वकी ओर बढ़ने लगी, तब तो दिल ज़रूर डाँवाडोल होने लगा। खैर, किसीसे कुछ पूछ-ताँछ नहीं की। कोतेअिमें हमें अुतरकर थोळी देर प्रतीक्षा करनेके लिये कहा गया। कोतेअि अच्छा बाज़ार है। यहाँ कअी जापानी दूकानें भी हैं। पौआ चटकाते डेढ़ रुपयेके किमोनो (चोगा)को पहने यहाँ भी कितने ही जापानी स्त्री-पुरुषोंको देखा। भला अिस सूरतमें कौन अुन्हें साहेब कहनेके लिये तैयार होगा। कोरियन लोगोंकी दृष्टिमें बळा जँचना मालूम होता है, जापानी लोगोंके लिये कोअी बळे कामकी बात नहीं है। ८॥ बजेके क़रीब वही गाळी आ गअी, और हम पीछेकी ओर लौटे। जापान टूरिस्ट ब्युरोकी ओरसे छपे पम्फ़्लेटमें नक़शा देखा, तो मालूम हुआ, मोटरका रास्ता बहुत घूमकर गया है। कुछ पीछे लौट अेक लकळीके पुलसे नदी पारकर हम आगे चले। सळक बहुत रद्दी थी, किन्तु दरअसल वह सळक तो बैलगाळियोंके लिये है, मोटरवाले ज़बर्दस्ती कर रहे थे। कुछ समय बाद पहाळके अंचलमें पहुँच गये। फिर रास्ता नदी और पहाळके दर्म्यानसे जा रहा था। बराबरकी भूमिमें सभी जगह धानकी खेती है, आजकल वह फूट रहे हैं। गाँवोंमें कोरियन लोगोंके घर सारे ही फूसकी छतवाले तथा अेकमहले मिले। ग़रीब तो हैं ही, किन्तु अुस ग़रीबीको भारतसे नहीं मिलाया जा सकता। घरोंमें अेक-दो कमरे अूँची कुर्सीके होते हैं, और बग़लका नीची कुर्सीका कमरा रसोईंघर होता है। मुर्ग़ियोंका दर्बा बाहर होता है, और सुअरकी खोभार भी बाहर ही अेक तरफ़ होती है। कोरियन लोगोंके घर झोपळेहीके होते हैं, किन्तु अुनके कपळे बहुत साफ़ होते हैं। फटे कपळेवाले आदमी बहुत कम देखनेमें आते हैं। सफ़ेद रंग अुनका जातीय रंग है। तरुण, बाल, वृद्ध, स्त्री, पुरुष सभीको आप सफ़ेद कपळेमें देखेंगे। अेकाध स्त्री कभी-कभी काले या हरे घाँघरेमें भी दिखाअी पळ जायेगी, किन्तु अैसा बहुत

कम है। हमारे रास्तेमें अेकाध जगह दो-अेक जापानी घर भी दिखाओी पळे, और अुनके घरोंके पास सेब, नासपाती, और आळूके बाग़ भी थे। जापानी का गुज़ारा भला संवा, टाँगुन (काँगुन) और मक्केसे चलनेवाला है! कोरियन लोगोंका अुधर ध्यान कम है। हमारे अेक जापानी अिंजीनियर सहयात्रीने तो कहा था—'काममें कोरियन लोगोंको आप हमेशा पीछे पायेंगे, हाँ, बात बनाने तथा राजनैतिक आन्दोलनमें वह बहुत अुत्साह दिखलाते हैं, अिंजीनियरिंगकी ओर वह नहीं आते'। मैंने पूछा—'गणितमें कमज़ोर होते हैं क्या?'। 'हाँ, अुसे नहीं पसंद करते। काममें भी आलसी हैं, किन्तु अब धीरे-धीरे कुछ आगे बढ़ रहे हैं।' अुक्त अिंजीनियर १९०४ ओी० में रूस-जापान युद्धके समय आये थे, तबसे यहीं रेलवे विभागके अिंजीनियर हैं।

ह्यकुसेन्क्योमें अुतर गये। मोटर थोळी देर बाद लौट गओी होगी। यह गाँव छोटासा है। लेकिन दो-तीन दूकानें तथा दो-तीन कोरियन होटल हैं। दस बजे हम चले। १॥ मील तक तो रास्ता हौले-हौले अूपर जा रहा था। अूपरसे लकळियाँ लाकर जहाँ-तहाँ जमा की गओी थीं। वह सभी देवदार जातिके वृक्षोंकी थी। हमारा साथी पानीके पास बैठ सेब खाने लगा। हमने भी ताज़ा लाये सेबसे मुँह खट्टा किया।

अब चढ़ाओी शुरू हुओी, और खूब ज़ोर-शोरसे। बोझा न हो, तो अपने राम पहाळकी चढ़ाओीसे बहुत डरते नहीं। सामान थोळासा ही लाये थे, और वह भी साथीकी पीठपर था। चढ़ाओीमें दूसरी बुरी बात हमारे लिये धूप है, जिसका सामना जहाँ-तहाँ करना पळता था। दो मीलकी चढ़ाओी खूब कुनैनसी कळवी है। अन्तिम अूँचाओी (जोत्)पर पहुँचनेसे पूर्व ही लकळी ढोनेवाले तारका स्टेशन है। साधारण तारपर ही अूपरसे नीचे लकळी भेजी जाती है। बारह बजे थे, जब हम जोत्पर पहुँचे। वहाँसे दूर तकके पहाळोंको ही नहीं दिगन्त विस्तृत नीले समुद्रको भी देख रहे थे। नज़दीकके अक्षरोंको पढ़नेके लिये तो अिसी वर्षसे चश्मेकी ज़रूरत पळी

है, किन्तु समुद्रमें अुठते फेनको हम अप्रयास देख रहे थे।

थोळा अुतरकर दो-चार घरोंका अेक गाँव मिला। पासमें पानी और आसपासमें खेत बनानेकी भूमि होनेपर भी अुधर लोगोंका ख्याल बहुत कम जान पळता है। हमारा मध्याह्न भोजनका समय हो रहा था। और होटलवालोंका भात-भाजीका पाथेय प्रतीक्षा कर रहा था। हमारी बाअीं ओर ठंडे जलकी धारा बह रही थी। जलके तीर छायामें बैठ गये। लकळीका सुन्दर पाथेय बक्स खोला, तो भात खानेकी लकळियाँ नदारद। जानते हैं, लकळी या चम्मच अिस्तेमाल करनेवाली जातियोंमें अँगुलीसे खानेसे बढ़कर असभ्यताका परिचायक दूसरा काम है ही नहीं। ख़ैर, साथीने झट चाक़ूसे काट दो लकळियाँ दे दीं और भोजन समाप्त हुआ।

अुतराअी साधारण थी, और वह भी हरे वृक्षोंकी छायासे। कुछ दूर अुतर दूसरी ओरसे आनेवाली बळी धारके तटसे अूपरको चढ़ने लगे। भूमि कैसी है, अिसके लिये अितना ही कहना काफ़ी है, कि लकळी ढोने-वाले स्टेशनसे अिधर बराबर बैलगाळीकी लीक है। कुछ चलकर लीक बाअीं ओर जाने लगी, और दाहिनी ओर अेक चौळी सळक आ गअी। मोटरकी नहीं पैदलकी। अनुमान हो गया, अब हम युदेन्-जी मठसे बहुत दूर नहीं हैं। वृक्षोंके बीचसे चलते हम अेक छोटे गाँवमें पहुँचे। यह होटलों-का गाँव है। चंद क़दमके बाद ही मठका प्रथम दर्वाज़ा है। अिसके भीतर घर बनानेपर स्त्रियोंका रहना नहीं हो सकता था, अिसलिये सारे होटल बाहर आबाद हुये हैं। दर्वाज़ेसे मठ दो फ़र्लांगपर होगा। हालहीमें बना सुन्दर काठका पुल है। जिसके पार मठ आ जाता है। अिस जगह भूमि अधिक विस्तृत, और पर्वतपंक्ति दूर हट जाती है। चारों ओर देवदार ही देवदार दिखाअी पळते हैं। नदी, देवदार, पर्वतावली देख, मैं तो समझने लगा, हिमालयमें पहुँच गया। युदेन्-जी कोङ्गो-सान्का सबसे बळा मठ है। अिसमें १०६ भिक्षु रहते हैं, अिसलिये बहुतसे मकान होने ही चाहिये।



६६——कोरियाके गाँवका बाज़ार (पृ० २९३)

अिस मठकी स्थापना चौथी सदीमें हुअी थी। और अुसी जगहपर जहाँ भारतसे आये भिक्षुओंको नौ नागोंने डरा धमकाकर भगाना चाहा था; जिस दुष्कार्यका परिणाम अुन्हें भोगना पळा था। भारतीय भिक्षु सुनते ही लोगोंके कान खळे हो गये, और सेंके-जीके प्रधानकी चिट्ठीपर तो और भी प्रभाव बढ़ा। मेज़ कुर्सी पळे, अनेक कमरों तथा काँचके फलकोंवाले कार्यालयमें मठके प्रधानने स्वागत किया। सेंकेजीके प्रधान काफ़ी अुम्रके हो गये थे, जब जापानी आये, अिसलिये वह जापानी भाषा बोल समझ नहीं सकते थे, किन्तु, यहाँ सभी अुसे धळल्लेसे बोल रहे थे। दो भिक्षु कुछ अंग्रेज़ी वाक्य भी बोल लेते थे। १। बजे हम पहुँचे थे, और तीन बजे ही लौटना था, अिसलिये झटपट मंदिर देखना था। बूट छोळ कोरियन जूता पहना। अिसकी शकल बिल्कुल भारतीय जूतोंसी होती है। और आजकल रबळके जूतोंके सस्तेपनके कारण चमळेवाले जूते ढूँढ़े भी नहीं मिलते। प्रधान मंदिरमें गये। अेक वृक्षकी शाखाओंपर बहुतसे बुद्ध खळे हैं। कहा तो गया, छ सौ बुद्ध हैं, किन्तु अुतने मालूम नहीं पळते। विहारकी स्थापनाका समकालीन बाहरका चतुष्कोण पाषाण स्तूप मात्र है। स्तूपमें नौ तल्ले हैं, और वह चतुष्कोण है। संकेजीकी अपेक्षा यह अधिक सुरक्षित हैं, अिसीलिये भ्रम होता है, शायद पीछेका हो। विहारकी सबसे पुरानी अिमारत प्रधान द्वार-मंडप है जो नदीके तटके क़रीब है। आजकल अिसमें सैकळों नामांकित काठकी पट्टियाँ लटक रही हैं। हर अेक नाम अमर करनेवाले स्त्री-पुरुष कुछ पैसे खर्चकर अुन्हें यहाँ लगवा देते हैं। यह मंडप तेरहवीं सदीमें बना था। प्रधान मंदिरकी अेक ओर चार सौ वर्षोंका पुराना अेक विशाल घंटा है। अुसीकी बग़लमें मंदिरका म्यूज़ियम् है। अिसमें कुछ पुरानी पुस्तकें, चित्रफलक, कपळे, और बर्तन रक्खे हैं। अिनमें अेक सात सौ वर्ष पुरानी पुस्तक है। छ सौ वर्ष पुराने दो-तीन जापानी चित्रफलक हैं। अेकमें हरे बाँसके सामने नर-मादा सारसको चित्रित करनेमें बळे

कौशलका परिचय दिया गया है। छ सौ वर्षोंका अेक भिक्षुवस्त्र (चीवर = केसा = कषाय) भी है। मटका हाता खूब साफ़ है, और मकानोंको भी साफ़ रक्खा गया है, असिसे जान पळता है, कि युदेन्जी मठ अच्छी अवस्था-में है। मठके भिक्षुओंके पढ़नेके लिये पाठशाला है, जिसमें ६० विद्यार्थी हैं।

आते ही कोयाङ्गो-सन्की दूध जैसी सफ़ेद मधुसे स्वागत किया गया चलते वक़्त हस्तलेख देनेके लिये आग्रह हुआ। दो-तीन बळे-छोटे काग़ज़ों-पर कुछ संस्कृत वाक्य लिख दिये, जिन्हें भविष्यमें आनेवाले भार-तीयको ज़रूर दिखाया जायेगा।

ठीक तीन बजे बिदा हुये। पहले सवा तीन घंटेमें पूरीकी गअी यात्रा लौटते वक़्त सवा दो ही घंटेमें तै हुअी। मोटरके लिये पौन घंटे अिन्तज़ार करना पळा। शामको चिराग़ बलनेसे पूर्व ही होटलमें आ दाख़िल हुये।

तप्तकुंडमें विधिपूर्वक स्नान हुआ। आकर कमरेमें बैठनेपर अेक जापानी भिक्षु मिलने आये। वह आज ही आये थे। श्री कुरिता ३ बजे लौट गये थे, असिलिये आगेकी यात्राके बारेमें बहुत कुछ जानना था। विशेषकर कलके लिये निश्चित की गअी यात्रामें भी कुछ दूर तक पैदल चलना था, जहाँ अकेले भटक जानेका डर था। भिक्षु थोळी अंग्रेज़ी भी बोल लेते थे। जब अुन्होंने प्रस्ताव किया—'यदि अेक दिन और अधिक दें, तो हमारे साथ परसों चोअन्-जी मठमें पहुँच सकते हैं। हाँ, रास्ता (४० क़िलोमीतर) प्रायः सारा पैदलका है।' हमने तुरन्त स्वीकार किया, और सात बजे अुनके साथ प्रस्थान करनेका निश्चयकर सो गये। तुरन्त नहीं, बारह बजे, क्योंकि होटलके मालिक-मालकिन तथा परिचारिकागणको संस्कृत वाक्य लिखकर देना था।

पंद्रह तारीख़को मुँह-हाथ धो नाश्ता हुआ। ७ येन् होटलके वास-भोजन तथा डेढ़ येन् परिचारकगणको पारितोषिक दे मोटरके अड्डेपर गये। पंद्रह पैसे दे वक़्तपर मोटरसे रवाना हुये। हमारे नये तीन साथियोंमें अेक

डाक्टर, अिकोगानी महाशय अिंजीनियर और श्री गोतो भिक्षु थे। पिछले दोनों सज्जन अिंग्लिश बोल लेते थे। आजकी पैदलयात्रामें बहुत आदमी थे। मोटर छोळनेपर चढ़ाअी शुरू हुअी। प्राय: घंटे भर चल हम क्यु-वन्-बुत्सुके नीचे पहुँचे। यहाँ तीन विचित्राकार पर्वतशिखर हैं, जिन्हें तीन बुद्ध कहा जाता है। अेक शिखरपर चढ़नेके लिये सीढ़ी और लोहेकी ज़ंजीर भी लगी है। कुछ सौ गज़ चढ़कर हम वहाँ पहुँचे। फोटाग्राफर कमरा लिये तैयार था। चारों जनेका फोटो अुतरा। अूपरसे दूर तकके हरे तथा पथरीले पहाळोंकी अेक झाँकी ली। फिर दूसरी ओरसे अुतर, रास्तेपर पहुँचे। अभी चढ़ाअी ही चढ़नी थी। चढ़ाअी कठिन तोथी, किन्तु सवेरेकी मुसीबत शामको भूल जाती है। हमारे आगे-आगे अेक हृष्ट-पुष्ट युरोपियन व्यक्ति जा रहा था। नजदीकसे देखनेपर मालूम हुआ, कि पुरुष-वेशमें वह स्त्री है। बळी बेतकल्लुफ़ीसे पीठपर पंद्रह सेरका बोझा लादे जा रही थी। पूछनेपर मालूम हुआ, हमारे आजके गन्तव्य स्थानसे वह कल ही लौट चुकी है।

नौ बजेके क़रीब हम जोत्पर पहुँचे। पंद्रह मिनटकी अुतराअी अुतर सोडा लेमनेड्, मिठाअी चाकलेट्की दूकान मिली। वहीं टेक्सी खळी थी। ४० सेन् (।=)) दे ४ मील तक चलना तै हुआ। दस बजे अिंजीनियर और हम मोटरसे रवाना हुये। हमारे बाक़ी दो साथी झम्पानपर सवारी कर रहे थे। यहाँका झम्पान बद्रीनाथसे दूसरी ही तरहका है। दो बाँसोंसे अेक बेंतकी कुर्सी बँधी रहती है। आगेकी ओर रस्सीसे बँधा अेक पावदान भी लटकता रहता है। दोनों बाँस ६, ७ हाथ लम्बे होते हैं। हर अेक सवारी-पर तीन आदमी होते हैं। अेक बार दो आदमी अुठाते हैं। सवारी कंधेपर नहीं अुठाअी जाती। आदमियोंके कंधेसे काँधासोती दो फंदे लटकते रहते हैं। फंदेके भीतर बाँसको डाल हथेलीसे भी बाँसको पकळे वाहक चलते हैं। मुळाव संकीर्ण होनेपर सवारीके गिरनेका डर होता है, अिसलिये अैसी

जगह् अुतर जाना पळता है। अेक आदमीको अेक रोज़का ३॥ येन् देना पळता है। येन्की क्रय शक्ति देखनेपर अुसे साढ़े तीन रुपया ही समझिये। और अिसीसे यह भी मालूम होता है, कि कोरियामें मज़दूर अुतने सस्ते नहीं हैं, जितने भारतमें। ढोनेवालोंके मोज़े सहित जापानी बूट, साफ़ कपळे और तिनकेकी हैट देखनेसे भी आपको अुसका अनुमान होगा।

होनेन्में टेक्सीसे अुतर हम धार पार हो अेक दूसरी धारसे अूपरकी ओर चलने लगे। अिंजीनियर साथ-साथ चल रहे थे। बीच-बीचमें हमारी टिप्पणी होती जाती थी। आरम्भमें डेढ़-दो मील चढ़ाअी साधारण थी, पीछे दृश्य अधिक रमणीय आ गया। रास्ता भी कहीं कठिन कहीं आसान चढ़ाअीका था। पथरीले पर्वतशिखर नाना आकारके थे, अुसी प्रकार जलकी धारके प्रपात, कुंड तथा मार्ग भी नाना रूपके थे। अिसीलिये किसी पर्वतका नाम नाग था किसीका घोळा। किसी जगह धार सर्प गतिसे अुतर रही थी, अिसलिये वह अूर्ध्वमुखीय नाग है। कहीं पानी तीन कुंड बनाते गिर रहा था, अिसलिये वह स्थान तिनकुंडी था। अिनको जतानेके लिये पचासों स्थानोंपर साअिन्-बोर्ड लगे हुये हैं। दोपहरको अेक शीतल स्थानपर बैठ, हमने होटल द्वारा प्रदत्त पाथेयको अुदरसात् किया। रास्तेमें जहाँ-तहाँ थोळी दूर विश्राम करते हम आगे बढ़ रहे थे। अेक जगह अिंजीनियरसे कोरियाके बारेमें बात छिळ गअी। अुन्होंने कहा—हज़ारों कोरियनोंने जापानी लळकियोंसे शादी की है। जापानी अिसे बुरा नहीं मानते। स्वयं जापान सम्राट्के कुलकी राजकन्याको कोरियाके राजवंशी कुमारने ब्याहा है। लेकिन जापानी लोग बहुत कम कोरियन लळकियोंसे ब्याह करते हैं। कारण शायद कोरियन-स्त्रियोंकी काम करनेमें अुतनी तत्परता, जितनी कि जापानी स्त्रियोंमें पायी जाती है का अभाव हो। अथवा पोशाकके भद्देपनसे कोरियन स्त्रियाँ अपने सौंदर्यको अुतना आकर्षक नहीं बना सकतीं।

तनख़ाहकी बात चलनेपर मालूम हुआ—अुसी कामके लिये कोरियनको ७५ येन् वेतन मिलनेपर जापानीको सौ येन् मिलेगा। दोनोंकी-तनख़ाहमें बराबर २५ सैकळेका अन्तर होता है। पुलिस कान्स्टेबल जापानी होनेपर ५० येन् पायेगा, किन्तु कोरियन होनेपर अुसे ३५ येन् ही मिलेंगे। जापानीको घर, वस्त्र आदिपर कोरियन्की अपेक्षा अधिक ख़र्च करना पळता है, अिसीलिये यह फ़र्क़ रखना पळता है। नौकरीमें व्यक्तिके निर्वाह-मानको तो देखना ही पळेगा। भारतमें भी अिसी ख्यालसे अंग्रेज़ोंको अधिक तनख़ाह दी जाती है। अिंग्लेंडमें अेक मज़दूर १४, १८ रुपया (२०-३० शिलिंग) हफ़्ता कमाता है, जो कि भारतीय मज़दूरकी महीने भरकी तनख़ाह है। अिस प्रकार भारतसे अिंग्लेंडका निर्वाहमान चौगुना है। और अिसीलिये किसी अंग्रेज़को नौकर रखनेपर अुसे चौगुनी तनख़ाह तो देनी ही पळेगी। अितने मँहगे नौकरको रक्खा क्यों जाये, यह प्रश्न ही दूसरा है। हाँ, अुसी कामके लिये भारतीय नौकरको क्यों चौगुनी तनख़ाह दी जाये—यह बात समझमें नहीं आती।

आजके अन्तिम दो-तीन मीलकी यात्रा तो प्राकृतिक दृश्यमें अद्भुत थी। चाहे पहाळ और अुसके शिलाओं और शिखरोंको देखिये। चाहे हरे वृक्षों और वनस्पतियोंकी ओर नज़र दौळाअिये। चाहे विचित्राकार जलमार्ग और अुसके प्रपातोंको देखिये—सभी मुझे तो पद पद पर नगाधिराज हिमालयका स्मरण दिला रहे थे। कअी जगह छोटे-छोटे हरे मेंडक दिखाअी पळे। अिंजीनियर महाशयका कहना था—अिन्हें आप कोरियामें ही पायेंगे, जापानमें नहीं। कुमे होटलके मील डेढ़ मील रह जानेपर तो भोजपत्रके वृक्ष भी आ गये। यहाँ सालमें चार मास बर्फ़ रहती है। रास्ता अप्रैल-मअीमें खुलता है।

चार बजे हम कुमे होटलमें पहुँचे। अेक पर्वतकी बाँहींपर समुद्रतलसे पाँच हज़ार फ़ीट अूपर यह होटल अवस्थित है। कोङ्गो-सान्के सर्वोच्च

शिखर विर-हो (वैरोचनकूट)के दर्शनार्थी बहुतसे लोग हर साल यहा आया करते हैं, अुन्हींके लिये रेलवेके भूतपूर्व प्रधान डाक्टर कुमेके स्मरणमें यह होटल बना है। होटल अभी पूरी तरहसे तैयार नहीं हुआ है। रेडियोका भी यहाँ अिन्तजाम है। तैयार हो जानेपर यह भी अेक आकर्षक स्थान होगा।

(३)

शामको सलाह हुअी थी—कल पाँच बजे सवेरे ही वैरोचनकूटपर चढ़ना चाहिये। सोते वक़्त पाँच बजे अुठनेका संकल्प किया था, और ठीक समयपर नींद खुल भी गअी, किन्तु अपनी मंडलीको देख रहे हैं, लम्बी पळी है। तबसे सात बजे तक कुकुरनिंदिया ही रही। झपकी आती थी, और बीच-बीचमें आँख खोलकर सामनेकी पंक्तिमें सोये तीनों साथियोंकी ओर देखते थे। अुठकर मुँह-हाथ धोने गये, तो देखा बाहर बूँदें पळ रही हैं, और आकाशमें घना बादल छाया हुआ है। अैसे समयमें वैरोचनकूटसे समुद्र और पर्वतमाला देखनेका आनन्द कहाँ मिलनेवाला था, और अिसीलिये साथी अिन्तज़ार कर रहे थे, कि शायद बादल हट जाये तो कूटारोहणका मज़ा आ जाये। किन्तु वह होनेवाली बात न थी। कोङ्गो-सान्के सारे देवताओंने सरे शाम ही कुमेटी करके सर्वसम्मतिसे प्रस्ताव पास कर लिया था—कि आजकी पचास मूर्तियोंको दर्शन न करने दिया जाये। खैर! देवता मनुष्यसे बळे होते ही हैं।

हमने नाश्ता किया। पाथेय (विन्तो) साथ बाँध दिया गया। होटलके निवास भोजन, बिस्तरा आदि सबके लिये दो येन् देने पळे। सोच रहे थे, भारतमें भी बद्री, केदार, गंगोत्री, यमुनोत्तरी, मणिकर्ण (कल्लू) आदिमें भी यदि डेढ़ रुपये रोज़में अितना प्रबंध हो जाता, तो यात्रा कितनी आसान हो जाती।

७।। बजे चल दिया। कूट आधा मीलसे अधिक नहीं है। चढ़ाअी भी बहुत मुश्किल नहीं। आध घंटेसे कमहीमें अूपर पहुँच गये। शिखरके बिल्कुल पास सोडा, मिठाअी, फल आदिकी दूकान है। पासमें यात्रियोंके ठहरनेका अेक मकान था, जिसकी टिनकी छत अेक ही दो दिन पूर्व बळी सफ़ायीसे उलटकर बाहर रख दी गअी थी। आओ, करो देवताओंकी सर्वर? यहाँका देवता दयालु है, जो अेकाध यात्रीकी अुसने बलि नहीं ली।

कूटकी नोकपर तो हम चढ़ गये, किन्तु दस गज़से आगे कुछ दिखायी नहीं पळता था। हमारे ज़िद करनेपर बूँदें कुछ कळी हो गअीं। भागकर दूकानके भीतर पनाह ली। दूकानदारके पास रबर और लोहेकी दो मुहरें थीं। रबरकी लाल मुहर तो यात्राके प्रमाण स्वरूप लोग पाकेटबुकमें लग-वाते हैं, किन्तु लम्बी लोहेकी डंडीवाली आयसी मुद्रा अेक पहेली हो गअी। मुँह और डंडीका कालिख बतला रहा था, कि यह आगमें तपाकर लगाअी जाती है। कहाँ? पाकेटबुकमें! तो फिर? दिलने अेक बार ज़ोरदार शब्दोंमें कहा—अरे भाअी! यह कौनसी बळी बात है, द्वारिकाकी छापकी तरह यहाँ वैरोचनकूटकी छाप होगी। किन्तु यात्रियोंमें अैसे सस्ते स्वर्गके सौदा करनेवाले दीखते नहीं थे। अच्छा तो लकळीपर लगाकर ले जाते होंगे।

हम अिस अुधेळबुनमें थे, और साथी लोग अेक बार अुठकर बादलोंके पर्देके पीछे सूर्यकी सफ़ेदी देख फिर बैठ गये। अुन्हें देवताओंकी मीटिंगकी बात मालूम नहीं थी। अपने रामने अेक बार चाहा, आगाह कर दें, किन्तु कहा—सबक़ सीखने दो म्याँ! चंद मिनटों बाद हताश चलना पळा। यदि बादल न होता तो क्या देखते? चारों ओर जहाँ-तहाँ अुठे बारह हज़ार शिखर (द्वादश सहस्रकूट) (गिन्तीमें संदेह हो तो ख़ुद गिनकर देख लीजिये, मजाल है, कि अेककी भी कमी-बेशी हो)। हरियालीसे ढँकी पर्वतमाला। बीच-बीचमें बिखरे शैल। और दूर फेन अुगलता दिगन्तव्यापी सागर। अब तक हमारी यात्रा बाहरी कोङ्गोमें हुअी थी अब भीतरी

कोङ्गोमें अुतरना था। कुछ दूर ढलुआँ पथ देखकर अनुमान हुआ था, पेटका पानी हिले बिना अुतर चलेंगे। किन्तु यह ग़लत ख्याल कुछ ही मिनटों तक रहा। बाअीं ओर मुळे, और देखा, अरे! यह तो खळी अुतराअी है। साथियोंने अुतरते हुये बतलाया—यह सोने-रूपेकी सीढ़ी है। शायद बहुत खळी सोनेकी और कम खळी रूपेकी। अेक घंटा अुतरनेपर देखा, कितने ही स्त्री-पुरुष अूपरकी ओर जा रहे हैं। अपने राम ख़ैर मना रहे थे—अच्छा हुआ, जो बाहरसे भीतरकी ओर चल रहे हैं, नहीं तो अिस चढ़ाअीमें छट्ठीका दूध याद आ जाता। प्रायः सारी कठिन अुतराअी अुतर आने पर देखा, कुछ कोरियन संभ्रान्त महिलायें अूपर जा रही हैं, अुनमें एक-दो दस वर्ष पुराने पेरिस्-फ़ेशनमें ज़र्क बर्क़ थीं; और अुनके पीछे अेक साठ वर्षकी बुढ़िया अेक फ़ेशनेबुल तरुणीका हाथ पकळे अूपरकी ओर घसीटी जा रही थी। भाषा मालूम न थी, नहीं तो कहना चाहता था—अरे डोकरी! क्यों मरने जा रही है। अभी तो चढ़ाअीका श्रीगणेश ही हुआ है।

बूँदें अूपर ही भर थीं, अुतराअीमें नहीं। हरे वृक्षोंकी छायामें हम चलते गये। दस बजनेके क़रीब ग्योकिश्शो पहुँचे। यहाँ अेक पर्वतवक्ष-में खुदी पचास फ़ीट अूँची पद्मासनासीन बुद्धमूर्ति है। अिसका आसन ही ३० फ़ीट अूँचा है। कलाकी दृष्टिसे अच्छी तो नहीं कही जा सकती, किन्तु कोङ्गो-सान्की यह सबसे बळी शिलोत्कीर्ण मूर्ति है। किसी समय यहाँ मंदिर रहा होगा, किन्तु जब बौद्ध-धर्मके बुरे दिन आये, तो वह मठ अुजळ गया। अब सामने चबूतरासा है। जिसकी मरम्मत शायद होती रहती है। किसीने अेक पत्थरकी लालटेन भी लगा दी है।

कुछ समय और अुतरनेपर हम मक-अिन् (महायान मठ)के सामने पहुँचे। काले, सफ़ेद दो शिलापट्टों पर लम्बे और नये लेख अुत्कीर्ण हैं। काला शिलापट्ट तो पालिशके कारण चमाचम चमक रहा था। रास्ता छोळ पचास गज अूपर बढ़नेपर मठ मिला। मठकी सभी अिमारतें नअी हैं, और सभी

साफ़-सुथरी तथा अच्छी अवस्थामें हैं। भिक्षु भी बगुलेके पर जैसे कपळे पहने थे। अिनको देखनेसे मालूम होता है, कि कोरियामें बौद्धधर्मकी फिर जागृति हो रही है। यहाँ तीस भिक्षु रहते हैं।

और अुतरनेपर नदीतटपर अेक जापानी भोजनालय मिला। नदी पार कुछ अूपर फुनोकुत्स बौद्ध मठ है। अिसका अेक देवल अेक चट्टानकी छोरपर बना है, और अुसके बाक़ी भारको सँभालनेके लिये अेक लोहस्तम्भ लगा है। यह अेक स्तम्भी मठ कोङ्गो-सान्‌की अजायबातमेंसे है।

शिलाओंमें छै छै अिंच गहरे कितने ही लेख हैं। अिनमें अधिकांश नये हैं। कुछ मिनट और अुतरनेपर नदीकी बाओं ओर रास्तेकी अेक शिला-में बहुतसी मूर्तियाँ अुत्कीर्ण हैं। सामने तीन बुद्धमूर्तियाँ हैं, अिसीलिये जापानी लोग अिसे सम्त्बुसुगन् (तीन-बुद्ध-शिला) कहते हैं।

ग्यारह बजेके कुछ बाद हम हचोकुन्‌जी मठमें पहुँचे। यहाँ भी ३० भिक्षु रहते हैं। मठ अच्छी अवस्थामें है। कोरिया भाषामें अिसे प्यो-हुन्-शा कहते हैं। प्योहुन् नामक अेक यशस्वी भिक्षुने ६७७ अी० में अिसकी स्थापना की थी। किन्तु अुस समयकी कोअी चीज़ अब नहीं मौजूद है। प्रधान मंदिर तथा और अिमारतें पंद्रहवीं सदीमें बनी थीं। अिस मठके अेक दर्जन शाखामठ हैं।

यहीं हमें अगले चोअन्-जी मठके अेक भिक्षु तथा अुचिकोङ्-गोके स्टेशन मास्टर मिल गये। नीचे चले। प्राय: डेढ़ मीलपर चोअन्‌जी (चङ्-अन्-शा) मठ है। अिस मठकी स्थापना पाँचवीं सदी में हुअी थी। अनेक शिल्पियोंने अिसे अति सुन्दर रूप दिया था। किन्तु ५५६ अी० में आगसे जलकर अिसकी राख मात्र रह गअी। दसवीं और पंद्रहवीं सदियों-में अिसके पुनर्निर्माणमें राजाओंका हाथ रहा। किन्तु, सोलहवीं सदीके जापानी हमलेमें यह फिर आगकी भेंट हुअी; और ताअियुहोदेन् मंदिर

मात्र बच रहा। रेलके स्टेशनके पास होनेसे अब अिस मठकी भी श्रीबृद्धि हुअी है। ६० भिक्षु रहते हैं।

कोङ्गो-सान्के अिन पुराने मठोंके बारेमें हम पढ़ते हैं, कि वह चित्र, मूर्ति और सुन्दर सुन्दर अिमारतोंसे सजाये गये थे। किन्तु, आज देखनेपर सिवाय दो चार पाषाण स्तूपोंके कोअी भी चीज़ अुस समयकी नहीं मिलती। प्रश्न होता है—आग लगनेसे काठके मंदिर-मूर्तियाँ, तथा चित्रपट भले ही जल जायें, किन्तु, आख़िर अुनके भीतर धातुकी मूर्तियाँ घंटे आदि रहे होंगे, वह कहाँ गये? जान पळता है, बीच-बीचमें मठोंकी परंपरा अुच्छिन्न होती रही है। और कितने ही वर्षों तक मठकी भूमि भर रह जाती रही है। ह्रासकी सीमापर पहुँचते समय मठके निवासी मूर्ति आदि निकाल ले जाते रहे होंगे, और नये तौरपर आबाद करनेवालोंको हर बार नया सामान जोळना पळता रहा होगा। अिसकी पुष्टि भी होती है। हमारे साथी श्री कुरिता अबकी बार गन्ज़न्से आठ सौ येन् (छै सौ रुपये) में अेक अवलोकितेश्वरकी सुन्दर मूर्ति लाये हैं। वह अुसे सात सौ वर्ष पुरानी कहते हैं, जिसमें सन्देह नहीं, बल्कि वह और पुरानी हो तो कोअी अचरज नहीं। मूर्ति अुस समयकी है, जब कोरियामें मूर्ति शिल्प अुत्कर्षपर था। मूर्तिका मूलस्थान क्या है, यह तो नहीं मालूम हुआ, किन्तु बहुत कुछ सम्भव है, यह कोङ्गो-सान्के पुराने मंदिरोंकी होगी।

स्टेशन मास्टरसे मालूम हो चुका था, कि अन्तिम ट्रेन साढ़े तीन बजे जायेगी। जाकर मंदिरोंके दर्शन किये। भिक्षुओंसे मिले। मध्याह्न भोजन समाप्त किया। फिर थोळी देर विश्राम किया। और दो बजे रवाना हुये। स्टेशन तक (प्रायः १॥ मील) पहुँचानेके लिये तीनों साथी भी चले। मठके कार्यालयके सामने लोहे और सीमेंटका सुन्दर पुल है, यहाँ तक मोटरें भी आती हैं। सळक अच्छी है। जहाँ-तहाँ कोरियन, और जापानी होटल हैं।

स्टेशन प्रायः १।। मीलपर है। अुससे पहले ही योरोपियन ढंगका चोअन्जी होटल है, जो रेलवे द्वारा संचालित है।

स्टेशनपर पहुँचनेपर मालूम हुआ, अभी गाळीके आनेमें आध घंटेकी देर है। स्टेशन मास्टर साहेबने बहुत ख़ातिर की। वह तो खैर जापानियोंके स्वभावमें है। हमारे अेक परिचितने स्टेशनके पासवाले जापानी होटलके मालिकके नाम परिचयपत्र दिया था। पत्र पानेपर वह भी पहुँच गये। अिस प्रकार अिन पाँच मूर्तियों तथा स्टेशनके अन्य कर्मचारियोंने अैसी बिदाअी दी, जैसे कोअी बळा आदमी बिदा हो रहा हो।

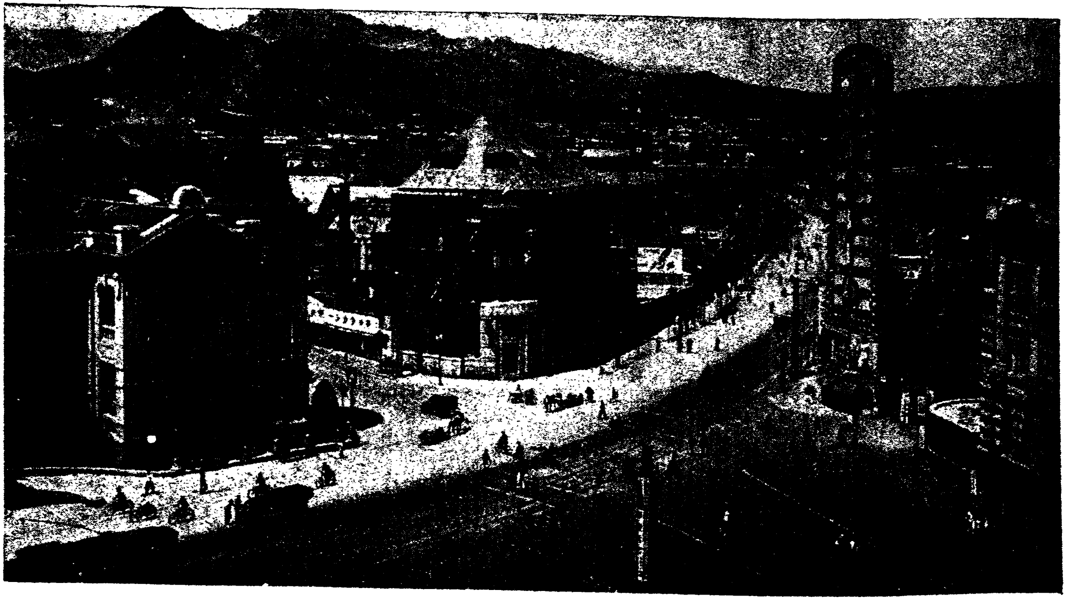
यहाँसे तेचुगन् तक (प्रायः ७० मील) अेक कम्पनीकी बिजलीचालित रेल है। पहाळोंकी अधिकताके कारण बहुतसी सुरंगें पळती हैं। लाअिन बळी लाअिन (ब्राड-गेज) है। अिंजीनियरसे पूछनेपर मालूम हुआ, लाअिन बनवानेमें प्रतिमील पंद्रह हज़ार येन् खर्च पळे हैं। हिन्दुस्तानमें अितनी सस्ती लाअिन नहीं बन सकती। अितनी सस्ती लाअिन क्यों न बने, जब चीज़ें जापान जैसी सस्ती हों, अिंजीनियरोंकी तन्ख़ाह सत्तरसे चार सौ रुपये तक हो।

९।। बजे रातको गाळी केअिजो स्टेशनपर पहुँची; प्लेटफ़ार्मपर आते ही देखा श्रीताची पहुँचे हुये हैं, और अिस प्रकार भाषाकी दिक़्क़तका सामना न करते हम हिगाशी होङ्गान्जी मंदिर पहुँच गये।

२४—केञ्जिजो (सोल)

केअिजो कोरियाके गवर्नर जेनरलका निवासस्थान है। कोरियन भाषामें अिसे सोल् या सिओल (Seoul) कहते हैं। १३९२ अी० से २२ अगस्त १९१० अी० तक यह कोरियाकी राजधानी रहा। आजकल जन-संख्या लगभग ४ लाख है, जिसमें अस्सी हज़ारसे अूपर जापानी तथा तीन हज़ारके क़रीब चीनी और दूसरे हैं। अूँचे पथरीले तथा हरे पहाळोंके बीच अेक विस्तृत अुपत्यकामें बसा यह नगर देखनेमें बळा सुन्दर मालूम होता है और हान्की सुन्दर धार सोनेपर नगीनेका काम करती है।

मैं ग्यारह अगस्तको सवा तीन बजे केअिजो पहुँचा था और अुसी रात ११ बजे मुझे कोङ्गोसान्के लिये रवाना होना था, तो भी श्री ताची और ससाकीकी सलाह हुअी कि शहरके कुछ स्थानोंको देख लिया जाय। सोलका अक्षांश ३८ डिग्रीके क़रीब है, अिसलिये आजकल ७॥ बजे तक अँधेरा नहीं छाता। ५ बजेके क़रीब हम लोग मोटरसे निकले। पहले छोसन्-जिङ्-गू (कोरियाका शिन्तो मन्दिर) पहुँचे। यह मंदिर आधुनिक जापानके पुनरुज्जीवक सम्राट् मेअिजी (१८६७-१९१२ अी०)की स्मृति-में थोळे ही दिन पहले बनकर तैयार हुआ है। देवदारके वृक्षोंके बीच अेक पहाळी बाहींपर अैसे स्थानमें यह अवस्थित है, जहाँसे प्रायः सारा शहर और अुसके पीछे खळी पर्वत-शृंखला दिखलाअी देती है। मेअिजी-जैसे



६७—कोरिया—केजो—नगर (पृ० ३०७)

सम्राट्की स्मृतिमें अैसा स्थान चुनना ही चाहिये था। मंदिरके सामने अेक समतल भूमि है, जिसमें शाम-सवेरे सैकळों नागरिक प्राकृतिक दृश्य देखने आया करते हैं।

दूसरा स्थान नन्दाओी-मोन् है। यह पूर्व ओरका प्राचीन नगर-द्वार था। आजकल सळक आस-पाससे निकाल दी गओी है, अिसलिये द्वारके बीचमे जानेवाले बहुत कम ही हैं। खपळैलसे छाया यह द्वार पुराने राजप्रासादोंका अेक अच्छा नमूना है।

नगरके भीतरसे होती हमारी मोटर अेक दूसरी पहाळी बाहींपर चली। यह भी स्थान छोसन्-जिङ्-गूकी भाँति ही रमणीय तथा दर्शनीय है। यहीं हकुबुन्जी बौद्ध-मठ है, जिसे निर्मित हुये अभी कुछ ही वर्ष हुये हैं। प्रिन्स हकुबुन् अितो जापानके अेक बळे राजनीतिक नेता थे। रूस-जापान-युद्धके बाद कोरियापर जापानका संरक्षण स्थापित हुआ और प्रिन्स अितो प्रथम रेजीडेण्ट जेनरल नियुक्त हुये। आखिर कोओी देश बिना भीतरी कमज़ोरियोंके सहज ही परतन्त्र नहीं हुआ करता। कोरियाके शासकोंमें भी अैसे अनेक दोष थे। सबसे अधिक तो बात यह थी कि कितने ही भारतीय महाराजोंकी भाँति कोरियाकी सारी आयको राजा अपना पाकेट-खर्च समझते थे। अेक तरहसे वाजिदअलीशाहीका ढंग था। और मन्त्री तथा दूसरे अधिकारी लूटमें चर्ख़ा-नफ़ाकी माला जप रहे थे। रेज़ी-डेण्ट जेनरल अितोने जब आमद-ख़र्चका लेखा ठीक करना चाहा, तो जिनके स्वर्थोंको धक्का लग रहा था, वे सभी भीतरसे नाराज़ हो गये। राष्ट्रकी स्वतन्त्रताके खोनेसे नये ख़ूनमें गर्मी आनी ज़रूरी ही थी, अुसमें असन्तुष्ट बळे आदमियोंके बढ़ावेने आगमें घीका काम किया। अितो दिलसे कोरियन लोगोंकी भलाओी चाहते थे, किन्तु अवकाश ग्रहण करनेके बाद जब वह अक्तूबर १९०९ अी० में रेल द्वारा यूरोप जा रहे थे, अुसी समय हर्बिन

(मंचूरिया)में वह अेक कोरियनकी गोलीके शिकार हुये, और अुसके साथ ही कोरियाका जापानमें मिलाया जाना भी पक्का हो गया।

हकुबुन्जी मठ अुसी प्रिन्स हकुबुन् अितोकी स्मृतिमें बना है। मठ जापानके ओर मंदिरोंके ही आकारका है, किन्तु भूकम्पका अुतना भय न होनेसे दीवारोंमें सीमेंटका अिस्तेमाल किया गया है। यह जेन या ध्यान सम्प्रदायसे सम्बन्ध रखता है। मंदिरको खोलकर दर्शन कराया गया। सभी जगह जापानियोंकी सादगी, स्वच्छता और कला-निपुणता दिखाअी पळ रही थी। मैंने कहा—आप लोग अपने धर्म-प्रचारको जापानी गृहस्थों तक ही सीमित न रखें, धर्ममें अिस प्रकारकी राष्ट्रीयता बुद्धकी शिक्षाके प्रतिकूल है। साथके दो अन्य भिक्षुओंकी ओर अिशारा करते अुत्तर मिला—यह दोनों सज्जन कोरियन हैं। जापानी और चीनीके चेहरेमें आप आसानीसे फ़र्क़ देख सकते हैं। अुसी तरह मंगोल, तिब्बती या बर्मीसे भी जापानी चेहरेको अभ्यस्त आँखें आसानीसे अलग कर सकती हैं, किन्तु सिवाय किसी-किसीका क़द बळा होनेके कोरियन लोग जापानियोंसे चेहरे-मुहरेमें भेद नहीं रखते। हाँ, अिस समानताको दूर करनेमें कोरियन लोगोंकी अपनी जातीय पोशाकपर हदसे अधिक आग्रह बहुत काम करता है।

अब हम चैत्य-अुद्यानमें गये। यह शहरके भीतर है। कभी यहाँ अेक बौद्ध मंदिर था, जिसकी अिमारतोंमें अेक चौकोर चैत्य (पगोडा) बच गया है, अिसीलिये बाग़का नाम चैत्य-अुद्यान या (पगोडा-पार्क) पळ गया है। हम आठ बजे रातके बाद पहुँचे। अुस वक़्त, सैकळों कोरियन नर-नारी वहाँ मौजूद थे। रेडियोका फोन लगा होनेसे गाना सुननेके लिये बहुत-से लोग पल्थी मारकर बैठे हुये थे।

लौटते वक़्त हम जापानी बाज़ारसे निकले। अिस बाज़ारमें सभी दूकानें जापानियोंकी हैं। सळक कम चौळी है। यदि अिसकी रास्तेकी लाल-

टेनें, दूकानोंकी सजावट और खरीद-बेच करनेवालोंको आप देखेंगे तो मालूम होगा, कि तोक्योके किसी मुहल्लेमें आ गये।

× × ×

१७ अगस्तको फिर सोलके कुछ स्थानोंको देखने निकले। पहले चोज़िया डिपार्टमेंट स्टोरके स्वामीके पास गये। क्योतोके विद्वान् बौद्ध नेता श्री ओत्नीसीने अिन्हें पत्र लिखा था। वह अपने यहाँ ठहरानेके लिये प्रतीक्षा कर रहे थे। अुन्होंने हमारे साथ अपने अेक कर्मचारीको शहर दिखलानेके लिये दे दिया। श्री किम्—यह अुक्त सज्जनका नाम है—कोरियन हैं, और कअी वर्ष संयुक्त राष्ट्र अमेरिकामें रह चुके हैं। अपनी भाषाके कवि हैं और कुछ कवितायें आपने अँगरेजीमें भी की हैं। अुनके साथ शहरसे होते पहले हम गवर्नर जेनरलके सेक्रेटरियटमें गये। अेक अफ़-सरके लिये परिचय-पत्र था, अिसलिये मिलते ही अुन्होंने अेक आदमी साथ कर दिया। सेक्रेटरियटकी अिमारत चौमहली है और आठ-नौ वर्ष पहले तैयार हुअी थी। गवर्नर-जेनरलका दरबार-हाल विशेष तौरसे सजाया गया है। प्रधान कुर्सीके पीछे जापान-सम्राट्का अेक विशाल चित्र टँगा है। बाहर दरबार-आमका प्रशस्त हाल है। अिसकी दीवारोंपर कुछ चित्र टँगे हैं, जिनमें दोमें कोरियन जीवनको दिखलाया गया है, और बाक़ी में पौराणिक कथानकोंके अंकन हैं। अिसके स्तम्भों, कटघरों आदिमें कअी तरहके संगमरमरोंका अिस्तेमाल हुआ है।

सेक्रेटरियटसे थोळी दूरपर म्यूजियम है। म्यूज़ियमकी अिमारत अच्छी है और संगृहीत वस्तुयें भी सुन्दर हैं, यद्यपि अुनकी संख्या थोळी है। मूर्तियोंमें प्राय: सभी बौद्ध हैं। देखनेसे मालूम होता है, पाँचवीं, छटीं और सातवीं शताब्दी कोरियाकी मूर्तिकलाका सुवर्णकाल था। म्यूज़ियमकी दीवारों और चट्टानोंपर अुत्कीर्ण पुरानी मूर्तियोंके नमूने बने हुये हैं। वहाँसे

हम सिंहासन-भवनमें गये। बळे आंगनके बीचमें मंदिरनुमा यह चौकोर मकान है। आँगन चारों ओर बरामदेनुमा घरोंसे घिरा है। आजकल अिनमें पुरानी तोपें, बन्दूक़ें तथा कितनी ही मूर्तियाँ रखी गअी हैं। आँगनमें पत्थरकी फ़र्श है, जिसपर जहाँ-तहाँ घास अुग आअी हैं। भवनमें कोरियाके राजाका सिंहासन रखा हुआ है और कुछ हिस्सोंमें यहाँ भी तलवार, भाले आदि सजाये हुये हैं। द्वारसे निकलकर दरवाज़ेकी ओर चलने लगे तो देखा कि सीढ़ी तीन हिस्सोंमें विभक्त है। अगल-बगलमें तो सीढ़ी ही है, किन्तु बीचमें ढालुआँ पत्थर लगे हैं, जिनमें नागके रूप अुत्कीर्ण हैं। श्री किम्‌ने पूछनेपर बतलाया कि यह ढालुआँ पत्थर राजाके अुतरनेका स्थान है, वह सर्वसाधारणके रास्ते थोळे ही अुतर सकते थे? अुन्होंने यह भी कहा—राजा अगल-बगलमें दो आदमियोंके सहारे अुतरा करता था, अिसलिये गिरनेका डर न था। सीढ़ियोंके नीचे रास्तेके दोनों तरफ़ थोळी-थोळी दूरपर पत्थर गळे हुये हैं, जिनपर कुछ लिखा हुआ है। किम् महाशयने बतलाया—दाहिनी बगलके ये पत्थर प्रधान-मन्त्री तथा दूसरे कर्मचारियोंके बैठनेके स्थान हैं और बाअीं ओरवाले सेनापति और सेनानायकोंके बैठनेके स्थान। राजाके निकलनेपर सब लोग अपने-अपने दरजेके अनुसार अिन जगहोंपर अुपस्थित रहते थे।

अेकाध स्थानोंको और देखनेपर भोजनका समय हो गया और मैंने किम् महाशयसे कोरियन भोजनके लिये कहा। रास्तेमें अेक अर्द्ध सरकारी औषधालयमें जानेका मौक़ा मिला। प्रधान डाक्टरने बळे प्रेमसे अपनी संस्थाको दिखलाया। यह संस्था १५ प्रकारकी औषधियोंको तैयार करती है, जिन्हें पुलिस तथा दूसरे सरकारी महकमे दाम देकर ख़रीदते हैं और ग़रीबोंको वे बिना मूल्य वितरण की जाती हैं। दस्त, पेट-दर्द, ज्वर, घाव, चर्मरोग आदिपर यह दवायें बहुत अच्छी चलती हैं। अिनका प्रचार भी ख़ूब



६८—केअिजो—चैत्य-अुद्यान (पृ० ३१०)



६९—कोरिया—तरुणी (पृ० २९२)

है और आजकल ५०० आदमी (जिनमें अधिकांश कोरियन लळकियाँ हैं) दवाओी बनानेके काममें लगे हैं।

किम् महाशयका होटल पासहीमें था। भारतके मुक़ाबिलेमें तो अिसे गन्दा नहीं कह सकते, किन्तु जापानी होटलोंकी सफ़ाओीका यहाँ नाम न था। होटल-संचालिका अेक कोरियन महिला हैं। १०-१२ कोठरियोंको अुन्होंने बोर्डरोंको दे रक्खा है और अेक ओर अुनकी भोजनशाला है। किम् महाशयकी कोठरीमें बैठे। कोठरी चार-पाँच हाथ लम्बी और अुतनी ही चौळी होगी। भीतर दीवारोंपर काग़ज़ चिपका हुआ है और फ़र्शपर तेल-वाला काग़ज़ मढ़ा है। भोजनकी तैयारीमें अभी आध घंटेकी देर थी, तब तक किम् महाशयसे बातचीत होने लगी। हालमें अुन्होंने छोटे बच्चोंके लिये लकळीके रंगीन अक्षर बनाये हैं। अुन्होंने अुसका बक्स दिखलाया। कोरियन भाषाके लिये भी यद्यपि चीनी शब्द-संकेतवाले अक्षरोंका ही अुपयोग किया जाता है, किन्तु कोरियनमें अुच्चारण होनेवाली वर्णमाला भी है। जापानियोंके विषयमें अुनका कहना था——वैसे सभी जापानी कोरियावालोंके साथ अच्छा बर्ताव करते हैं, किन्तु सैनिक और कुछ राज-कर्मचारी अुन्हें नीची निगाहसे देखते हैं।

भोजन आया। अेक छोटी-सी चौकीपर तीन-चार प्यालियाँ साग-सब्ज़ीकी, तीन-चार मछली और मांसकी और अेक बळे प्यालेमें भात। खानेके लिये अेक चम्मच और दो लकळियाँ थीं। चम्मच भात खानेके लिये अिस्तेमाल किया जाता है, और लकळियाँ तरकारियोंके लिये। जापानी भोजनसे स्वादमें बहुत फ़र्क़ था। जापानी भोजनमें मिर्च-मसालेका नाम नहीं होता, और यहाँ अुनका ख़ूब व्यवहार। अेक अचारमें अितनी लाल मिर्चें थीं, कि मुझे मारवाळ याद आ गया। भोजन कितना पसन्द आया, अिसके लिये अितना ही कहना काफ़ी है कि पहले मैं आधे भातको निकलवा देना चाहता था, किन्तु अन्तमें वहाँ अेक कण भी बाक़ी नहीं रह गया।

मैंने कोरियन भोजनकी बळी प्रशंसा की और साथ ही कहा—जापानियों-का भोजन सैनिक भोजन है। किम् महाशयने कहा—हम लोग जापानी भोजनको पसन्द नहीं करते। बिलकुल निःस्वादु और फीका मालूम पळता है। खैर, मैं तो वैसा नहीं कह सकता।

१८ अगस्तकी रातको मंचूरियाके लिये रवाना होना था, अुसी दिन सोल बुद्धिस्ट-क्लबकी ओरसे चायपार्टी दी गअी। पार्टीमें सत्रह-अठारह पुरुष शामिल थे, जो सभी सोलके गण्यमान्य जापानी व्यवसाअी, डाक्टर, प्रोफेसर तथा पुरोहित थे। आजकल यूनिवर्सिटीमें गर्मियोंकी छुट्टी होनेसे सभी प्रोफ़ेसर बाहर गये हुये हैं, अिसलिये कितनोंसे भेंट न हो सकी। स्वागत और शिष्टाचारकी बातोंके बाद कुछ भाषण और फिर वार्तालाप द्वारा विचार-विनिमय हुआ। भारतमें बौद्ध धर्मके विषयमें सभीको जाननेकी बहुत अिच्छा है। मैंने कहा—सात सौ वर्ष पूर्व बौद्ध धर्म भारतसे लुप्त हो गया। और ६०, ७० वर्ष पूर्व तो अधिकांश भारतीय अुसके नाम तकको भूल गये थे, किन्तु नअी जागृतिके साथ जब भारतीयोंने अपने अितिहासको वैज्ञानिक ढंगसे अध्ययन करना शुरू किया तो अुन्होंने अनुभव किया कि भारतकी कला, दर्शन, साहित्य—सभी अङ्गोंमें बौद्ध धर्मने कितना कार्य किया है। अिसीलिये लोग बौद्ध धर्मकी ओर आकृष्ट हो रहे हैं, और आशा है, कुछ समयमें यह कहनेको नहीं रह जायगा कि भारतमें बौद्ध धर्म नहीं है।

आज गाळी कुछ लेट थी, अिसलिये ८। बजे वह रवाना हुअी। १ येन् (बारह आने) और दे, हमने सोनेकी सीट रिज़र्व करा ली थी। गाळीमें पोर्ट-आर्थरके अेक प्रोफ़ेसरसे परिचय हो गया, जिससे दूसरे दिन अन्तुङ्गमें मंचूकोके कस्टम्के झंझटसे बचनेमें बळी सहायता मिली।

३—मंचूरिया

२५—मुक्दन्

अन्तुङ शहर यलू नदीके दाहिने तटपर बसा है। समुद्र वहाँसे बहुत दूर नहीं है, और छोटे जहाज़ अन्तुङ तक पहुँच जाते हैं। अनाजके निर्यातके अतिरिक्त यलू द्वारा अूपरकी बहुत-सी लकळी लाअी जाती है, और वह यहाँसे भिन्न-भिन्न जगहोंपर भेजी जाती है। अब तो कितनी ही नअी चिमनियाँ भी आकाशको धुमिल करती जा रही हैं। अन्तुङ दिनपर दिन अुन्नति कर रहा है, शहरकी जन-संख्या १,७४,२०० है, जिसमें ११,७७१ जापानी हैं।

यलू पार होते ही सफ़ेद रंग लुप्त हो जाता है, और अुसकी जगह नीली पोशाकवाले चीनी किसान दिखाअी पळने लगते हैं। भूमिपर अब भी जहाँ-तहाँ पहाळ ही पहाळ दिखाअी पळते हैं, किन्तु अब खेत अधिक हैं। आख़िर कोरियन आलसियोंके देशसे निकल मेहनती चीनियोंके प्रदेशमें जो चल रहे हैं। खेतीमें बाजरे, अुळद, सोया, सवाँ, तथा कितनी ही भाँति-की साग-सब्ज़ियाँ पाअी जाती हैं। वर्षाका दिन होनेसे अेक अंगुल भी भूमि अैसी नहीं दिखाअी पळती, जो हरियालीसे आच्छादित न हो। वृक्षों-में सूचीपत्रक देवदारकी जाति भी शामिल है। कोअी स्टेशन मुश्किलसे मिलता, जहाँ हमें जापानी नरनारी दिखाअी न पळते। यह बतला रहा था, कि मंचूरियामें जापानी प्रभाव कितने वेगसे बढ़ रहा है। हर जगहकी तरह यहाँ भी ट्रेनमें भोजनगाळी है, जिसमें जाकर मुसाफ़िर भोजन कर सकते

हैं। भोजन जापानी और यूरोपियन दोनों ही प्रकारका मिलता है। स्टेशनों पर लकळीके बक्समें रखकर बिकता सस्ता बिन्तो (=भोजन) भी सुलभ है। सस्तापन तो जापानी शब्दका दूसरा पर्याय है।

दोपहर बाद हम अन्शङ स्टेशनपर पहुँचे। यहाँ लोहेका कारख़ाना है। यहाँके खनिज पत्थरोंमें लोहेका परिमाण अधिक तो नहीं है, तो भी जापान-को अपने लोहेकी कमी किसी न किसी तरह पूरी करनी है। अब मंचूरियाके पश्चिमी भागमें भी अच्छे लोहेकी खानें मिल गअी हैं, जिन्हें कि जापान शीघ्र ही अपना कार्यक्षेत्र बनाने जा रहा है।

यलू नदीके अिस पार अेक बात और देखी। जहाँ कोरियाके स्टेशनों-पर साधारण पुलिसका भी अभावसा था, वहाँ अिधर मंचूरियाके हर अेक स्टेशनपर मोर्चेबंदी है। दीवारोंपर बन्दूक़के सूराख़ हैं, तथा कहीं-कहीं गढ़ा खोद बालूकी बोरियाँ रख मोर्चेबंदी की गअी है। और सशस्त्र जापानी और मंचूरियन सिपाही तो हर स्टेशनपर हैं। जापानी और मंचूरियन (चीनी) सिपाहीमें कितना फ़र्क़ है, अिसका अुदाहरण भी मिल गया। अेक स्टेशनपर ट्रेन ३,४ मिनटके लिये खळी हुअी थी। जापानी सिपाही गाळीके पहुँचने-पर वहाँ मौजूद था; और चीनी सिपाही जब ट्रेन सीटी देकर खिसकने लगी, तो दौळता-हाँफता पहुँचा। पेटी अुसने पास पहुँचकर बाँधी। शाङ-घाअीकी भाँति, मंचूरियामें भी चीनी स्त्रियोंमें बाल कटानेकी बीमारी बुरी तरहसे फैली है। जापानी स्त्रियाँ यहाँ भी केशवती ही अधिक देखी जाती हैं, और यदि किसीने बाल कटाया भी, तो अुसने आधा तीतर आधा बटेरवाला फ़ैशन नहीं स्वीकार किया है।

१।। बजे हमारी ट्रेन मुक्दन् स्टेशनपर पहुँची। अुतरकर बहुत तरद्-दुद करनेकी आवश्यकता नहीं हुअी। हिगाशी होङ्ग्वान्जी मंदिरके पुरोहित श्री सोर्योने आकर नमस्कार किया। सोलसे अुन्हें चिट्ठी और तार दोनों



७०——मंचूरिया——अेक चंडूखाना (पृ० ३२०)

मिल चुके थे। सीधे मोटरसे अुनके मंदिरपर पहुँचे। यह सारा मुहल्ला ही जापानियोंका है। वैसे दक्षिण मंचूरिया रेलवे—जो कि जापानी सम्पत्ति है—का अन्तिम स्थान होनेसे यहाँ पहले भी जापानियोंकी संख्या काफ़ी थी, किन्तु सितम्बर १९३१के बाद वह संख्या तिगुनीसे अूपर हो गअी है। पहले यहाँ २० हज़ार जापानी थे, और अब वह साठ हज़ारसे अूपर हैं। सारे शहरकी आबादी साढ़े चार लाखसे अूपर है।

चीनका सम्राट् होनेसे पूर्व मुक्दन् मंचू-वंशकी राजधानी था। मंचू-वंश संस्थापक नू-हाचू यहीं रहते थे। अुनके पोते शुन्-चीके समय राजधानी पेकिङ चली गअी, और वहींसे १६४४-१९११ अी० तक मंचू-वंशने सारे चीनपर शासन किया। वह पुराने मंचू राजप्रासाद मुक्दन्में आज भी मौजूद हैं। मंचूरियाके वर्तमान राजा खाङ-ते अथवा पु-यि चीनके दसवें और अन्तिम मंचू सम्राट् थे, जिन्हें गद्दीसे हटाकर प्रजातंत्रकी स्थापना हुअी। अुक्त प्रकारसे मुक्दन् मंचू-वंशके लिये बहुत महत्त्व रखता है। किन्तु, मंचूरियामें फिरसे राजतंत्र स्थापित होनेपर मुक्दन्को राजधानी बननेका सौभाग्य नहीं प्राप्त हुआ, और अुसकी जगह अेक गुमनाम नअी आबादी चाङ-चुङ, सिङ-किङके नामसे राजधानी बन गया। कारण, सिङकिङका अधिक केन्द्रीय होना, तथा नये सिरेसे नगर बनानेमें योजनाके अनुसार निर्माणका सुभीता होना है।

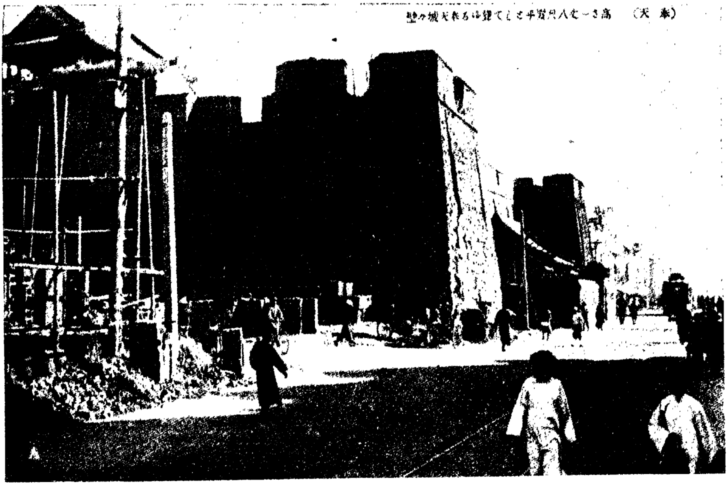
२० अगस्तको मुक्दन् देखने निकले। पहले राष्ट्रीय म्युजियम् गये। यहाँकी सभी संगृहीत वस्तुयें चाङ-सो-लिन्के पार्श्वचर जेनरल ताङ-यु-लिन्ने अेकत्रित की थीं। मंचूरिया दख़ल होते समय अभी मकान अधूरा ही था। जेनरल महाशय जेहोल प्रान्तके गवर्नर होकर वहीं रहते थे। अेकाअेक जापानियोंने हमला बोल दिया। संगृहीत वस्तुओंमें मूर्ति, चित्रपट, चीनी बर्तन, पत्थर छापा आदि हैं। और कलाकी दृष्टिसे सभी वस्तुयें बहुमूल्य

हैं। तिनमहले मकानके सभी कमरे अिन संग्रहोंसे भरे हैं। जेनरल ताङका यह काम तो जरूर चिरस्थाअी रहेगा।

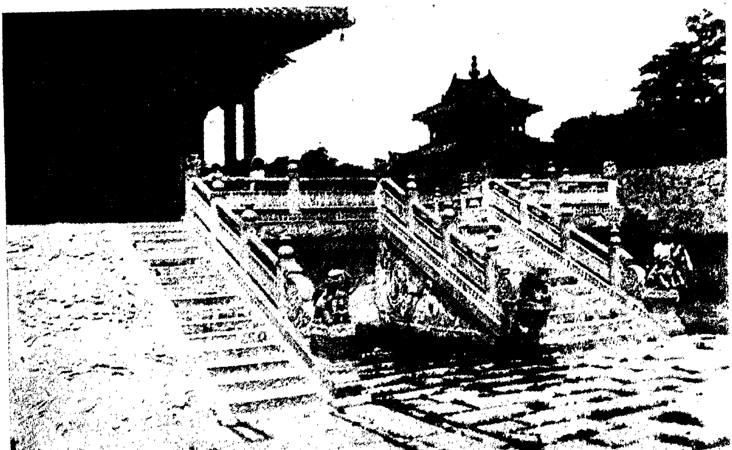
वहाँसे हम प्राकारवेष्ठित पुराने नगरमें गये। अन्य पुराने नगरोंकी भाँति अिसकी गलियाँ भी बहुत सँकरी हैं। और आजकल बरसातके दिनमें कीचळके मारे चलना मुश्किल है। हम लोग पहले पुराने राजप्रासादमें गये। आजकल यह प्रासाद संग्रहालय (जादूघर)के रूपमें परिणत हो गया है। सिंहासनवाले कमरेमें सम्राट्के अुपयोगकी बहुतसी चीजें हैं। अेक कमरेमें चंगेज़ और अुसके मंगोलवंशके सम्राटों तथा सम्राज्ञियोंके चित्र टँगे हैं। दूसरे कमरेमें अुसके अुच्छेदक मिङवंशके राजा-रानियोंके चित्र हैं। तीसरेमें मंचूवंशके सम्राट् हैं। भिन्न-भिन्न समयके हथियारों तथा वेष-भूषाके भी बहुतसे नमूने हैं।

मंचूरियाके शासक चाङ-सो-लिन् और अुनके पुत्र चाङ-स्वे-लियाङका भी शासन-केन्द्र मुक्दन् ही रहा। हम लोग अुस महलको भी देखने गये, जिसमें वह रहा करते थे। पासमें सिपाहियोंकी बारकें, तथा दूसरी सरकारी अिमारतें हैं। शहरके बाहर चाङका बारूदख़ाना था। अिसकी तैयारीमें चाङ पिता-पुत्रने रुपयोंको पानीकी भाँति बहाया था, किन्तु, जापानसे मुक़ाबिलेके समय चाङ पेकिङकी सैर कर रहे थे, और यह सारा बारूदख़ाना जापानके हाथ लग गया। पुराने शहरको देखते हम वन्-सु-स्सि बौद्ध मठमें पहुँचे। यह मंचूरियाके बळे बौद्धमठोंमें है। अिसकी स्थापना चार सौ वर्ष पूर्व हुअी थी। आजकल ८० भिक्षु रहते हैं। वैसे मठ अच्छी दशामें है; किन्तु जापानके मठोंकी सफ़ाअीसे अभ्यस्त आँखें चारों ओर मैलापन ही देख रही थीं। वहाँ हमें अेक जापानी बौद्धभिक्षु भी मिले। आशा है, चीनी बौद्धभिक्षु अपने जापानी भाअियोंके संपर्कमें आकर अुनसे बहुत कुछ सीखेंगे।

फिर नगरके छोरपर अवस्थित लामामंदिरमें गये। मंदिरकी अिमा-



७१—मंचूरिया—मुक्दन् (पुराना) (पृ० ३२३)



७२—मंचूरिया—मुक्दन् राजप्रासादकी सीढ़ियाँ (पृ० ३२३)

रतों और हातेको देखनेसे मालूम होता है, कि अवस्था अच्छी नहीं है। यह मंगोल-भिक्षुओंका—जो कि तिब्बतके बौद्धधर्मको मानते हैं—मठ है। मंचू राजाओंके दानसे अिसकी स्थापना हुअी थी। आजकल भी ३०, ४० मंगोल-भिक्षु यहाँ रहते हैं, किन्तु अुनका विद्या और वर्तमानकालकी ओर कोअी ध्यान नहीं। मठमें तिब्बती भाषा जाननेवाले व्यक्तिकी खोजमें हम पीछेके अेक मकानमें पहुँचे। मालूम हुआ यहाँ टशीलामाके आदमी रहते हैं। मुखिया तो नहीं मिले, किन्तु सहायकोंके साथ देर तक बात होती रही। बेचारे टशीलामाके तिब्बत लौटनेसे निराशसे जान पळते थे।

२६—सिङ्-किङ्

रातकी गाळीसे चलकर २३ अगस्तको सिङ्-किङ् पहुँचे। यहाँ भी स्टेशनपर हिगाशी होङ्गान्‌जी शाखा मंदिरके पुरोहित मौजूद थे। मंदिर केन्द्रीय स्थानपर है, किन्तु वह राजधानीके लायक़ आकारमें नहीं है, अिसलिये नअी अिमारतके लिये काफ़ी भूमि शहरके बिल्कुल गर्भमें ली गअी है। मंचूकोकी राजधानी होनेसे पूर्व सिङ्-किङ्का नाम चाङ्-चुङ् था। राजधानी होनेके साथ जहाँ तूफ़ानके वेगसे नये-नये मकान बनते जा रहे हैं, वहाँ अुसकी जन-संख्या भी बळे वेगसे बढ़ रही है। देखिये—

जन-संख्या जून १९३२	१,५२,०१७
,, ,, १९३३	१,९३,५५८
,, ,, १९३४	२,१८,६८६

जिनमें जापानियोंकी वृद्धि बळे ज़ोरसे हुअी है—

पूर्व	१०,०००
जून १९३२	१६,३५०
,, १९३३	२८,३४९
,, १९३४	३९,३३२

शहर बनानेमें धन कैसे बहाया जाता है, अिसे भी देखिये—

	१९३२ ई०	१९३३ ई०	१९३४ ई०
मंचूरिया सरकार	७,००,०००	१५,००,०००	६०,८४,०००
जापान सरकार	२५,००,०००	९१,१५,०००	४४,२१,०००
प्राइवेट (जापानी)	२६,८१,०००	३७,१३,०००	१,१५,८६,०००

शहरकी सड़कों, राजपथों, बाग़ों, आदिकी योजना तैयार हो चुकी है, और उसीके अनुसार मीलों तक शहरमें चारों ओर नये मकान बन रहे हैं। सिङ-किङको पूर्वकी पेरिस बनानेके लिये जापान जी-जानसे लगा हुआ है। उसका रुपया, उसकी बुद्धि दिल खोलकर ख़र्च की जा रही है। हज़ारों चीनी मज़दूर काम करनेमें लगे हैं। यहाँ आकर आप देख सकते हैं, कि जापानको अपने भविष्यपर कितना विश्वास है।

मुक्दन्में दो दिन डायरिया (दस्त)के फेरमें पड़ गये थे, इसलिये कमज़ोरी बहुत थी, किन्तु उधर प्रोग्रामके अनुसार चलना भी ज़रूरी था। २३ अगस्तको पहले जापानी सेनाके केन्द्रीय कार्यालयमें गये। इमारत भव्य तो ख़ैर, चीनी जेनरल भी बना सकते हैं, किन्तु यहाँ ईंटोंका वैभव थोड़ा ही है। सैकड़ों आदमी काम कर रहे हैं। सादे किन्तु प्रभावोत्पादक वर्दी पहने सैनिक अफ़सर इधरसे उधर जा रहे हैं, मालूम होता था सारा काम किसी नपी तुली गतिसे हो रहा है। दर्वाज़ेपर कार्ड देनेपर हम लोगोंको एक-एक बिल्ला लगानेको मिला। प्रतीक्षागृहमें थोड़ी देर जाकर बैठे, उसके बाद एक बड़े लिफ़ाफ़ेमें कुछ पुस्तकें लिये एक सज्जन आये। मालूम हुआ, आप कान्तोङ सेनाके दोभाषिया हैं। शिष्टाचारके बाद काम पूछा। मैंने कहा—मैं•नई सरकारके कामको जानना चाहता हूँ। उन्होंने लिफ़ाफ़ा सामने रखते हुये कहा—ये अंग्रेजीमें छपे बुलेटिन तथा पुस्तकें हैं। इनसे आपको कुछ परिचय मिलेगा। वैसे आपको सिङ-किङ-पर एक सर्सरी निगाह फेंकनेसे भी मालूम हो जायेगा, कि नई सरकार क्या कर रही है; किन्तु, जो आप देख रहे हैं, उससे कहीं अधिक निर्माण-



७३—मंचूरिया—चाङ-स्वे-लियाङ (पृ०३२३)

कार्यके लिये सरकार कमर कस चुकी है। सरकार राष्ट्रको सांस्कृतिक आर्थिक सभी दृष्टियोंसे अूँचे तलपर लाना चाहती है: और अुसे, सफलता पर पूरा विश्वास है।

न्याय-विभागकी भव्य अिमारत देखते, हम शिक्षा-विभागमें पहुँचे। अुसके अेक अफ़सर श्री ह्याशीके लिये अेक मित्रने पत्र दिया था, किन्तु आज वह आफ़िसमें न थे। थोळी दूरपर अेक चीनी बौद्ध-मंदिर है। जापानी लोग अिसे हञ्ञाजी (प्रज्ञा-मंदिर) कहते हैं। मंचूरिया सरकारके सेक्रे-टरियटके बीचमें अितना विस्तृत मंदिर बतलाता है, कि अभी अिस देशमें बौद्धधर्म जीवित है। जहाँ तक मंदिरकी सजावट, निर्माण, विस्तार आदिका सम्बन्ध है, हालमें यहाँ भी बहुतसे बळे-बळे मंदिर बने हैं, किन्तु जापानी बौद्धोंकी भाँति जनताके लिये नाना कामोंको हाथमें लेना, अभी चीनी भिक्षुओंने नहीं सीखा है।

लौटनेपर हमारे मेज़बानने बतलाया, कि यहाँ दो भारतीय दूकानें भी हैं। मुक्दन्में भी दो भारतीयोंका पता लगा था, किन्तु तबियत ठीक न रहनेसे नहीं मिल सका था। पता पूछकर हम लोग पहुँचे। मलूम हुआ, दौलतराम ऐंड संस, और बूलचंद्र दो सिंधी दूकानें हैं। दोनोंके मालिक हैदराबादके रहनेवाले हैं। बळे प्रेमसे मिले। अिन्हीं दोनों दूकानोंकी शाखायें मुक्दन् और हर्बिन्में भी हैं। रोज़गारकी हालत पूछने पर बतलाया—न अच्छा, न खराब। अुन्होंने यह भी कहा कि अुनके विदेशी कपळोंके ख़रीदार जापानियोंमें अेकाध नर्त्तकियोंको छोळ दूसरा, नहीं है। यह लोग हमेशा अपने देशका कपळा बर्तते हैं।

२७ — हर्बिन

२४ तारीख़को हम फिर शहर देखने गये थे। लौटनेपर मालूम हुआ, हर्बिनके हिगाशी होङ्-गान्-जीके पुरोहित आये हुये हैं, और वह आज ही पौने तीन बजेकी गाळीसे लौट जानेवाले हैं। साथका ख्यालकर हमने भी निश्चय किया, और पौने तीन बजे (दिन)की गाळीमें जा बैठे। देखा, अिस गाळीका तो रंग रवय्या ही दूसरा है। जापानसे लेकर अब तककी रेलोंमें तीसरे दर्जेके बेंचोंपर भी गद्दे बिछे होते थे, किन्तु यहाँ सूखी लकळी और अुसपर भी कहीं-कहीं वार्निश चिपचिप कर रही थी। यही लाअिन है, जिसे सरकारने सोवियटसे ख़रीदा है। अिस ट्रेनके अिंजन, डब्बे आदि सबसे पुरानापन टपक रहा था। प्लेटफ़ार्मपर जहाँ दो-तीन चीनी सिपाही खळे थे, वहाँ दो-अेक रूसी भी वर्दी लगाये डटे थे। गाळी ठीक वक्तपर चली। ६॥ बज रहे थे, अुसी समय अेक स्टेशनपर जा अिंजन बिगळ खळा हुआ। लोगोंने नाक-कान अैंठा, किन्तु कुछ नहीं। अन्तमें हर्बिनसे अिंजन भेजे जानेकी बात सुनी। चार घंटे तक वहीं बैठे रहे। नया अिंजन आया, और ९ बजेकी जगह १२॥ बजे रातको हम हर्बिनके हिगाशी होङ्-गान्जी मंदिरमें पहुँचे। यह अस्थाअी मकान है। नया मंदिर चौरस्तेपर बन रहा है। मंचूरिया क्या जहाँ-कहीं भी जापानी जाकर बसते हैं, घरोंके बननेके साथ-साथ अिनके मंदिर भी स्थापित हो जाते हैं। और परिवारोंकी संख्या और सम्पत्तिके साथ साथ मंदिरका भी वैभव बढ़ता है। कितने ही मंदिरोंने

अपने हातेके भीतर कुछ रहनेकी कोठरियाँ और घर बना रखे हैं, जिसमें जापानसे आये नये परिवार नाममात्र किरायेपर कितने ही महीनों तक रह सकते हैं। शिक्षाका कोअी प्रबन्ध न होनेपर यह मन्दिर प्रारंभिक शिक्षा देते हैं। बच्चोंकी धार्मिक शिक्षाके लिये रविवार स्कूल तो हर मंदिरमें हैं। अिनके अतिरिक्त जन्म, मृत्यु तथा दूसरे समय के धार्मिक कृत्य तथा धार्मिक अुपदेशकी व्यवस्था करना तो अिनका स्वकर्त्तव्य ही ठहरा। कार्यकी कमी-बेशीके साथ प्रधान पुरोहित अपने सहायक भी रखता है, जो अेकसे दस-दस पंद्रह-पंद्रह या अधिक हो सकते हैं।

मंदिरपर पहुँचते-पहुँचते आधीरातसे अूपर हो चुकी थी, अिसलिये झटपट सोना था, किन्तु अुस समय भी मैंने देखा—घर किसी रूसी परिवारसे खरीदा गया है। अुसके दो कमरे जापानी ढंग पर बदल दिये गये हैं, जिनमें अेक कमरेमें पहलेहीसे पाँच बिस्तरे बिछे हुये थे, हमारे आनेसे छ हो गये, अब वहाँ ज़रा भी जगह बाक़ी न थी। दूसरे छोटे कमरेमें पुरोहितानी और अुनकी सखी थीं। अैसे संकीर्ण स्थानमें दो-तीन दिन रहना परिवारको कष्टमें डालना था, अिसलिये दूसरे दिन अन्यत्र रहनेका निश्चय करके सो गया।

सवेरे अुठनेपर मालूम हुआ, अभी मकानमें अधूरा जापानीपन पहुँच नहीं सका है। पीछेके हातेमें लोहे लक्कळका ढेर था, और आसपासकी कोठरियोंमें, मालूम होता है, दस-पंद्रह और जापानी रहते हैं। सबके लिये सिर्फ़ दो पाख़ानाकी कोठरियाँ, जो बहुत गंदी थीं। जापानी घरका पाख़ाना अितना गंदा नहीं हो सकता। मुँह-हाथ धो नाश्ता हुआ। दोपहर बाद चीनी बौद्धमठ चिरोस्सु जानेकी बात पक्की हुअी। मठको टेलीफोन भी कर दिया गया। थोळी देर ठहर जापान-टूरिस्ट-ब्यूरो (जापान-यात्री-सेवक-मंडल)को चले। बाहर आनेपर देखा, कितनीही घोळा-गाळियाँ खळी हैं।

अनमें कुछ तो कुर्सीदार अेक्केकीसी हैं, और कुछ फिटन जैसी। ये फिटनें सभी पुरानी तथा अधिकतर मैली-कुचैली दिखलाअी पळती थीं। अिनमें अच्छे क़दके कज़ाक घोळे जुते थे, जिनके कंधोंके अूपर अेक मेहराबसा लगा था। और कोचवान् प्रायः सारे भूरे बालों तथा नीली या कंजी आँखोंवाले रूसी थे। वस्त्रमें अेक मैली पतलून, अेक बिना कालरटाअीकी वैसी ही क़मीज़ या बनियान। अेक गाळी किरायेकर, हम बैठ गये। रास्तेमें देख रहे हैं, सैकळों रूसी नरनारी अिधरसे अुधर जा रहे हैं। और अुनकी ग़रीबी? कुछ न पूछिये। कितने ही बच्चे नंगे घूम रहे थे। कितनी ही स्त्रियाँ जापानी छ-अन्नियाँ रबरके जूते पहने हुअी थीं। कोअी-कोअी फ़ैशनवाली स्त्रियाँ भी थीं, किन्तु अुनकी संख्या बहुत कम थी। कुछ बनी ठनी घूमती तरुणियोंके बारेमें कहा जाता था, कि वेशहीसे अिनकी जीविका चलती है। कितने ही गौरांगोंको मैंने पगडंडी या दूसरी जगह धर्तीपर बैठे देखा। अधिकांश लळकोंकी दुबली-पतली तथा मुर्झाअी सूरत ही कह रही थी, कि इन्हें पर्याप्त भोजन नहीं मिल रहा है। कअी जगह सळकोंपर रूसी भिखमंगे भी मिले। अुन्हें—काम क्यों नहीं करते—कहकर टालना मेरी सामर्थ्यके बाहर था। हर्बिन, क्या दुनियामें, कहाँ सबके लिये काम धरा है। और अुनकी सूरत देखनेसे मालूम होता था, कि महीनोंसे अुन्हें मलेरिया या पांडु रोगने पकळा है। रूसियोंकी कठिनाअियाँ अिसलिये भी बढ़ गअी हैं, कि मजदूरीके सस्तेपनमें वह चीनियोंका मुक़ाबिला नहीं कर सकते। दूकान, टेक्सी, मोटरबस, फेरी, कुलीगीरी आदि सभी काम वह करनेके लिये तैयार हैं, किन्तु काम नहीं। सवाल होगा—तो फिर ये रूसी यहाँ मर क्यों रहे हैं? क्यों नहीं अपने देशमें लौट जाते, जहाँ सब के लिये काम मौजूद है? लेकिन रूस जानेका रास्ता अिनका बन्द है। लाल क्रान्तिके समय ये अुससे लळे थे। और परास्त होनेपर भागकर यहाँ पहुँचे हैं। अिन्हें सफ़ेद रूसी कहते हैं। १९३३ अी०में हर्बिनकी चार लाख अठारह

हज़ार (१३,१०० जापानी)की आबादीमें सफ़ेद रूसी २९ हज़ार और लाल रूसी २५ हज़ार थे। अिस साल पूर्व चीनी रेलवेके बिक जानेपर लाल रूसी चले गये, किन्तु सफ़ेद रूसियोंके लिये कहीं जानेका ठौर नहीं। लाल रूसियोंकी जगह अब जापानियोंने ग्रहण की है, जिनकी संख्या अिस वक्त चालीस हज़ारसे अूपर होगी।

जापान-टूरिस्ट-ब्यूरोसे पता लगा, कि यहाँसे मंचुली (सोवियट सीमापर)के लिये सवेरे ८॥ बजे सिर्फ़ अेक ट्रेन रोज़ प्रस्थान करती है, और चौबीस घंटेमें वहाँ पहुँचती है। मंचुलीसे मास्कोको सप्ताहमें दो बार सोमवार और बृहस्पतिवारको ट्रेन छूटती है।

भोजनोपरान्त प्रधान पुरोहितके साथ चिरो-स्सु (गोकुराकु-जी) मठको चले। यह शहरके अूँचे भागपर रूसी क़ब्रगाह तथा जापानी छावनीके समीप अवस्थित है। चहारदीवारीसे घिरा अेक विशाल हाता है, जिसमें सुनहरी खपळैलोंवाले चार-पाँच मंदिर तथा कितने ही भिक्षुओंके रहनेके निवासगेह हैं। भिक्षुओंकी संख्या १७० है। यह मठ सारे मंचूरियामें सबसे बळा बौद्धमठ है। मंचूरियाके भिन्न-भिन्न भागोंमें अिसकी सात बळी शाखायें तथा बहुतसी अुपशाखायें हैं। चीनी दूसरे मठोंकी भाँति यहाँके भिक्षु भी गृहस्थोंको अुपदेश या शिक्षण नहीं करते।

मेरे पहुँचनेपर भोजनका समय हो रहा था। सभी भिक्षु भोजनागार-में अेकत्रित हो सूत्रपाठ कर रहे थे। मुझे भी भोजनके लिये निमंत्रित किया गया। अेक अलग कमरेमें हम पाँच-छै आदमियोंके लिये मेज़पर प्रबंध था। गाँठगोभी, बैंगन तथा और दो-तीन तरहकी तरकारियोंकी तश्तरियाँ बीचमें रख दी गअीं। अिनमें सबको हम्-पियाला होना था। सबके सामने भातखानेकी जोळी लकळियाँ रख दी गअीं। फिर दो बळे प्यालोंमेंसे अेकमें टोमाटो और खळे गेहूँका सूप, तथा दूसरेमें पानीमें अुबली सेमअियाँ थीं। सभी चीनी भिक्षु घासाहारी होते हैं, यह जान लेना चाहिये। खाना



७४—मंचूरिया—मुक्दन् नगर (नअी आबादी) (पृ० ३२२)

और ड्राअिवरोंके मुँहकी ओर देखनेसे भी वही भाव पैदा होता है। रेस्तोराँ (भोजनालय), होटल (विश्रामगृह) भी रूसी नौकरोंसे भरे पळे हैं। अिनके अतिरिक्त कोअी-कोअी मुहल्ले तो अधिकांश रूसियोंहीके हैं, जैसे नहरोफ्का, या माचिआकू।

हम लोग परिस्ताननामक बाग़में गये। आज रविवार होनेसे लोगोंकी बळी भीळ थी। अुद्यानपर धीरे-धीरे जापानी मुहरसी लगती जान पळ रही है। सादगी और स्वाभाविकताके साथ बाग़को सजानेका प्रयत्न किया जा रहा है। बाग़के भीतर कितने ही रेस्तोराँ, सिनेमा भी हैं। अेक छोटासा चिळियाख़ाना है। अुद्यानसे निकलकर हम जुंगारीके तीरपर गये। जुंगारी बळी नदी है। आजकल बर्सात में पानी बहुत है, किन्तु और दिनोंमें भी काफ़ी पानी रहता होगा, तभी तो स्टीमर यहाँसे माल लाने ले जानेमें व्यस्त रहते हैं।

किनारेपर देखा-देखी हमने भी अेक नाव की। और चले बहावके अूपर की ओर। थोळी दूरपर रेलका पुल मिला। वहाँसे और कितनी ही दूर तक जा, हमने नाव छोळ दी। फिर चीनी मुहल्लेमें घुसे। भीळ बहुत। सफ़ाअी-का कुछ ध्यान नहीं। हर्बिनकी अधिकांश सळकोंकी भाँति यहाँ की भी सळक अच्छी नहीं है।

शहर घूमकर जब हम लोग लौटकर मठको आ रहे थे, तो देखा किसी संभ्रान्त रूसीके मरनेपर अुसकी लाशके साथ कअी हज़ार रूसी नरनारी जा रहे हैं। सफ़ेद रूसी समाजके हर प्रकारके स्त्री-पुरुषोंको देखनेका यह अच्छा मौक़ा था। कुछ लोगोंके बाद, लम्बे बालों तथा विचित्र टोप और चोग़ा पहने रूसी अीसाअी साधु चल रहे थे। अुनके पीछे सफ़ेद कपळेसे ढँके चार घोळोंकी सफ़ेद गाळीमें जनाज़ा सजाया गया था। जिसके पीछे अपार भीळ चल रही थी। भीळमें वर्दी पहने कितनी ही टुकळियाँ थीं। कुछ ज़ारशाही जंगी वर्दीमें थे। कुछ लोग स्वस्तिक झंडेके साथ वर्दीपर

स्वस्तिक लगाये जा रहे थे। यह नात्सी दल था, अिसके बतलानेकी आवश्यकता नहीं। अैसे ही और भी दल थे। कुछ लोग अपनी मोटरोंमें अच्छे लिबासमें जा रहे थे। कुछ लोग टेक्सीपर सवार थे। कुछ घोळागाळीपर हच-हच कर रहे थे, क्योंकि रास्ता बहुत ख़राब है। और अधिकांश जनता पैदल चल रही थी। अिनमें कितने ही लळके दोपैसहे जाँघियाँ-क़मीज़में नंगे पैर चल रहे थे। सारे दृश्यको देखनेसे पता लगता था, कि हर्बिनके सफ़ेद रूसियोंमें दरिद्रोंकी ही संख्या अधिक है।

२६ अगस्तको जापान टूरिस्ट ब्यूरोमें जानेपर अेक बात तो यह मालूम हुअी, कि तोक्योसे लिये टिकटका आख़िरी दिन कल है। यदि कल यात्रा नहीं की गअी, तो टिकटका अुपयोग नहीं हो सकेगा। अब रास्तेमें भी कहीं नहीं अुतरा जा सकता, सीधे सोवयिट सीमापर मंचुली पहुँचना होगा। अुसी वक्त यह भी निश्चय कर डाला, कि चलो रूसका टिकट भी कटवा लें। वेगन्‌लिट् कम्पनीने १६० डालरसे कुछ अधिक ले मंचुली-मास्को-बाकूका टिकट दिया। टिकट काठके बेंचवाले तीसरे दर्जे तथा रातको सोनेकी जगहके लिये था।

२७ अगस्तको प्रातराशके बाद मठसे बिदाअी ली, दो भिक्षु स्टेशन तक पहुँचाने आये। गाळी खुलनेका समय ८॥ बजे था, किन्तु वह रवाना हुअी ९ बजे। "प्रथमे ग्रासे मक्षिकापातः"।

२८—सोवियटकी सीमाको

वैसे भी सिङ्ग-किङ्गसे हर्बिनकी रेलगाळीकी चाल धीमी है; और अब हर्बिनसे चलनेवाली ट्रेन और भी सुस्त थी। हर्बिनसे मंचुलीका रास्ता २३ घण्टेके करीब का है; लेकिन सिङ्ग-किङ्गसे आते वक्तका हमारा तजर्बा बतला रहा था कि अुसपर विश्वास नहीं किया जा सकता। बूढ़ा अिंजन न जाने कहाँ जवाब दे बैठे। गाळी चली और थोळी देर बाद हम जुंगारी नदीको पार कर गये। चारों ओर चौरस हरीभरी जमीन थीं। जगह-जगह बहुतसे खेत थे। आस-पासकी सारी आबादी चीनी लोगोंकी थी। हाँ, स्टेशनोंके पास कुछ रूसी लोग भी रहते हैं। रेलके बळे अधिकारी जापानी थे; और कोअी-कोअी चीनी भी। किंतु रूसी सिर्फ़ पैटमैन, चौकीदार या सिपाहीके रूपमें ही थे। कम्पार्टमेन्टमें चार आदमियोंकी जगह थी। हमारे कम्पार्टमेन्टमें बाकी तीन रूसी थे। जिनमें दो स्त्रियाँ थीं। अुनके कपळे-लत्ते और शरीर-कान्तिसे गरीबी टपक रही थी। अेक स्त्री पुराने फटे रूसी नावेलको पढ़ रही थी। हमें अेक दूसरेकी भाषा भी न मालूम थी; और सफ़ेद रूसियोंसे सिवा सोवियटके गाली सुननेके और हम सुन ही क्या पाते। अिसलिये दोनों ओरसे भाषणकी कोशिश नहीं हुअी। यहाँ स्टेशन कुछ अधिक दूर-दूरपर थे और हर अेक स्टेशन-पर सशस्त्र पहरा था, जिससे मालूम होता था कि जापानी लोग अभी अिधरके चीनियोंको पूरा शान्त नहीं कर सके हैं। रेलका डब्बा तो गन्दा-सा ही था। पाखाना वैसे तो अच्छा बना था; किन्तु सफ़ाअीके बिना वह

भी गन्दा था। कारण ढूँढ़नेपर मालूम हुआ कि सफ़ाओका काम चीनी लोगोंको दिया गया है और अुनकी सफ़ाओकी आदत जगत् प्रसिद्ध है। हम समझ रहे थे कि, तर्बूजे सिर्फ़ गरम मुल्कोंमें ही पैदा होते हैं; लेकिन जापानमें भी अुन्हें देखा था। और अब तो हम साअिबेरियाके प्रदेशमें चल रहे थे, जहाँकी सर्दीका क्या पूछना; किन्तु अिधर भी स्टेशनोंपर तर्बूजे बिक रहे थे। रातको सोनेके वक्त अपनी बेंचपर हम अकेले रह गये थे और सोनेका ख़ूब आराम था।

२८ (अगस्त)को सबेरे अुठे, तो मालूम हुआ कि, रातको गाळी भी हमारी तरह कहीं लेटी थी। आस-पास देखनेमें प्राकृतिक दृश्य कुछ बदला हुआ था। पहाळ छोटे-छोटे थे; किन्तु अुनपर देवदार तथा भोज-पत्रके वृक्ष थे। मैदानमें भी जहाँ तहाँ भोजपत्रके वृक्ष थे। खेती बहुत ही कम देखने में आती थी; किन्तु मवेशी बहुत ज्यादा थे। अब रंग-ढंगसे मालूम होता था कि, हम पशु-पालक मंगोल जातिके देशमें चल रहे हैं। टाअिमटेबुलके मुताबिक ७। बजे सवेरे गाळीको मंचुली पहुँच जाना चाहिये था; किन्तु ग्यारह बजे हम खाअिलर पहुँचे। खाअिलर अेक अच्छा कस्बा है। यह मंचुको(=मंचूरिया)के मंगोल प्रान्तके चार जिलोंमें अेकका केन्द्र है। आबादीमें सुफ़ेद रूसी, चीनी, मंगोल और जापानी चारों शामिल हैं। मंगोल लोग शहरमें बहुत ज्यादा नहीं रहते। रेलकी लाअिनके पास भी अधिकतर रूसी ही बसे दिखलाअी पळते थे। मंगोल तम्बूमें रहनेवाले लोग हैं। वे अपनी भेळ-बकरियों, गायों और घोळोंको लेकर अेक स्थानसे दूसरे स्थानमें चराते घूमते फिरते हैं। मनमें बळी अिच्छा होती थी कि अुतरकर खाअिलर देखें और कुछ मंगोल बौद्धोंसे परिचय प्राप्त करें; किन्तु टिकटके तमादी हो जाने और सोवियटके लिये काफ़ी समय न रहनेके डरसे वैसा करना नहीं हो सकता था। खाअिलरमें तीन मंगोल हमारे कम्पार्टमेन्टमें चढ़े, अुनमें दोके सिर मुंळे हुअे थे और अेकके सिरपर पतली गुथी हुअी अेक

घासोंसे ढँकी थी। कहीं-कहीं रूसी घोळे जोतकर हलसे चलते दिखाअी पळे। लेकिन नजदीकसे देखनेपर मालूम हुआ कि, वह हल नहीं है, बल्कि लकळीमें हसुआ-सा बँधा है, जिससे दनादन घास काटी जा रही है। कितने ही स्थानोंपर स्त्री-पुरुष घासोंको जमाकर घोळे--गाळियोंपर लादे लिये जा रहे थे। खाअिलरसे अिधरके प्रदेशमें वृक्ष नहीं हैं। और सर्दी भी काफ़ी है।

डर रहे थे कि, फिर न कहीं अिंजन बिगळ जाये। आखिर राम-राम करके चार बजे शामको गाळी मंचुली पहुँची। कुल पौने नौ घण्टे लेट थी।

मंचुली स्टेशन काफ़ी बळा है। प्लेट फार्मकी दूसरी तरफ़ रूसी ट्रेन खळी होती है। अेक जापानी होटलवाले मिले। वह थोळी अँगरेजी भी जानते थे। अुन्होंने बतलाया कि, गाळी कल तीन बजकर ४५ मिनटपर मिलेगी। हम अुनके साथ तमाया होटलमें पहुँचे। होटलका मकान पहले किसी रूसीका था। अिसमें यूरोपियन और जापानी दोनों प्रकारसे रहनेका अिन्तज़ाम है। सस्तेपनके ख्यालसे हम जापानी कमरेमें ठहरे। कअी दिनोंसे स्नान नहीं हुआ था। यद्यपि अिस कैलास-खण्डमें तो वायुसे ही शरीर-शुद्धि हो जाती है; किन्तु दिल नहीं मानता था और स्नान-गृहमें जाकर गर्म पानीसे साबुनके साथ मल-मलकर खूब स्नान हुआ। सर्दीसे मालूम हो रहा था कि अब साअिबेरियामें पहुँच गये हैं।

मंचुली अच्छी खासी बस्ती है। आबादी छै-सात हज़ारसे कम न होगी। सळकें चौळी और नियमित रूपसे कटी हुअी हैं। कुछ घोळे-गाळियाँ और मोटरें भी दिखाअी पळती हैं। सैकळों छोटी-बळी दूकानें हैं। अिनमें रूसियोंकी ही दूकानें अधिक हैं। सर्दीको देखकर सोचा कि, अभी तो हम द्वारपर ही खळे हैं, साअिबेरियाके भीतर घुसनेपर न जाने क्या होगा? तेरह रुपयेमें हमने अेक मोटा अूनी ओवर-कोट ख़रीदा।

भारतमें लोग कहते हैं कि १३) रुपयेमें तो अैसी सिलाअी भी न होगी। रूसमें खानेकी चीज़ें कठिनाअीसे मिलती हैं, यह सुनकर हमने पन्द्रह-सोलह पावरोटी, काफ़ी मक्खन, पनीर और फल खरीदा। खाना खाकर दो बजे ही स्टेशनपर पहुँचे। टामस-कुक्का पास दिखलाकर रूसी टिकट लिया। सोनेके लिये सीट रिज़र्व हुअी। कस्टमवालेने सामान देखकर छुट्टी दी और हम मास्कोकी ट्रेनमें जा बैठे। गाळी चार बजे रवाना हुअी।

४—परिशिष्ट

२९—सोवियट रूसमें

अपनी भौगोलिक स्थिति, प्राकृतिक साधन, नाना जातिके जन-समूह और नाना प्रकारकी संस्कृतियोंके कारण रूसका साम्यवादी-प्रजातंत्र-संघ संसारकी राजनीतिमें अपना अेक प्रमुख, प्रमुख ही नहीं, अतुलनीय स्थान रखता है। सोवियट-सरकार संसारके छठवें हिस्सेपर फैली हुअी है। सिर्फ मध्य अेशियाके कुछ स्थानोंको छोळकर अुसकी सभी जमीन अुपजाअू है। वह जितने आदमियोंको भोजन दे रही है अुससे कहीं अधिकको दे सकती है। अुस जमीनके भीतर प्राकृतिक अुपज भी प्रचुर परिमाणमें प्राप्त हैं, जैसे ताजिकिस्तान और अुत्तर-पूर्वीय काकेससमें कास्पियन सागरके किनारेकी वृक्ष-रहित पहाळी भूमि पेट्रोलके बळे-से-बळे भंडारोंमेंसे हैं। साअिबेरियाकी अत्यधिक सर्दीकी बात पढ़कर हम सोचते हैं कि वह मनुष्यके निवासके योग्य नहीं होगा, लेकिन बात अैसी नहीं है। समूचा साअिबेरिया हमेशा हरा रहनेवाले सुन्दर तथा उपयोगी देवदार जातीय वृक्षोंका बाग है। साअिबेरियामें सोने तथा कोयलेकी बळी-बळी खानें हैं।

•

रूस दुनियामें खनिज सम्पत्तिमें प्रथम स्थान रखता है। जहाँ तक अुपजका सम्बन्ध है, रूस योरपका अन्न-भण्डार समझा जाता था और अभी भी वह अपने अुस गौरवपूर्ण स्थानको कायम रखे हुये है। किन्तु, निकट भविष्यमें जब सोवियटमें अुद्योग-धन्धोंका पूर्ण विकास हो जायेगा

और वह अपनी जरूरतसे ज्यादा माल बनाने लगेगा, तो तैयार माल अुसके कच्चे मालके निर्यातपर प्रधानता प्राप्त कर लेगा। संसारके व्यापारकी प्रगतिको जापानके सस्ते मालने चौपट कर दिया है,—यद्यपि अुसे रोकनेके लिये तरह-तरहकी चुंगीकी अूँची दीवारें, गृह-अुद्योगको बचानेके नामपर, खळी-की गअी हैं। लेकिन जापानकी यह प्रतियोगिता फीकी पळ जायगी जब बाजारोंमें कुछ सालके बाद रूसका माल आने लगेगा। जापानके सभी माल तैयार करनेवाले पूँजीवादी हैं और अुन्हें मालकी कीमत रखनेके समय अपने नफे, कर्मचारियोंके वेतन, बाहरसे खरीदे गये कच्चे मालकी क़ीमत आदि-पर ख्याल रखना पळता है। किन्तु, भविष्यमें रूसी कारखाने, जिनकी संख्या दिन-दिन बढ़ती जा रही है, रूसके १८ करोळ निवासियोंकी आवश्यकताओंको ही पूरा नहीं करेंगे, बल्कि अपने मालको प्रचुर परिमाणमें बाहर भी भेज सकेंगे; और वह जापानी मालसे कहीं अधिक सस्ता होगा।

सोवियट राज्यमें अेशिया और यूरोपके बहुत बळे-बळे भाग शामिल हैं और अुसकी सीमा जापानके एशियाअी राज्य, अफ़गानिस्तान, फारस, तुर्की और पूर्वी तथा अुत्तरी यूरोपके छोटे-छोटे राज्योंको छूती है। जिस प्रकार वह अपने यहाँ के निवासियोंकी जरूरतोंकी पूर्तिके लिये तेजीसे अपना अुद्योग-धंधा बढ़ा रहा है, अुसी प्रकार अपने पळोसी जर्मनी, ब्रिटेन, जापान आदि शक्तियोंके डरसे अपनी सैन्य-शक्तिको भी तेजीसे बढ़ा रहा है। हवाअी शक्तिमें वह संसारमें पहला या दूसरा दर्जा, रखता है। अुसे अपने राज्यके अन्दर बहुत बळे पैमानेमें हवाअी अुन्नति करनेके लायक आदर्श भूमि प्राप्त हैं। अुसके कारखानोंमें हवाअी जहाज भी बहुत बळे पैमानेपर तैयार हो रहे हैं, क्योंकि वहाँ तो नफाका कोअी सवाल है ही नहीं। प्राकृतिक साधन और मनुष्य-शक्ति भी असीमित हैं, साथ ही हरअेक विषयोंके विशेषज्ञ लोग निकलते आ रहे हैं। पूर्वी साअिबेरिया-

में किलेबन्दियोंका ताँता लगा हुआ है; और वहाँ सबसे बळा हवाअी अड्डा है, जो ब्लाड्विोस्तकके नजदीक है।

रूस अपनी १८ करोळ जन-संख्याके कारण स्वाधीन देशोंमें जन-संख्याके ख्यालसे भी प्रथम स्थान रखता है। यद्यपि हिन्दुस्तान और चीनकी जन-संख्या अधिक हैं, पर ये तो अुपनिवेश या अर्द्ध-अुपनिवेश देश हैं। रूसकी सैन्य-शक्तिके डरके कारण ही गिलगितको अंग्रेजी-सरकारने काश्मीर राज्यसे ले लिया है और वह अुत्तर पश्चिम भारतका सिंगापुर बनने जा रहा है,—निसन्देह अेक नये ढंगका। संक्षेपमें—रूसका संसार-की राजनीतिमें अैसा स्थान है कि हर विचारवान् पुरुषको अुसके कार्यक्रम और अुसकी सफलतामें दिलचस्पी रखना ही पळेगा।

अेक बात और है। जिन देशोंसे साम्यवादी प्रजातंत्रका गठन हुआ है अुनमें कितने ही अेशियाअी राष्ट्र हैं, जिनका अेशियाके कितने ही अन्य भागोंकी सभ्यतासे घनिष्ट सम्बन्ध है। अिसलिये अुन राष्ट्रोंके लिये किये गये किसी भी अुत्थान-कार्यका प्रभाव अेशियाकी दूसरी जातियोंपर पळेगा ही, चाहे रूसी प्रभावको अपनी अपनी सीमाके अन्दर नहीं आने देनेके लिये सभी सीमान्त राज्योंने बहुत ही कळा प्रबन्ध कर रखा है। अुदाहरण-स्वरूप वहाँ १२ लाख फारसी बोलनेवाले लोग ताजकिस्तानके प्रजातंत्रमें रहते हैं, जिनका अीरानसे भाषा, जाति और संस्कृतिका बहुत ही घनिष्ट सम्बन्ध है। जहाँ अीरानमें बोलते फिल्म नहीं बनते हैं, अुसका आधुनिक साहित्य भी अभी बचपनमें ही है, वहाँ ताजकिस्तानका रंगमंच, साहित्य तथा बोलता फिल्म बहुत अुन्नत है, तो भी वह अीरानमें नहीं आने पाता।

मेरे सफरकी मंशा वहाँकी अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थिति अथवा अुनका दूसरे देशोंसे क्या सम्बन्ध है, यह जाननेकी नहीं थी। वहाँकी आर्थिक योजनाके काम तथा अुसका जनतापर क्या प्रभाव है, अिसे देखनेकी मेरी

अिच्छा थी; और मैं वहाँके कुछ महान् भारततत्त्व-विशारदोंसे भेंट करना चाहता था। मैंने सोवियट रूसमें मंचूरियाकी तरफसे प्रवेश किया। मंचूकोकी ओरका सीमान्त स्टेशन मंचुली है, जहाँसे रूस जानेके लिये गाळी बदलनी पळती है। मैं वहाँ २८ अगस्त (१९३५) को पहुँचा। अुस समय भी वहाँ काफी जाळा पळ रहा था। स्थान पहाळी है। लेकिन ये पहाळ बहुत ज्यादा अूँचे नहीं हैं और वे घास तथा मिट्टीसे ढँके हुअे हैं। पेळ तो नहीं दीख पळते, लेकिन सारी जमीन हरी घासोंसे ढँकी थी। मुझसे कहा गया था कि सोवियट रूसमें खानेकी चीजोंकी कमी रहती है, अिसलिये मैंने मास्को तकके सफरके लिये खानेका पूरा सामान खरीद लिया था। पीछे वह बात ग़लत निकली। सोवियट रूसके अन्दर कहीं भी खानेकी चीज़ोंकी कमी नहीं है—सिर्फ आपको अिसके लिये अमेरिका-के भाव से दाम देना पळेगा। मैं तीसरे दर्जेका मुसाफिर था। वहाँ तीसरे दर्जेके दो भेद हैं—"कळा" तीसरा दर्जा और "मुलायम" तीसरा दर्जा। मुलायम तीसरे दर्जेमें गद्दीदार बेंच होती है। यद्यपि कळे तीसरे दर्जेमें मैंने आर्थिक कारणोंसे सफर करना पसंद किया था, तथापि वही दर्जा सफर करनेके लिये सबसे अच्छा भी है। रूसके साधारण लोग अुसी दर्जेमें सफर करते हैं जिससे अुनके सम्बन्धमें अध्ययन करनेके लिये, अिससे काफी मौका मिलता है। जो पहले या दूसरे दर्जेमें सफर करते हैं रूसकी साधारण जनतासे अुनका सम्बन्ध बिल्कुल ही नहीं हो पाता।

सोवियट-सीमा मंचुलीसे बहुत दूर नहीं है; और मंचूको तथा सोवियटके बीच कोई प्राकृतिक सीमा-चिह्न भी नहीं है। सोवियट रूसमें पहला स्टेशन माचेप्स्काया है। पहला परिवर्तन जो मैंने देखा वह यह था कि रेलवे कर्मचारियोंके मकान सीमाके अुस पारके मकानोंसे कहीं अच्छे थे। माचेप्स्काया रूसके और स्टेशनोंके जैसा ही है। किन्तु मंचुली स्टेशनसे अेकदम भिन्न दीखता है। दीवारपर प्लैटफार्मकी ओर लेनिन्, स्तालिन्

आदि नेताओंके चित्र थे। स्टेशनके कमरे रेलवे आफिसोंकी बनिस्बत होटलोंसे ज़्यादा मिलते थे। रेलवे कर्मचारियोंमें कितनी स्त्रियाँ भी थीं। मैंने रूसी स्त्रियोंको हार्बिन्‌में भी देखा था। वे स्त्रियाँ सोवियट विरोधी दलकी थीं, जिन्हें "सफ़ेद रूसी"के नामसे पुकारा जाता है। वे अपने होठोंको रंगती और मुँहपर खूब पाअुडर लगाती हैं। लेकिन सोवियट रूसमें आप शायद ही किसी स्त्रीको अूँचे तल्लेका जूता पहने देखियेगा, होंठ रंगनेकी बात तो अलग रही।

मेरी गाळी माचेप्स्कायामें करीब ३ बजे दिनको पहुँची। यहाँ हर-अेक मुसाफिरके सामानकी जाँच होती है। मेरे पास बहुत कम सामान था, अिसलिये जाँचमें कोअी ज्यादा दिक्कत नहीं हुअी। फिर अुन्होंने मेरा पासपोर्ट देखा, तो, पासपोर्ट अफसरने कहा––आप आगे नहीं जा सकते, क्योंकि आप सीमाके भीतर ७ रोज देरसे पहुँचे हैं। मैंने रूसके लोगोंको सदा ही सहृदय तथा विचारवान्‌ पाया। जब मैंने अपनी दिक्कतोंको अुनसे कहा तो अुन्होंने मुझे आगे बढ़नेकी आज्ञा दे दी।

मैंने सिर्फ १६ दिन सोवियट राष्ट्रमें बिताये। ट्रान्स-साअिबेरियन रेलवेपर मंचुलीसे मास्को जानेमें ७ दिन लगे। मास्कोमें मैं २४ घण्टे ही ठहरा और फिर रेलसे मास्कोसे बाकू पहुँचा और तीन रोज रहा। अेक दिन कैस्पियन सागरमें भी बिताया। मैंने अपनी सारी यात्रा सोवियट-की साधारण जनताके साथ की। सोवियट निवासियोंकी दो बातोंने मुझे सबसे अधिक आकृष्ट किया। पहली यह कि रूसी लोग बळे साफ़ दिल और मिलनसार होते हैं। अगर कोअी स्वयं मुहर्रमी सूरतवाला न हो तो अुनसे दोस्ती करनेमें दो तीन मिनटसे अधिक नहीं लगता। वे बहुत ही अतिथि-सेवी होते हैं; और अपरिचित लोगोंको सहायता करनेमें सदा तत्पर रहते हैं। अिस बातमें वे जापानके लोगोंसे अेकदम मिलते-जुलते हैं। वे अपने और मित्र-मंडलीके लिये ख़र्च करनेमें बहुत अुदार होते हैं। अतिथि-

सत्कारके विषयमें मुझे पता चला कि यह रूस-निवासियोंकी पहलेसे भी खास सिफत है। किंतु दूसरा गुण रूसकी नवीन पद्धतिके निर्माणके बाद विकसित हुआ है; क्योंकि अब अुन्हें बेकारीका कुछ भी भय नहीं रहा। जब तक वे काम करने योग्य हैं, अुन्हें काम तथा निश्चित वेतन अवश्य मिलेगा, जब बीमार या किसी कारण-वश काम करनेके लायक नहीं रह जायेंगे, तो राष्ट्र अुनके निर्वाहका प्रबन्ध करेगा। अुन्हें अपनी संतानकी शिक्षा तथा शादीके लिये चिन्ता नहीं करनी है। अैसी स्थितिमें अुनके लिये कंजूसीसे दूर रहना अेकदम स्वाभाविक है।

पूर्वी साअिबेरियाकी आबादीमें मंगोल तथा रूसी दोनों जातियाँ सम्मिलित हैं। क्रान्तिके पहले मंगोल रूसियोंसे नीच समझे जाते थे। रंग-भेदका बाज़ार खूब गर्म था। मंगोलोंको गुलामोंसा माना जाता था, जैसा कि अभी भी यूरोपके अधीनस्थ पूर्वी देशोंमें देखा जाता है। लेकिन अब वह अतीतकी बात हो गअी। रंग-भेदकी गंध तक नहीं रही। समान कार्यके लिये वेतनमें भिन्नता नहीं। नौकरियोंमें किसीके लिये खास रियायत नहीं। वास्तवमें नअी संतति तो अुन पुरानी बातोंके सम्बन्धमें कुछ जानती भी नहीं। स्टेशनोंपर रूसी और मंगोल पुरुष या स्त्री, हाथमें हाथ मिलाये घूमते हुये दीख पळते हैं। मिश्रित विवाह रूसमें अिस प्रकार फैल रहा है कि मालूम होता है अिस शताब्दीके अन्त तक विशुद्ध जातीय रूप-रंग वहाँ देखनेको नहीं मिलेगा। बात यों है कि जब अेशियाअी तथा रूसी नागरिक आर्थिक और सांस्कृतिक दृष्टिसे अेक सतहपर हैं, तो इस तरहके मिश्रित शादी-विवाहमें रुकावट क्या ?

सोवियट रूसमें मैं अितने कम दिनों तक रहा कि रूसी जीवनके हर पहलूको देख न सका। लेकिन कोअी भी आदमी वहाँके आर्थिक पुनर्निर्माणकी तीव्र प्रगतिकी अेक झाँकी देखकर भी प्रभावित हुये बिना नहीं रह सकता। मैंने मंचुलीसे मास्को तक प्राय: ४००० मील और मास्कोसे बाकू

तक प्राय: २००० मीलकी यात्राकी और हरअेक स्टेशन तथा रेलवे लाअीनके निकटवर्ती गाँवोंमें नये मकानों तथा कारखानोंका निर्माण होते पाया। समूचा राष्ट्र अिमारतें बनानेकी धुनमें पागल सा जान पळता है। अिससे यह भी जान पळता है कि पंचवर्षीय योजनाका प्रभाव समूचे प्रजातंत्र-संघ पर पळ रहा है, यह सिर्फ मास्को और लेनिनग्राड् तक ही सीमित नहीं है। अपनी गाळीकी खिळकियोंसे मैंने गेहूँके बहुत बळे-बळे खेतोंको देखा। वहाँ यंत्रसे अन्न अलग किया जा रहा था, और फिर लारियोंमें भरकर गाँवोंमें पहुँचाया जाता था। अिर्कुत्स्कके निकट अेक दिन बळे तळके मैंने अेक रूसी स्त्रीको अपने कंधेपर बहँगी लिये जाते हुये देखा जिसमें पानीके दो घळे लटक रहे थे। आकृति और पोशाकसे वह बहुत सुन्दर और संस्कृत मालूम पळती थी। असे देख मुझे 'रानी भरें पानी' वाली कहावत याद आ गअी।

साअिबेरियामें मैंने ट्रैक्टर (कलके हल) चलते नहीं देखे क्योंकि वह जुताअीका मौसम नहीं था। हाँ, बहुतसे ट्रैक्टर रखे हुये जरूर देखे। लेकिन मास्कोसे बाकू आते समय मैंने चालीस पच्चास ट्रैक्टरोंको अेक पंक्तिमें खेतकी जुताअी करते हुअे देखा। यह भाग साअिबेरियासे गर्म है, अुसकी फसल कुछ दिन पहले ही तैयार हो गअी थी और अिस समय जुताअी शुरू थी।

रूसमें वैज्ञानिक तरीक़ोंसे खेती बहुत बळे पैमानेमें शुरू हो गअी है। सभी सामूहिक तथा सरकारी खेती मशीनसे ही होती हैं। खेत जोतने तथा खलियानके लिये कलोंका ही व्यवहार किया जाता है। बहुत जगहोंमें हवाअी जहाज़से खेत बोनेका काम लिया जाता है। अब पंचमांश चौथाअीसे भी कम ही खेती पुराने ढंगसे की जाती है। ये छोटे-छोटे किसान भी अपनी ज़मीनको सामूहिक बनानेको तैयार हैं, लेकिन जैसे ही अुनके खेत सामूहिक बना लिये जायेंगे वैसे ही खेत-खलियान

मशीनोंकी माँग होने लगेगी, जिसको पूरा करनेके लिये अभी काफ़ी कारखाने नहीं हैं। किन्तु सोवियट सरकार प्रत्येक साल अपने कारखानोंकी वृद्धि कर रही है और अब अुसे समूचे देशके खेतोंको सामूहिक करनेके लिये मशीनें देनेमें ज़्यादा समय नहीं लगेगा।

रहन-सहनमें दिन-दिन तरक्क़ी हो रही है। अब भी वेतनोंमें फ़र्क है, कोअी २०० रूबल पाते हैं तो कोअी ५०० रूबल, लेकिन यह वर्त्तमान परिस्थितिमें अनिवार्य है। पहली बात तो यह है कि दक्ष कार्यकर्त्ताओंको अधिक वेतन देना पळता है, जिसमें वे दूसरे पूँजीवादी देशोंकी तुलनामें अपने वेतनको इतना कम नहीं समझें कि देश छोळनेको ललचायें। आखिर सभी कार्यकर्त्ता तो पूरे साम्यवादी हैं नहीं। दूसरी बात यह है कि वेतनमें जितनी वृद्धि होगी अुतना ही लोग अधिक माल खरीदना चाहेंगे, जिसे पूरे परिमाणमें तैयार करनेमें अभी कुछ समय लगेगा। वर्त्तमान राज्य-व्यवस्थाके पहले रूसके निवासी बळे निर्धन थे और बहुतसी चीज़ें जो अिस समय ज़रूरी समझी जा रही हैं उस समय विलासकी सामग्रीमें गिनी जाती थीं। उदाहरणार्थ अुन दिनों अेशियाअी सोवियटमें साबुनकी भी ज़रूरत महसूस नहीं की जाती थीं। फिर दाँत साफ़ करनेके लिये ब्रुश और पेस्टकी कौनसी बात? लेकिन अब वह उज़बक् और तुर्क लोगोंके लिये भी नित्यके व्यवहारकी चीज़ें हो रही हैं। अपर्याप्त अुपजके कारण अिन सब चीज़ोंकी बिक्रीपर नियंत्रण रखनेके लिये दाम बढ़ाना पळा है।

द्वितीय पंचवर्षीय योजनामें यह निश्चित किया गया है कि समूचे देशमें अधिकाधिक संख्यामें कारख़ाने क़ायम किये जायें जिसमें अिन चीज़ोंकी कमी दूर की जाये। किन्तु मालूम होता है कि तीसरी पंचवर्षीय योजनामें ही अिन सब माँगोंको पूरा किया जा सकेगा। अुस समय रूसके निवासियोंके रहन-सहनका मान संयुक्त राज्य अमेरिकाके काममें लगे मज़दूरोंसे भी कहीं अूँचा हो जायेगा।

जब मैं ट्रान्स-साअिबेरियन रेलवेमें सफ़र कर रहा था तो अेक गाँवमें अेक बहुत ही साफ़-सुथरा गिरजाघर देखा। मैंने अपने अेक रूसी दोस्तसे पूछा कि अिस गाँवका गिरजा घर अितना अधिक साफ़-सुथरा क्यों है ? जवाब मिला कि अिस गाँवमें अभी भी कुछ आदमी हैं जो अीश्वरमें विश्वास रखते हैं। बात-चीतसे यह स्पष्ट पता चला कि यद्यपि साम्यवादी दलका मेम्बर होनेके लिये नास्तिक होना ज़रूरी है, तथापि जनसाधारणपर अिसके लिये दबाव नहीं दिया जाता है, क्योंकि वहाँके साम्यवादी अिसकी प्रतिक्रियासे भलीभाँति वाक़िफ़ हैं। अुन्हें कोअी जल्दी भी नहीं है, अुनका तो विश्वास है कि अगली पीढ़ीमें अीश्वरका नाम-निशान भी नहीं रहेगा, क्योंकि जो बच्चे पलनेसे ही नये वायुमण्डलमें शिक्षा पा रहे हैं, वे भला अिन बातोंमें क्यों फँसने लगे ?

३० — बाक़ू शहर

मास्कोसे तीन दिनकी रेल-यात्राके बाद दो बजे रातको हमारी गाळी बाकू पहुँची। सारे शहरमें लाखों विद्युत्प्रदीपोंकी दीपावली-सी मनाअी जा रही थी। वह समय शहरमें घुसनेका था ही नहीं, 'अिंटूरिस्ट' (सोवि-अेट सरकारकी यात्रा-प्रबन्धक समिति)का कोअी आदमी भी स्टेशन-पर नहीं मिला। रूसी सोविअेट नागरिकोंका सौजन्य अद्वितीय है। मास्कोके सहयात्री हमारे अज्ञातनामा मित्र, जो अमेरिकामें रहनेके कारण अँगरेज़ी जानते थे, हमारा सूट-केस अुठाकर अनुकूल स्थान ढूँढ़ने चले। दो-अेक जगह पूछनेके बाद स्टेशनके क्लबके कमरेमें पहुँचे। प्रबन्धकर्त्री चालीस वर्षकी अेक अधेळ महिला थीं। बाल कटे, पोशाक रूसी श्रमिक स्त्रियों-जैसी, बूटकी अेळ ज़रा-सी अुठी हुअी; किन्तु चेहरेका रंग और काले बाल बतला रहे थे कि वह अेशियाअी है। मेरे साथीने मेरे बारेमें कुछ बतलाया और यह भी कह दिया कि मैं रूसी भाषा नहीं जानता। महिलाने कहा—'यहाँ अिस कोनेकी कुर्सीपर बैठ जायँ, सवेरे मैं टेलीफोन करके अिंटूरिस्टके पास अिन्हें भिजवा दूँगी।' साथीसे कृतज्ञता प्रदर्शन-पूर्वक विदाअी ली।

रातको स्टेशनके कुछ भागोंको देखा। बग़लमें भोजनशाला थी, जिसमें पचीसों मेज़ें खानेके लिये सजी हुअी थीं। नीचेके मुसाफ़िर-ख़ानेको देखकर आप अुसे मुसाफ़िरख़ाना कहनेकी हिम्मत ही न करेंगे।

अच्छी स्वच्छ शालामें कितनी ही कुर्सियाँ हैं, जिनपर कितने ही स्त्री-पुरुष बैठे हैं। बग़लमें हजामतख़ाना है। यूरोपकी भाँति सारे सोविअेटमें भी स्त्रियाँ बाल कटाने लगी हैं, अिसलिये हज्जामोंकी बन आओी है। हाँ, सोविअेट देशमें और कामोंकी भाँति यह पेशा भी अब समाजके स्वामित्वमें होता है। पुरुषोंकी भाँति कितनी ही स्त्रियाँ भी हज्जामका काम करती हैं। दो-चार और स्थानोंको देखा—कहीं किसी बैंककी शाखा है; कहीं अख़बारों और किताबोंकी दूकान है; कहीं बिस्कुट और मिठाओी सजी है। घूमकर फिर कुर्सीपर आ बैठा। देखा, टिकट बाबू लोगोंमेंसे भी, जो कि सभी स्त्रियाँ थीं, कोओी-कोओी आकर कुर्सीपर अूँघ रहे हैं।

पाँच बजनेके बाद (९ सितम्बर) अुजाला हुआ। महिलाने हजामत-ख़ानेमें ले जाकर मुँह-हाथ धोनेका अिशारा किया। मुँह-हाथ धोकर फिर अुसी कमरेमें आया। ६ बजे कितने ही स्त्री-पुरुष आने लगे। कमरेमें मेज़ों-पर जहाँ कितने ही दैनिक, मासिक, साप्ताहिक पत्र पळे थे वहाँ अेक कोनेमें अेक बळा-सा पियानो भी था। दीवारोंपर लेनिन्, स्तालिन्, मोलो-तोफ आदिके बळे-बळे चित्र टँगे थे। अेक काली ओढ़नी ओढ़े महिलाको आती देख मेरा ध्यान अुधर आकर्षित हुआ। अुसके पीछे अेक मूँछ-दाढ़ी सफ़ाचट तरुण छज्जेवाली टोपी लगाये आया, और फिर अेक केशच्छिन्ना सुन्दरी रूसी वेशमें अेक चार वर्षके बालकके साथ पधारीं। बैठ जानेपर बिना पूछे ही यह जाननेमें कोओी दिक्क़त नहीं हुओी कि ओढ़नीवाली महिलाके ही बाक़ी पुत्र, पुत्रवधू और पौत्र हैं। चेहरेके रंग और काले केशोंसे अुनके अेशियाओी होनेमें कोओी सन्देह ही न था। और यह भी मालूम हुआ कि यह 'मुसलमान' परिवार है। 'है' नहीं, 'था' कहना चाहिये। मज़हब तो यहाँ विशेषकर तरुणोंमें 'था' की वस्तु हो रहा है। वह दृश्य देखकर मेरे दिलमें तरह-तरहके विचार पैदा हो रहे थे, पर बादमें बाकूके

तीन दिनके निवाससे अुसे साधारण बला देखकर कम-से-कम अुतना अचम्भा नहीं होता था। वहाँ तो बाल-कटाये, नंगी बाहोंवाला अँगरखा पहने, बूटधारिणी मुसलमान तरुणियोंकी संख्या गिनी ही नहीं जा सकती। अुक्त वेशके अतिरिक्त अेक लम्बी-चौळी तौलिया-जैसा कपळा भी किसी-किसीके कन्धेपर पळा देखा। ओढ़नी तो सिर्फ़ बुढ़ियोंके लिये है। यदि भूला-भटका पाजामा-कुर्ता देखनेको मिला भी, तो वह साठ वर्षसे अूपर आयुवालियोंके बदनपर।

नौ बजे महिलाने अेक आदमी साथ कर दिया और अिन्टूरिस्ट कार्यालयकी ओर रवाना हुये। बाकूमें रूसियोंकी तादाद बहुत अधिक है—यदि आधी नहीं, तो तिहाअी ज़रूर होगी। साम्यवादी शासनमें पुराना रंग-भेद तो है नहीं, सभी लोग सभी तरहके काम करते हैं। अब बोझा ढोनेका काम सिर्फ़ अेशियाअियोंके लिये नहीं रहा। मालूम होता है, अभी स्वतन्त्र काम करनेवाले श्रमिक भी यहाँ मौजूद हैं। वह आदमी कअी बार कहनेपर भी अिन्टूरिस्ट-कार्यालय न जाकर जहाज़के घाट पर पहुँचा। मैंने दो-चार रूसी शब्दोंको जोळकर कहा—'बिलेत् नेत् अिन्तूरिस्त' (टिकट नहीं है, अिन्टूरिस्ट), और चलनेका अिशारा किया। आदमीको ख्याल था कि विदेशी है, चलो जहाज़पर बैठाकर मनमाना दाम वसूल करें। अिन्टूरिस्टके पास जानेपर तो नपा-तुला ही मिलेगा।

आख़िर अिन्टूरिस्ट पहुँचे। सतमहला विशाल नये ढंगका मकान है। अुसीमें होटल भी है। कार्यालयमें दो-तीन स्त्रियाँ ही थीं, फ़रासीसी और जर्मन जाननेवाली तो अुनमें थीं; किन्तु अपने रामको अिन भाषाओंका ज्ञान—विशेषकर बोलनेका अभ्यास—तो नहीं-सा ही था। पीछे अँग-रेज़ी जाननेवाली महिलाके आनेपर मैंने कहा—"मैं पहलवी (ओरान) जा रहा हूँ, और अभी मुझे ओरान-कौन्सलसे 'विसा' लेना है।" अुन्होंने बतलाया—"जहाज़ आपको परसों चार बजे शामको मिलेगा, तब तक

आप यहीं विश्राम करें।' मैंने सबसे सस्ते दो डालर (५।।) रुपये) रोज़-वाले कमरेमें अपना सामान रखा। डेढ़ रुपये प्रतिबारवाले स्नान-गृहमें जाकर स्नान किया और फिर तीन रुपयेका जलपान। मैंने हिसाब अमेरिकन डालरमें चुकाया था, अुसे ही रुपयेके हिसाबमें यहाँ दे रहा हूँ। तीन-तीन रुपयेका जलपान सुनकर पाठक यह न समझ लें कि मैं कुम्भकर्ण बन गया था, अथवा भोजन वाजिदअली शाहके ख़ास बावर्चीख़ानेका था। भोजन वही था, जो हिन्दुस्तानके किसी शहरमें आठ-दस आनेमें मिल सकता है; किन्तु सोविअेट अधिकारियोंके दिमाग़में दाम रखते समय ख्याल तो अमेरिकन यात्रियोंका रहता है। भोजनोपरान्त १० बजे नगर-दर्शनके लिये निकले। मोटरपर रूसी दुभाषिया तवारिश् (कामरेड्) अना और अेक दूसरी अँगरेज़ यात्री महिला थीं।

बाकू संसारकी तेलकी खानोंमें सर्वप्रथम है। शहरकी आबादी छै लाखसे अूपर है, जिसमें तुर्क सबसे अधिक हैं। कुछ वर्ष पूर्व यह तुर्क पक्के मुसल्मान थे; किन्तु अब मत पूछिये। मैंने अपनी आँखों अेक दर्गाह या मस्जिदको गिराये जाते देखा, और गिरानेवाले श्रमिकोंके चेहरे देखनेसे अधिकांश अुनमें तुर्क जान पड़े। कम्यूनिज़्मका बोलबाला है, और अुसके सामने किसीकी सुनवाअी नहीं। यदि बेचारी कोअी दर्गाह या मस्जिद फ़रियाद लेकर पहुँचती है, तो पूछा जाता है—'क़िस बिनापर तुम्हें क़ायम रखा जाय? क्या तुममें कोअी अद्भुत कला है? क्या तुम्हारा सम्बन्ध अति प्राचीनकाल या अैतिहासिक व्यक्तिसे रहा है? यदि नहीं, तो काम लायक़ नअी बड़ी अिमारत, बाग़ या सड़कके लिये जगह ख़ाली करो।' यदि बहुत रियायत की गअी, तो कहा गया—'अच्छा, अबसे तुम्हें क्लब-घर, नाच-घर या किताब-घर बनना होगा।' मस्जिद ही नहीं, यही बात गिरजा और यहूदियोंके सेनागॉग्पर भी लागू है। बाकूका अेक विशाल पत्थरका सेनागॉग् अब अेक आफ़िसके रूपमें परिणत हो गया है।

समुद्र-तटके मकानोंको गिराकर अेक लम्बा अुद्यान बनाया गया है, जिसमें वृक्षोंके नीचे जगह-जगह विश्रामार्थ कुर्सियाँ पळी हुअी हैं। कहीं-कहीं क्लब-घर भी हैं, और सोडावाटर-लेमोनेड्की दूकानें तो हर बीस क़दमपर सन्दूक़-जैसी कोठरियोंमें दीख पळती हैं। नगरकी अधिकांश सळकें कोलतारकी बनी हुअी हैं, बाक़ीमें नदीके गोल-गोल पत्थर बिछे हुअे हैं। मोटर, लारी और ट्रामकी आँधी-सी चल रही है, फिर भी अभी घोळागाळी अेकदम विदा नहीं हुअी है, बल्कि शहरके छोरोंपर आपको लदे हुअे गधे और ऊँट भी दिखाअी पळेंगे। और मकान? चौमहले-से कम नहीं, और कोअी-कोअी आठ-आठ नौ-नौ तल्लोंके। अिनमें अधिकांश नये शासनके बाद बने हैं। नगरके प्रधान भागसे पुराने मकान विदा हो चुके हैं। और बाक़ी जगहोंमें भी बीसियों प्रासाद खळे होते तथा पचासों पुराने घर गिराये जाते दीख पळते हैं।

अब हम शहरसे बाहर निकल रहे थे। बाअीं तरफ़ पुराने अेकतल्ले मकानोंकी पाँति अपने अन्तिम दिन गिन रही थी। दाहनी ओर अलग-अलग कितने ही दोतल्ले घर थे, जिनपर १९२४ लिखा हुआ था, अर्थात् वे ग्यारह वर्ष पूर्व बने थे। आजकल इस ढंगको भी पसन्द नहीं किया जाता। नये मकान अमेरिकन ढंगके पँचमहले, छमहले, सतमहले ही बनाये जा रहे हैं। अिन मकानोंमें सौ-डेढ़-सौ परिवार रह सकते हैं। हरअेक परिवार-की आवश्यकताके अनुसार तीन या चार कमरे दिये जाते हैं। अँगरेज़ महिलाने पूछा—'और किराया?' तवारिश अनाने अुत्तर दिया—'तनख्वाहका दस प्रतिशत। पाँच सौ रुबल तनख्वाह पानेवालेसे ५० रुबल, और २०० रुबल (सबसे कम तनख्वाहकी हद) वालेसे २० रुबल।' अँगरेज़ महिलाके ख्यालमें नहीं आ रहा था कि अुसी चीज़के लिये दो व्यक्तियोंसे दो तरहका दाम क्यों?

अब हम सळकसे काफ़ी दूर चले आये थे। हमारे दाअें-बाअें बहुतसे तेलके कुअें थे। कुओंका मतलब पानीका कुआँ मत समझिये। पहले किसी समय वे पानीके कुअें-जैसे ही रहे होंगे; किन्तु अब टच्यूबवेलकी भाँति नलको धरतीके भीतर धसाया जाता है। हरअेक स्तरपर तेल है कि नहीं, कैसा तेल है, आदिकी परीक्षा की जाती है, और फिर अन्तिम स्थानपर पहुँचकर रोक दिया जाता है। अिस नल-कूपपर अेक बीससे पचास फ़ीट अूँचा लोहेका ढाँचा खळा किया जाता है, जिसके सहारे पंपिंग मशीन लगा दी जाती है। यह मशीन बिजलीके ज़ोरसे रात-दिन चला करती है, और तेल पम्प द्वारा मीलों दूर रिफाअिनरी (सफ़ाअी करनेके कारख़ाने) में पहुँचाया जाता है। मशीन फिट कर देनेपर काम आदमीके बिना स्वयं होता रहता है। हाँ, कुआँ खोदनेमें अेक और बात है। तेल तक पहुँचनेके लिये कितनी ही चट्टानें पार करनी पळती हैं, और कहीं-कहीं तो तीन-तीन हज़ार फ़ीट तक उसे नीचे ले जाना पळता है, अिसीलिये सभी काम बिजली द्वारा संचालित यंत्रोंसे होता है। तेल-कूपोंके पास भी कितने ही श्रमिक-प्रासाद बने हैं। बाकूकी सारी भूमि जलशून्य है, और ये तेल-क्षेत्र तो और भी रूखे हैं। पीनेका पानी दूरसे नलों द्वारा लाया जाता है, और अुसके सहारे इसे अुद्यान-नगर बनाये जानेकी कोशिश हो रही है। बाक़ूसे तेल-क्षेत्रों तक कितनी ही बिजलीकी रेलवे लाअिनें हैं। हम अेक अैसी ही लाअिनके छोरपर पहुँचे। यहाँ किसी समय अेक अच्छा ख़ासा गाँव बसता था। अब अुसके बहुतसे मकान गिर चुके हैं। अेक-आधमें कुछ बूढ़े तुर्क स्त्री-पुरुष रहते हैं; किन्तु हम अिस अुजळे गाँवको देखने नहीं आये थे। हमें तो देखना था—‘अग्नि-पूजकोंका मन्दिर’।

मन्दिरका द्वार बन्द था। तवारिश अना चाबीवाली बुढ़ियाको बुलाने गअीं, और हम दोनों मन्दिरके द्वारपर पहुँचे। फाटक दोतल्ला है, जिसके निचले और उपरले दोनों तल्लोंपर अेक-अेक शिलालेख हैं। लेख साफ़

नागरी अक्षरमें हैं। वैसे होता तो इतनी दूर नागरी अक्षरवाले शिलालेख और हिन्दू-मन्दिरोंको देखकर बळा आश्चर्य होता; किन्तु मुझे इस मन्दिर की ख़बर पहले-पहल अप्रैल, १९२० में मिली थी। उस समय पंजाबसे रमता हुआ मैं बीरगंज (नेपाल) पहुँचा था। अिरादा काठमांडो जानेका था; पर राहदारी मिल न रही थी। वहीं रक्सौलवाली नदीके पुलके पास नदी-तटपर अेक साधुकी कुटियामें आसन जमा था। अेक नवजवान साधु भी कुछ दिन पहलेसे आकर वहीं पळा था। पूछा-पेखी होनेपर अुसने बतलाया—"मैं बळी ज्वालामाअीसे आ रहा हूँ।"

"बळी ज्वालामाअी! कांगळेवाली तो नहीं?"—मैंने पूछा।

"नहीं, वह बहुत दूर है। हिन्दुस्तानसे वहाँ पहुँचनेमें महीनों लगते हैं, वह रूसके मुल्कमें है।"

दिल तो अुत्तेजित हो रहा था कि कह दूँ—'क्यों बक रहे हो;' पर बैठेठाले झगळा कौन मोल ले! मैंने पूछा—"वहाँ जानेका रास्ता कहाँ-से है?"

"काश्मीरके पहाळोंको पारकर चीनका मुल्क है और फिर वहाँसे महीनों चलनेपर ज्वालामाअी हैं। कराचीसे जहाज़पर भी जानेका रास्ता है।"

मुझे अिस सरासर झूठपर सख्त गुस्सा आ रहा था। मैंने फिर कहा—"क्या हिंगलाज भवानीके पास।"

"नहीं-नहीं, वह बहुत दूर, रूसके मुल्कमें है। वहाँ आपरूपी ज्वाला-माअी विराजती हैं। धरतीसे अेक ज्योति निकलती है। नैवेद्य तैयारकर सामने रखा जाता है, और माअी स्वयं अुसे अपनी जिह्वासे ग्रहण करती हैं। मैं वहाँ छै-सात वर्ष रहा हूँ। अुधर कोअी और साथी न होनेसे मन नहीं लगा और चला आया। मैं काश्मीरके पहाळी रास्तेसे लौटा हूँ।"

साधु अनपढ़-सा था। भूगोलका अुसे ज्ञान न था। यदि वह कास्पियन समुद्र और बाक़ूका नाम ले देता, और साथ ही मिट्टीके तेलके कुओंका ज़िक्र कर देता, तो मैं अुसकी बातमें कुछ अधिक दिलचस्पी लेता; मगर मैं अपने भूगोल-ज्ञानके अभिमानसे अुसकी सच्ची बातको बळे तिरस्कारके साथ सुन रहा था।

सात वर्ष बाद अेक बार मैं ग्रेट-ब्रिटेनकी 'रायल अेशियाटिक सोसाअिटी'के जर्नल (पत्र)की पुरानी फ़ाअिलोंका परायण कर रहा था। सन् १९०० से पूर्वके अेक अंकमें अेक अँगरेज़ लेखकका लेख 'बाक़ूमें हिन्दू-मन्दिर' देखा। लेखकने मन्दिर और अुसमें खुदे लेखोंका ज़िक्र किया था। यह भी लिखा था कि वहाँ अेक भारतीय साधु रहता है। यद्यपि बाक़ूके सिन्धी हिन्दू व्यापारी अुसकी सहायता करते हैं; किन्तु अुसका मन नहीं लग रहा है। अुसने अुक्त लेखकसे भारत भिजवानेका कोअी प्रबन्ध करनेका आग्रह भी किया था। यह पढ़कर अुस तरुण साधुके प्रति किये अपने मानसिक अत्याचारपर मुझे अफ़सोस हुआ। मैं पछताने लगा कि अुस समय यदि मैं कुछ अधिक विश्वाससे काम लेता, तो बाक़ूकी ज्वालामाअीके बारेमें कितनी ही और बातें मालूम कर सकता था।

और अब आठ वर्ष और बीतनेपर मैं अुसी ज्वालामाअीके मन्दिरके द्वारपर हूँ! मन्दिरके फाटकपर नीचेका लेख (पाँच पंक्तियों)में अिस प्रकार है :—

"॥६०॥ ओं श्रीगणेशाय नमः ॥ श्लो[1]
क ॥ स्वस्ति श्री नरपति विक्रमादित रा[2]
ज साके ॥ श्री ज्वालाजी निमत दरवा[3]
जा वणायाः अतीकेचन गिर संन्यासी[4]
रामदहा वासी कोटेश्वर महादेव का ॥....
आसोज वदि ८। संवत् १८६६ ॥"[5]

चान्द्र तिथि, 'निमत' और 'वणाया'पर ख्याल करनेसे मालूम होता है, अतीकेचन गिरि हरियाना या कुरुक्षेत्रके समीपके रहनेवाले थे। संस्कृत न जाननेपर भी वे साक्षर थे, क्योंकि संयुक्त अक्षरोंमें अुन्होंने ग़लती नहीं की है। दरवाज़ा खोलते वक्त तवारिश अनाने कहा—"यह न-जाने कबके और कहाँके अक्षर हैं। बळे-बळे प्रोफ़ेसर देखने आये; किन्तु कोअी नहीं पढ़ सका।"

मैंने कहा—"यह अुत्तरी-भारतमें सर्वत्र प्रचलित हिन्दी-भाषा तथा नागरी-लिपिका लेख है। सन् १८०९ में सवा सौ वर्ष पूर्व, दरवाज़ा बनवानेवाले साधुने अिसे लगवाया है।"

अनाने बहुत आश्चर्य प्रकट किया मेरे अगाध लिपि-ज्ञानपर।

"आश्चर्यकी कोअी बात नहीं। यह अक्षर भारतमें अुतने ही सुपरिचित हैं, जितने रूसी अक्षर रूसमें! आपके साथ आनेवाले प्रोफ़ेसर लोगोंका विषय भारतीय लिपि न रहा होगा।"

बुढ़ियाने दरवाज़ा खोला। भीतर बळा आँगन है, जिसके बीचमें अेक चौकोर पक्का मंडप है। भारतके सभी मठोंकी भाँति आँगन चारों ओरसे साधुओंके रहनेकी कोठरियोंसे घिरा है। शायद लकळीकी महँगाअीसे अथवा मज़बूतीके ख्यालसे सभी कोठरियोंकी छतें चूने-पत्थरके पटाव या लदावकी मेहराबदार बनी हैं। कितनी ही कोठरियोंपर बनवानेवाले दाताओंके नामके शिलालेख लगे हैं। अिनकी संख्या दस-ग्यारह होगी, जिनमें दो गुरुमुखीके भी हैं। अिनके लेखक पंजाबके उदासी साधु थे। समय अितना नहीं था कि मैं और लेखोंको पढ़ता और नक़ल करता। मंडपमें जाकर खळा हुआ। वहाँ चौकोर हवनकुण्ड-सा अब भी मौजूद है; पर अब ज्वालामाअी नहीं हैं। तवारिश अनाने बतलाया—"दस वर्ष पूर्व तक यहाँ अग्निज्वाला निकलती थी।"

मैंने पूछा—"ज्वाला बन्द कैसे हुअी?"

"स्वाभाविक गैस यहाँसे धरती फोळकर निकलती रही होगी, जैसा कि अकसर तेल-क्षेत्रोंमें देखा जाता है। धरतीके नीचे रगळ खाकर या बाहरसे किसीके आग लगानेसे गैस जल अुठी होगी। अेक बार जल जाने-पर ऐसी गैसका रोकना है तो जलती बारूदके ढाकने-जैसा ही ख़तरनाक; पर अब कुछ अुपाय मालूम हो गये हैं, जिनसे अिस ज्वालाको शान्त किया गया होगा।"

मुझे ज्वालामाअीके अन्तपर बळा अफ़सोस हुआ—विशेषकर यह ख्याल करके कि बळी ज्वालामाअी यही थीं, कांगळेवाली तो छोटी ज्वालामाअी हैं।

कितनी ही कोठरियोंको भीतरसे जाकर देखा। किन्हीं-किन्हींकी दीवारोंपर अब भी प्लास्टर है; जिसपर कुछ भद्दी मूर्तियाँ भी हैं। किन्हीं-किन्हींमें आसन लगानेके चबूतरे भी हैं। कहीं-कहीं धूनीकी राखकी कालिख भी मौजूद है। यहीं जलती धूनीके किनारे विशाल जटाधारी साधु दिग्-दिगन्तसे घूमते आकर बैठते होंगे। यहीं सुल्फे और गाँजेकी चिलमपर चिलम चढ़ती होगी, और सन्तजन पल्थी मारे अपनी-अपनी यात्राके अति-रंजित वर्णन सुनाते रहे होंगे। अिसमें तो शक ही नहीं कि भारतसे बाक़ू आना, अहिन्दू देशोंमेंसे होकर, अुस समय बळी हिम्मतका काम था।

हमने ज्वालामाअीके मन्दिरसे विदा ली। मन्दिर तेल-क्षेत्रके मध्य-में है, अिसलिये चारों ओर तेलोंके कूप-ही-कूप हैं। कुआँ कैसे खोदा जाता है, अिसे देखने गये। खुदाअी बिजली और मशीनसे होती थी। अेक कुआँ १४०० मीटर (१ मीटर=३९$\frac{1}{8}$ इंच) खुद गया है; किन्तु अभी अिसे बीस सौ मीटर तक ले जाना है। खुदाअी मिट्टीमें नहीं, चट्टानमें हो रही है। पासमें अेक दूसरा कुआँ था, जिससे जल-मिश्रित तेलकी अेक मोटी धार निकल रही थी। अैसे तेल-कूपको 'गशर' कहते हैं। ऐसे कुओंमें आग लगनेका डर रहता है। अिनका मुँह बन्द करना तो असम्भव-सा है ही।

तीन-चार मील चलनेपर सळककी दाहनी ओर ज़िख गाँव आया। पुराने तुर्क गाँवका नमूना दिखानेके लिये हमें वहाँ ले जाया गया। यद्यपि अिस गाँवको पुराने गाँवोंके नमूनेके तौरपर रख छोळा गया है, तो भी जब निवासी पुराने ढंगके हों, तब तो वह वैसा होगा। गाँवके स्त्री-पुरुष तो तेल-क्षेत्रमें काम करते हैं, और दो सौ रुबल मासिक तनख्वाह लेते हैं। फिर यह लोग क्यों पुराने ढंगसे रहनेके लिये तैयार होने लगे? फलतः मकान अधिक साफ़-सुथरे हैं। दरवाज़ों और खिळकियोंमें काँच खूब इस्तेमाल किया गया है। बिजलीकी रोशनी और पानीका नल भी घर-घरमें है। यही वजह है कि अिस गाँवको पुराने रूपमें रखनेमें बहुत कोशिश करनेपर भी, सफलता नहीं मिली।

हमारी मोटर कुछ और आगे बढ़ी। बाअीं तरफ़से पहाळके नीचेकी ओर जाती अेक सळक दिखलाअी पळी। मालूम हुआ कि यहाँ समुद्र-तटपर स्नान-घाट बना है। बोलशेविकोंके स्नान-घाटमें भी कोअी नअी बात जरूर होगी, यह देखनेके लिये हम अुधर चल पळे। जगह बहुत दूर नहीं थी। घाटके कुछ पहलेहीसे हमें छोटे-छोटे वृक्ष दिखाअी पळे। वृक्ष नहीं, बल्कि सळकके दोनों तरफ़ बाग़ तैयार करनेकी कोशिश हो रही है। अिस जलशून्य सूखी पहाळी भूमिमें बाग़ लगाना कोअी हँसी-खेल नहीं। यद्यपि समुद्र नज़दीक है; लेकिन खारे पानीसे यह वृक्ष जी नहीं सकते, अिसीलिये दूरसे मीठे पानी का नल लाया गया है।

कुछ दूर चलकर हमारी मोटर अेक गोल घुमावपर आकर खळी हो गअी। अेक फाटकसे दाख़िल होकर देखा, अेक ओर गोल मेहराबके नीचे रंगमंच है। बाक़ूके क्या सभी सिनेमा-थियेटरोंमें दर्शक खुली जगहमें बैठते हैं। सिर्फ़ रंगमंचके अूपर छत होती है।

अिस नहानेकी जगह पर भला थियेटर या सिनेमा-घरकी क्या

ज़रूरत, जब कि बाक़ू शहरमें अुनकी संख्या काफ़ी है, और लोग बाक़ूसे यहाँ सिर्फ़ स्नान या जल-क्रीडाके लिये आते हैं ?

लेकिन बोल्शेविकोंकी दुनिया ही न्यारी है। अुनका ख्याल है कि मनुष्यको किसी जगह भी मनोरंजन करनेकी अिच्छा अुठ सकती है। फिर अुसका प्रबन्ध क्यों न किया जाय ? अगर पूँजीवादी देशोंकी भाँति जगह ख़रीदने, कुर्सियाँ और फ़र्नीचर तैयार करने एवं फ़िल्म या अैक्टरों-पर रुपये ख़र्च करनेकी बात होती, तो शायद अितनी दरियादिली न दीख पळती। हम लोग दोपहरके क़रीब पहुँचे थे। अुस वक्त कोअी फ़िल्म या नाटक नहीं हो रहा था। दोपहर होने तथा छुट्टीका दिन न होनेसे बहुत कम स्त्री-पुरुष आये थे। बग़लमें हज़ारों खम्भोंवाला हाल या छतके नीचे खुली जगह थी, जिसमें बहुत-सी कुर्सियाँ और खानेकी गोल-गोल छोटी-छोटी मेज़ें पळी थीं। शामको और छुट्टीके दिनोंमें यहाँ बैठनेको जगह न मिलती होगी; लेकिन अिस वक्त सभी कुछ ख़ाली पळा था। हाँ, रेस्तोराँ (भोजनशाला) के परिचारक दर्जनों स्त्री-पुरुष वहाँ ज़रूर दिखलाअी पळते थे। यद्यपि यह जगह बाक़ूसे कअी मील-पर है, तो भी मोटर-बसें बराबर दौळा करती हैं और किराया भी नाम-मात्रका है, अिसलिये लोगोंको आने-जानेमें कोअी कठिनाअी नहीं होती। रेस्तोराँके आगे दरख्तोंका अेक छायादार बाग़ है। यहाँ दरख़्त कुछ घने हैं। शायद यह वृक्ष कुछ पहले लगाये गये थे, अिसलिये कुछ बळे-बळे हैं। अभी तो ये बाग़ अुतने अच्छे नहीं मालूम होते; लेकिन कुछ वर्षोंके बाद ये सारे वृक्ष बळे ही सुन्दर और छायादार हो जायँगे, और तब मरुभूमिमें यह स्वर्गोद्यान-से प्रतीत होने लगेंगे। वृक्षोंके नीचे पचीसों हज़ार आदमी अच्छी तरह विहार कर सकेंगे।

बाग़के आगे कुछ रेत है, और फिर समुद्र आ जाता है। बाअीं ओर कुछ हटकर लकळीके तख्तोंका पुल-जैसा समुद्रके भीतर तक चला गया है,

जहाँ अुस वक्त भी कुछ युवक और सफेद युवतियाँ नहानेका काला लिबास पहने पानीमें छलाँग मार रही थीं। सोविअेट राष्ट्रमें, चाहे वह अेशियाअी भाग हो या यूरोपीय, कअी बातें बाहरके देखनेवालोंको बहुत ही आश्चर्य-जनक मालूम होंगी—खासकर हमारे भारतीय दर्शकोंमेंसे कितनोंके मुँहसे 'राम-राम' निकले बिना न रहेगा। आप बीस-बीस पचीस-पचीस वर्षके युवकों और युवतियोंको वहीं थोळा-सा कपळा पहने साथ-साथ बालूमें लेटे या पानीमें तैरते देखकर कह अुठेंगे कि भ्रष्टाचारकी हद हो गअी। अिन लोगोंमें अधिकांश तुर्क हैं, जो कुछ ही वर्ष पहले कट्टर मुसलमान थे। अुस समय छै वर्षकी लळकी भी बिना बुर्क़ा पहने घरसे बाहर नहीं हो सकती थी। आजकल अिस बेशर्मीपर बहिश्तके फ़रिश्ते कितनी लानत भेजते होंगे!

अब हम शहरकी ओर चले। रास्तेके अेक ओर समुद्र-तट था और दूसरी ओर पहाळी। कहीं-कहीं पुराने गाँवोंकी दीवारें खळी थीं। कुछ ही वर्ष पूर्व यहाँ लोग रहा करते थे; लेकिन अब तो अच्छे-अच्छे पक्के मकान बन गये हैं, जिनमें बिजली, पानी, नये ढंगके पाख़ाने आदिका अिन्तज़ाम हैं, अिसीलिये गाँव अुजळ गये हैं। बाक़ूमें वर्षा कम होती है, अिसीलिये दीवारें अभी बहुत दिनों तक खळी रहेंगी।

हमारी गाळी चारों ओर शीशेसे बन्द थी, अिसलिये हवा भीतर नहीं आती थी, अन्यथा सितम्बरके दिनोंमें भी वहाँ सर्दी पळती रहती है। होटलमें लौटते वक्त शहरसे बाहर हमें बहुतसे बळे-बळे कारख़ाने मिले। अिन्हीं कारख़ानोंमें मिट्टीका कच्चा तेल साफ़ किया जाता है, और अुससे पेट्रोल, किरासिन, मोमबत्ती, वैस्लिन आदि चीज़ें तैयार की जाती हैं। भोजनके बाद मैंने सोचा, शहरमें यदि कोअी पुराना मुहल्ला बचा हो, तो अुसे भी देखना चाहिये। पूछनेपर मालूम हुआ कि पुराने क़िलेकी तरफ़, पहाळीके अूपरकी ओर भीतर घुसनेपर, पुराना मुहल्ला है। मैंने अपने होटलके

स्थानको समुद्र-तटसे ख़ूब ठीकसे देख लिया और फिर अुधरका रास्ता पकळा। किसी समय बाक़ूका यह समुद्र-तट छोटे घरों, मसजिदों और क़ब्रोंसे भरा होगा। मालूम होना चाहिये कि बाक़ू ही नहीं, सारा काकेकश पहले ओीरानके अधीन था, और रूसने अिसे ५० वर्षमें कुछ ही वर्ष पहले लिया था। आबादीके लिहाज़से भी यह पूर्वीय भाग तो बिलकुल मुसलमान था।

आज़ुर्बाअिजान प्रजातन्त्र, बाक़ू जिसकी राजधानी है, तुर्कोंका मुल्क है, और यहाँकी राष्ट्र-भाषा तुर्की है। हरअेक मुसलमानी शहरकी तरह यहाँ भी मस्जिदें और क़ब्रोंकी भरमार ज़रूर ही होनी थी; लेकिन आज समुद्र-तटको पत्थरसे बाँध दिया गया है, और अुसके अूपर की जगह को साफ़ करके बग़ीचा लगा दिया गया है। यह बग़ीचा मीलों लम्बा चला गया है, और बाक़ू-निवासियोंके मनोरंजनकी जगह है। बग़ीचेकी बग़लसे ट्रामकी लाअिन है। कितनी ही दूर आगे जानेपर क़िलेका मीनार दिखलाओी पळा, और मैं अुधरकी ओर चढ़ने लगा। थोळी दूरपर पतली गलियाँ और पुराने ढंगके मकान आ गये। गलियोंको देखकर बनारस याद आ रहा था। हाँ, फ़र्क़ अितना ज़रूर था कि तंग होनेपर भी यहाँ सफ़ाओी ज़्यादा थी। मकानोंके भीतर कैसा था, यह तो नहीं कह सकता; किन्तु रहनेवालोंमें-कितनोंको ही साफ़-सुथरा नहीं पाया। देखनेमें भी वे ग़रीब-से जान पळते थे। अिन गलियों और वहाँके निवासियोंको देखकर कोओी भी विदेशी, जिसे सोविअेट और अुसकी शासन-प्रणालीसे सहानुभूति नहीं है, सोवि-अेट निवासियोंकी दीनता और दरिद्रताके बारेमें पन्नेके पन्ने काले कर सकता है। लेकिन याद रखना चाहिये कि सोविअेटमें अभी भी बीस फ़ी-सदीके क़रीब खेती स्वतन्त्र किसान करते हैं, और कितने ही मज़दूरीपेशा लोग भी स्वतन्त्र मेहनत-मज़दूरी करते हैं। सोविअेटके अठारह करोळ निवासियों-के काम करनेके लिये दस-पाँच वर्षोंमें फ़ैक्टरियाँ और मशीनें तैयार नहीं

हो सकतीं, अिसलिये कितने ही लोग अब भी स्वतन्त्र मेहनत, मज़दूरी या खेती करते हैं। लेकिन जिस तेज़ी और दृढ़ताके साथ सोविअेटके कल-कारख़ाने बढ़ रहे हैं, अुसे देखते हुअे यह हालत चन्द सालोंके बाद न रहेगी। अिन गलियोंके घरों और अुनके निवासियों-जैसे आपको लंदनके ईस्ट अेण्ड तथा दूसरे यूरोपीय शहरोंमें भी मिल सकते हैं। दर असल रूसके बारेमें दरिद्रताकी झूठी-झूठी ख़बरें तो अुस वक्त भी जारी रहेंगी, जब आजसे दस-पन्द्रह वर्ष बाद सोविअेट राष्ट्र दुनियाका सबसे अधिक धनी देश हो जायगा, और अुसके निवासियोंकी आमदनी दुनियाके सभी देशोंके मनुष्योंकी औसत आमदनीसे बहुत अधिक होगी। बात यह है कि बाहरके सभी यात्री अपनी आँखोंसे सोविअेटकी भीतरी अवस्थाको देख न सकेंगे, और जो वहाँ जायँगे, वे या तो पक्षमें सम्मति रखनेवाले होंगे या विपक्षमें। सोविअेट शासन-प्रणाली और अुसके आर्थिक सिद्धान्त ऐसे हैं, जिनकी वजहसे दुनियाका कोई आदमी अुसके बारेमें निष्पक्ष हो ही नहीं सकता। अनजान या नावाक़िफ़ भले ही हो सकता है। फिर आप किसी भी यात्रीके लेखमें अुसका मनोभाव बिना व्यक्त हुअे न पायेंगे। पहलेसे सोविअेट राष्ट्र कितना अुन्नत और समृद्ध हो गया है, अुसकी शक्ति कितनी बढ़ गअी है, यह तो अन्धेको भी मालूम हो सकता है, जब वह देखता है कि फ़्रांस और अिंग्लैण्ड बळे आदरके साथ अुसे लीग आफ़ नेशन्समें आनेके लिये निमन्त्रण देते हैं और अुसके प्रतिनिधिको वहाँ अेक स्थाअी जगह अर्पण की जाती है। अमेरिका, जो बोल्शेविकोंके नामसे भी नाक-भौं सिकोळता था, आज अुससे मैत्री करता है। और अुसकी पंचवार्षिक योजनाकी नक़ल करनेकी कोशिश कितने ही देशोंमें की जा रही है।

पुराने मुहल्लेमें हमें अेक अच्छे कटे पत्थरोंकी मस्जिद भी दिखाअी दी। वह अपने नामको रो रही थी। मालूम होता है, वर्षोंसे अुसपर सफ़ेदी या मरम्मत नहीं हुअी। आख़िर जब लोगोंको मज़हबसे कोअी

अनुराग ही न रहा, तो मरम्मत कैसे हो? मुहल्लेमें दस-बीस बूढ़े-बुढ़ियाँ अब भी अिस्लामको माननेवाले होंगे; मगर अुनमें बहुतेरे नअी उम्रवालोंके मज़ाकके डरसे चुपचाप घरके कोनेमें ही नमाज़ पढ़ लिया करते हैं। अगर अिच्छा भी हो, तो मरम्मत करनेमें सबसे बळा सवाल तो है पैसेका। अब धनी तो कोअी है नहीं कि अुसके पास काफ़ी स्थावर-जंगम सम्पत्ति हो। अिसी महल्लेमें मुझे दो-चार पाजामा पहननेवाली बुढ़ियाँ भी दिखलाअी पळीं। कुछ ही साल पहले पाजामा अिन तुर्क स्त्रियोंकी जातीय पोशाक थी।

लौटते समय मैं और भी कितने ही मुहल्लोंमें गया। बाकूमें अेक और बात दीख पळती है, जिससे बोल्शेविकोंकी मनोवृत्तिका पता लगता है। बाकू शहरमें अेकतिहाअी आबादी रूसी लोगोंकी है। रूसी लोग यूरोपियन हैं। यद्यपि तुर्क लोग काले नहीं होते, तो भी रूसियोंकी नीली आँखों और भूरे बालोंमें अुनके छिपनेकी कहाँ गुंजाअिश? रूसी क्रान्तिके पहले यहाँ आनेवाला हरअेक रूसी 'साहब' था, और हरअेक अेशियाअी कुली और ग़ुलाम। रूसियोंके अलग मुहल्ले थे। रूसी मुहल्लेमें तुर्कोंका रहना सम्भव न था; लेकिन आज? आज अुस भेद-भावका कहीं नामोनिशान नहीं। सभी मुहल्लों और सभी घरोंमें रूसी और तुर्क साथ-साथ रहते हैं। अेक ही तरहका जाँघिया और कोट पहने गलियोंमें खेलते हुये तुर्क और रूसी लळके यह ख़याल भी नहीं कर सकते कि अुनमें कोअी सामाजिक या जातीय भेद है। दो-अेक नहीं, हज़ारों तुर्क अैसे मिलेंगे, जिन्होंने रूसी औरतोंसे शादी की है, और वही बात रूसी मर्दोंके बारेमें भी है। बात यह है कि सभी श्रमिकोंका वेतन, चाहे वह रूसी हो या तुर्क, अेक-सा है। रूसी और तुर्क बच्चे छै वर्ष तक अेक ही शिशुशालाओंमें साथ-साथ पलते हैं, और स्कूलमें दोनों जातिकी लळके-लळकियाँ साथ ही पढ़ती-लिखती और रहती हैं, अिसीलिये अुस भावकी गुंजाअिश नहीं है।

साअीबेरिया और बाकूमें जिस प्रकार यह सह-विवाह और रक्त-संमिश्रण हो रहा है, अुससे तो मुझे ख़याल होता है कि पचास वर्ष बाद शकल-सूरतमें भी सोविअेटके अेशियाअी और यूरोपीय मनुष्योंमें कोअी भेद न रह जायगा। अगर भेद रहेगा भी तो अितना कि यूरोपीय सोविअेटके पश्चिमवाले लोग शायद कुछ ज़्यादा गोरे रहेंगे, क्योंकि अेशियाअियोंसे यूरोपीय सोविअेट नागरिकोंकी संख्या तिगुनीके क़रीब है।

शामके वक्त हम अेक फिल्म देखने गये। रूसी फिल्मोंकी बळी तारीफ़ सुन चुका था, अिसलिये अुसे भी देख लेना ज़रूरी था। अिन्तूरिस्तसे पूछनेपर मालूम हुआ कि अेक आर्मेनियन टाकी फिल्ममें जगह ख़ाली है। सोविअेट नाटचशालाओं और सिनेमा-घरोंमें जगह पाना ख़ास चीज़ है। लोग पहलेहीसे टिकट ले रखते हैं, लेकिन अिन्तूरिस्त अेजेन्सी सब जगह फोन करके तुरन्त बता सकती है कि कहाँ जगह ख़ाली है, और कितनी ही जगहोंका तो वह आपको टिकट भी दे सकती है। तवारिश अनाकी मददकी ज़रूरत थी, क्योंकि मुझे न रूसी-भाषा मालूम थी, न आर्मेनियन। बाकूमें अेक दूसरा सोविअेट फिल्म भी देखा। सोविअेट फिल्मोंमें मुझे कअी विशेषताअें मालूम हुअीं। सबसे पहली बात यह देखी कि स्वाभाविक दृश्य और बाज़ार, सेना, कारवाँ आदिके दिखलानेमें बिलकुल असलकी नक़ल की जाती है। यदि अूँटोंके कारवाँको दिखलाना है, तो सौ-पचास अूँटोंपर ही बस नहीं कर दिया जाता, बल्कि हजारों होते हैं। बाज़ार और सेना आदिके दृश्यमें भी वही बात है। जब सरकार अपने धन-जन-बलके साथ फिल्म तैयार करवानेपर कटिबद्ध है, तो फिर वहाँ ख़र्च और तरद्दुदका प्रश्न ही नहीं अुठ सकता। दूसरी बात यह है कि अमेरिकन, यूरोपीय या भारतीय——सभी फिल्मोंमें फिल्म तैयार करनेवाले अधिक दर्शकोंको आकर्षित करनेके लिये स्त्री-पुरुषोंके प्रेमकी, चाहे वह अुचित हो या अनुचित, अत्यधिक मात्रा रखते हैं। अिस विलासिताके नशेका ज़ोरदार

प्रचार मानो अुनका प्रधान अुद्देश्य है। रूसी फिल्मोंमें यह बात नहीं कि अुनमें स्त्री-पुरुष-सम्बन्धी प्रेम आता ही न हो; लेकिन अुसकी मात्रा स्वाभाविक और अुचित सीमाके अन्दर ही होती है।

फोटो-चित्रण और आवाज़में भी बहुत पूर्णता देखी जाती है। और अैक्टर तो ख़ासतौरसे चुने और तैयार किये जाते हैं। अुक्त फिल्ममें कथानक ज़ारके शासनके आर्मेनियासे लिया गया था। दो तरुण-तरुणियोंमें प्रेम हो जाता है। तरुण अेक मछुअेका लळका है। नदीमें मछलीका जाल फेंकते हुअे अुस तरुणने मछुओंके गीत गानेमें तो कमाल किया था। पीछे लळकीपर शहरके अेक धनी सेठके लळकेकी नजर पळती है। अुस वक्तकी आर्मेनियन रीतिके मुताबिक लळकीका बाप बिना रुपया पाये अुसे दे नहीं सकता। मछुअे तरुणने किसी तरह कुछ रुपये जमाकर अुस धनी सेठके पास धरोहर रखी। सेठ रुपया माँगनेपर अिनकार कर देता है। अदालतमें मुक़दमा जानेपर अपने काग़ज़पर किये दस्तख़तसे भी वह अिनकार कर देता है। बळे-बळे वकील अुसकी तरफ़से बहस करते हैं, अुधर न्यायाधीश भी सेठके दोस्तोंमें है। सेठके दस्तख़तसे अिनकार करनेपर नौजवान कुछ बक अुठता है, और अुसे कअी सालोंकी सज़ा हो जाती है। अुसका दावा भी झूठा बताकर ख़ारिज कर दिया जाता है। ज़ारके जन्म-दिनपर सेठको ख़िताब मिलता है, और प्रदेशके शासक अेक बळे दरबारमें अुसे तमग़ा पहनाते हैं। सेठके लळकेकी शादीमें, जो लळकीकी अिच्छाके बिना की जाती है, बळे-बळे रूसी अफ़सर शामिल होते हैं और मुबारकबादी देते हैं। संक्षेपमें फ़िल्म द्वारा रुपयेके बलपर न्यायका अन्याय दिखलाया गया था। फिल्म खुली जगहमें अेक दीवारपर दिखलाया जाता था, और लोग अेक चहारदीवारीसे घिरे मैदानमें कुर्सियोंपर बैठे थे।

१० सितम्बरको हवा तेज़ हो गअी थी, और सर्दी मुँहपर काँटों-जैसी चुभती थी। अिस वक्त जब यह हालत थी, तो जाळेमें हवा चलनेपर कितनी

सर्दी होती होगी ? ११ बजेके क़रीब हम स्तालिन-श्रमिक-संस्कृति-प्रासाद (Stalin Palace of Culture) देखने गये। यह मज़दूरोंका क्लब-घर है। अैसे क्लब बाकूमें अनेक हैं। पाँच तल्लेका विशाल भवन है। भीतर अनेक तरहके मनोरंजनका अिन्तज़ाम किया गया है। अेक बळा हाल है। जिसमें अेक हज़ार कुर्सियाँ हैं। दूसरे हालमें ४०० कुर्सियाँ हैं। कुर्सियोंको बिना गद्दोंके देखकर पूछनेपर मालूम हुआ कि स्वास्थ्यके ख़यालसे अुन्हें नंगा रखा गया है। गद्दा होनेपर स्वच्छ और कीटाणुरहित (Disinfect) नहीं किया जा सकता। अिन हालोंमें श्रमिकोंके नाटक होते हैं; शिक्षा-सम्बन्धी सिनेमा दिखलाये जाते हैं; व्याख्याताओंके व्याख्यान होते हैं, तथा वोट और चुनावके लिये भी अिनका अिस्तेमाल होता है। यहीं अेक छोटा-सा मिट्टीके तेलका म्यूज़ियम है। कमरेके बाहर दीवारपर संसारका नक्शा है, जिसमें दुनियाके सभी तेल-क्षेत्रोंको दिखलाया गया है। कहाँ कितना अधिक तेल है, अिसे छोटे-बळे विद्युत्-प्रकाशसे चमकते लाल वृत्तों द्वारा दिखलाया गया है। देखनेसे ही मालूम हो जाता है कि बाकू दुनियाका सबसे बळा तेल-क्षेत्र है। दूसरे नम्बरवाला तेल-क्षेत्र भी रूसहीमें है। संयुक्त-राष्ट्र अमेरिकाका तेल-क्षेत्र तीसरे नम्बरपर आता है। सोविअेट राष्ट्रमें बाकूके अतिरिक्त मध्य-अेशिया और संघालियन आदि जगहोंमें भी तेल निकल आया है। तेलके धनमें सोविअेटका संसारमें प्रथम स्थान है।

कमरेके भीतर दीवारोंपर चार्ट द्वारा दिखलाया गया है कि टयूबको कैसे धसाना चाहिये। टेढ़ा-मेढ़ा हो जानेपर क्या दोष आ जाता है और अुसको कैसे सुधारना चाहिये आदि। अेक जगह कच्चे तेलके कअी नमूने रखे हुये हैं, और यह भी दिखाया गया है कि उससे क्या-क्या चीज़ें निकलती हैं। विशेषज्ञ लोग समय-समयपर आकर यहाँ श्रमिकोंको तेल-सम्बन्धी बातें बतलाते हैं। अितना ही नहीं, अेक जगह यह भी दिखलाया गया है

कि श्रमिक तेल पैदा करके अुससे किन-किन अन्य अुद्योग-धन्धोंको मदद पहुँचाता है, और अुसके बदलेमें खाना, कपळा, घर, नाटक, हवाअी जहाज़में अुळना आदि कितनी चीज़ें अुसे मिलती हैं।

कुछ कमरोंमें पाँच हज़ार पुस्तकें रखी हैं तथा वाचनालय है। अेक कमरेमें हवाअी-जहाज़की ठठरी रखी है। वहाँ सभी पुरजे खुले हुये हैं, और हवाअी-जहाज़के यन्त्र-सम्बन्धी ज्ञानके शौकीनोंको अुसका गठन सिखलाया जाता है। सोविअेट नागरिकोंको हवाअी-जहाज़का बळा शौक है। अुनके हज़ारों अुळनेके क्लब हैं, जिनमें कितने ही हवाअी-जहाज़ रखे जाते हैं, और सदस्योंको हवाअी-जहाज़ चलाना सिखलाया जाता है। गाँव-गाँव तकमें लकळीके अूँचे-अूँचे मीनार हैं, जिनपरसे युवक-युवतियाँ पैराशूट (छतरी, जिसके खुल जानेसे आदमी धीरेसे धरतीपर आ पहुँचता है) लेकर धरतीपर कूदती हैं। मैंने अेक फोटो देखा था, जिसमें अेक ही साथ हवाअी-जहाज़ोंसे सात सौ लळकियोंके कूदनेका दृश्य था!

वहाँसे हम फैक्टरीके भोजनालयमें गये। यह भी पाँच तल्लेका विशाल महल है। भीतर घुसते ही हमें अपने कपळोंको ढकनेके लिये सफ़ेद लम्बा कोट दिया गया। हमने अेक ओरसे देखना शुरू किया। पहले रसायन-शाला आअी। अिसमें डाक्टर लोग खानेके कच्चे सामानकी परीक्षा करते हैं—अिस आलूमें कितना और कौन-सा विटामिन है? कितना प्रोटीन है? कितने और पदार्थ हैं? हरअेक चीज़की परीक्षा होनेके बाद फिर वह धोने और काटनेकी जगह पहुँचता है। धुलाअी-कटाअी सभी कुछ मैशीनसे होती है। पकानेके स्थानमें भापका प्रयोग होता है। वहाँ ताप-मानके लिये थर्मामीटर लगे हैं, और घळी देखकर चीज़ोंको चढ़ाया और निकाला जाता है। जूठी तश्तरियों और प्यालोंको भी मशीन ही गरम भाप और पानीसे धोती है। अिस भोजनालयकी विशालता अिसीसे समझ सकते हैं कि यहाँ तीस हज़ार आदमियोंका भोजन बनता है! भोजन

तैयार हो जानेपर फिर रसायनशालामें अुसकी परीक्षा होती है, तब वह वितरण-स्थानपर जाता है। खानेके लिये कितने ही बळे-बळे कमरे हैं। जो वहीं खाना चाहे, खा सकता है, और जो घर ले जाना चाहे, वह घर ले जा सकता है। जिन्हें भोजन न पचने आदिकी शिकायत है, अुन्हें सम्मति देनेके लिये वहीं डाक्टर मौजूद हैं, और अुनके लिये विशेष भोजनका प्रबन्ध है। भोजन दस-बीस तरहका नहीं, सैकळों तरहका तैयार होता है। सवेरे छै बजे ही नाश्ता तैयार हो जाता है। काम करनेवालोंमें स्त्री-पुरुष, तुर्क, रूसी, आर्मेनियन, यहूदी आदि सभी हैं। हमने चीखनेके लिये अेक प्लेट दही लेकर खाया। स्वाद अच्छा था। अिस भोजनालयको देखकर हमारे साथकी अंगरेज़ महिलाने भी कहा कि यह चीज़ बिलकुल नअी है।

वहाँसे हम स्तालिन-विद्यालय गये। यह बाकूके दर्जनों स्कूलोंमेंसे अेक है। यहाँ ७ से १७ वर्षके अुम्रकी लळके-लळकियाँ पढ़ती हैं। विद्यार्थियोंकी संख्या १८०० है, जिनमें तुर्क १९० हैं, तातार २५० हैं, आर्मेनियन ३२० हैं और रूसी १०४० हैं। लळकोंसे लळकियोंकी संख्या अधिक है। हर छठें दिन स्कूलमें छुट्टी होती है। ७ से १२ वर्षवाले विद्यार्थी प्रतिदिन ४ घंटा पढ़ते हैं, और १३ से १७ वर्षवाले ६ घंटा। दो-दो सालकी पढ़ाअी अेक सालमें नहीं कराअी जाती। ख़याल है कि अधिक पढ़ाअी करनेसे लळकोंके स्वास्थ्यपर बुरा असर पळता है। अत्यन्त प्रतिभाशाली बालकोंके लिये सरकार ख़ास प्रबन्ध करती है। अैसे लळकोंके लिये मास्को और कुछ अन्य स्थानोंमें ख़ास विद्यालय हैं, जहाँ अुन्हें विशेष सावधानीके साथ शिक्षा दी जाती है। अिस स्कूलमें भी डाक्टरी परीक्षा-घर, भोजन-शाला, व्यायामशाला आदि हैं। स्कूलके वक्त लळके यहीं भोजन करते हैं। अुनके खानेकी मेज़ें छोटे-छोटे फूलके गमलोंसे ख़ूब सजी हुअी थीं। छुट्टियोंके बाद स्कूल खुलनेवाला था, अिसलिये अुस दिन सफ़ाअी हो रही थी। अूपर-नीचे सभी तल्लोंका फ़र्श लकळीका है। अेक कमरेमें दो

रूसी श्रमिक आधी बाँहकी कमीज़ और जाँघिया पहने पैरों द्वारा कपळेसे फ़र्शको रगळ रहे थे। जिस स्कूलमें काले लळके पढ़ें, वहाँ भला गोरे अिस तरह काम करें! हमें वह कमरा भी दिखलाया गया, जहाँ डाक्टर विद्यार्थियोंकी परीक्षा करते हैं और स्वास्थ्यका लेखा रखते हैं। अुस साधारण स्कूलकी अिमारतका मुक़ाबला हमारे यहाँकी यूनिवर्सिटियोंकी अिमारतें भी नहीं कर सकतीं।

हमारे पथ-प्रदर्शक अध्यापक तातार जातिके थे। अुनके मंगोल चेहरेको देखकर तथा अुनका जन्म-स्थान अस्तराखान सुनकर मुझे सन्देह हुआ कि वह कलमुख मंगोल तो नहीं है; लेकिन पूछनेपर मालूम हुआ कि वे तातार हैं, जिनका जातीय धर्म अिस्लाम था। अुनके सिर और दाढ़ीके बाल मुळे हुये थे। बदनपर हमारे यहाँकी पुलिसकी तरहका बटनदार कोटनुमा कुर्ता था, नीचे ढीली-सी पतलून और कमरमें चमळेका तस्मा कोटके अूपर पेटीकी तरह बँधा था। नेकटाअी और कालरका नाम नहीं था। देखनेसे यही मालूम होता था कि किसी कारखानेके मज़दूर हैं; लेकिन थे वे विद्वान् अध्यापक। सब देख-सुनकर हमारे साथकी अंगरेज़ महिलाने पूछा—"आप लळकोंको धार्मिक शिक्षा तो देते न होंगे, क्योंकि सोविअेट सरकार धर्मके विरुद्ध है; किन्तु क्या धर्मके ख़िलाफ़ पाठ्य-पुस्तकोंमें विशेष पाठ रखे गये हैं, या ज़बानी ही वैसी शिक्षा दी जाती है?" अध्यापकने कहा—"पहलेसे खंडन करनेका मतलब होगा लळकोंमें प्रतिक्रिया द्वारा धर्मका भाव लाना। हम लोग अैसा नहीं करते। कितने ही लळकोंके माता-पिता अब भी धर्मको मानते हैं, और अुनका प्रभाव अुनके लळकोंपर भी पळता है। जो प्रभाव बालकके दिलपर पळा है, अुसके बारेमें युक्तिसे हम अुसीके द्वारा प्रश्न करवाते हैं और फिर अुनका समाधान-कर देते हैं।" सारांश यह कि बालकोंके दिलमें धर्मके अूपर श्रद्धा न होने

पावे, अिसके लिये सूक्ष्म मार्गका अनुसरण किया जाता है, सीधे लट्ठ नहीं मारा जाता।

हमें शिशुशाला भी देखनी थी। बाकूमें शिशुशालाअें बहुत-सी हैं। हम बागिरोफ-शिशुशालामें गये। यहाँ चार-पाँच-छै वर्षकी अुम्रके १५० लळके रहते हैं। मकान सुन्दर स्वच्छ है। पीछेकी ओर आँगनमें अेक छोटा-सा बाग़ है। सेवाका काम बहुत-सी सुशिक्षित स्त्रियाँ करती हैं, जो तुर्क, रूसी आदि सभी जातियोंकी हैं, और लळके भी सभी जातियोंके हैं। पहले हमने दरवाज़ेके पास डाक्टरका कमरा देखा। फिर बरामदेमें छोटी-छोटी कितनी ही अलमारियाँ देखीं। अुन अलमारियोंपर कुत्ता, बिल्ली, घोळा, बन्दर आदि कितने ही जानवरोंकी तसवीरें थीं। पूछनेपर मालूम हुआ कि यह अुन लळकोंकी अलमारियाँ हैं, जिनको अभी अक्षर-ज्ञान नहीं है। दूसरी तरफ़की अलमारियोंपर नामके साथ लळकोंके फोटो थे। शिशुशालाकी प्रबन्धकर्त्रीने मुँह धोने, खाने, खेलने, सोने आदिके बहुतसे कमरे दिखलाये। यहाँ अिस बातपर बहुत ध्यान दिया जाता है कि हरअेक बालक अपना काम अपने हाथसे करे। धोनेके कमरेमें पानीके नलके और तौलिया टाँगनेकी खूँटी अितनी नीचे रखी गअी है कि छोटे लळके आसानीसे उन्हें पा सकें। खानेके कमरेमें कुर्सी, मेज़, चम्मच, प्याला सभी चीज़ें खिलौने-जैसी छोटी-छोटी हैं। लळके अपने ही हाथसे खाते हैं। वे ही अपनी जमातका नेता चुनते हैं, जो अुनसे सफ़ाअी आदिका काम कराता है। अेक बळे घरमें सैकळों तरहके खिलौने रखे हुये थे। अुनमें कुत्ता-बिल्लीसे लेकर रेल, मोटर, हवाअी-जहाज़ तक सभी थे। प्रबन्धकर्त्रीने हमें बंडल-के-बंडल काग़ज़ोंकी फाअिलें दिखलाअीं। अुनमें रंग या पेंसिलसे लळकोंके खींचे चित्र और रेखाअें थीं। किसी-किसी लळकेके चित्रमें स्वाभाविकता अधिक दीख पळती थी। अिस खिलवाळके करानेसे यह जानना अभिप्रेत है कि किस बालकका झुकाव चित्रकलाकी

ओर है। सोविअेट शिक्षा-प्रणालीमें गाँवोंसे लेकर शहरों तक और शिशु-शालाओंसे लेकर स्कूलों तकमें प्रतिभाशाली लळकोंके चुननेकी ओर बहुत अधिक ध्यान दिया जाता है। यह प्रबन्ध सर्वत्र अितना पक्का है कि कोअी भी प्रतिभा अँधेरेमें पळी नहीं रह सकती। मुझे बतलाया गया कि अिसी शिशुशालामें दो वर्ष पहले अेक पाँच-छै वर्षका बालक था, जिसने गाने-बजानेमें बळा कौशल प्रकट किया था। आजकल वह मास्कोकी Music Conservatory में है।

जिस वक्त हम लोग वहाँ पहुँचे थे, अुस वक्त लळकोंके सोनेका समय था। छोटी-छोटी चारपाअियोंपर सफ़ेद चादर ओढ़े सब लेटे हुये थे। हम लोगोंको दबे-पाँव चलनेको कहा गया। अधिकांश लळके नींद नहीं ले रहे थे। कोअी-कोअी हमारी तरफ़ देख रहे थे, और कोअी-कोअी आपस-में धीरे-धीरे बातें कर रहे थे। लळके कअी कमरोंमें सो रहे थे; किन्तु अिस विभाजनमें सिर्फ आयुका ख़याल किया गया था—रंग और जातिका नहीं। शिशुशालामें लळके ८ बजे लाये जाते हैं, और ४ बजे तक यहीं रखे जाते हैं। अिस बीचमें दो बार अुन्हें खाना मिलता है। बाकूमें अैसी शिशुशालायें सैकळों हैं।

११ सितम्बरको जहाज़ ४ बजेके क़रीब छूटनेवाला था। १२ बजे तक मैंने फिर पैदल घूमकर बाकू देखा। अेक जगह बहुत-सी भीळ थी। मालूम हुआ कि भीतर प्रदर्शनी करके बहुत-सी चीज़ें बेची जा रही हैं। वहाँ खिलौने, कपळे, सुगन्धित द्रव्य आदि हज़ारों तरहकी चीज़ें थीं। सभी सोविअेटकी बनी हुअी थीं। मैंने स्मृतिके तौरपर कोअी चीज़ लेनी चाही। मेरे पास नौ रूबल (तीन रुपये) बचे हुये थे। अुनका भी अुपयोग-कर डालना था। सब देखकर अेक मनीबैग लेना पसन्द किया। मनीबैग दिखलानेपर वहाँ खळे आदमीने अुसको अुठाकर अलग रख दिया और अेक काग़ज़पर दाम अपने हस्ताक्षरके साथ लिख दिया। दूसरी जगह

कुछ ख़जानची लोग बैठे हुये थे। अुन्हें रुपयेके साथ पुर्जी दे दी और पुर्जी-पर मुहर करके लौटा दी गयी। पुर्जीको फिर वहाँ ले जानेपर मनीबैग मिल गया। बेचनेका यही तरीका मास्कोमें भी देखा था। सोविअेटके किसी भी शहरमें स्टेशनके पास वैसे ही भाळेवाली टैक्सी और घोळागाळी मिलेगी, जैसे हिन्दुस्तान या यूरोपके किसी शहरमें, फरक अितना ही होगा कि वहाँ मोल-भावका नाम नहीं। लेकिन यदि आप पूछें नहीं, तो आप यह नहीं समझ सकेंगे कि ये टैक्सियाँ या गाळियाँ किसकी हैं। पूछनेपर मालूम होगा कि टैक्सी-गाळी तो क्या, छोटी-छोटी सोडावाटर और अख़-बारोंकी दूकानें तक सरकार या किसी श्रमिक-संघकी हैं। वहाँ बैठने-वाले दूकानदार सभी वेतनभोगी नौकर हैं।

होटलमें हिसाब करनेपर मालूम हुआ कि दो दिन मोटरपर सैर करनेका चौदह डालर देना होगा और तीन दिनके खाने और रहनेके लिये नौ डालर। बाकूसे पहलवी तक जहाज़का सेकण्ड क्लासका भाळा उन्नीस डालर है। आजकल अमेरिकन डालर पौने तीन रुपयेके क़रीब है। देखनेसे यह यात्रा मँहगीं ज़रूर मालूम होगी; लेकिन जैसा हम पहले कह चुके हैं, दाम रखते वक्त यहाँके अधिकारियोंको अमेरिकन यात्रियोंका ख़याल रहता है, हिन्दु-स्तानी या अेशियाअी जातियोंका नहीं। पहली और दूसरी श्रेणीमें चलने-वाले तो धनी लोग हैं। अुनके लिअे चाहे कितना ही दाम रखा जाय, कोअी हर्ज नहीं; किन्तु तीसरी श्रेणीके यात्रियोंके साथ ख़ास रियायत होनी चाहिये। अिस श्रेणीके यात्री अधिकतर ग़रीब होते हैं और वे रूसके साम्य-वादी निर्माणके देखनेकी लालसासे प्रेरित होकर आते हैं।

१॥ बजे मैं बन्दरगाहपर पहुँचा। कस्टम आफ़िसर तुर्क थे, और वे फारसी भी बोलते थे। अुन्होंने बळी शिष्टताके साथ बक्स खोलकर चीज़ें देखीं। मेरे पासके रुपये भी गिन लिये और छुट्टी मिली। हमारा जहाज़ छोटा-सा था। नाम था फ़ोमिन्। कास्पियन समुद्रमें चलनेवाले

सभी जहाज़ सोविअेटके ही हैं। केबिन खब साफ़ था। मेरी कोठरीमें तीन सीटें थीं; किन्तु यात्री मैं अकेला ही था। ४ बजेके क़रीब जहाज़ चला। बाकू समुद्रके किनारे धनुषाकार बसा हुआ है। अुसके अेक छोरपर तेल साफ़ करनेके कारख़ाने हैं और दूसरी तरफ़ तेलके कुओंका जंगल है। हवा तेज़ होनेसे जहाज़ हिल रहा था, असलिये हम अपने बिस्तरेपर जाकर लेट रहे। रातके वक्त रेडियोपर तुर्की गाना सुना। सबेरे ८ बजे दूर औरानकी तटभूमि दिखलाओ पळी, और १० बजे हम औरानमें दाख़िल हो गये।

३१—औरान

औरान (फारस) में भी राष्ट्रीय जागरण बळे वेगसे हो रहा है। औरानी अपने अतीतको पुनर्जागृत करनेकी चेष्टा करनेमें लगे हैं—आज वे नादिरशाह और शाह अब्बासकी जगह दारा, कोरोश, और नौशेरवाँ पर अधिक गर्व करते हैं।

अतीतके प्रति अुनका अनुराग औरानके राष्ट्रीय जीवनके हर विभागमें स्पष्ट झलकता है। भवन-निर्माणमें पर्सेपीलिसका अनुकरण किया जाता है और सरकारी अिमारतोंमें वही स्तम्भ अेवं ज़र्दुश्तकी सपक्ष मूर्तियाँ दीख पळती हैं। अिसी अुल्लासमें फिरदौसीके विस्मृत समाधि-स्थलका पता लगाया गया और वहाँपर नअे सम्राट्की कृपासे हम अेक सुन्दर कब्र, रमणीक बगीचा, संग्रहालय अेवं अन्य-अन्य अिमारतें पाते हैं। प्राचीन संस्कृतिके पुनरुत्थानके जोशमें औरानियोंने अपनी धार्मिक कट्टरतापर भी विजय प्राप्त करली है। वे पर्वा नहीं करते कि अुनका वर्तमान धर्म—अिसलाम—अिस पुनरुत्थानके पक्षमें है या विपक्षमें।

आज समूचा औरान पोशाकमें अेवं बाहरी आकृतिमें यूरोपवालोंका अनुकरण कर रहा है। राज्यकी ओरसे घोषणा कर दी गअी है कि सिरपर केवल हैट पहना जाय और चारों ओर अिसीका दौरदौरा है।

कुछ धार्मिक नेताओंने यूरोपियन पोशाकके अिस प्रचलनपर आपत्ति-की। मशहद् (खोरासान) में थोळी हलचल हुअी, किन्तु सरकारी अफ-

१—जापान

जापान

१—जापानके रास्तेमें

बर्मा

जापान जानेके लिए २९ मार्च (१९३५ ई०) को कलकत्ता पहुँचा। यदि चाहता, तो आगेके जहाज़ोंका प्रोग्राम वहीं निश्चय कर डालता; किन्तु कार्याधिक्यके कारण वैसा न कर सका। रंगूनसे पेनाङ्के जहाज़के बारेमें भी बिना कुछ जाने ही श्री जगदीश काश्यपके साथ दो अप्रेलको ब्रिटिश् अिंडिया नेवीगेशन् कम्पनीके जहाज़से रंगूनके लिए रवाना हुआ। कलकत्ता-रंगून-पेनाङ्के बीच सिर्फ इसी कम्पनीके जहाज़ चलते हैं। भारतीय रेलों की भाँति यहाँ भी धाँधली है। प्रथम द्वितीय और डेक् तीन ही श्रेणियाँ हैं। द्वितीय श्रेणी और डेक्के भाळे में पाँचगुनेका अन्तर है! कलकत्तेसे रंगूनका १४) और रंगूनसे पेनाङ्का २४) कुल ३८) रुपये देने पळे। द्वितीय श्रेणीमें यह किराया पौने दो सौ रुपयेके क़रीब पळता, यानी हमारी पूँजीका एक बळा हिस्सा पेनाङ् पहुँचनेमें ही अुळ जाता, अिसीलिये हमने डेक्का ही टिकट लिया।

कलकत्तेसे रंगूनको हफ्तेमें तीन बार स्टीमर जाता है। रविवारका जहाज़ डाक-जहाज़ होता है, और वह तासरे ही दिन रंगून पहुँचा देता